॥ श्रीः ॥

मृत्यु-किरण

अथवा

रक्त-मंडल

[पहिला खण्ड]

(भाग १ तथा २)

श्री दुर्गा प्रसाद खत्री रचित

लहरी बुक डिपो

वाराणसी

१९७६

प्रकाशक—
श्री कमलापति खत्री,
लहरी बुक डिपो,
वाराणसी

RAKTA-MANDAL
[Vol. I]
Rs. 10|-

प्रथम संस्करण—सन् १९२६ ई०
तेरहवा संस्करण—सन् १९७६ ई०
सजिल्द, मूल्य—१०|-

—मुद्रक
लहरी प्रेस
वाराणसी।

दो शब्द

इस रक्त-मंडल उपन्यास का भी अपना एक निजी छोटा सा इतिहास है। यह लिखा गया सन् १९२३ में परन्तु कई कारणों से पहला भाग प्रकाशित हुआ सन् १९२९ मे जिसके बाद अन्तिम अर्थात् चौथा भाग सन् १९३० में छपा। पहला भाग छपते ही पुस्तक ने लोगो का ध्यान आकर्षित किया और इसकी धूम मच गई जिससे सन् १९३० मे ही समूची पुस्तक का दूसरा संस्करण भी हो गया। असहयोग आन्दोलन के सिलसिले में सन् १९३०, १९३१ तथा १९३२ का अधिकाश समय इसके लेखक को जेलों में काटना पड़ा और कदाचित् इसी कारण सी० आई० डी० की दृष्टि इस उपन्यास पर पड़ गई। एक दिन अचानक ही लहरी प्रेस पर पुलिस का धावा हुआ और हजार प्रतियो का नया पूरा संस्करण पुलिस समूचा उठा ले गई जिसके कुछ समय बाद सरकारी आदेश-पत्र द्वारा यह उपन्यास जब्त घोषित कर दिया गया।

मगर इसी बीच जनता मे इस पुस्तक के प्रति इतनी रुचि बढ़ गई थी कि इसकी एक एक प्रति सोलह सोलह और बीस बीस रुपयों मे खरीद कर लोगों ने पढ़ी और पुस्तक की मांग चारो तरफ से होने लगी। जनता की पुकार देख कर इसका नया संस्करण करने की बात सोची जाने लगी। मूल संस्करण के अनुसार छापना तो असाध्य था परन्तु जनता का आग्रह देख लेखक ने इसकी कहानी मे किंचित साधारण सा परिवर्तन कर दिया। इसका घटनास्थल 'भारत' से हटा कर पड़ोस का एक काल्पनिक स्वतन्त्र राज्य 'सुंग' कर दिया गया और गवर्नर-जेनरल की जगह महाराज जालिमसिंह तथा जंगी लाट की जगह मेहता कृष्णचन्द्र आदि आदि नाम रख दिए गए। इस तरह केवल कुछ नामों के फेर बदल के सिवाय बाकी सब की सब कहानी अक्षरशः ज्यों की त्यों छोड दी गई और इस परिवर्तित स्वरूप मे 'मृत्यु-किरण' के नाम से यह उपन्यास पुनः प्रकाशित किया गया।

इस नए रंग-रूप मे भी उपन्यास का प्रचार बढ़ता ही गया परन्तु चूंकि स्वराज्य प्राप्ति के वाद भी वह जब्ती का आर्डर बना ही रहा इस कारण उसी परिवर्तित स्वरूप और 'मृत्यु-किरण' नाम से इस उपन्यास के कई और संस्करण हुए।

आज,यह देख कर कि वातावरण वहुत कुछ वदल चुका है, इस पुस्तक का एक ऐतिहासिक महत्व हो गया है, और जनता पुन. इसका पूर्व-स्वरूप देखने की अभिलाषी हो गई है, यह उपन्यास अव अपने उसी मूल स्वरूप में प्रकाशित किया जा रहा है जिस स्वरूप में इसे भारतीय स्वराज्य संग्राम का एक अंग वनने का गौरव प्राप्त हो चुका है, परन्तु हम नही जानते कि इस रूप में वर्तमान समाज इस पुस्तक को कितना पसन्द करेगा क्योकि आज की स्थिति उस समय से एकदम भिन्न हो गई है जव यह पहले पहल प्रकाशित हुआ था।

मूल संस्करण से वाद के संस्करणो मे जो कुछ अन्तर डाला गया था उसकी मोटी वाते इस प्रकार है :—

(१) भारत	—सुंग राज्य
(२) वड़े लाट	—महाराज जालिमसिंह
(३) जंगी लाट	—मेहता कृष्णचन्द्र
(४) छोटे लाट	—राजकुमार
(५) मिस्टर ग्रिफिथ	—सरदार हुकुमसिंह
(६) कलेक्टर	—दीवान
(७) शिमला	—माहिमपुर
(८) गंगा नदी	—सागा झील

आदि आदि—

———

॥ श्रीः ॥

रक्त-मंडल

(पहिला भाग)

चोट पर चोट

[१]

राय साहव वावू वटुकचन्द अपने कमरे मे आरामकुर्सी पर बैठे एक उपन्याम पढ रहे थे जव नौकर ने अखबार ला कर सामने रख दिया।

लपक कर राय साहव ने अखवार उठाया और खोल कर देखा। आज पहिली तारीख थी। नये साल की खुशी मे सरकार की तरफ से जो ओहदे वंटे थे उनकी सूची छपी होगी। राय साहव को भी कुछ पाने की आशा थी, क्योंकि गत वर्ष जव वहुत कुछ दौड़ धूप और 'डाली भेजौवल' पर भी उन्हें कुछ मिला न था तो कलेक्टर साहव ने इनका रोना मुंह देख कर बड़ी सहानुभूति के साथ कहा था, "वेल वटुकचन्द इस साल टो कुछ न हुआ मगर मैं अगले साल डेखूंगा कि तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ।" वटुकचन्द साहवों की वात वृह्मवाक्य समझते थे। इतना सुन उन्हे विश्वास हो गया था कि अगले साल वे जरूर साहव' से 'वहादुर' हो जांयगे। इसी से साल भर उन्होंने कलेक्टर साहव और उनकी मेम की पदचर्या भी अच्छी तरह की थी और सव तरह से उन्हें राजी रखने की कोशिश करते रहे थे, परन्तु अफसोस! साल वीतने के एक ही महीना पहिले पुराने साहव वदल कर गाजीपुर चले गये और एक नये साहव उनकी जगह आ गये जिनसे अभी वटुकचन्द की काफी 'घिस-

पिस' हो न सकी थी, फिर भी यह सोच कर कि 'निष्काम सेवा कभी व्यर्थ नही जाती वे इस आशा मे थे कि अबकी पहिली तारीख उनके लिये जरूर ही वह सुखदाई खवर लायेगी जिसके लिये उन्होने गत पाच वर्षो से लगातार कोशिश की थी और एडी का पसीना माथे तक पहुँचाया था। आज वही दिन आया था और पहिली तारीख की 'उपाधि-वर्षा' उनके सामने थी। उत्तेजना के मारे वटुकचन्द का हाथ कापने लगा।

सब शीर्षक को सरसरी निगाह से देखते और पन्नों को तेजी के साथ उलटते हुए वे उस जगह पहुँचे जहाँ उपाधियो की लम्बी सूची छपी हुई थी। धडकते कलेजे के साथ वटुकचन्द उसे पढने लगे।

एक दफे पढा, दो दफे पढा, तीन दफे पढा, मगर उस लम्बी सूची मे राय साहव को कही भी अपना नाम न दिखाई पडा। उनका दिल वैठ गया, आखो मे आँसू आ गये, मुंह से एक 'आह, निकल गई। माथे पर हाथ मार उन्होने अखवार फेक दिया तथा टेवुल पर सिर टेक लम्बी लम्बी साँसें लेने लगे।

बडी देर तक वटुकचन्द की यही हालत रही। आखिर उन्होने सिर उठाया। इस बीच मे वे 'साहवो की झुठाई' से लेकर 'किस्मत की वदनसीवी' तक सभी तरह की वाते विचार चुके थे और अपनी किस गलती की वजह से इस साल भी रायवहादुरी से वंचित रह गये इसे भी सोच चुके थे। अपने को सम्हाल उन्होने फिर अखवार उठाया और 'काशी' हेडिंग के नीचे के नामो को खोज कर यह जानने की फिक्र मे पड़े कि उनके शहर मे से और किस किस को क्या क्या मिला है। केवल तीन ही चार नाम थे पर उनमे 'नकुलचन्द' के नाम के आगे 'राय वहादुर' देख वे फिर तिलमिला गये। अचानक उनके मुंह से निकल पडा—"है! इस खुशामदी लौंडे को राय वहादुरी मिल गई और मैं सूखा ही रह गया!!" उन्हे उस दिन की वात याद आ गई जब आज से कोई छ. महीने पहिले कलेक्टर साहव के वंगले पर वे और नकुलचन्द एक साथ ही पहुँचे थे। सिर्फ आध ही घन्टा ठहरने के वाद वे साहव के 'हुजूर' मे वुला लिये गये थे और नकुलचन्द वरामदे मे ही टहलते रह गये थे। उनके कान मे नकुलचन्द के डाह से भरे ये शब्द गूंज उठे—"अच्छा अच्छा, रायसाहव हो, तभी भीतर चले हो, मगर देखना मै भी छ महीने के अन्दर रायसाहवी न

पाऊँ और तुम्हारे मुकावले मे न आ पहुँचू तो मेरा नाम नकुलचन्द नही !!"

वस इसके वाद ही तो खुशामद और मुखविरी की जो मुहिम नकुलचन्द ने शुरू की कि वड़े वड़े लोग लोहा मान गये। 'तावेदार' तो उनका नाम ही पड़ गया। जितने टोपधारी गोरे साहव उस समय काशी मे थे या वाद मे आए सभी का नकुलचन्द अपने को 'तावेदार' समझते और मानते थे और वे भी खुलेआम उनको वैसा ही समझते थे, यहाँ तक कि कुछ साहव तो उन्हे चीठी मे भी 'माई डियर तावेदार' लिखते थे। वटुकचन्द और कितने ही दरवारी नकुलचन्द पर हँसते थे और उसे 'खुशामदी' 'टाउट' 'टोडी' और न जाने किस किस नाम से पुकारते थे—पर आज सवका वदला चुक गया। आज नकुलचन्द वाजी मार ले गया। वह विल्कुल मामूली आदमी से 'राय वहादुर' वन वैठा और वटुकचन्द राय साहव के राय साहव ही रह गये। वटुकचन्द को यह चोट उससे भी कही कड़ी लगी जो अपने को तरक्की करते न देख अभी थोड़ी देर पहिले उन्हे लगी थी। एक खुशामपी लौंडे को अपने वरावर ही नही अपने से वढ़ जाते देख उन्हे यही मालूम हुआ कि यह उनका अपना निजी अपमान हुआ है। उनके लिए यह वैसी ही वात हुई—"प्रिय को मारिबो न सालत है पर सालत सौत बचाइवो तेरो !"

वटुकचन्द ने जोर से एक मुक्का नकुलचन्द के नाम पर मारा और अखबार फर्श पर फेक उठ खड़े हुए।

[२]

रायसाहव वावू वटुकचन्द की मोटर उनके आलीशान मकान के फाटक पर आकर रुकी और रायसाहब उस पर से उतरे ! न जाने इस समय वे कहाँ से लौट रहे थे, पर उनके चेहरे की मुसकुराहट से मालूम होता था कि वे जहाँ और जिस काम के लिए भी गये हों, उसमे सफल हुए हैं।

नौकर चाकर अदव से खड़े हो गये। रायसाहव फाटक के अन्दर घुसा ही चाहते थे कि किसी आदमी ने आगे वढ़ कर सलाम किया और एक बन्द लिफाफा उनके हाथ मे दे दिया। वटुकचन्द ने आश्चर्य की निगाह उस लिफाफे पर और दूसरी सवाल की उस आदमी पर डाली जिसने इस तरह उनके 'पोजीशन' का कुछ भी खयाल न कर उनके हाथ मे चीठी देने की जुरत की थी

पर वह आदमी कुछ भी न बोला और फिर एक दफे सलाम करने बाद घूम कर चला गया। कुछ सोचते हुए राय साहब भीतर चले।

कपडे उतार कर कुछ देर ठंढे होने के बाद रायसाहब ने वह लिफाफा खोला। उसका लाल रंग देख उन्होने उसे किसी तरह के न्योते की चीठी समझा था पर भीतर जो कुछ पढा उसने तो उनका सिर ही घुमा दिया। चीठी का मजमून यह था —

"वटुकचन्द !

"तुम्हारे पास रुपया जरूरत से ज्यादा है और हमारी संस्था को अपने काम के लिए उसकी सख्त जरूरत है। ऐसी हालत मे कुछ फेर-बदल दोनो ही के लिए अच्छा होगा।

"अगर अपनी बेहतरी चाहते हो तो दो दिन के अन्दर एक लाख रुपया हमारे सुपुर्द कर दो। परसो रात को बारह बजे तक एक आदमी तुम्हारे बाग के दर्वाजे पर पहुँचेगा। उसके हाथ मे अगर रकम तुमने दे दी तब तो ठीक है नही तो उसी जगह तुम अपने लडके की लाश पाओगे जिसे हम लोग ले जा रहे है।

'खबरदार ! अगर पुलिस को खबर दी या किसी दूसरी तरह का फिसाद खडा करके धोखा देना चाहा तो अपने लडके से हमेशा-के लिये हाथ धोओगे !।"

यह चीठी पढ वटुकचन्द की तो यह हालत हो गई कि काटो तो लहू नही। उन्होने फिर उसे पढा, तब नीचे दस्तखत की जगह पर गौर किया, मगर कोई नाम दिखाई न पडा, वहा एक बड़ा सा कत्थई रग का धब्बा इस तरह का जरूर दिखाई दिया मानो ऊपर से गाढी लाल स्याही या खून की बडी बूंद गिरी हो और उस जगह चारो तरफ फैल गई हो। धब्बे के बीचो-बीच मे कुछ सफेद जगह छूटी हुई थी जो देखने मे चार उंगलियो के दाग की तरह मालूम होती थी। बस दस्तखत या निशानी अगर कुछ थी तो इतनी ही, और कुछ भी नही।

कुछ देर परेशानी और बदहवासी की हालत मे बैठे रहने के बाद वटुक-चन्द ने एक नौकर को हुक्म दिया, "बच्चे बाबू को देखो तो कहा है ?" नौकर चला गया और थोडी देर मे लौट आ कर बोला, "उनको राम-

गोविन्द टहलाने के लिये ले गया है और अभी तक लौटा नहीं है।" सुनते ही बटुकचन्द का कलेजा काँप गया। उन्होंने रुकते गले से कहा, "कई आदमी जाओ और देखो रामगोविन्द कहां है जल्दी बच्चे बाबू को खोजकर लाओ!" नौकर दौड़ता हुआ चला गया मगर बटुकचन्द के दिल मे किसी ने कहा, "जरूर रामगोविन्द उसे ले कर भाग गया!" वे परेशानी के साथ कमरे में इधर उधर टहलने और तरह की बातें सोचते लगे।

एक घंटे के बाद बच्चे बाबू की खोज मे गये हुए आदमी लौटे। बच्चे बाबू तो नही मिले मगर बहुत दूर निराली सड़क पर बेहोश रामगोविन्द और वह हाथगाड़ी जिस पर बच्चे बाबू बैठ कर घूमने निकलते थे मिली। रामगोविन्द मुश्किल से होश में आया था और इस समय नौकरों के साथ यहाँ तक लौटा था। बटुकचन्द ने उससे पूछा, "बच्चा कहाँ है?" वह बोला, "बाबूजी मैं उनको घुमाता हुआ मडुआडीह की सड़क पर से लौटा आ रहा था कि पीछे से तीन आदमियों ने आ कर मुझ पकड़ लिया और एक गाड़ी पर से बच्चे बाबू को उठाने लगा। जब मैंने रोका तो सभों ने मुझे इतना मारा कि मैं बेहोश हो गया। इसके बाद की मुझे खबर नही। ये लोग गये है और पानी वगैरह छिड़का है तो होश में आया हूं और बडी मुश्किल से यहाँ तक पहुँचा हूं!"

कह कर रामगोविन्द अपनी चोटें दिखाने लगा परन्तु बटुकचन्द का ध्यान उधर न था। वे अपने प्यारे बेटे और उस चीठी की बात सोच रहे थे।

[३]

गंगा के तट पर, काशी से लगभग तीन चार कोस ऊपर चढ़ कर एक ऊंचे टीले पर एक छोटा मगर सुन्दर सा मकान है जिसके तीन तरफ सुहावना बागीचा है और चौथी तरफ कल-कल-नादिनी गंगा बह रही है।

मकान छोटा है। शायद मुश्किल से उसमें आठ दस कमरे होंगे, मगर फिर भी मजबूत बहुत बना हुआ है। इसकी कुरसी लगभग आठ हाथ ऊंची है और उसमे पूरब की तरफ एक मजबूत दरवाजा है जो बागीचे की सतह से कोई नौ दस हाथ की ऊंचाई पर पड़ता है। उस दरवाजे तक जाने के लिये काठ की सुन्दर सीढ़ियाँ है जो मकान की कुरसी के साथ साथ उठी हुई है। इन सीढ़ियों के अलावे और कोई रास्ता उस मकान मे जाने का नजर नहीं

आता। सिर्फ यही नही, इतने ऊँचे चढ कर मकान की पहिली मंजिल मे पहुँचने पर भी उस खड मे सिवाय सदर दरवाजे के और एक भी खिड़की दरवाजा या रौशनदान नही है। चारो तरफ मजबूत और मोटी संगीन दीवार है, हा जब इसके भी ऊपर चल कर आप दूसरी मंजिल मे पहुँचेगे तो आपको वह मजिल बहुत ही खुली और खुलासी दिखाई पडेगी और चारो तरफ बडी वडी खिडकियाँ भी हे जिनकी राह वखूवी हवा आती हे और चारो तरफ दूर दूर तक का दृश्य दिखाई पडता है। गगा तो यहाँ से ऐसी मालूम पड़ती हैं मानो इस मकान की दीवार से सटी हुई वह रही हो मगर वास्तव मे ऐसा नही है। बहुत दूर पर रामनगर का किला दिखाई पडता है और अगर आसमान साफ है तो काशी नगरी का अस्सी की तरफ वाला हिस्सा तथा दूर पर के माधोराव के दोनो धरहरे धुंधले धुंधले नजर आ सकते है।

इसी मकान के गंगाजी के तरफ वाले एक कमरे मे हम इस समय अपने पाठको को ले चलते है। कमरे की तीन बडी बडी खिडकियाँ खुली हुई हैं और उनकी राह ठंढी ठंढी हवा आ रही है। बीच मे सुफेद फर्श विछा हुआ है और चारो तरफ कुछ कोच तथा कुरसियाँ पडी हुई है जिनमे से एक पर इस समय एक नौजवान अधलेटा सा पडा हुआ पंखी से अपने वदन की गर्मी दूर कर रहा है। उसका साफा सामने के एक छोटे टेबुल पर पडा हुआ है और उसी पर एक चमकदार छोटी पिस्तौल भी रक्खी हुई है। नौजवान के माथे पर की पसीने की बूँदे बता रही है कि वह अभी अभी ही कही दूर से चलता हुआ आ रहा है।

गर्मी शान्त हुई और नौजवान कोच पर से उठ खडा हुआ। उसकी निगाह दीवार पर लटकने वाली बड़ी घडी पर पडी और उसने बेचैनी के साथ कहा, "पौने आठ बज रहा है और वे लोग अभी तक नही पहुँचे—क्या कुछ . ।" अभी बात खतम नही हुई थी कि दूर से 'भ्रुग-भ्रुग' की भारी आवाज सुनाई पडी। नौजवान चौंका और खिड़की के पास आ कर उत्तर की तरफ देखने लगा। सुबह के सूर्य की रोशनी मे चमकते हुए गंगा के साफ पानी पर दूर कोई काली चीज दिखाई पडी। नौजवान ने दीवार मे बनी आलमारी खोली और उसमे से दूरबीन निकाल कर उस चीज की तरफ देखा। साफ

मालूम हो गया कि वह एक मोटर-वोट है जो वडी तेजी से पानी काटती हुई सीधो इसी तरफ को आ रही है। नौजवान के चेहरे पर सन्तोप की निशानी दिखने लगी और वह उसी जगह फर्श पर एक मोटे गावतकिये के सहारे इस तरह लेट गया कि उसका मुँह गंगाजी की तरफ रहे।

'भ्रग भ्रग' क. आवाज तेज होने लगी और देखते-देखते वह वोट पास आ पहुँची। जब वह इस मकान से लगभग आध मील के फासले पर पहुँची तो नौजवान पुनः उठा और खिड़की मे आ खडा हुआ। मोटर की चाल कम हो गई थी और अव वह वहुत धीरे धीरे आगे वढ़ रही थी। नौजवान ने पुनः दूरवीन हाथ मे ली और उसकी मदद से देखा कि कोई आदमी उस नाव के अगले हिस्से मे आ कर खड़ा हुआ है। नौजवान गौर से उस तरफ देखने लगा। उस नाव वाले ने एक लाल रंग की भंडी उठाई और कुछ इशारा किया। नौजवान ने भी आलमारी मे से एक लाल भंडी निकाली और किसी इशारे के साथ उसे दिखाई। भंडियों के इशारों मे ही कुछ वाते हुईं और तव उस वोट की चाल फिर तेज हुई। पाँच ही मिनट वाद वह मकान के पास आ कर किनारे से लग गई और उस पर से कई आदमी उतर कर इस मकान की तरफ वढे। इन्हें देख नौजवान भी अपनी जगह से हटा और नीचे की मंजिल में उतर सदर दर्वाजे के पास जा पहुँचा। अव तक नाव पर से उतरे हुए आदमी भी जो गिनती मे चार थे वहां आ पहुँचे थे। सदर दर्वाजा खोल उँगलियों के इशारे से नौजवान ने उनसे कुछ वाते की जिसके वाद वे सब सीढ़ियाँ चढ़ ऊपर आ गये। नौजवान सभों से वड़े प्रेम से मिला और तव सभों को ऊपर चलने को कह आप एक कोठड़ी मे घुस गया जो फाटक के वगल ही मे पड़ती थी। इस कोठड़ी की दीवारों मे और फर्श मे भी तरह के कल-पुर्जे लगे हुए थे। नौजवान दीवार में लगे एक वड़े पहिये के पास पहुँचा और उसका मुट्ठा पकड़ कर घुमाने लगा। पन्द्रह या वीस दफे घूमने के वाद वह पहिया रुक गया और तव नौजवान इस कोठड़ी से वाहर निकल कर ऊपर की मंजिल के उसी कमरे मे जा पहुँचा जिसमे वह पहिले बैठा था और जिसमे अव वे चारो आदमी भी पहुँच गए थे जो मोटर वोट से उतरे थे। नौजवान भी उन्ही के पास जा बैठा और एक आदमी से पूछने लगा, "कहो क्या हुआ ?"

वह वोला, "जैसा हम लोगो ने सोचा था ठीक वैसा ही उतरा !"

नौजवान०। वह लडका कहाँ है ?

"यह है !" कह कर उस आदमी ने एक वडा सा चमडे का वेग खोला जो अपने साथ लाया था। वेग के अन्दर कपड़े के वीच मे अच्छी तरह सम्हाल कर रक्खा हुआ मगर वेहोश तीन चार वरस का एक सुन्दर लडका था। नौजवान ने उसे मुलायम हाथों से वेग के वाहर निकाला और एक वार कलेजे की धडकन और साँस पर ध्यान देने वाद फर्श पर सुला दिया। सभो मे फिर वातें होने लगी।

नौजवान०। इसको लाने मे कोई तरद्दुद तो नही पडा ?

एक आदमी०। नहीं कुछ भी नही, सिर्फ इसके साथ जो नौकर था उसने कुछ हाथ पॉव चलाये पर जल्दी ही हम लोगो ने उसे वेकावू कर दिया और इसे ले कर चले आये।

नौज०। हमारी चीठी वटुकचन्द के पास पहुँच गई ?

आदमी०। हाँ जव हम लोगो ने देख लिया कि वह खास उन्ही के हाथ मे दे दी गई तभी हम वहाँ से हटे। रात भर तो अपने अड्डे पर छिपे रहे और सुवह को यहाँ के लिये चल पडे। अव जैसी कुछ आज्ञा हो किया जाय।

नौज०। तुम लोगो ने और कोई कार्रवाई करने की वात सोची हे ?

आदमी०। हा एक वात सोची है, अगर आपकी राय हो नो की जाय।

नौज०। क्या ?

आदमी०। काशी के एक रईप नकुलचन्द का नाम शायद आपने सुना होगा ?

नौज०। हा मैने सुना है।

आदमी०। उसे रायवहादुरी मिली है और इस खुशी मे वह सारनाथ के अपने वागीचे मे एक पार्टी देने वाला है।

नौज०। अच्छा !

आदमी०। वह पार्टी सिर्फ उसके दोस्तों की ही नही होगी वल्कि उनकी पत्निया भी उसमे आवेगी जिनके लिए सवारी का खास तौर पर वहुत अच्छा वन्दोवस्त किया गया है। इसके इलावे कोई आधा दर्जन रंडियाँ भी मौजूद रहेगी।

नौज० । तब ?

आदमी० । हम लोगों की राय है कि उस वक्त उस बागीचे पर छापा मारा जाय । बड़ी गहरी रकम हाथ आवेगी ।

नौज० । हैं ! औरतों पर छापा !!

आदमी० । क्या हर्ज है ? हम लोगों का उद्देश्य तो सब तरह से पाक और साफ है । औरतो का केवल जेवर उतरवा लिया जायगा, और किसी तरह से उनको न तो तकलीफ दी जायगी न बेइज्जती ही की जायगी । जितनी औरते आवेगी सब अमीरों ही की होंगी जिन्हे कुछ जेवर निकल जाना जरा भी न अखरेगा मगर हम लोगो को दस पाँच लाख से ज्यादा ही मिल जाय तो कोई ताज्जुब नही ।

नौज० । फिर भी ... ..!

आदमी० । एक यह बात भी सोचिये कि वह नये नये राय-बहादुर बने हुए की पार्टी होगी । राय साहब, राय बहादुर, राजा साहब और खान बहादुर ही वहां इकट्ठे रहेगे । सरकारी नौकर और ओहदेदारों की भी कमी न होगी जिन्हे सताना हम लोगों का पहिला काम है । सरकार के खुशामदी 'जी हुजूर' और भेदिये तो वहा मौजूद ही रहेगे, मुमकिन है कि कलेक्टर और कमिश्नर भी मौजूद रहे । अगर एक ही हमले मे इतने आदमियों पर हम लोग अपना आतंक जमा सके तो क्या कुछ काम न होगा ?

नौज० । हाँ सो तो......ठीक है......... अच्छा मैं 'भयानक चार' के सामने यह प्रस्ताव रख दूँगा, जैसा वे कहेगे वैसा ही किया जायगा ।

सब० । बस बस यही तो हम लोग चाहते हैं ।

नौज० । यह पार्टी कब होने वाली है ?

एक० । शायद पन्द्रह दिन मे होगी ।

नौज० । तब तो काफी मौका है, उनसे सलाह कर के तुम्हे उसी ठिकाने पर खबर दूँगा ।

एक० । बहुत अच्छा ।

नौज० । इधर कोई नया हाल चाल तो नही है ?

एक० । जी कोई नई बात नही है पर सुना है काशी के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट

मिस्टर गिबसन छुट्टी पर जा रहे हैं और उनकी जगह आगरे से कोई आ रहा है।

नौज०। आगरे से! क्या नाम है कुछ मालूम हुआ?

एक०। ठीक तो नहीं मालूम मगर शायद मिस्टर केमिल या ऐसा ही कुछ है।

'केमिल' यह नाम सुनते ही वह नौजवान चौंक उठा और सिर नीचा कर कुछ सोचने लगा। कुछ देर तक उसके साथी लोग ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देखते रहे। आखिर एक ने पूछा, "मिस्टर केमिल का नाम सुन कर आप चौंक गये सो क्यों? क्या आप उन्हें जानते हैं?"

नौजवान ने सिर उठा कर कहा, "हाँ मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं। वह बड़ा ही कट्टर आदमी है और डर या घबराहट तो उसे छू तक नहीं गई है। खैर देखा जायगा, अब तुम लोग जाओ मगर जाने से पहिले इस लड़के को उस औरत के सुपुर्द करते जाओ जिसे पहिले से इसी काम के लिये हम लोगों ने यहाँ बुला रक्खा है। अब यह होश में आ रहा है।"

"बहुत अच्छा" कह कर वे आदमी उठ खड़े हुए। एक ने उस लड़के को गोद में उठा लिया और दूसरे ने सब कपड़ा लत्ता भीतर बंद कर वह बेग हाथ में ले लिया। नौजवान ने एक से पूछा, "चीठी में कै दिन की मोहलत दी गई है?" जवाब मिला, "दो दिन की।" नौजवान ने कहा, "दो दिन की! तब फिर कल संध्या को एक बार मुझसे मिल लेना।"

सब कोई नीचे की मंजिल में उतर गये, वह नौजवान भी उनके साथ साथ था।

[४]

राय बटुकचन्द की वह रात किस तरह बीती यह उन्हीं का दिल जानता होगा। रायबहादुरी न मिलने का गम तो था ही, ऊपर से प्यारे बेटे के खो जाने ने और भी गजब ढा दिया। पहिली चोट पर इस दूसरी चोट ने पड़ कर उनके दिल और दिमाग को एकदम चौपट कर दिया।

उनकी वह रात पलंग पर पड़े करवटें बदलते ही बीत गई। कभी उन दुष्टों की बात सोचते जिन्होंने उन्हें चीठी लिखी थी, कभी अपने बच्चे की मुसीबत का ख्याल करते, कभी उस एक लाख रुपये की तादाद पर सिहरते उस चीठी के

अनुसार जिसे देने पर ही वे अपने बच्चे को वापस पा सकते थे, और कभी इस धमकी पर काँपते कि अगर पुलिस को खबर की गई तो लडका मार डाला जायगा। तरह तरह की तर्कीबें सोचने पर भी कोई कारगर होती दिखाई नही पड़ती थी और इसी कारण वह समूची रात उन्हें चिन्ता फिक्र और घबराहट में ही काट देनी पड़ी।

सुबह होते ही वे पलंग पर से उठे और अपने बैठक मे आये। वह चीठी निकाली और बडी देर तक उसे बराबर पढ़ते रहे। आखिर उन्होंने अपने मन मे कोई कार्रवाई करने का निश्चय किया और चीठी बन्द कर जरूरी कामों से निपटने चले गये।

आठ बजने के कुछ पहले ही सब तरह से फारिग हो बटुकचन्द अपनी मोटर मे आ बैठे और शोफर से बोले, "कलेक्टर साहब के बंगले पर चलो।" यह कहते हुए उन्होंने अपने चारो तरफ गौर की निगाह डाली। उनके चारो तरफ़ उनके नौकर चाकर ही थे, कही कोई गैर आदमी नजर नही आ रहा था।

मोटर तेजी से रवाना हुई और पन्द्रह मिनट से कुछ कम ही देर मे कलेक्टर साहब के बंगले के फाटक पर पहुँच गई। बटुकचन्द उतरे और बंगले के पास पहुँचे। सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे कि चपरासी ने आकर लम्बी सलाम की। उन्होने सलाम कबूल करते हुए कहा, "बड़ा ही जरूरी काम है, साहब क्या कर रहे है?" चपरासी बोला, "मै अभी देखता हूँ, हुजूर तशरीफ रक्खे।" बटुकचन्द बारामदे मे रक्खी कुरसियो मे से एक पर बैठ गये और बार बार घडी की तरफ जो सामने ही टंगी थी इस तरह देखने लगे मानों उन्हे बहुत थोड़े वक्त मे कई काम निपटाने है।

यकायक एक प्यादा उनके सामने आ खडा हुआ। उसके हाथ मे एक लाल लिफाफा था जिसे उसने बटुकचन्द की तरफ बढ़ाया और कहा, "हुजूर को देने के लिये उस आदमी ने दिया है।" लाल लिफाफा देखते ही न जाने क्यो बटुकचन्द का कलेजा काप गया। उन्होने चौक कर उस तरफ देखा जिधर उस प्यादे ने बताया था। फाटक के पास खडा एक आदमी दिखाई पड़ा जिसने उन्हे अपनी तरफ देखता पा हाथ उठा कर चार उँगलियाँ दिखाई और तब उँगली होंठ पर रख चुप रहने का इशारा करने बाद एक तरफ़ को चला गया।

वटुकचन्द सिहर उठे और कांपते हाथों से उन्होंने लिफाफा खोला। लाल कागज पर लिखो एक छोटी चीठी थी जिसका मजमून यह था :—

"खवरदार।

"हम लोग तुम्हारे एक एक कदम पर निगाह रखते है यह तो इस चीठी से ही तुम्हे मालूम हो गया। अव होशियार करे देते है कि अगर तुमने किसी से हम लोगो के वारे मे कुछ भी कहा तो तुम्हारी खैरियत नही है। तुम्हारा लड़का तो जान से मार ही दिया जावेगा—और भी एक ऐसी कारवाई की जायगी जिससे तुम कही के न रहोगे। वस होशियार! 'कपास के फूल' की वात याद करो और सम्हल जाओ!।

"अगर कल रात को वारह वजे हमे एक लाख रुपया न मिल जायगा तो तुम्हारी खैर नही।!"

चीठी के नीचे उसी प्रकार का खून के धव्वे जैसे दाग और वीच मे चार उंगलियो का निशान था जैसा पहिली चीठी मे था।

पढ़ कर वटुकचन्द का चेहरा पीला पड़ गया। न जाने चीठी में किस गुप्त भेद की तरफ इशारा किया गया था कि वे एक दम कांप उठे। इसके वाद उनकी हिम्मत न पडी कि उस जगह ठहरें या साहव से वह वात कहे जिसके लिये यहाँ आये थे। उठ खडे हुये और वंगले की सीढ़ियाँ उतरने लगे।

इसी समय चपरासी ने वहाँ पहुँच कर कहा, "यह क्या। हुजूर जा रहे है !"

वटुकचन्द रुक गये और वोले, "क्यो, साहव का पता मिला? क्या कर रहे हैं?"

चपरासी वोला, "कुछ वहुत ही जरुरी काम कर रहे है, मुझे आपको सलाम देने को कहा है और कहा है कि मैं इस वक्त वड़ा ही 'विजी' हूं, किसी और मौके पर तशरीफ लावे तो वेहतर हो।"

यदि और कोई मौका होता तो शायद वटुकचन्द इस वात से अपनी वडी भारी वेइज्जती समझते और साहव के सर्शन किए विना कभी न टलते पर इस समय उन्हे यह सुन सन्तोप ही हुआ। वे वोले, "कोई हर्ज नही, कोई जरुरी काम न था, फिर कभी मिल लूंगा!" चपरासी की लम्वी सलाम लेते हुए वे फाटक की तरफ वढे, चपरासी भी यह कहता हुआ भीतर लौट गया, "का

जाने दुई अच्छर में का रक्खल हौ कि नाही मिलत त दौड़त चलल आवलन और मिले वदे साहवन क पैर चाटत रहलन्! आज भला साहव ऐसन कौनों से मिलिहे जिनके रायवहादुरी नाही मिलल हौ !!"

चपरासी की टिप्पणियो से विल्कुल वेखवर डरे और घवराये हुए व्रटुकचन्द अपनी मोटर पर सवार हुए और शोफर को घर चलने का इशारा किया।

[५]

पौ फट गई है परन्तु सूर्यदेव के आगमन की सूचना देने वाली लाली अभी आसमान पर फैली नही है।

ऐसे समय मे वावू वटुकचन्द अपने मकान के बाहर निकले। दरवाजे पर उनकी छोटी दो आदमियों के वैठने वाली मोटर खडी थी। वटुकचन्द उसके पास गये और ड्राइवर को उतर जाने का इशारा किया। जव वह उतर आया तो खुद ह्वील पर जा वैठे और उससे वोले, "तुम्हें चलने की जरूरत नही, मै अकेला ही जाऊँगा।" फट-फट की आवाज के साथ इन्जिन चला और झटके के साथ मोटर आगे वढ़ गई।

तेज चाल से बटुकचन्द ने शहर की सड़के पार कीं और तव उस सड़क पर घूम गए जो सारनाथ से होती हुई गाजीपुर की तरफ जाती है। बनारस से गाजी-पुर करीव चालीस मील पड़ता है और वहाँ जाने की सड़क वहुत ही रमणीक स्थानों से होती हुई कई जगह गंगाजी के इतने पास से गुजरती है कि सड़क पर से उनका दर्शन होता है। कई पुराने जमाने की इमारतें और ऐतिहासिक खंडहर इस सड़क पर पड़ते हैं। वटुकचन्द ने मोटर को पूरी तेजी से छोड़ दिया और वह घण्टे में साठ मील की तेजी से दौड़ने लगी।

एक घण्टे के कुछ अन्दर ही वटुकचन्द गाजीपुर के पास जा पहुँचे। दूर से वहाँ की अफीम की कोठी का ऊँचा वुर्ज देख कर उन्होंने मोटर की चाल कम की और तव उस सड़क पर घूम गए जो मुख्य सडक से कट कर अफीम के कारखाने को जाती है। गंगा से कुछ ही हट कर तीन चार खूवसूरत और आलीशान वंगले वने हुए थे जिनमे से एक के आगे उन्होने अपनी मोटर रोकी और फाटक खोल भीतर घुसे।

एक नवयुवती मेम अपने दो सुन्दर वच्चो के साथ वंगले के सामने वाले

रमने पर टहल रही थी। मोटर की आवाज सुन कर वह चौंकी और जब वट्टुक-चन्द को अपनी तरफ आते देखा तो उनकी तरफ ताज्जुब के साथ बढ़ी। जरा आगे बढ़ने पर दोनो ने एक दूसरे को पहिचान लिया। वट्टुचकन्द ने बडे तपाक के साथ मेम से हाथ मिलाया और मेम ने उनसे पूछा, "हलो राय साहब, इस वक्त इतना सुबह सुबह कहाँ ?"

वट्टुकचन्द दोनो लडको को प्यार करने बाद बोले, "किंग साहब से कुछ बहुत ही जरूरी बात करनी है, वे उठे है ?"

मिसेज किंग बोली—"हा हा, वे अपने सुबह के कमरे मे कुछ काम रहे है, मैं अभी उनको आपके आने की खबर करती हूँ।"

मेम साहब ने लडकों को खेलने को कहा और आप बंगले की तरफ बढ़ी। वट्टुकचन्द उनके साथ हो लिये। बंगले के पास पहुचते ही किंग साहब से उनकी मुलाकात हुई जो सीढिया उतर रहे थे। वट्टुकचन्द को देखते ही वे आगे बढ आये और प्रेम के साथ हाथ मिला कर बोले, "इतना सुबह आज आप कहा !" वट्टुक-चन्द ने कहा, "मैं एक बहुत बुरी मुसीबत मे पड कर आपसे सलाह लेने आया हूँ।" मि० किंग ने चौंक कर कहा, "कैसी मुसीबत ?" वट्टुकचन्द बोले, "भीतर चलिये तो सुनाऊँ।" किंग उनका हाथ पकडे भीतर चले गये। मौका समझ मिसेज किंग बाहर ही रह गईं।

अपने प्राइवेट कमरे मे ले जा कर किंग ने वट्टुकचन्द को एक कुरसी पर बैठाया और आप सामने बैठ कर पूछा, "हां अब कहिये क्या मामला है ?"

वट्टुकचन्द ने अपने चारो तरफ गहरी निगाह डाली और तब जेब से वह पहिली चीठी जो उन्होने दुष्टों की तरफ से पाई थी निकाल कर उनके सामने रख दी। किंग ने उसे उठा लिया और चुपचाप पढने लगे। ज्यों-ज्यों चीठी पढते जाते थे उनके चेहरे से घबडाहट और परेशानी प्रकट होती जाती थी और जब समूची चीठी खतम कर वे उस जगह पहुचे जहा दस्तखत की जगह पर लाल धब्बा बना हुआ था तो एक दम उछल कर बोले, "ओफ ओह! यह तो उन्ही शैतानों की कार्रवाई है जिन्होंने अपने को 'रक्त मंडल' के नाम से मशहूर कर रक्खा है !"

वट्टुकचन्द ने ताज्जुब मे पूछा, "रक्त-मंडल क्या ?" किंग साहब बोले "वह खूनिया और शैतानो की एक कुमेटी है जिसका काम ही रईसो और भले-

मानुसों को तकलीफ पहुचाना और सरकार को तंग करना है। उसके मुखिया कोई चार आदमी है जो अपने को 'भयानक चार' कहते है। उनकी कम्बख्त निगाहे जिस पर पडती है उसकी खैरियत नही।"

वटुकचन्द काँप कर वोले, "आपको इनका हाल कैसे मालूम ?" किग साहव वोले, "मै जव वनारस का पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट था तभी मुझे इस मामले की खवर लगी थी और इधर तो मै खुद इनके फेर मे पड़ गया हूँ। यह देखिये आज चार दिन हुआ यह चीठी मुझे मिली है।"

कह कर किग साहव ने एक चीठी दराज मे से निकाल कर वटुकचन्द को दिखाई। वटुकचन्द ने उसे पढ़ा, यह लिखा हुआ था :—

"मिस्टर किग,

"हमारी संस्था ने यह निश्चय किया है कि इस देश से सव तरह के नशे शराव गांजा अफीम आदि-आदि का नाम निशान मिटा दिया जाय जिसने देशवासियों की आतमा देह और मन को चौपट कर उन्हे गुलामी की वेड़ी पहिना रक्खी है।

"इस लिए तुम्हे खवर दी जाती है कि अगर आज से पन्द्रह दिन के भीतर तुम अपनी अफीम की कोठी बन्द कर के सव तैयार अफीम बर्बाद न कर डालोगे तो तुम्हारा और तुम्हारी कोठी का नाम निशान मिटा दिया जायगा। खबरदार खवरदार खवरदार !!"

इस चीठी के नीचे भी उसी प्रकार का खून के धव्वे की तरह गोल दाग और वीच में चार उँगलियों का निशान था।

वटुकचन्द वोले—"खैर आप तो सरकारी नौकर हैं और सरकार आपकी मदद करेगी मगर मैं गरीब तो वेमौत मर रहा हूं। किसी से फरियाद भी करने नही पाता। कल कलेक्टर साहव से मिलने गया था, सोचा था इस वारे मे उनसे मदद लूँगा, मगर वहां भी ये कम्वख्त पहुँच ही गये !"

इतना कह कर वटुकचन्द ने कल का सव हाल सुनाया और वह दूसरी चीठी भी आगे रख दी। किग साहव सब हाल सुन वोले, "इन कम्वख्तो का जाल कुछ इस तरह चारो तरफ फैला हुआ है कि कोई वात इनसे छिपा कर करना वहुत मुश्किल है।"

वटुक०। मगर अव मेरी जान तो किसी तरह छुड़ाइये ! कोई ऐसी तर्कीव

निकालिये कि मेरा रुपया भी न बर्बाद हो और मेरा बेटा भी वापस मिले।

किंग साहब देर तक कुछ सोचने के बाद बोले—"अच्छा मुझे एक तर्कीब सूझी है। बेईमानों के साथ बिना धोखेबाजी किये काम नहीं चलेगा। आप ऐसा करिये—"

दोनों में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगी। दिन दो घण्टा चढ चुका था जब बटुकचन्द किंग साहब से विदा हुए और अपने घर की तरफ लौटे।

[६]

रात आधी के लगभग जा चुकी है बाबू बटुकचन्द के पिसनहरिया वाले बागीचे में इस समय बिल्कुल सन्नाटा छाया हुआ है। माली चौकीदार और सिपाही सभी रात की पहिली नींद में गाफिल हैं। सिर्फ बीच वाली इमारत के सब से ऊपर के कमरे में दो आदमी एक टेबुल के पास बैठे हुए धीरे धीरे कुछ बातें कर रहे हैं। इनमें से एक तो बटुकचन्द हैं और दूसरे मिस्टर किंग। टेबुल पर एक लैम्प जल रहा है जिसकी रोशनी मद्धिम की हुई है। न जाने कब से ये लोग यहां बैठे हुए हैं परन्तु जिस समय घड़ी ने बारह बजाये उस समय किंग साहब ने एक अङ्गड़ाई ली और कहा—"रायसाहब, अब तैयार हो जाइये।"

राय बटुकचन्द ने टेबुल का दराज खोला। उसमें नोटों के दो थाक रक्खे हुए थे। बटुकचन्द ने दोनों को निकाला और गिना। हजार हजार के पचास पचास नोट थे, कुल एक लाख रुपये के।

नोटों को हाथ में लेते हुए एक बार बटुकचन्द का कलेजा काँप गया और उन्होंने डरे हुए स्वर में कहा, "देखिये किंग साहब, कहीं ऐसा न हो कि यह एक लाख रुपया भी चला जाय और मेरा बेटा भी हाथ न आवे!"

"किंग साहब बोले, "नहीं ऐसा कभी न होगा, मेरे नौकर बड़े ही होशियार हैं और उनके काम में किसी तरह की भूल नहीं होगी। आप बेफिक्र रहिये, मगर इतना जरूर याद रखियेगा कि जैसे ही आपका लड़का आपको मिले वैसे ही वह इशारा कीजियेगा और तब तुरन्त बागीचे के अन्दर आ फाटक बन्द कर लीजियेगा। अच्छा अब आप फाटक पर जाइये मैं भी अपनी जगह पर जाता हूं।"

बटुकचन्द उठ खड़े हुए, मगर उनका पैर काँप रहा था। किंग साहब

तो अपनी जेब से पिस्तौल निकाल और उसे खोल गौर से एक बार देखने बाद दर्वाजा खोल न जाने कहाँ चले गये, पर बटुकचन्द डरते और काँपते हुए मकान के नीचे उतरे और बाग के फाटक पर पहुँचे। फाटक बन्द था और बगल के दाल'न में पहरेदार पड़ा घुर्राटे ले रहा था। आहिस्ते से बटुकचन्द ने फाटक की छोटी खिड़की खोली और बाहर सड़क पर निकल गये।

बटुकचन्द का यह बागीचा शहर के बाहर बड़े ही निर्जन और सूनसान स्थान में था। इसके चारो तरफ ऊँची चारदीवारी थी जिसे टप कर किसी का यकायक भीतर चले आना कठिन था, खास कर उसकी सडक की तरफ वाली दीवार तो बहुत ही ऊँची थी जिसमें सिर्फ यही एक फाटक था जिसके दोनों तरफ बनी हुई नौकरो के रहने की इमारतें तथा अस्तबल वगैरह दूर तक चली गई थीं मगर उसका फाटक बहुत आगे जा कर पड़ता था। इस तरह यहाँ की सड़क दो तरफ से कोई दो सौ गज तक ऊँची दीवारो से घिरी हुई थी।

बटुकचन्द फाटक के बाहर निकले। चारों तरफ घोर अन्धेरा था, हाथ को हाथ नही दिखाई देता था और तारों की रोशनी को ऊपर के पेड रोक रहे थे। फाटक के दोनों तरफ वाली लालटेनें भी बुझी हुई थी। डर से काँपते हुए बटुकचन्द अपने फाटक के सामने इधर से उधर टहलने लगे।

टहलते हुए मुश्किल से दस या पन्द्रह मिनट हुए होंगे कि किसी तरह की रोशनी की चमक बहुत दूर से उन्हे दिखाई पड़ी। वे चिहुँक उठे और साथ ही उनका हाथ सामने के जेब में गया जिसमें एक लाख रुपये के नोट रक्खे हुए थे जिसके नीचे उनका कलेजा जोर जोर से धड़ धड़ कर रहा था। वे थोडा आगे बढ कर देखने लगे और शीघ्र ही उन्हे मालूम हो गया कि वह एक साइकिल की रोशनी है जो कुछ तेजी से उसी तरफ आ रही है। वे फिर लौट कर अपने फाटक के पास हो गये और हाथ पीछे कर यह विश्वास कर लेने बाद कि खिड़की खुली हुई है और वे मौका पड़ने पर तुरत भीतर भाग जा सकते है अपने कलेजे को जोर से दबा कर उसी जगह खड़े हो गये।

देखते देखते साइकिल नजदीक पहुंची और तब रुक गई। बिजली बत्ती की तेज चमक उनके चेहरे और आसपास की चीजों पर पड़ी और तब कुछ देर इधर उधर दौड़ती रही, इसके बाद वह रोशनी बन्द हो गई और मानों यह

निश्चय कर लेने के वाद कि वहां पर सिवाय वटुकचन्द के और कोई नही है, साइकिल का सवार पुनः आगे वढ़ा। कुछ ही सेकेन्डो मे वह इनके पास आ पहुचा और साइकिल पर चढे ही चढे अपने पैर जमीन पर टेक खडा हो जाने वाद उसने कहा, "कौन खड़ा है, वटुकचन्द ?"

यह सवाल कुछ ऐसे रोव के साथ किया गया था कि खामखाह खुशामदी वटुकचन्द के मुंह से निकल गया, "जी हाँ, हजूर !" इसके साथ ही उन्होंने जुवान रोकी मगर उसी समय आदमी ने पुनः पूछा, "क्या इरादा है, रुपया लाए हो ?"

वटुकचन्द ने हाथ जोड काँपते काँपते कहा—"हुजूर, मैं गरीव....!" पर आदमी ने इनकी वात खतम न होने दी और डपट कर कहा, "वक वक मत करो ! हमे मालूम है कि आज ही तुमने एक लाख रुपये के नोट वंक से मँगवाये है। अगर तुम अपने लड़के को जिन्दा देखना चाहते हो तो रुपया हमारे हवाले करो नही तो उसकी लाश देखने के लिये तैयार हो जाओ।"

वटुकचन्द का मुंह खुला पर कोई जवाव उसके वाहर न निकल सका। एक गहरी सास लेकर, जो उनके कलेजे को फोड़ती हुई निकली थी, उन्होंने जेव में हाथ डाल और नाट के दोनों वंडल निकाल कर उस आदमी की तरफ वढ़ाये। उस आदमी ने वंडल ले लिए और साइकिल के लम्प की रोशनी मे उन्हे गौर से देखा। जिस समय वह हैन्डिल पर झुका हुआ नोटों की जाच कर रहा था उस समय लैंप की रोशनी पड़ने से वटुकचन्द ने देखा कि उस आदमी की पौशाक लाल रग की है यहाँ तक कि हाथों मे भी लाल दस्ताने चढ़े हुए है तथा चेहरे पर लाल नकाव पड़ी हुई है।

तेजी मगर कुछ लापरवाही के साथ उस आदमी ने नोटो को गिना और तव दोनों वंडलो को जेव के हवाले करते हुए कहा, "ठीक है, तुमने वुद्धिमानी की जो हम लोगो से दुश्मनी मोल नही ली। मैं जाता हूं, मेरे पोछे मेरी ही तरह के दस आदमी और आवेगे। जव वे सव निकल जाएं तो वारहवां आदमी जो इधर से जायगा तुम्हें तुम्हारा लड़का देता जायगा।"

[७]

किंग साहव इस फिक्र मे पडे थे कि जिस तरह हो ऐसा करना चाहिये कि वटुकचन्द का लडका भी मिल जाय, उनका रुपया भी न मारा जाय, और वे

दुष्ट लोग भी गिरफ्तार कर लिये जायं।

इसके लिये उन्होंने इन्तजाम भी वहुत अच्छा किया था। हम ऊपर लिख आये है कि वटुकचन्द के वागीचे के वाहर की सडक काफी लम्वाई तक दोनों तरफ से दो ऊंची दीवारो घिरी हुई थी। इन दीवारों के सवव से कोई आदमी जो इधर से जाने वाला हो, दो तीन सौ गज तक सिवाय आगे जाने या पीछे लौटने के और कही आ जा नही सकता था और किंग साहव ने इसी वात का लाभ उठाना चाहा था। उनके दो खास आदमियों की मातहती मे वीस होशियार और मजवूत आदमी वहुत पहिले से काम कर रहे थे। इस सड़क पर थोड़ी थोड़ी दूर पर ऊचे ऊंचे इमली सेमल आदि के पेड़ थे। इनमें से दस पेडों पर इस समय दस आदमी वन्दूकें लिये वैठे हुए थे और वाकी के दस आदमी हाथ में लोहे की पतली मगर मजवूत तारे जिनका एक एक सिरा उन्ही पेड़ो से वंधा था लिये पेड़ो की आड़ में छिपे खडे थे। किंग साहव का हुक्म था कि जिस समय मेरी सीटी एक दफे वजे उसी समय ये तार वाले आदमी दौड कर अपने ठीक सामने सड़क के दूसरी तरफ चले जायं और तार के दूसरे सिरो को सामने के पेड़ो से कस कर वांध दे। जिस समय सडक पर दस जगह इस तरह दस तारे वंध जाती उस समय घोड़ा मोटर साइकिल या पैदल किसी का भी अचानक एक तरफ से दूसरी तरफ निकल जाना कठिन था, क्योंकि अन्धेरे मे ये पतली तारें दिखती नही और भागने वाले इनसे लड़ कर जरूर चोट खाते जिससे उन्हें रुकना मजवूरी हो जाता। किंग साहव का दूसरा हुक्म था कि जिस समय उनकी सीटी दो वार वजे उसी समय पेड के सिपाही गोलियों की वाढ हवा में दागना शुरू करे, तथा जैसे ही वे तीसरी सीटी सुने पेड़ से उतर आवे और सव लोग मिल कर डाकुओ को गिरफ्तार कर ले। इस प्रकार सव तरह का पक्का इन्तजाम कर के किंग साहव स्वयम् भी एक पेड़ की आड में पिस्तौल लिये खड़े थे और उन्हे पूरा निश्चय था कि उनकी इस तर्कीव द्वारा डाकू जरूर पकड जायंगे।

किंग साहव का विश्वास था कि रक्त-मंडल वाले कम से कम दस पन्द्रह आदमी के गिरोह में जरूर होगे क्योंकि आखिर उन्हे भी तो अपने पकड़े जाने का अन्देशा होगा, मगर इसके विपरीत जव उन्होंने सिर्फ एक आदमी को मामूली तौर पर साइकिल पर चढे आते देखा तो उन्हें ताज्जुव हुआ। वे कुछ निश्चय

नही कर सके कि इसे रक्त-मडल का आदमी समझे या कोई मामूली मुसाफिर ? अस्तु वे इसी उधेड़वुन मे पडे रह गये और वह साइकिल सवार उनके सामने से गुजर गया। तब वे पेड की आड़ से वाहर निकले और फाटक की तरफ देखने लगे। वहुत गौर से देखने पर उन्हे मालूम हुआ कि उस आदमी ने वटुकचन्द से कुछ वाते की और वटुकचन्द ने उसे कुछ दिया। वे समझ गये कि जरूर यह कुछ वही मामला है मगर वे तव तक कुछ नही कर सकते थे जव तक कि वटुक-चन्द का लड़का उन्हे मिल न जाता और वे वंधा हुआ इशारा न करते क्योकि उन्हे यह अन्देशा तो था ही कि अगर वे जरा भी जल्दीवाजी कर गये तो ताज्जुव नही कि उस वेचारे लडके की जान चली जाय क्योकि अपने को फँसा देख कर रक्त-मंडल वाले, जो दया क्या चीज है इसे विल्कुल जानते तक नही, लडके को कदापि जीता न छोडेगे। इसी से वे ठीक ठीक कुछ निश्चय न कर सके और चुप-चाप खडे रह गए। वह आदमी आगे वढ गया और सडक पर अन्धेरा छा गया।

थोड़ी देर वाद एक दूसरा आदमी साइकिल पर सवार आता दिखाई पडा। किंग साहव होशियार हुए पर यह आदमी विना रुके या वटुकचन्द से कुछ वात किये आगे वढ़ गया। इसके कुछ देर वाद तीसरा आदमी आया और चला गया और तव इसी तरह कई आदमी साइकिल पर सवार आये और चले गये। अव किंग साहव घवराए और सोचने लगे कि आखिर यह मामला क्या है। उनकी समझ मे कुछ भी न आया और अन्त मे वे दीवार के साथ साथ आड़ आड होते हुए वटुकचन्द के पास जा पहुचे जो एक टक मूरत की तरह फाटक के सामने खडे हुए थे। किंग साहव ने उनकी कोहनी पकड कर हिलाई और धीरे से पूछा, "आखिर मामला क्या है ? रक्त-मंडल वालो ने तुमसे कुछ वातें की या नही ?"

वटुकचन्द ने धीरे और संक्षेप मे सव वातें कही और अन्त मे बोले, "उस पहिले आदमी के वाद नौ आदमी जा चुके है, एक और जाने वाद वारहवा जो आवेगा वह मेरे लड़के को लेता आवेगा।" किंग साहव ने सुन कर दात पीसा और कहा, "अफसोस—मेरा सव सोचा विचारा वेकार गया, खैर मैं उस वारहवें आदमी को गिरफ्तार करूँगा।" वटुकचन्द ने कहा, "खैर जो चाहिये कीजिये मगर मेरा लाख रुपया तो चला ही गया, अव इतना ख्याल रखियेगा कि लड़का जीता जागता मिल जाय तव जो कुछ होना हो सो हो !"

इसी समय ग्यारहवां आदमी सामने से गुजरा। किंग साहब होशियार हो गये, सीटी जेब से निकाल उन्होने हाथ में ले ली और इस फिक्र मे हुए कि बारहवा आदमी उधर से जाय और वे सीटा बजावें जिसके साथ ही सड़क तारों से घिर जाय और वह आदमी गिरफ्तार हो जाय।

यकायक कोई एक काली छोटी चीज सड़क पर दौड़ती आती हुई दिखाई पडी जो फाटक के सामने आकर रुक गई। मिस्टर किंग और बट्रुकचन्द ने गौर से देखा तो मालूम हुआ कि वह लड़को के घुमाने वाली एक छोटी हाथ-गाड़ी है जिसके अन्दर कोई बच्चा लेटा हुआ है। बट्रुकचन्द ने झुक कर देखा तो उन्ही का बच्चा था जो इस समय गहरी नीद में था। उन्होंने गाड़ी का हैंडिल पकड लिया तथा उसे घुमा कर फाटक के अन्दर ले चले, उस समय मालूम हुआ कि उसके साथ एक लम्बी रस्सी बँधी हुई थी जिसका दूसरा सिरा शायद आगे जाने वाले साइकिल सवार के हाथ मे था।

बट्रुकचन्द ने बाग के अन्दर के एक लम्प के नीचे जा कर अपने बच्चे को अच्छी तरह देखा और तब एक लम्बी साँस लेकर बोले, "किंग साहब, आपकी कारीगरी कुछ काम न आई और मेरा एक लाख रुपया चला ही गया! खैर मेरा बच्चा मुझे मिल गया, यही गनीमत है!!"

किंग साहब ने कहा, "मुझे बडा ही अफसोस है कि इतनी तर्कीब करने पर भी दुष्ट लोग निकल ही गये, मगर खैर, तुम्हे अपने रुपये जाने का अफसोस न करना चाहिये।"

बट्रुकचन्द ताज्जुब से बोले, "सो क्यों?"

किंग साहब ने कहा, "वे सब नोट जो तुमने उन्हें दिये एकदम रद्दी है, वे नकली नोट जाँच के लिये मेरे पास आये थे। मैंने तुम्हारी गैरहाजिरी मे तुम्हारे दोनों बंडल निकाल कर उन नकली नोटों के दो बंडल उस दराज में रख दिये थे। वे असली नोट तुम्हारे नीचे के बैठक वाले कमरे के टेबुल की दराज मे रक्खे हुए हैं जा कर ले लो।"

बट्रुकचन्द के मुँह से खुशी की एक किलकारी निकल गई, वे लड़के की गाडी दौड़ाते हुए अपने बैठक घर के सामने पहुँच और गाड़ी तथा लड़का नीचे ही छोड़ दौड़ कर सीढ़ियां चढने बाद कमरे में पहुँचे। पीछे पीछे किंग साहब भी पहुँचे।

वट्रुकचन्द ने रोशनी की। किंग साहब ने कहा, "वह बाईं तरफ वाला दराज खोलो।" बडी उत्कंठा के साथ वट्रुकचन्द ने दराज खोला, मगर भीतर कुछ भी न था। वट्रुकचन्द ने इधर उधर देख कर कहा, "कहाँ? इसमे तो कोई वंडल नही है !!"

ताज्जुब के साथ किंग साहब ने भी आगे बढ़ कर देखा मगर उस दराज मे नोट थे ही कहाँ जो दिखाई पड़ते! आश्चर्य मे डूब कर उन्होने कहा, "बड़ी विचित्र बात है! मैने अपने हाथ से दोनो वन्डल इसी जगह रक्खे थे !!"

इसी समय वट्रुकचन्द की निगाह लाल कागज के एक टुकड़े पर पड़ी जो उसी दराज मे पीछे की तरफ पड़ा हुआ था। काँपते हाथो से उन्होने उसे उठाया और खोल कर पढा। यह लिखा हुआ था :—

"रक्त-मडल ही के साथ चालाकी! यह नही सोचा कि तुम्हारे ऐसे नौसिखुओ को अभी हम लोग दस वरस तक चरा सकते है !!

"वट्रुकचन्द—तुम्हारा एक लाख रुपया तो गया ही, अब तुम अपने लड़के से भी हाथ धो वैठो! हाँ वाश तुम अगर दो लाख रुपया खर्चने पर तैयार हो जाओ तो शायद उसे पुनः पा जाओ !!

"किंग—तुमने नाहक ही इस मामले मे हाथ डाल वट्रुकचन्द का बुरा किया और हम लोगो से भी दुश्मनी खरीदी। तुम्हारी वीवी सुबह से गायब है, जाओ पहिले उसे खोजो!"

इसके नीचे रक्त-मंडल का लाल निशान था।

चीठी पढ़ कर वट्रुकचन्द के मुँह से चीख निकल गई। उन्होने कागज किंग साहब के आगे फेंक दिया और दौड कर उस गाड़ी के पास गये जिसमे उनका लड़का सोया हुआ था। लड़के को गाड़ी से उठाते ही सब कलई खुल गई—वह सिर्फ मोम का एक पुतला था जो रंग रंगा कर ठीक उनके लड़के की सूरत का बना दिया गया था। वट्रुकचन्द के मुँह से फिर एक चीख निकल गई। यह दोहरी चोट उनका परेशान दिमाग सह न सका। वे उसी जगह जमीन पर गिर गये और वेहोश हो गये।

—०—

सच्चा नाटक

[१]

राय बहादुर बाबू नकुलचन्द का बड़ा भारी बाग इस समय हजारों रोशनियों से जगमगा रहा है। बीच की आलीशान इमारत तो दिन की तरह चमक रही है।

बाग और इमारत मे सैकड़ों आदमियों की भीड़ इधर से उधर घूमती फिरती दिखाई दे रही है और बडे फाटक पर जिसके ऊपर रोशनी से 'स्वागतम्' लिखा हुआ है सैकडों सवारियों की लम्बी कतार जुट रही है। इसके बगल ही मे एक दूसरा इससे कुछ छोटा दर्वाजा है जिस पर कई औरतों का गरोह दिख रहा है। मर्दानी सवारियाँ इस बड़े फाटक पर उतरती हैं और जनानी उस दूसरे पर।

इस जगह के मालिक बाबू नकुलचन्द ने इस बार रायबहादुरी पाने की खुशी में आज अपने दोस्तों और मेहरबान अफसरो की दावत की है। केवल उन्हीं की नही बल्कि उनकी औरतों और बिरादरी को औरतों को भी न्योता दिया गया है। नकुलचन्द की स्त्री की दौड़धूप और खुशामद की बदौलत शहर से दूर होने पर भी औरतो की काफी तायदाद आ रही है जिन्हे वे खुद 'रिसीव' कर रही हैं और जो उस दूसरे दर्वाजे की राह अलग ही अलग भीतर के जनाने महल में पहुँच रही है, जहाँ उनके लिये तरह तरह के खातिर तवाजो के सामान जुटाये गये हैं। मर्दों के बैठने के लिये बाग के बीच वाले लान पर एक बहुत बड़ा शामियाना टाँगा गया है जिसके नीचे गाने बजाने और भोज की तैयारियां हो रही हैं। चारो तरफ बडी चहलपहल दौड़ धूप और गुलशोर मचा हुआ है जिसके बीच बाबू नकुलचन्द फिरकी की तरह व्यस्त और परेशान घूम रहे है।

चारो तरफ जगह जगह लगे हुए और रोशनी से जगमगाते खूबसूरत छोटे वडे खेमों और शामियानो मे से एक मे हम अपने पाठको को ले चलते हैं। इसके बीचोबीच मे संगमर्मर का वडा टेबुल है जिस पर लेमोनेड सोडा और अन्य साथिनी वोतलें दिख रही है तथा चारो तरफ की कई कुरसियो मे से एक पर वनारस के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मि० गिवसन, दूसरी पर रायसाहव वावू वटुकचन्द, तीसरी पर फौज के कप्तान मि० पैनकेक और वाकी तीन चार कुरसियो पर और कई अफसर और रईस वैठे हुए वातें कर रहे है। और तो सभी खुश हैं मगर वावू वटुकचन्द के चेहरे पर अफसोस की काली छाया पडी हुई दिखाई पडती है।

अचानक दरवाजे पर छाया पडी और एक नया आदमी भीतर आया। यह गाजीपुर की अफीम कोठी के मैनेजर मि० किंग थे। "ओहो, आप लोग यहाँ वैठे है!" कहते हुए उन्होंने सभों से हाथ मिलाया और तव वटुकचन्द के वगल वाली कुरसी पर वैठ गये। उसी समय उनकी निगाह वटुकचन्द के उदास चेहरे पर पडी और उन्होंने झुक कर धीरे से कहा, "क्यो वटुकचन्द, तुम इतने उदास क्यों हो?"

वटुकचन्द ने किंग की तरफ विचित्र निगाह डाल कर कहा, "आप तो जानते ही हैं, किंग साहव !!"

किंग०। वही अपने लडके के गम में?

वटुकचन्द ने सिर हिलाया। किंग साहव ने पुनः कहा, "क्या उसका अभी तक कोई पता नही लगा? खैर लगेहोगा इसमें इतना गमगीन होने की क्या वात है? मुझे देखो, मेरी औरत तभी से गायव है, मुझे तुमसे कहीं ज्यादा फिक है मगर मैं इस लिये चारो तरफ अफसोस की वारिश करता हुआ तो नही फिर रहा हूँ?"

वटुक०। क्या आपकी पत्नी का भी अभी तक पता नही लगा?

किंग०। नहीं विलकुल नही, मगर उम्मीद है कि जल्दी ही लग जायगा। गिवसन साहव वहुत कोशिश कर रहे हैं और मैं भी पूरा जोर लगा रहा हूँ।

वटुक०। (कुछ ताने के साथ) ठीक है मगर दूसरों के लिये तो उतना जोर नही लगाया जा सकता न! मेरा लडका चाहे मरे चाहे जीये इसकी किसी को परवाह ही क्या है!!

किंग साहव ने यह सुन तेजी से वटुकचन्द की तरफ देखा और कुछ कहना ही चाहते थे कि उसी समय खेमे के दरवाजे पर कलेक्टर साहव दिखाई पड़े

जिनको बाबू नकुलचन्द बड़ी तवज्जह और खातिर से बार बार झुकते और सलामे करते हुए अपने साथ ला रहे थे। उन्हे देखते ही सब लोग खड़बड़ा कर उठ खडे हुए। कलेक्टर साहब ने हँसते हुए सब से हाथ मिलाया और दो चार बातें की, इसके बाद मौका देख नकुलचन्द ने नम्रता से कहा, "अगर हुजूर उधर तशरीफ ले चलें तो खेल शुरू कर दिया जाय।"

कलेक्टर साहब चलने को तैयार हो गये और नकुलचन्द इन सभो को लिये हुए उस आलीशान शामियाने की तरफ बढ़े जिसमे एक छोटे थियेटर का स्टेज खड़ा किया गया था तथा जिसके बगल वाले दूसरे शामियाने में दावत का इन्तजाम था। थियेटर वाला शामियाना महल के साथ सटा हुआ था और स्टेज इस तरह खड़ा किया गया था कि महल की खिड़कियो में से, जिन पर चिकें पड़ी हुई थी, औरतें भी बखूबी सब तमाशा देख सकती थी। कलेक्टर साहब के साथ साथ इधर उधर फैले हुए सब आदमी भी उसी तरफ इकट्ठे होने लगे और फाटक तथा बाग मे एक तरह से सन्नाटा हो गया, केवल नौकर सिपाही आदि ही इधर उधर दिखाई पड़ते रहे।

[२]

प्रधान मेहमान (कलेक्टर) के कुर्सी पर बैठते ही थियेटर का पर्दा उठा और खेल शुरू हो गया।

यद्यपि स्टेज छोटा था पर सीन सीनरी सजावट और पौशाकें इतनी तड़क भड़क की थी और ऐक्टरों की इतनी बहुतायत थी कि खेल ने तुरन्त सभो का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर लिया और थोड़ी ही देर बाद पूरी मजलिस खेल देखने मे मशगूल हो गई।

कोई पन्द्रह मिनट तक तमाशा होने बाद पहिला ड्राप-सीन हुआ। लोगो ने थपोड़ी की आवाज से जगह गुंजा दी और कलेक्टर साहब ने झुक कर अपने मेजबान से कहा, "ये लोग ऐक्टिग तो बहुत अच्छी कर रहे है, क्या इन्हे कहीं बाहर से आपने बुलाया है?" नकुलचन्द बोले, "जी हाँ हुजूर! आज कोई दस बारह दिन हुआ इनका मैनेजर मेरे पास आया और कहने लगा कि 'मैने नई कम्पनी अभी तैयार की है जिसका कोई खेल अभी तक कही नही हुआ। उसकी इच्छा थी कि मै कम्पनी की कुछ मदद करूँ, मुझे भी आज के लिए किसी शगल

की जरूरत थी, अस्तु मदद का वादा किया और बातचीत कर आज के लिये ठीक कर लिया। मगर इनकी सीन सीनरी सजावट और ऐक्टिंग देख कर तो विश्वास होता है कि ये लोग जल्दी तरक्की कर जायंगे।" कलेक्टर साहब बोले, "बेशक यही बात मालूम होती है। अगरचे खेल की बातचीत का पूरा मतलब मैं नही समझ सकता हूं फिर भी उठने की तबीयत नही करती है। आपकी तजवीज बहुत अच्छी हुई इसमें शक नही रायबहादुर साहब।"

तारीफ सुनते ही बाबू नकुलचन्द तो फूल कर कुप्पा हो गये और आपने एक लम्बी सलाम अदा की जिसे देख साहब ने मुस्कुरा कर दूसरी तरफ मुंह फेर लिया। इतने ही मे घन्टी बजी और लोग पुनः खेल की तरफ आकर्षित हुए। इसी समय थियेटर का मैनेजर एक पात्र के रूप में पर्दे के सामने आया और सलाम करके बोला, "साहिबान मजलिस! इस दूसरे ड्राप मे आप लोगो को आग लगने का एक दृश्य दिखाया जायेगा जिसे हम लोगो ने बड़ी मेहनत से तैयार किया है। इसके लिये हम लोगो ने राय बहादुर साहब के महल का एक हिस्सा दखल किया है क्योकि स्टेज पर आग लगने का सीन दिखाने से खतरा हो सकता था। गुजारिश यही है कि खिड़कियो मे से आग की लपटें निकलते देख और चीखने चिल्लाने की आवाजें सुन कर आप लोग बिल्कुल न घबड़ावें क्योकि यह सब कुछ बनावटी होगा और सीन हर वक्त हम लोगों के काबू मे रहेगा।"

यह कह पुनः सलाम कर वह साइड में चला गया और थियेटर का पर्दा उठ कर एक होटल के 'डाइनिंग-हाल' का दृश्य दिखाई पड़ा। बहुत से लोग छोटे छोटे टेबुलो के चारो तरफ बैठे खा पी रहे थे। महल से सटे हुए हिस्से की तरफ एक ऊँची बारहदरी सी बनाई गई थी जिसमे गाने बजाने वाले थे तथा जिसमे होटल का पिछला हिस्सा दरसाया गया था। खेल यह दिखाया जा रहा था कि अमीरों के एक होटल मे रात के वक्त लोग खा पी रहे थे जब डाकुओ ने यकायक हमला किया और लोगों को लूट लेना चाहा, अस्तु देखते ही देखते यकायक चारो तरफ से बंदूकों और पिस्तौलो की आवाजें आने लगी और बहुत से भयानक सूरत वाले आदमियों ने आकर होटल मे बैठे हुए आदमियो को डराना शुरू किया। होटल के बाकी मेहमान तो डर कर खडे हो गये पर एक कप्तान ने जिसके साथ कुछ फौजी सिपाही भी थे और जो वही भोजन कर रहा था डाकुओं का

मुकावला किया और दोनो तरफ से पिस्तौलें चलने लगी। डाकुओं को मुकावला होते देख गुस्सा आ गया। उनके दो दल हो गये, एक से तो सिपाहियों तथा उन अन्य लोगों का मुकाबला होने लगा जिनमें उस कप्तान तथा उसके सिपाहियों की हिम्मत ने थोड़ी हिम्मत ला दी थी और दूसरा दल होटल में चारो तरफ आग लगाने लगा। देखते देखते वहां इतना शोरगुल चीख चिल्लाहट और खूनखरावा मचने लगा कि नर्क का दृश्य मालूम होने लगा। इसी समय दो तीन डाकू हाथों में जलती हुई मशालें लिए वारहदरी में घुसते दिखाई पडे और इसके साथ ही उधर भी आग लग गई। इसी समय किसी ने होटल की विजली की रोशनी वुझा दी और अव अंधेरे में से चीख चिल्लाहट और पिस्तौलों की आवाजें सुनाई देने तथा आग की लपटें दिखाई पडने लगीं। वडा भयानक हो-हल्ला मच गया जो इतना सजीव मालूम होता था कि अगर मैनेजर पहिले ही से आकर दर्शकों को खवरदार न कर दिये होता तो शायद लोग यही समझ वैठते कि सचमुच ही कोई भयानक दुर्घटना मच रही है। थोड़ी देर वाद स्टेज पर तो कुछ शान्ति हो गई मगर होटल के पिछले हिस्से अर्थात् महल के अन्दर से शोर-गुल और चीख चिल्लाहट की आवाजें आती ही रही जिनके साथ मिले हुए तरह तरह के धड़ाके तथा खिड़कियों में से निकली हुई आग की लपटें वता रही थी कि डाकू लोग अन्दर घुस कर उपद्रव मचा रहे है।

कोई पन्द्रह मिनट तक यही सब कुछ होता रहा और तब यकायक स्टेज पर पुनः रोशनी हो गई। मालूम हुआ कि घुड़सवार तथा पैदल पुलिस आग बुझाने वाली दमकल के साथ आ मौजूद हुई है। पुलिस ने होटल को चारो तरफ से घेर लिया और सीढ़ियाँ लगा लगा कर खिड़कियों की राह भीतर घुसने लगी तथा दमकल आग वुझाने लगी। यह सव कुछ इतना ठीक और दुरुस्त हो रहा था कि दर्शक लोग मुश्किल से विश्वास कर सकते थे कि वे एक भयानक दृश्य नही देख रहे है वल्कि नाटक का एक सीन देख रहे हैं। खिडकियों की राह असवाव का फेंका जाना, आदमियो का कूदना, पुलिस का पीछा करना आदि आदि विल्कुल स्वाभाविक सा मालूम होता था। धीरे धीरे आग कव्जे मे आ गई, शोरगुल भी कम हो गया और अपेक्षा कृत शान्ति के वीच मे होटल के भीतर से कोई आठ दस डाकू हथकड़ी वेड़ी से जकड़ निकाले गये जिनके पीछे पीछे उनके लूटे हुए सामान

को उठाये कुछ गैर लोग और आगे पीछे पुलिस थी दर्शको की थपोड़ी की आवाज के बीच मे पुलिस इन डाकुओ का पकड ले गई और मानो दर्शको की पसन्द के लिये उन्हे धन्यवाद देने के लिये पुलिस का सार्जण्ट दर्शको को एक लम्वी सलाम करता गया। स्टेज पर एकदम सन्नाटा हो गया तथा पर्दा गिर गया।

कलेक्टर साहब ने माथे पर हाथ फेरते फेरते सुपरिन्टेन्डेट साहब की तरफ देख अंग्रेजी मे कहा, "इन लोगो की ऐक्टिग हैरतअंगेज है! सचमुच मालूम होता था मानो हम लोग कोई भयानक दुर्घटना देख रहे है! गजब का काम इन इन लोगों ने किया है !!"

सुपरिन्टेन्डेट साहब ने कहा, "वेशक ऐसी ही बात है। मैने एक दफा कलकत्ते मे आग लगते हुए देखा था। ठीक वही दृश्य था जो आज इस जगह दिखाई पडा!"

मिस्टर किग जो उनके वगल मे वैठे हुए थे बोल उठे, "ठीक है मगर अव स्टेज ऐसा खाली क्यो पड़ा हुआ है? इतनी देर तक खाली पर्दा पड़ा रहना तो अच्छी ऐक्टिग नही कहला सकती!"

इतने ही मे मिस्टर गिबसन ने ताज्जुव से कहा, "है! फाटक पर वे कौन लोग दिखाई पड़ रहे है! वे ही कैदी और सिपाही आदि तो मालूम होते है जो अभी यहां स्टेज पर से गए है!"

सब लोग उसी तरफ देखने लगे और कइयो के मुंह से निकला, "वेशक वे ही तो मालूम होते हैं! मगर ये स्टेज छोड़ कर बाग के बाहर क्यो जा रहे हैं!!"

कई वोल उठे, "स्टेज पर तो ऐसा सन्नाटा है मानो यहां कोई आदमी ही नही है। आखिर यह सब मामला क्या है?"

तरह तरह की ताज्जुब की वाते लोग करने लगे मगर कुछ निश्चय नही हो सका कि यह सब क्या हो रहा है। कैदी तथा सिपाही लोग फाटक पार करके वागीचे के वाहर हो गये पर स्टेज पर से कोई आहट न मिली। दर्शक लोग ताज्जुव से एक दूसरे का मुँह देखने लगे। आखिर नकुलचन्द से न रहा गया वे और अपनी कुर्सी पर से उठ कर स्टेज पर चढ उस पर्दे के पीछे पहुँचे जो आग और खून-खरावे के दृश्य पर गिरा दिया गया था।

यकायक उनके जोर से चीखने और तब एक 'हाय' करके धमाके के साथ जमीन पर गिरने की आवाज सुनाई पड़ी जिसे सुनते ही बहुत से आदमी "क्या हुआ ! क्या हुआ !!" कहते हुए लपक कर उनके पास पहुँचे। देखा कि टूटी फूटी कुर्सियो और सन्दूको के ढेर के बीच में बाबू नकुलचन्द बेहोश पडे हुए है और उनके हाथ मे लाल कागज का क टुकडा दबा हुआ है। कुछ लोग उन्हे होश में लाने की फिक्र करने लगे मगर बाबू बटुकचन्द ने आगे बढ कर हाथ से पुर्जा खींच लिया ओर उसे पढ़ा, पढते ही उनके मुँह से भी चीख निकल गई और वे भी बद-हवासो की तरह इधर उधर देखने लगे। जब कलेक्टर साहब ने उनके पास जाकर पूछा, "क्या हुआ बटुकचन्द ! इस पुर्जे मे क्या है ?" तो उन्हे होश हुआ और उन्होने पुर्जा साहब की तरफ बढाया। कलेक्टर साहब ने पुर्जा पढा, लिखा था—

"रक्त-मंडल ने एक बडा भारी काम अपने सिर पर उठाया है, स्वदेश को जुलमियों के पंजे से छुडाना। उसके लिए सब से बडी जरूरत रुपये की है, मगर अफसोस कि जिनके पास रुपये है वे इस काम के लिये खर्च करने को तैयार नही हैं। लाचार होकर हमे जबर्दस्ती करनी पडती है और जिस तरह, जहाँ से, और जैसे मिलता है, रुपया लेना पड़ता है।

"आज का अच्छा मौका हम लोग किसी तरह छोड़ नही सके। महल में जो औरतें थी उनके जेवर हम ले जा रहे है। रायबहादुर नकुलचन्द को रायबहादुरी मिली है, इस खुशी में उन्हे सब से अधिक देना चाहिये, अस्तु हम उनका वह खजाना भी लेते जा रहे है जो महल के तहखाने मे बन्द था।"

इतना ही उस चीठी का मजमून था और उसके नीचे एक बडा सा लाल धब्बा पडा हुआ था जो खून की तरह मालूम होता था और जिसके बीच में चार उँगलियो के निशान पडे हुए थे।

इस चीठी ने थोडी देर के लिये कलेक्टर साहब के भी होश गुम कर दिये मगर उन्होने बहुत जल्द अपने को सम्हाला और सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब से कुछ बाते करके अन्दर महल की तरफ बढे। बाग भर के सिपाही और सभी नौकर चाकर मामला गडबड देख वहाँ आ जुटे थे तथा बहुत से मेहमान भी उनके साथ साथ अन्दर चले मगर साहब ने अधिकांश को महल के दर्वाजे पर ही रोक दिया और केवल मुख्य मुख्य आठ दस आदमी भीतर घुसे।

महल के अन्दर पहुँचते ही वहाँ अद्भुत दृश्य नजर आया। कई नौकर मज-दूरनियाँ जिनके हाथ पैर वंधे थे तथा मुंह मे लत्ते ठूँसे हुए थे चौक मे खम्भो के साथ वँधे हुए थे तथा एक वड़ी कोठड़ी के अन्दर वहुत सी औरते वदहवास पड़ी हुई थी। कुछ औरते अव जरा जरा होश मे आ रही थी तथा कुछ एक दूसरे कमरे के अन्दर वन्द रो रही थी। नकुलचन्द के खजाने वाले तहखाने का मजवूत दर्वाजा टूटा पड़ा था और वहुत से सन्दूक टूटे फूटे इधर उधर विखरे हुए थे। चारो तरफ तरह तरह के टूटे फूटे और अधजले सामान फैले थे जिनसे मालूम होता था कि लुटेरो ने पूरी तरह लूट-पाट मचाई है।

कलेक्टर साहव ने उन नौकर मजदूरनियो को खोलने का हुक्म दिया और जव वे सव छूटे तो उनसे सव हाल पूछा। जो कुछ उनकी घवड़ाई और डरी हुई वातों से मालूम हुआ वह यह था कि जव थियेटर मे लूट मार और आग का दृश्य दिखाया जा रहा था तो सभी मेहमान तथा घर की औरतें इसी तरफ आकर तमाशा देखने लगी थी। उसी समय कई आदमी हाथ मे मशालें लिए खिड़कियो की राह महल मे आ घुमे। हम लोग समझ रहे थे कि यह सव भी खेल ही हो रहा है इससे उन लोगो को रोका नही, और वे लोग वीच महल मे आ पहुँचे जहाँ उन्होने किसी तरह का मसाला जलाया जिससे वहुत धूआ पैदा हुआ और सभो की तवीयत वेचैन हो गई तथा सिर घूमने लगा। इतने ही मे वन्दूक पिस्तौले लिये वे लोग घर मे औरतों के पास पहुँचे और धमका कर वोले, "चुपचाप अपने अपने जेवर उतार कर दे दो? जरा भी चूं-चपड़ किया तो गोली मार देगे!" वेचारी औरते क्या कर सकती थी? महल भर मे वे लोग फैले हुए थे, फिर भी दो एक ने जो शोर मचाया तो वेदर्दी के साथ उन हत्यारों ने उन्हे मार पीट कर सव जेवर उतार लिये। लाचार सभी ने अपने अपने जेवर उतार कर दे दिये। इस वीच मे जो धूआ चौक में हो रहा था उसने तवीयत एकदम खराव कर दी और सव लोग वेहोश हो गये, जो थोड़ा वहुत होश मे रह गये उनकी यह गति की गई जो आप देख रहे है। इसके वाद उन लोगों ने तहखाने का दर्वाजा तोड कर खजाना लूट लिया और फिर सव केसव चले गये।

यह विचित्र हाल सुनते ही सभो के होश दंग हो गये। इतने भयानक काम का वे लोग कभी गुमान भी नहीं कर सकते थे। यद्यपि लुटेरे लोगों को गये देर

हो गई थी पर फिर भी सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब ने बहुत से आदमियों और सिपाहियों के साथ बाग के बाहर निकल कर उनका पीछा किया और इधर कलेक्टर साहब ने अन्य लोगो की मदद से वेहोश औरतों को होश में लाने और उनका इजहार लेने का काम शुरू किया।

× × × ×

दौड़ धूप और खोज परेशानी में सुबह हो गई मगर उन लुटेरों का कुछ पता न लगा, हाँ यह सभों को मालूम हो गया कि महल मे जितनी औरतों के बदन पर जो कुछ भी जेवर था वह सब लूट लिया गया और उसके साथ साथ नकुलचन्द के खजाने मे भी एक पाई न छोड़ी गई। सब मिला कर कोई दस लाख रुपये की जमा लेकर रक्त-मंडल के सदस्य ऐसा गायब हुए कि सब लोग सिर पीटते ही रह गये और उनकी धूल का भी पता न चला। तमाशा देखने और सैर का मजा लेने जो औरतें यहाँ आई थी वे सभी लुटलुटा कर रोती कलपती अपने अपने घर लौटीं, मगर नकुलचन्द वहीं रह गये। उनका जो नुकसान हुआ था वह इतना भारी था कि वे पागल से हो गये थे और इस लायक नहीं रह गये थे कि अपनी जगह से हिलते।

बिजली की तरह यह खबर चारो तरफ दूर दूर तक फैल गई और देखते ही देखते महामारी की तरह 'रक्त-मंडल' का नाम चारो तरफ गूँज उठा, मगर कोई भी नहीं जानता था कि यह क्या बला है और इसके कार्यकर्ता कौन कौन से लोग हैं। हाँ इस मंडल का डर सभी और विशेष कर अमीरो के दिल में बैठ गया और सभो को अपनी अपनी जान और दौलत बचाने की फिक्र पड़ गई।

———

हाथियों की टक्कर

[१]

एक वहुत वडे वंगले के ड्राइंग-रूम मे जो विल्कुल अंगरेजी किते से सजा हुआ है हम अपने पाठको को ले चलते है। यह वँगला और वह आलीशान वाग जिसके अन्दर यह बना हुआ है आगरे के प्रसिद्ध विद्वान और पर्यटक पंडित गोपालशंकर का है जिन्होने कई लाख रुपये लगा कर इसे वनवाया है। इस समय गोपालशंकर अपने ड्राइंग-रूम मे वैठे हुए एक अखवार पढ रहे है तथा साथ ही साथ उस मोटे सिगार का धूआं भी फेक रहे है जो उनके ओठों के बीच दवा हुआ है।

अखवार पढते हुए यकायक गोपालशंकर* चिहुंक उठे और कुर्सी की पीठ का ढासना छोड़ तन कर वैठ गये। उन्होने कोई ऐसी खवर पढी थी जिसने उन्हे हैरत मे डाल दिया था, एक वार फिर उस समाचार को पढा, और तव नौकर को वुलाने वाली घंटो की तरफ हाथ बढाया ही था कि वाहर को बरसाती में एक मोटरकार के आकर खडे होने की आवाज सुनाई पडी। उन्होने घूम कर देखा और साथ ही न जाने क्यो उनका चेहर एक वार जरा देर के लिये लाल हो गया।

वड़े दरवाजे के शीशो की राह गोपालशंकर ने देखा कि मोटर मे से एक अंगरेज और एक लडकी उतरी और कमरे की तरफ वढी। इन्हे देखते ही गोपालशंकर भी फुर्ती से उठ खडे हुए और जव तक नौकर उन दोनो के आने की खवर करे उसके पहिले ही वे दर्वाजे पर पहुँच गये। दोनो को उन्होने वडे आदर से लिया और हाथ मिला कर कमरे के अन्दर ले आये।

---

* पंडित गोपालशकर का इसके पहिले का विचित्र हाल जानने के लिये 'लाल-पंजा' नामक उपन्यास देखिये।

ये आने वाले यहाँ के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल और उनकी लडकी मिस रोज थे जिनसे पंडित गोपालशंकर को वड़ी पुरानी जान पहिचान और वहुत गहरी दोस्ती थी। मिस्टर केमिल की वदली यहा से वनारस के लिये हो गई थी और ये दो ही एक दिन मे अपनी नई ड्यूटी पर जाने वाले थे। इस समय अपने दोस्तो से मुलाकात करने मिस्टर केमिल निकले थे परन्तु इनके चेहरे पर चिन्ता की एक झलक थी जिसे चतुर गोपालशंकर ने पहिली ही निगाह मे देख लिया और मामूली वातचीत के वाद कहा, "आज आपके चेहरे से कुछ वेचैनी जाहिर हो रही है, क्या कोई नई वात हुई ?"

केमिल साहव कुछ रुकते हुए वोले, "हाँ कुछ तो जरूर हुई है। गाजीपुर मे मेरे एक दोस्त मिस्टर किंग रहते है, उनकी एक चीठी आई है जिसमे उन्होने लिखा है कि आज कई दिनो से उनकी पत्नी मिसेज किंग का पता नही लग रहा है। उनको सन्देह है कि उसी रक्त-मंडल वाले शैतानों की यह कार्रवाई है जिन्होने अफीम की कोठी वन्द करने को लिखा था।

गोपाल०। वही रक्त-मंडल जिसने उस दिन वनारस के किसी रईस की महफिल लूट ली थी ?

केमिल०। हां वही। ये लोग वडे शैतान मालूम होते है और उनका जाल वहुत दूर दूर तक फैला जान पड़ता है।

गोपाल०। रक्त-मंडल! रक्त-मंडल! यह नाम कुछ परिचित सा मालूम पड़ता है। जरूर पहिले कभी इसे सुना है पर ख्याल नही पड़ता। खैर तो मिसेज किंग को गायव हुए क्या वहुत दिन हो गये है ?

केमिल०। हाँ, और उनके गायव होने के पहिले किंग को इस रक्त-मंडल की तरफ से धमकी की चीठियाँ मिल चुकी हैं जिसमे लिखा था कि अगर वे अफीम की कोठी वन्द न कर देंगे तो उनकी वीवी जान से मार दी जायेगी !!

गोपाल०। (गुस्से से) पाजी ! शैतान ! स्त्री पर जुल्म ! नीचता की हद है !!

गोपालशंकर की वात जो वहुत धीमे स्वर मे कही गई थी केमिल साहव ने नही सुनी अस्तु वे कहते गए --

केमिल०। जान पड़ता है कि यह रक्त-मंडल मुझे काफी तकलीफ देगा। पिछले कुछ ही दिनों में तीन घटनाएँ इसके सवव से वनारस में हो चुकी हैं।

मगर उम्मीद है कि अगर जरूरत पडी तो आप मुझे जरूर मदद देंगे।

गोपाल०। हाँहाँ, मैं हमेशा अपने भरसक आपकी मदद करने को तैयार रहूँगा, मगर अफसोस तो यही है कि मेरा यहां रहना अव ज्यादे दिनो के लिये नही है।

केमिल०। सो क्या ? आप क्या कही जा रहे है ?

गोपाल०। हा मैं एक सप्ताह के अन्दर हा हिमालय की सैर करने को रवाना हो जाऊंगा। मैं वहुत दिनों से वहाँ जाने का विचार कर रहा था पर मौका नही मिलता था। अव इस वार नैपाल दरवार की तरफ से मुझे वुलावा मिला है और मैं यह मौका छोड़ना नही चाहता।

रोज जो अव तक चुप वैठी थी वोल उठी, "नैपाल दरवार ने आपको क्यों वुलाया है ?"

गोपाल०। अपनी रिसायत के कुछ प्राचीन खंडहरों की जाच के लिए तथा यह भी देखने के लिये कि उनके राज्य में कही मिट्टी का तेल मिल सकता है या नही। हाँ खूव ख्याल आया, नैपाल दरवार ने दो चार विचित्र जानवर मेरे चिड़ियाखाने के लिये भेजे है। क्या आप उन्हे देखेंगी ?

रोज०। (खुशी से) हां जरूर!

तीनों आदमी उठ खडे हुए और कमरे के वाहर निकले। गोपालशंकर को चिड़िया और जानवर पालने का वहुत शौक था और उन्होंने वडे खर्च से वहुत दूर दूर के पशु पक्षी मंगा कर अपने वाग के चिड़ियाखाने में इकट्ठे किये थे। इसके लिए उन्होंने अपने वड़े वाग का एक काफी हिस्सा जिसमे नकली पहाड नाले तलाव आदि सभी कुछ थे अलग कर दिया था और उसे वहुत शौक से अपने दोस्तो को दिखाया करते थे। इस समय ये मिस्टर केमिल तथा मिस रोज को लिये उसी तरफ चले।

न जाने कव से एक आदमी कमरे के भीतर एक पर्दे की आड़ मे छिपा खडा था। इन लोगो के जाते ही वह आड़ से वाहर निकला और वीचोवीच मे रक्खे टेवुल के पास आया। उस आदमी के हाथ मे एक लिफाफा था जिसे उसने टेवुल पर रख दिया और उसके ऊपर एक छोटी खुखड़ी जो उसके कपडों मे छिपी हुई थी गाड दी। इसके वाद वह कमरे के दर्वाजे के पास आया और इधर उधर देख तथा सन्नाटा पा कमरे के वाहर निकल गया। पेडों की आड़ देता और लोगो की निगाहें वचाता हुआ वह वंगले के पीछे को तरफ निकल गया।

[२]

लगभग आध घंटे के वाद मिस्टर और मिस केमिल को विदा कर गोपालशंकर अपने कमरे मे वापस लौटे। इस समय उनका चेहरा हँस रहा था और उन के होठों पर एक गीत था, पर कमरे क अन्दर पैर रखते ही उनकी निगाह टेवुल पर गड़ी भुजाली पर पड़ी जिसे देखते ही उनका गीत उनके हाठो पर ही रह गया। वे झपट कर टेवुल के पास आये और उस खुखड़ी तथा चीठी को देखने लगे। न जाने क्या उनका दिल किसी अनजानी मुसीवत की बात सोच कर एक वार जोर से धड़क गया।

कुछ देर तक वे एकटक उन दोनो चीजो को देखते रहे और तव उन्होने उस गड़ी हुई भुजाली को टेवुल से उठाने के लिए हाथ वढ़ाया पर न जाने क्या सोच कर रुक गये और वहां से हट कर कमरे के चारो तरफ घूमने लगे। हर एक खिड़की दरवाजे और पर्दे का उन्होने देख डाला पर कही किसी आदमी की सूरत दिखाई न पड़ी पर इससे उनके मुँह पर नाउम्मीदी की कोई झलक दिखाई न पड़ी, शायद वे पहिले ही से सोचे हुए थे कि जिसका यह काम है वह अब तक वहां बैठा न होगा। कमरे की जांच पूरी कर वे वाहर निकले और अपने खास नौकर को बुला कर उन्होने पूछा,' क्या मेरे जाने के बाद कोई आदमी इस कमरे में आया था ?" उसने जवाव दिया, "जी कोई नही !" गोपालशंकर ने फिर पूछा, "तुम या दूसरे नौकरों मे से भी कोई नही आया ?" वह वोला, "जी कोई नही, हम सभी लोग वह नई आलमारी ऊपर वाले कमरे में रखने मे लगे हुए थे।" यह सुन गोपालशंकर ने फिर कुछ नही पूछा और आदमी को विदा कर कमरे के अन्दर लौट आये। टेवुल के पास जाकर उन्होने खुखड़ी को टेवुल से अलग किया जिसकी नोक एक इंच से ज्यादा लकड़ी मे धँसी हुई थी और कुछ देर तक वडे गौर से उसे देखते रहे। छोटी होने पर भी वह खुखडी वहुत सुन्दर वनी हुई थी और उसका फौलादी लोहा वहुत ही अच्छे पानी का था। उसकी वेट हाथीदात की थी और उस पर वहुत उम्दा नक्काशी का काम वना हुआ था जिसे देख गोपालशंकर ने धीरे से कहा, "खास काठमाडू की वनी चीज है।"

भुजाली को एक वगल रख अव इन्होंने उस चीठी को उठाया जो उसके नीचे गाड़ दी गई थी। चीठी लाल रंग के लिफाफे के अन्दर वन्द थी जिस पर किसी का नाम न था। लिफाफा फाडने पर अन्दर से लाल ही कागज की एक चीठी

निकली जिस पर लाल स्याही से कुछ लिखा हुआ था। लाल कागज पर लाल ही स्याही होने के कारण हरूफ साफ साफ पढे नही जाते थे फिर भी गोपालशकर ने मतलव निकाल ही लिया। चीठी का मजमून यह था :—

"गोपालशंकर—

'हम लोग तुम्हे वहुत दिनो से जानते है। वक्त वेवक्त अंग्रेजो की मदद करते रहने पर भी अभी तक हम लोगो ने कभी तुम्हे कुछ नही कहा क्योकि हमलोग जानते हैं कि तुम वडे भारी विद्वान हो और मुल्क तुम्हे इज्जत की निगाह से देखता है।

"मगर हम लोगो ने सुना है कि तुम नेपाल जा रहे हो। किस काम से जाते हो यह भी हमे मालूम हो गया है, इसी से यह चीठो लिख कर तुम्हे होशियार करते हैं कि तुम अपना इरादा वदल दो वरना तुम्हारे लिये ठीक न होगा।

"तुम्हे यकीन हो या न हो पर हम लोग ठीक कहते है कि जो कुछ हम लोग कर रहे है वह अपने देश के फायदे के लिये ही कर रहे है। हम लोगो के काम मे रुकावट डालने वाला चाहे कितना ही वडा विद्वान क्यो न हो पर देश का दुश्मन ही कहलावेगा और उसे इस दुनिया से उठा देना ही मुनासिव होगा। इसी से तुम्हे खवरदार करते है कि हम लोगो के मामले मे दखल न दो और न झूठ मूठ अपनी जान के ही ग्राहक वनो। याद रक्खो कि जो भुजाली आज तुम्हारे टेवुल पर गडी है उसी को तुम किसी दिन अपनी छाती मे गडी पाओगे अगर हम लोगो का हुक्म न मानोगे। होशियार! होशियार!!"

इसके नीचे किसी का दस्तखत न था पर एक वड़ा सा लाल धव्वा वेशक दिखाई पडता था जो देखने मे खून के दाग की तरह मालूम होता था और जिसके वीच मे चार उँगलियो का निशान साफ मालूम पड़ रहा था।

अपनी जिन्दगी मे गोपालशंकर ने हजारो ही दफे खतरे के काम किये थे और सैकडो ही धमकी की चीठिया अव तक ये पा चुके थे जिन पर सरसरी एक निगाह से ज्यादा वे कभी डालते न थे, मगर न जाने क्यो इस चीठी का उन्होने इस नाकदरी की निगाह से नही देखा। इसके पढते ही उनके माथे पर सिकुडन पड गई और वे कुछ तरद्दुद के साथ वोले, "खून की वूंद पर 'भयानक चार' का निशान चार उंगलिया! इस मुल्क के सव से जवर्दस्त गिरोह का निशान! यह मामूली मामला नही है! खूब सोच विचार के कोई वात ठीक करनी पडेगी!"

चीठी लिये हुए वे एक कुरसी पर जा बैठे और आँखे बन्द कर बड़े गौर से कुछ सोचने लगे। चौथाई घंटे से ऊपर इसी तरह बीत गया और इस बीच मे उनके चेहरे ने तरह तरह के रंग बदले मगर हम कुछ भी नही कह सकते कि उनके दिल मे इतनी देर तक क्या क्या बातें घूमती रही या उन्होने क्या तय किया, पर काम का कोई ढग उन्होने जरूर ठीक कर लिया था यह मालूम होता था, क्योंकि इसके बाद वे कुरसी पर से उठे और उस चीठी और भुजाली को लिए हुए कमरे के बाहर हो कर ऊपरी मंजिल के एक दरवाजे के पास आ खडे हुए जो बन्द था। कमर से एक गुच्छा निकाल कर उन्होंने ताला खोला और दर्वाजे के अन्दर जाकर पुनः भीतर से बन्द कर लिया। ताला इस तरह से जड़ा हुआ था कि वही ताली भीतर बाहर दोनों तरफ से काम देती थी। दरवाजे के आगे पर्दा खीच दिया और तब खिडकी खाल दी जिससे इस कमरे में बखूबी रोशनी फैल गई।

यह बडा कमरा आधा लेबोरेटरी और आधा लाइब्रेरी के ढंग पर सजा हुआ था। एक तरफ की दीवार के साथ आलमारियों की एक कतार थी जिनके अन्दर तरह तरह की बड़ी छोटी रंगीन सादी बोतलो में तरह तरह की चीजें रक्खी हुई थी, सामने कई बड़े टेबुल थे जिन पर तरह तरह के विचित्र यन्त्र और औजार रखे हुए थे तथा दूसरी तरफ जमीन से लेकर छत तक टांड़े बनी हुई थीं जिनमें हजारों किताबे रक्खी हुई थी। सामने एक गोल टेबुल और कई कुर्सियाँ पड़ी हुई थी। इस वक्त गोपालशंकर इसी किताबों वाले हिस्से की तरफ बढे और एक टाँड़ के सामने जाकर खड़े हो गये। किसी गुप्त स्थान को अँगूठे से दबाते ही इसका एक हिस्सा घूम कर अलग हो गया और पीछे दीवार मे जड़ी लोहे की आलमारी दिखाई दी जिसमे ताली लगाने की कोई जगह दिखाई नहीं पडती थी। किसी तरकीब से गोपालशंकर ने इस आलमारी को खोला और उसके भीतर से एक मोटी सी किताब निकाली जिसे टेबुल पर रख वे पन्ने उलटने लगे।

पन्ने उलट पुलट करते हुए एक जगह पहुंच कर गोपालशंकर रुके और कुर्सी खीच उस पर बैठ कर गौर से वही पढ़ने लगे। ऊपर की तरफ कुछ मोटे हरफो मे लिखा हुआ था—'रक्त-मडल' और उसके नीचे बहुत ही बारीक अक्षरों मे यह लिखा हुआ था :—

"यह बलवाइयो के एक गिरोह का नाम था। इसके सब सदस्य लाल कपड़ा

पहिनते तथा मुर्दे की खोपड़ी और ताजे कटे हुए भैसे के सर पर हाथ रख कर कसम खाते थे* कि उनकी जाति अब 'हिन्दी' हुई और उनकी जानमाल का मालिक 'रक्त-मंडल' हुआ। देश का जिस तरह से हो सके स्वतन्त्र करना उनका मुख्य उद्देश्य था। इनके चार मुखिया थे जो अपने को 'भयानक चार' कहते थे। इन लोगो ने सन्—के लगभग बहुत जोर बाँधा था यहाँ तक कि सरकार भी इनसे घबडा गई थी। मुल्क भर मे इस मंडल की शाखे थी। अन्त मे फतेहउद्दीन रघुबीरसिंह और कई अन्य होशियार जासूसो की मेहनत से इसका भडा फूटा और इसके कई मुख्य कार्यकर्ता पकडे गये। तब से यह गिरोह टूट गया और फिर कभी इसने सरकार को तग नही किया मगर यह न मालूम हुआ कि इनके मुखिया वे भयानक चार भी मारे गये या कही निकल गये।"

इसके नीचे पतले अक्षरो मे और भी कुछ बाते लिखी हुई थी जिन्हें गोपाल-शकर पूरी तरह से पढ गये और तब किताब बन्द कर उसी स्थान मे रख देने के बाद वे कमरे के बाहर चले आये। दरवाजे मे ताला बन्द कर दिया और नीचे उतर गये।

[२]

अपनी मुलाकातों से छुट्टी पा मिस्टर केमिल घर वापस लौटे और भोजन करने बाद नौकरो से असबाब इत्यादि बँधवाने की फिक्र मे लगे क्योंकि इन्हे दो ही एक दिन के अन्दर काशीजी के लिये रवाना होना था। इनकी पत्नी और लड़की भी अपने असबाब के फेर मे पड़ी हुई थी।

लगभग दो घटे के बाद केमिल साहब को कुछ फुरसत मिली और वे इतना मौका पा सके कि अपने बगले के बारामदे मे पडी आरामकुर्सी पर बैठ कर अखबार पढ़ते हुए एक सिगार का लुत्फ ले सकें। उन्होंने ताजा अखबार उठा लिया और फकाफक धूआं उड़ाते हुए उसके पेजो पर सरसरी निगाह डालने लगे। यकायक एक समाचारों की मोटी हेडिंग ने उनका ध्यान आकर्षित किया। वह समाचार यह था:—

---

* रक्त-मंडल का इससे पहिले का हाल और 'भयानक-चार' के भयानक कामो का पूरा परिचय जानना हो तो हमारा 'प्रतिशोध' उपन्यास पढिये।

'वैज्ञानिकों में हलचल !'

'वेतार का तार वन्द !!'

"दो दिनों से यहाँ के वेतार के सब यंत्र वेकार पडे हुए है। कही का कोई भी यंत्र न तो कहीं समाचार भेज ही सका है न कही का सामाचार पा ही रहा है। यंत्रों में कहीं कोई खरावी नही है। वैज्ञानिक परेशान है क्योंकि इस बात का कोई सवव मालूम नहीं होता। लोगों में तरह तरह के खयाल फैल रहे हैं। कुछ का कहना है कि मंगल ग्रह वालों ने कोई कारंवाई की है और कुछ समझते हैं कि पृथ्वी पर विजली का वड़ा भारी तूफान आया हुआ है जिसने वेतार की तार के सव यंत्र वेकार कर दिये है। अभी तक कुछ भी ठीक नहीं हो पाया है।"

यही वह समाचार था जिसने सुवह गोपालशंकर को ताज्जुव में डाल दिया था। इस समय केमिल साहव को भी इसे पढ़ कर वड़ा ही ताज्जुव हुआ और वे मन ही मन वोले, "आज शाम को मौका मिला तो कप्तान रूवी से मिल कर पूछूँगा कि यह क्या मामला है?"

कप्तान रूवी वेतार के तार के वडे भारी जानकार थे और आगरे के सरकारी बेतार के तार-घर मे उसी के सम्वन्ध की कुछ नई मशीने वैठाने के लिये आज कल यही आये हुए थे। इनसे और मिस्टर केमिल से वड़ी दोस्ती थी क्योकि दोनों विलायत में एक ही स्कूल मे पढे हुए थे।

मिस्टर केमिल ने दुवारा अखवार उठाया ही था कि उनके कान में मोटर की आवाज आई जो अभी अभी उनके फाटक पर आकर रुकी थी और जिस पर से एक आदमी उतर कर तेजी से इनकी तरफ आ रहा था। केमिल साहव ने पहिचाना कि वे आगरे के प्रसिद्ध मगर सूम अमीर वावू गोपालदास है। "यह इस वक्त क्यों आ रहे हैं?" कहते हुए केमिल साहव उठे और दो एक कदम आगे वढे, तव तक गोपालदास भी आ पहुँचे। केमिल साहव ने उनसे हाथ मिलाया और कुर्सी पर वैठाते हुए कहा, "वावू गोपालदास, इस समय वेमौके कैसे आना हुआ?"

गोपालदास ने जिनके चेहरे से डर और घवराहट वरस रही थी वेचैनी के साथ डरते डरते चारो तरफ देखा और तव एक लम्वी सांस लेकर कहा, "केमिल साहव, मै वडे भारी तरद्दुद में पड़ कर आपके पास आया हूँ।"

मिस्टर केमिल ने कहा, "सो क्या? मुझे वताइये, मुझसे जो कुछ हो सकेगा

मैं करने को तैयार हूं।"

यह सुन गोपालदास ने अपनी जेब मे लाल कागज का एक टुकड़ा निकाला और केमिल साहब के पास पहुच दिखाते हुए कहा, "मेरी घबराहट का यही सबब है।"

केमिल साहब ने वह पुर्जा लिया और पढा। लाल कागज पर लाल ही स्याही से मगर मोटे मोटे हरफो मे यह लिखा हुआ था :—

"गोपालदास,

तुमने अपनी शैतानी और मूमडेपन की बदौलत बहुत सा रुपया इकट्ठा किया है। यह दौलत तुम्हारे लिये बिल्कुल बेकार है क्योंकि तुम्हारा कोई लडका बाला नही है जो तुम्हारे बाद तुम्हारे धन को भोगे। इस लिये तुम्हे मुनासिब है कि अपना रुपया किसी अच्छे काम मे खर्च करो। हम लोग देश को स्वाधीन बनाने की कोशिश कर रहे है और तुमसे मदद की उम्मीद रखते है। हमे विश्वास है कि आज से तीन दिन के भीतर तुम हम लोगो को एक लाख रुपया दे कर देश का उपकार करोगे। आज के तीसरे दिन आधी रात को अपने सोने वाले कमरे की खिड़की से ऊपर से गिरा देने से रुपया हमे मिल जायगा।

"खबरदार! अगर तुमने रुपया नही दिया तो तुम्हारी खैर नही है। यह भी ख्याल रखना कि पुलिस या किसी भी तीसरे आदमी को हमारा हाल न मालूम होने पावे। अगर तुमने किसी को भी खबर की तो उसी वक्त मार डाले जाओगे।।"

यही इस चीठी का मजमून था और इसके नीचे एक बडा सा लाल बूंद की तरह का निशान बना हुआ था जिस पर चार उंगलियो का दाग था। इसे देखते ही केमिल साहब पहिचान गये कि रक्त-मंडल के 'भयानक-चार' का मशहूर निशान है। न जाने क्यो चीठी पढ और निशान देख कर एक बार केमिल साहब घबरा गये मगर तुरन्त ही उन्होंने अपने को काबू मे किया और गोपालदास से बोले, "यह चीठी आपको कब मिली?"

गोपाल०। बस आज ही मिली है, यही कोई आधा घन्टा हुआ होगा। और पढते ही मैं इतना घबराया कि सीधा आपके पास दौडा चला आया हूँ। यह चीठी किसने भेजी है और यह निशान कैसा है यह सब तो मुझे कुछ मालूम नही मगर मेरा दिल कह रहा है कि इसके लिखने वाले कोई बडे ही खराब आदमी हैं और मुझे तकलीफ पहुँचाने का उन्होने पक्का इरादा कर लिया है।

केमिल० । मै इस निशान को पहिचानता हूं । यह ऐसे शैतानों के एक गिरोह का निशान है जो बडे ही दुष्ट और लालची है ।

गोपाल० । (रोने स्वर से) तो हुजूर मेरी जान इन बदमाशों से बचाइये ! मुझे बस आप ही का भरोसा है !!

केमिल० । घबराइये नही, घबराइये नही, ये लोग आपका कुछ नही बिगाड़ सकते, आप वेफिक्र रहे, मै आपकी हिफाजत का पूरा बन्दोबस्त कर दूंगा और इन कम्बख्तों को पकड़ने का भी उपाय करूंगा ।

गोपाल० । जी हां हुजूर । बस कुछ ऐसा कर दीजिये कि इस ढली उमर में मेरी गाढे पसीने की कमाई इन पाजियो के हाथ मे न पड़ने पावे और मै गरीब मुफ्त में न सताया जाऊं । मैंने जब से चीठी पाई है मेरा जी वेतरह घबड़ा रहा है, कभी मन मे आता है कि शहर छोड़ कर चला....

केमिल० । नही नही, आप बिल्कुल घबडाइए नही, ये लोग कुछ नही कर सकेंगे, आप वेफिक्री से घर जाकर रहे, मै अभी कोतवाल साहब को लिख कर आपका इन्तजाम करे देता हूँ । एक सिपाही बराबर आपके मकान के इर्द गिर्द पहरा देगा और आपका बाल बाका न होने पावेगा । मगर आपकी वेहतरी के ख्रयाल से यह जरूर कहूगा कि आप जहा तक हो सके मकान के अन्दर ही रहे और बिना कोई जरूरी काम हुए बाहर न निकले ।

गोपाल० । जी हाँ हुजूर ऐसा ही कर दे । बल्कि दो सिपाही रहे तो और ठीक होगा । मै आज से जब तक आप न कहेगे घर के बाहर न निकलूंगा—मगर अब मेरी जान आपके हाथ मे है ।

केमिल साहब ने कुछ और बातचीत कर गोपालदास को शान्त किया और उनके सामने ही कोतवाल साहब को टेलीफोन कर के उनकी हिफाजत का पूरा बन्दोबस्त भी कर दिया । तब जाकर गोपालदास की घबराहट दूर हुई और वे केमिल साहब को बहुत धन्यवाद देते हुए वहां से विदा हुए । वह चीठी केमिल साहब ने अपने पास ही रख ली ।

उनके जाने के बहुत देर बाद तक केमिल साहब रक्त-मंडल की वह चीठी बार बार पढते और गौर से कुछ सोचते रहे । इसके बाद वे उठे और भीतर जा कपड़े पहिन कर बाहर निकले । उनके थोडी ही दूर पर वर्तमान कलेक्टर की बंगला

था, केमिल साहब उसी तरफ रवाना हुए। उनकी चाल तेज थी और माथे पर की सिकुड़नें उनके दिल मे घर कर लेने वाले तरद्दुद की खबर दे रही थीं।

[४]

आगरे के कमिश्नर मिस्टर टेम्पेस्ट अपने प्राइवेट रूम में पंडित गोपालशंकर के साथ बैठे हुए कुछ बातें कर रहे हैं। और कोई इस कमरे में नहीं है।

गोपालशंकर०। गुप्त! इस बात को तो मैंने इतना गुप्त रक्खा कि आज मिस्टर केमिल के साथ बातचीत होने पर भी मैंने कुछ प्रकट नही किया कि मैं वास्तव मे किस काम के लिये नैपाल जा रहा हूं, मगर फिर भी इन लोगों को पता लग ही गया!

टेम्पेस्ट०। मगर तब इससे यह भी मालूम होता है कि नैपाल के उस गुप्त किले से इन लोगों को भी कुछ सम्बन्ध है?

गोपाल०। केवल सम्बन्ध ही नही मुझे तो गुमान होता है कि कही वही तो इन लोगों का हेड-क्वार्टर नही है और वही से तो ये लोग काम नहीं करते हैं, कोई ताज्जुब नही कि वे शैतान 'भयानक-चार' इसी गुप्त किले मे ही रहते हों।

टेम्पेस्ट०। (उछल कर) बेशक यही बात है! आपका खयाल ठीक हो सकता है! हो न हो वह गुप्त किला ही रक्त-मंडल का हेड आफिस है। अब जो मैं खयाल करता हूं तो मुझे भी यही बात मालूम पडती है। मगर........?

गोपाल०। मगर क्या?

टेम्पेस्ट०। मगर इस हालत मे रक्त-मण्डल ने आपको चीठी भेज कर एक तरह पर क्या अपना भंडा नही फोडा है? अगर वे यह चीठी न भेजते तो आपको या मुझे यह गुमान ही क्योकर होता कि जिस किले का भेद लेने के लिये सरकार आपसे इल्तिजा कर रही है वह रक्त-मंडल के ही भेदो का खजाना है।

गोपाल०। हाँ यह बात जरूर है और इसी से मैं ख्याल करता हूं कि जो चीठी मेरे पास आई है वह कोई फजूल की धमकी नही है बल्कि एक भयानक आगाही है जिससे होशियार हो जाना चाहिये, क्योंकि इतनी मोटी बात तो वे भी सोच ही चुके होंगे।

टेम्पेस्ट०। (हँस कर) मालूम होता है आपके दिल में रक्त-मंडल का डर समाने लग गया है।

गोपाल० । (गम्भीरता से) वेशक ! अगर डर नहीं तो उनकी ताकत की इज्जत और कद्र जरूर मेरे दिल मे घर कर गई है । सिर्फ इसी वात से देखिये कि जिस वात की खवर केवल लाट साहव को उनके सेक्रेटरी को आपको और मुझे है और जिसे हम चारो के सिवाय इस मुल्क भर में कोई नही जानता उसका पता इन लोगों को लग गया है और ये लोग पूरी तरह से जान गये है कि नैपाल और भूटान की सरहद के वीच पड़ने वाले भयानक जंगलों मे दवे एक पुराने किले पर सरकार सन्देह की नजर डाल रही है और मैं उसकी खोज करने वास्ते जा रहा हूं । इसे क्या आप मामूली वात समझते है !!

टेम्पेस्ट० । नही नही, मैं इसे मामूली वात नही समझता मगर क्या इसे कोई बहुत वड़े महत्व की........?

गोपाल० । आपको शायद रक्त-मंडल का पिछला इतिहास पूरी तरह मालूम नही और न आपको यही खवर है कि उनका मजवूत जाल किस तरह चारो तरफ फैलता जा रहा है । शायद काशीजी की तीनों घटनायें आपके खयाल से उतर गई हों मगर मैं उन्हें भूल नही सकता वल्कि मुझ तो डर है कि आज ही कल में यहां भी कोई उपद्रव होने वाला है । खैर यह सव जा कुछ भी हो, आज मैं जिस मतलव से आया हूं वह यह था कि मुझे अव पहिले को वनिस्वत कही ज्यादा इन्तजाम करके वहा जाना होगा और सरकार को भी गहरी तरह पर मेरी मदद करनी होगी नही तो मै अपने काम में सफल होने का जिम्मा न लूँगा ।

टेम्पेस्ट० । वेशक, यह तो मैं भी समझ रहा हू कि मामला अव पहिले से ज्यादे मुश्किल हो गया है । पर यह मै आपको विश्वास दिला सकता हूं कि आप जो जो और जैसा इन्तजाम चाहेगे सरकार वैसा ही करने को तैयार है । आप मुझे वतावें कि आप क्या चाहते हैं ?

गोपाल० । पहिली वात जो मै चाहता हूं वह यह है कि सरकार की निजी तार और टेलीफोन से काम लेने का अधिकार मुझे मिल जाय और ऐसा प्रवन्ध हो जाय कि जरूरत पड़ने पर वहाँ से सीधे दिल्ली तक गुप्त रीति से खवरें भेजी जा सकें ।

टेम्पेस्ट० । (ताज्जुव से) ठीक है मगर ऐसा क्यो ? वातचीत के लिये तो आप अपने साथ निज की एक वेतार मशीन ले ही जा रहे है !

गोपाल० । शायद वह मेरे ज्यादे काम न आवे । क्या आपने आज यह नही

पढ़ा कि दो रोज से उत्तर के सब वेतार के तार यंत्र वेकाम हो गये है !

टेम्पेस्ट० । हाँ वह खवर तो मैंने पढ़ो है मगर इससे क्या ?

गोपाल० । इससे यही कि वह किला या उसमे के रहने वाले जब चाहे मेरे वेतार के यंत्र को वेकार कर सकते है ।

टेम्पेस्ट० । क्या ? क्या ? क्या आप इसे भी उस किले वालो की ही कार्रवाई समझते हैं ?

गोपाल० । वेशक !! क्या आपने जर्मनी के प्रोफेसर ब्लूशर का वह लेख नहीं पढा था जिसमे उन्होने दो वरस पहिले के वेतार के तार को वेकार कर देने वाले अपने एक आविष्कार का हाल प्रकाशित किया था ?

टेम्पेस्ट० । (जोर से टेबुल पर हाथ पटक कर) हाँ ठीक है, अब मुझे ख्याल आया ! उनका लेख जर्मन अखवार 'तुङ्ग-जी तुङ्ग' मे निकला था और उस पर बड़ी खलवली मच गई थी । तो आपका सोचना है कि उस किले मे उसी तरह की कोई मशीन वना ली गई है जैसी प्रोफेसर ब्लूशर ने ईजाद की थी ?

गोपाल० । हाँ ।

टेम्पेस्ट० । (कुछ गौर करके) आपका कहना ठीक हो सकता है । तव तो यह मामला वहुत ही गहरा होता दिखाई देता है । अगर आपका वेतार का यंत्र काम न कर सका तो जरूर मुश्किल होगी ।

गोपाल० । वेशक और उस वक्त थोडी वहुत उम्मीद मामूली तारों और टेलीफोनो की ही रह जायगी । मगर मै उन्ही पर विल्कुल भरोसा नही रख देना चाहता हू । मेरा विचार है कि एक हवाई जहाज भी मेरी मदद पर दिया जाना चाहिये ।

टेम्पेस्ट साहव यह वात सुन कर कुछ जवाव दिया ही चाहते थे कि दरवान ने आकर कहा, "कलेक्टर साहव और सुपरिन्टेडेन्ट साहव आये हैं ।" टेम्पेस्ट साहव ने कहा, "यही भेज दो" और तव गोपालशंकर की तरफ देख कर बोले, "इन दोनो साहवो का एक साथ आना मतलव से खाली नहीं है ।" गोपालशंकर वोले, "वेशक कोई नई वात हुई है !" और तव कुर्सी से उठने लगे मगर मिस्टर टेम्पेस्ट ने कहा, "आप भी वैठिये, मेरा दिल कह रहा है कि आपकी भी मौजूदगी की हम लोगों को जरूरत पडेगी ।" गोपालशंकर यह सुन फिर अपनी जगह बैठ गये और उसी समय मिस्टर डेगलेस और मिस्टर केमिल ने कमरे में पैर रक्खा ।

चारो आदमियों ने एक दूसरे से हाथ मिलाया और तब कुर्सियों पर बैठने के साथ ही मिस्टर केमिल ने कहा, "पंडित गोपालशंकर का यहा मौजूद रहना अच्छा ही हुआ, हम लोगों को शायद जल्द ही इनकी मदद की जरूरत पड़ेगी।"

टेम्पेस्ट०। सो क्या ?

केमिल०। यही कि रक्त-मंडल ने इस शहर में भी अपना शैतानी काम शुरू कर दिया।

मिस्टर टेम्पेस्ट और गोपालशंकर यह सुनते ही चौक पड़े और दोनो ने एक दूसरे पर गम्भीर निगाह डाली। इसके बाद टेम्पेस्ट बोले, "क्या बात है कुछ खुलासा कहिये ?"

केमिल साहब ने यह सुन कर गोपालदास से पाई हुई चीठी सभों के सामने टेबुल पर रख दी और कहा, "यहाँ के रईस बाबू गोपालदास से इस चीठी के जरिये एक लाख रुपया माँगा गया है और न देने पर जान से मार डालने की धमकी दी गई है।"

चारो आदमी कुछ देर के लिये चुपचाप हो गये। इस खबर ने सभी पर असर किया क्योंकि रक्त-मंडल का नाम इन थोड़े ही दिनो में शैतान की तरह मशहूर हो गया था। कुछ देर बाद मिस्टर टेम्पेस्ट ने वह चीठी उठा कर पढ़ी और पढ़ने बाद गोपालशंकर के हाथ में दे दी, इसके बाद चारो आदमी धीरे धीरे कुछ बातें करने लगे।

आधे घंटे के बाद इन लोगों की बातचीत खतम हुई और तब सब कोई बाहर निकले। चलती समय कमिश्नर साहब ने मिस्टर केमिल से कहा, "गोपालदास को पूरी हिफाजत होनी चाहिये। खुदा न खास्ता कुछ हो गया तो शहर एक दम डर जायगा और बड़ी मुसीबत आ जायगी!" जवाब मे मिस्टर केमिल ने कहा, "जो कुछ सम्भव है करने से मैं बाज न आऊँगा।"

[५]

पौ फट चुकी है। खुली हुई खिड़कियों की राह बाग के फूलो की मीठी खुशबू लिये हुए ठंढी हवा आ रही है जिससे गोपालशंकर की मसहरी का पर्दा लहरें ले रहा है।

एक करवट लेकर गोपालशंकर ने आँखे खोली और तब अँगड़ाई लेकर उठ

बैठे। आज उन्हे उठने मे कुछ देर हो गई थी कारण कल बहुत रात गये तक वे अपनी लेबोरेटरी मे कोई जरूरी काम करते रहे थे जिससे सोने में कुछ देर हो गई थी। उन्होने पर्दे के बाहर हाथ निकाला और पानी की सुराही उठानी चाही मगर उनका हाथ किसी दूसरी ही पतली और ठडी चीज से लगा जिससे वे चौंक पड़े और तुरत हाथ उन्होने खीच लिया, मसहरी का पर्दा उठाया, और तब आगे झुक कर देखते ही उन्हे मालूम हो गया कि जिस टेबुल पर उनके पीने और हाथ धोने के लिये पानी वगैरह रक्खा रहा करता था उस पर एक खुखड़ी गड़ी हुई है जिसकी नोक एक लाल कागज के टुकडे को दबाये हुए है। पानी और दूसरा सामान टेबुल के नीचे जमीन पर पड़ा हुआ है।

यह अद्भुत बात देखते ही गोपालशंकर की सब खुमारी दूर हो गई और वे छलांग मार कर पलग के नीचे उतर आये। कुछ देर तक वे उस खुखडी को देखते रहे जो ठीक उसी तरह की थी जैसी एक वे कल पा चुके थे, इसके बाद उन्होने खुखड़ी को टेबुल से अलग किया और उसके नीचे से वह कागज निकाल कर पढा। लाल स्याही मे यह लिखा था :—

"गोपालशंकर,

"तुमने हमारी कल की चीठी पर कोई ख्याल न किया! टेम्पेस्ट से मिल कर जो कुछ बाते तुमने की है वह सब हमको मालूम हो चुकी है इसलिए आज पुनः हम तुम्हे आगाह करते है कि अपना इरादा छोड दो और हमारे काम मे विघ्न न डालो। याद रक्खो कि तुम्हे मार डालना हमारे लिये अदनी सी बात है और आज ही हम लोग यह कर सकते थे पर फिर भी 'भयानक-चार' की आज्ञा से केवल होशियार करके छोड देते है। अब भी समझ जाओ और मुफ्त ही हम लोगों से वैर मोल लेकर अपनी जान के ग्राहक न बनो!"

इसके नीचे रक्त-मडल का वही निशान—लाल दाग मे चार उँगलियां—बना हुआ था।

गोपालशंकर कुछ देर तक इस चीठी को पढते रहे, इसके बाद यह सोचने लगे कि इस चीठी और खुखडी को यहाँ रखने वाला कमरे मे आया क्योकर! क्योकि सोने के पहले वे इस कमरे का दर्वाजा भीतर से बन्द करके सोये थे जो अब भी उसी तरह बन्द था और उसके सिवाय अन्य कोई दर्वाजा कमरे मे आने

का न था। आखिर सब कुछ देख भाल कर उन्होंने निश्चय किया कि आने वाला जरूर किसी तरह इस खुली खिड़की की राह ही आया होगा।

वे खिड़की से झांक कर कुछ देखने के लिए बढे ही थे कि दीवार के साथ लगे टैलीफोन की घंटी जोर से बज उठी। उन्होंने पास जाकर चोंगा कान से लगाया तो केमिल साहब की आवाज सुनाई पड़ी। घबराहट भरे स्वर मे वे कह रहे थे, "पंडित गोपालशंकर है क्या ? कृपा करके जल्दी गनेश मोहाल में बाबू गोपालदास के मकान पर आइये। मैंने सुना है कि रात को उनका खून हो गया।"

गोपालशंकर ने चौक कर कहा, "खून ! किसने किया ?" केमिल की कांपती हुई आवाज आई, "उसी कम्बख्त रक्त-मंडल ने ! उनके गले मे एक रेशमी रस्सी का फन्दा पड़ा हुआ था जिसके साथ बंधे लाल कागज पर उसका खूनी निशान बना हुआ था। आप जल्दी आइये, मैं वहीं जा रहा हूँ !"

"मैं अभी आया" कह गोपालशंकर ने चोंगा टांग दिया और तब यह कहते हुए कमरे के बाहर निकले, "इस खूनी गिरोह की कार्रवाई शुरू हो गई। मुझे बड़ी होशियारी से काम करना पड़ेगा नहीं तो इन हाथियों की टक्कर मैं बर्दाश्त न कर सकूंगा !!"

—

मृत्यु-किरण

[१]

गिरिराज हिमालय की ऊँची चोटियो के बीच मे दबे हुए जमीन के एक नीचे परन्तु समथर टुकडे की तरफ हम अपने पाठको को ले जाना चाहते है।

यह जमीन का टुकडा जो चौडाई मे कोई आध कोस और लम्बाई मे इससे कुछ ज्यादा होगा अपने चारो तरफ के ऊँचे-ऊँचे पहाडो के बीच मे कुछ इस तरह पर दबा हुआ है कि न तो यकायक यहां पर किसी का आना ही सम्भव है और न आस पास की किसी पहाडी चोटी से अचानक इस पर निगाह ही पड़ सकती है। यहा तक आने का कोई सीधा रास्ता भी दिखाई नहीं पड़ता क्योंकि इस जमीन के चारो तरफ कितने ही भयानक गार और दर्रे है जिनको पार करके यहा तक पहुँचना बहुत ही कठिन है। केवल यही नही, इस जमीन को घेरने वाली पहाड़िया भी इतनी विकट और ऊँची है कि उनको पार करना भी काम रखता है। यद्यपि चारो तरफ की पहाड़ियो पर प्राय: और विशेप कर जाडे के दिनों मे वरफ पडा करती है पर इस जमीन के नीची होने कारण यहाँ वर्फ की सूरत नहीं दिखती और इसी सबब से हरियाली और जगली पेडो की भी बहुतायत है। दूर से देखने मे यह स्थान एक भयानक जगल की तरह मालूम होता है और ऐसा भास होता है मानो गैब के अंगूठे ने उसे पहाडो के बीच मे दबा दिया हो।

सरसरी निगाह से देखने वाले को इस मैदान और जंगल मे कोई विशेषता या विचित्रता नही मालूम होगी और वह तुरत कह देगा कि इस स्थान मे शायद जगली और खूँखार जानवरो के अलावे किसी आदमी का पैर कभी भी न पडा

होगा, मगर वास्तव मे ऐसा नही है। यह एक बडे ही भयानक गिरोह का अड्डा है और यहाँ की एक एक बित्ता जमीन विचित्रता से भरी हुई है, जिसका हाल आपको थोडी ही देर में मालूम हो जायगा। मगर इस समय हम आपको यहाँ से हटा कर पूरव तरफ के पहाड़ों में ले चलते हैं और यहाँ से दो या तीन कोस के फासले पर पहुँचते हैं जहाँ पहाड़ की चोटी पर खड़ा एक घुड़सवार अपने चारो तरफ बडे गौर से देख रहा है। इसका घोड़ा पसीने से लथपथ है और खुद इसके चेहरे पर की बूंदें बता रही है कि कहीं बहुत दूर से आ रहा है। पोशाक से यह कोई फौजी जवान मालूम होता है बल्कि कोई ऊंचा अफसर होने का गुमान होता है और सूरत शक्ल देखने से यह भी मालूम हो जाता है कि यह नैपाली है।

मालूम होता है कि यह नौजवान यहाँ किसी खास चीज की खोज में पहुँचा था क्योंकि बहुत देर तक इधर उधर देखते रहने के बाद इसने अपनी जेब से एक दूरबीन निकाली और उसकी मदद से तुरत ही उस आदमी को खोज निकाला जो सामने की तरफ के पहाड़ी ऊबड़ खाबड़ पत्थरों और ढोको पर से चलता हुआ तेजी के साथ उसी की तरफ आ रहा था, मगर जो अब भी कोई मील भर के फासले पर होगा। इसे देख कर नौजवान के मुंह पर सन्तोप की झलक दिखाई पड़ी। वह घोडे से उतर पड़ा और उसे लम्बी बागडोर के सहारे बांध कर उस आदमी की तरफ बढ़ा जो उसे देख कर अब और भी तेजी से आने लगा था। घड़ी भर के अन्दर ही दोनों मे मुलाकात हो गई। नये आने वाले ने नौजवान को सलाम किया और तब एक चीठी दी जो लाल रंग के लिफाफे मे बन्द थी। नौजवान ने लिफाफा खोला और भीतर की चीठी निकाल कर पढ़ी। चीठी का मजमून क्या था इसे तो हम नहीं कह सकते परन्तु उसे पढ़ कर नौजवान के माथे पर शिकनें जरूर पड़ गईं और वह कुछ देर के लिये किसी गहरे सोच में पड़ गया। आखिर वह उस आदमी से बोला, "मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ।" उस आदमी ने यह सुन पुनः सलाम किया और साथ आने का इशारा कर पीछे की तरफ मुडा। नौजवान उसके साथ हुआ और दोनों तेजी से उसी बीच वाले मैदान की तरफ चले जिसका हाल हम ऊपर लिख आये है।

यद्यपि वह जगह दो कोस से ज्यादे दूर न थी मगर वहाँ तक पहुंचने का रास्ता इतना घूमघुमौवा भयानक और पेचीला था कि मैदान तक पहुँचने मे तीन

घण्टे से ऊपर लग गये और सूरज अपने सफर का आधे से ज्यादे हिस्सा तय करके अब नीचे की तरफ झुकने लग गए थे। अभी तक सिवाय इन दो आदमियो के और किसी तीसरे आदमी की शक्ल दिखाई नही पड़ी थी मगर अब एक लम्बे चौडे गार के सामने पहुँच कर जो इस बीच वाले टुकडे को चारो तरफ की पहाड़ियो से अलग कर रहा था वह आदमी रुका और जेब से एक सीटी निकाल कर उसने एक खास इशारे के साथ बजाई। आवाज के साथ ही सामने की चट्टानो की आड़ से निकल कर एक आदमी सामने आ गया जिसने इशारो ही मे इस आदमी से कुछ बाते की और तब किसी तरफ को चला गया। थोड़ी देर बाद जब वह लौटा तो उसके साथ दो आदमी और थे जो एक मोटा रस्सा लिये हुए थे। यह गार के इस पार फेंक दिया गया जिसे इधर वाले आदमी ने एक चट्टान के साथ खूब मजबूती से बांध दिया, दूसरा सिरा दूसरी तरफ बांध दिया गया और तब एक झूला इसके बीच मे लटका दिया गया जिसके साथ लम्बी रस्सी बंधी हुई थी। उस आदमी ने नौजवान से कहा, "इसी झूले में बैठ कर उस पार जाना पडेगा।" जवाब मे नौजवान ने कहा, "मैं तैयार हूं।" झूला रस्सी से खीच कर इस पार लाया गया, नौजवान उस पर बैठ गया और तब इस आदमी ने कहा, "मैं अब इसी पार रह जाऊँगा, यहाँ से आगे अब वे आदमी आपको ले जायंगे।" नौजवान ने कुछ जवाब न देकर सिर्फ सर हिला दिया। उधर के आदमियों ने रस्सी खीचना शुरू किया और वह झूला फिसलता हुआ नौजवान को लिये इस पार से उस पार चला। जब वह गार के बीचोबीच मे पहुंचा तो नौजवान को उसको अथाह गहराई की तह मे बहते हुए पानी की एक चमक और उसकी आवाज की एक आहट सुनाई पडी, उसने गुमान से समझ लिया कि यहां से गिरने वाले की एक हड्डी का भी पता न लगेगा, मगर वह नौजवान भी बेहद कडे कलेजे का था। यद्यपि उस अथाह गार के ऊपर से उसको ले जाने वाला झूला हवा के सबब से बेतरह पेंगे ले रहा था मगर उसके दिल मे जरा भी डर न था बल्कि वह गौर से चारो तरफ और नीचे ऊपर देखता हुआ सोच रहा था कि अगर कभी यहां लडाई होने की नौबत आवे तो किस तरह यह जगह फतह की जा सकती है। इसी समय वह झूला उस पार पहुँच गया, दो आदमियो ने सहारा देकर नौजवान को उस पर से उतार लिया, और एक आदमी ने जो उनका सरदार मालूम होता था नौजवान से कहा

"आप मेरे साथ आवें।" नौजवान उसके हाथ हो लिया और दोनों तेजी के साथ जंगल के बिचले हिस्से की तरफ बढ़े, मगर थोड़ी देर के बाद नौजवान ने जब पीछे की तरफ घूम कर देखा तो उसे न तो रस्से का पुल ही दिखाई पड़ा और न वे आदमी ही। सब के सब इस तरह गायब हो गये थे मानो यह सब कोई भूत-लीला हो।

[२]

उस जंगली और पहाड़ी मैदान में आध कोस तक वे लोग बराबर चले गये और अब दूर से एक ऊँची दीवार दिखाई पड़ने लगी जो शायद किसी मकान की थी पर हजारों बरस के पुराने और आकाश से बातें करने वाले पेड़ों मे यह इस तरह से छिपी और हरियाली से दबी हुई थी कि दूर से या अगल बगल के पहाड़ों की चोटियों से इसका दिखाई पड़ना बहुत ही कठिन था। यहां तक तो किसी गैर की सूरत दिखाई नहीं पड़ी थी पर अब उस नौजवान को विश्वास करना पड़ा कि यहां बहुत से पहरेदार चारो तरफ मौजूद है क्योकि थोड़ी थोड़ी देर पर किसी न किसी पेड़ या पहाड़ी ढोंके की आड़ से कोई आदमी बन्दूक लिये निकल आता था मगर नौजवान के साथी के एक इशारे पर फिर पीछे हट कर गायब हो जाता था। ज्यो ज्यो ये लोग उस दीवार के पास पहुंचते जाते थे इन संतरियों की बहुतायत होती जाती थी और ऐसा मालूम होता था मानों हर एक पेड़ और ढोंके के पीछे कोई न कोई छिपा हुआ है।

आखिर ये लोग उस दीवार के पास जा पहुँचे और अब नौजवान ने देखा कि यह ऊंची दीवार एक हलका गोल घेरा बनाती हुई बहुत दूर तक दोनो तरफ बढ़ती चली गई है और मालूम होता है कि किसी किले की दीवार है जो सैकड़ों बरस की हो जाने पर भी अभी हजारों गोले सहने लायक है। नौजवान ने यह भी देखा कि इस दीवार के ऊपर भी बहुत से पेड़ लगे हुए हैं जिनके सबब से यह दूर से दिखाई नहीं पड़ सकती।

नौजवान के साथी ने उसकी तरफ देखा और कहा, "अब हमें किले के अन्दर जाना होगा।" नौजवान ने जवाब मे मंजूरी की गरदन हिला दी जिसे देख उसने सीटी बजाई। देखते देखते लगभग बीस आदमी वहां आ कर जमा हो गये जो पौशाक और हर्बो से सिपाही या पहरेदार ही नही मालूम होते थे बल्कि बहुत ही होशियार लड़ाके और ताकतवार भी नजर आते थे। उस आदमी ने उनकी तरफ

कुछ इशारा किया जिसके साथ ही वे सब वहा से हट गये और कुछ ही देर बाद जमीन खोदने के औजार फावडे कुदाली आदि लेकर वहाँ आ पहुँचे और दीवार से लगभग पचीस कदम के फासले पर एक जगह उन्होने खोदना शुरू किया। लगभग आध घडी मे वहाँ कमर भर गडहा तैयार हो गया। इस गडहे की तह मे एक पत्थर की पटिया दिखाई पडी और उतरने के लिए सीढियाँ भी दिखी। उस आदमी ने नौजवान से कहा, "यही किले मे जाने का दरवाजा है।" उसने जवाब मे आगे बढने का इशारा किया। आगे आगे वह आदमी और पीछे पीछे वह नौजवान सीढ़ियो की राह गड़हे मे उतरे जहाँ पटिया हटाने पर एक तहखाना नजर पडा। दोनों इस तहखाने मे चले गये तथा उनके भीतर जाते ही इन आदमियो ने पुन. तहखाने के मुँह पर सिल्ली रख गडहे को फिर ज्यो का त्यो पाट दिया, जमीन बराबर कर दी, और इसके बाद वे सब इधर उधर हट कर गायब हो गये।

तहखाने के अन्दर एक अँधेरी और तंग सुरग मिली जिसमे नौजवान को बहुत दूर तक जाना पडा और तब एक दरवाजा मिला। ठोकरे मारने पर उस दरवाजे की एक छोटी खिडकी खुल गई और उसमे से किसी आदमी ने खास बोली मे कोई सवाल किया। नौजवान के साथी ने उसी बोली मे कुछ जवाब दिया जिसके साथ ही दरवाजा खुल गया। ऊपर चढने के लिये कई सीढियाँ दिखाई पडी जिनकी राह वे दोनो ऊपर चढ गये।

यह जगह जहाँ अब वे दोनों थे एक तग सहन की राह थी क्योंकि बीच में लगभग दस गज की जगह छोड़ कर चारो ही तरफ ऊँची ऊँची मजबूत संगीन दीवारें थी पर ऊपर की छत न थी और इसी कारण वहाँ चादना बखूबी था। एक तरफ की दीवार मे पतली पतली और बहुत ही तंग सीढियाँ दिखाई पड रही थी जो ऊपर की तरफ चली गई थी और इन्ही के पास एक सिपाही खडा था जिसने नौजवान के साथी से विचित्र भाषा मे कुछ बातें की, उसने उसी भाषा मे कुछ जवाब दिया और तब नौवजवान की तरफ घूम कर कहा, "आप इन्ही सीढियो की राह पर ऊपर चढ़ जाइये, मैं और आगे नही जा सकता।"

नौजवान "अच्छा" कह कर बेधडक उन सीढियों पर चढ गया जो इतनी तंग थी कि सिर्फ एक ही आदमी और सो भी मुश्किल से उन पर से जा सकता था। पचीस या तीस सीढियों के बाद एक कमरा मिला और उसी जगह सीढियों

के मुहाने पर खड़े एक नौजवान की सूरत दिखाई पड़ी जो फौजी वर्दी मे था। एक दूसरे को देखते ही दोनों झपट पड़े और आपस मे चिपट गये और दोनों की आँखों से प्रेम के आँसू वहने लगे। बड़ी देर के वाद दोनो अलग हुए और दो कुरसियों पर जा बैठे जो वहाँ मौजूद थी।

फौजी जवान ने नौजवान से कहा, "भाई नरेन्द्र, आज कितने वरसों वाद तुमसे मुलाकात हुई है! हमारा तुम्हारा साथ छूटे कम से कम पाच वरस हो गये होंगे।"

नरेन्द्र०। जरूर हुए होंगे, मैंतो एक तरह पर तुम्हारे मिलने की उम्मीद विल्कुल छोड चुका था, मगर भाई नगेन्द्र, तुम्हारी सूरत मे इन पाँच वर्षों ने वहुत अन्तर डाल दिया है! ऐसा मालूम होता है मानो तुम्हारी जिन्दगी का यह हिस्सा सुख और शान्ति से नही वीता।

नगेन्द्र०। नही विल्कुल नही, मै वडे वडे तरद्दुदों में पड़ा और वहुत वड़ी वड़ी आफतें मुझे झेलनी पड़ी मगर फिर भी मै यह कहूगा कि ये वर्ष घटनाओं से इस तरह भरे हुए थे कि उनका वीतना कुछ मालम ही न हुआ, वे सचमुच जिन्दगी के वहार के वर्ष थे।

नरेन्द्र०। अव क्या हाल है, क्या अव शान्ति मिली?

नगेन्द्र०। कहां से, शान्ति तो मुझसे मानों कोसों दूर है!

नरेन्द्र०। सो क्या?

नगेन्द्र०। अव वही सव हाल सुनाने को तो मैने तुम्हें वुलाया ही है। जरा ठहरो सुस्ताओ और दम लो, सभी कुछ तुम्हें वताऊंगा। तुम्हे रास्ते मे तकलीफ तो जरूर हुई होगी?

नरेन्द्र०। नही कुछ नही, ओर अगर कुछ हुई भी तो तुम्हे देख कर विल्कुल भूल गई।

नगेन्द्र०। (हंस कर) जरूर! खैर फिर भी स्नान-ध्यान की तो जरूरत होहीगी।

इतना कह नगेन्द्र ने ताली वजायी जिसके साथ ही एक सिपाही उस कमरे में आ मौजूद हुआ और फौजी सलाम कर खड़ा हो गया नगेन्द्र नरसिंह ने उससे कहा, "आपके लिये स्नान इत्यादि का प्रवन्ध करो और जो कुछ चीजों की इन्हे जरूरत हो उसका इन्तजाम करो। ये फारिग हो जायं तो मैं इनके साथ ही उस कमरे में

भोजन करूंगा।"

सिपाही ने "जो हुक्म" कहा और तव नगेन्द्र नरसिंह ने नरेन्द्रसिंह से कहा, "लो उठो, पहिले सव तरह से निश्चिन्त हो जाओ तव आराम से बातें होंगी।"

नरेन्द्रसिंह को वहाँ सव तरह का आराम मिला और बहुत जल्दी ही उन्होने जरूरी कामो से निपट कर स्नान किया। नहाने के लिये गरम पानी मौजूद था, जिसने उनके सफर का हरारत विल्कुल दूर कर दी। उन्होने खूब अच्छी तरह स्नान किया और तव संध्या पूजा से भी छुट्टी पाई। इसके वाद वह सिपाही उन्हे भोजन के कमरे में ले गया जहाँ संगमरमर की चौकियो पर तरह तरह के भोजन परोसे हुए थे और नगेन्द्रनरसिंह पहिले ही से बैठे इनकी राह देख रहे थे। दोनों आदमी भोजन और साथ ही साथ वातचीत करने लगे। सब नौकर नगेन्द्र का इशारा पा कर वहाँ से चले गये थे और उस कमरे मे सिवाय इनके और कोई भी न था।

नगेन्द्र०। राजधानी का क्या हाल है? कोई नयी बात हुई हो तो सुनाओ। मेरा तो महीनो से उधर जाना ही नही हुआ।

नरेन्द्र०। नई वात तो कोई भी नही है सब कुछ साबिक दस्तूर है, हाँ इतना है कि आजकल अंगरेज रेजीडेन्ट प्रायः रोज ही महाराज से मिलने आया करता है और घण्टो तक न जाने क्या क्या बातें किया करता है। क्या मामला है इसका पता अभी तक नही लगा है।

नगेन्द्र०। (हँस कर) उसका पता मै बता सकता हूँ! खैर तुम्हारी बहिन का क्या हाल है?

नरेन्द्र०। किसका, कामिनी का? वही हाल है, जब से आई है चेहरे पर हरदम मुर्दनी छाई रहती है, न किसी से वोलना न चालना, न हँसी न खुशी, बरावर उदास रहा करती है, कोई सवव पूछे तो रो देती है मगर कुछ बताती नही। कोई बीमारी भी नही मालूम होती, कई वैद्यो को दिखलाया, सब यही कहते है कि बीमारी कोई नही है दिल पर कोई धडका बैठ गया है या किसी तरह की फिक्र सता रही है, बस वह चिन्ता दूर हो जाय तो यह अच्छी हो जाय, मगर चिन्ता क्या है सो भी तो नही न कहती! हम लोग तो सब तरह से हार गये है। अगर यही हाल रहा तो वह कुछ दिनो मे खाट पकड़ लेगी।

नगेन्द्र०। (अफसोस के साथ) यह तो बहुत बुरी खबर सुनाई, तुम लोग

कोशिश कर के उसके दिल की थाह क्यों नही लेते ?

नरेन्द्र० । क्या थाह लें, खाक ! वह कुछ वतावे भी तो !

नगेन्द्र० । कोशिश करो तो जरूर ही कुछ मालूम होगा ।

नरेन्द्र० । हम लोग तो सब तरह से कोशिश करके हार चुके, ऐसा ही है तो तुम्हीं कुछ कर देखो ।

नगेन्द्र० । (गम्भीरता से) जरूर मैं उससे मिलूँगा और मुझे उम्मीद है कि मुझसे वह कोई वात न छिपावेगी ।

नरेन्द्र० । तव तो तुम्हे एक जान के वचाने का पुण्य होगा । तुम जरूर आओ बल्कि मेरे साथ ही चलो ।

नगेन्द्र० । (सिर हिला कर) नही, अभी कुछ दिनों तक मैं इस जगह को एक पल के लिये भी नही छोड़ सकता, पर हाँ मौका मिलते ही जरूर आऊँगा यह प्रतिज्ञा करता हूँ ।

नरेन्द्र० । अच्छा तो अव तुम अपना हाल कुछ सुनाओ, इतने दिनों तक कहाँ रहे क्या करते रहे तथा इस पुराने उजाड़ किले में अव कैसे दिखाई पड़ रहे हो ?

नगेन्द्र० । वही वताने और तुमसे मदद लेने को तो मैंने तुम्हें वुलाया ही है । अव खा लो तो आराम से बैठ कर वातें करें ।

भोजन समाप्त हुआ और दोनों दोस्त हाथ मुँह धोकर वाहर के कमरे में जा बैठे । पान लायची से मेहमान की खातिर करने वाद नगेन्द्रनरसिंह ने फिर बातों का सिलसिला छेड़ा । इस कमरे में भी इन दोनों के इलावे कोई तीसरा आदमी न था।

नगेन्द्र० । अब उम्मीद है कि तुम्हारी सफर की हरारत विल्कुल दूर हो गई होगी और तुम यह जानने के लिए तैयार होगे कि मैंने किस लिये तुम्हे यकायक इतनी दूर इस भयानक स्थान पर वुलाया है । लेकिन यह वात कहने के पहिले मैं इस वात की तुमसे प्रतिज्ञा ले लिया चाहता हूं कि इस समय मेरी जुवानी जो कुछ भी तुम्हे मालूम पडे और जो कुछ भी प्रस्ताव मैं तुमसे करूँ उससे तुम चाहे सहमत हो या न हो पर अपनी जुवान से उसका हाल किसी तीसरे से न कहोगे ।

नरेन्द्र० । (ताज्जुव से) मैं समझता हूं कि मै ने अभी तक कभी इस वात की शिकायत का मौका तुम्हे नहीं दिया है कि तुम्हारा कोई मामूली सा भेद भी मेरे जरिये किसी गैर पर प्रकट हो गया हो । लेकिन तुम यह प्रतिज्ञा चाहते हो

हो तो लो मै प्रतिज्ञा पूर्वक कहता हूँ कि तुम्हारी कोई वात किसी तीसरे से न कहूँगा।

नगेन्द्र०। (प्रेम से नरेन्द्र का हाथ दवा कर) नही नही, मै शिकायत नही करता लेकिन जब मेरी वात सुनोगे तो तुम्हे आप ही मालूम हो जायगा कि वे कितनी गम्भीर है और किस तरह मेरे एक एक शब्द पर सैकड़ो जानें टंगी हुई है।

नरेन्द्र०। सैकड़ों जाने ! आखिर वात क्या है कुछ कहो भी तो.!!

नगेन्द्र०। जिस समय मै आगरे मे था और वहाँ की पुलिस से मेरी मुठभेड़ होती थी उस समय का हाल तो तुम जानते ही होगे ?

नरेन्द्र०। हाँ वहुत कुछ। लाल-पंजे* के नाम से मशहूर हो कर तुमने जो कुछ किया वह मैं अच्छी तरह जानता हूँ, परन्तु यह मै अभी तक न जान पाया कि नगेन्द्रनरसिंह को जो घर का काफी धनी और रियासत नैपाल का इज्जतदार सरदार है डाकू और लुटेरा वनने की क्या जरूरत पडी और 'लाल-पंजा' के करतूतो की वदौलत जो कुछ धन मिला वह क्या हुआ या किस काम मे खर्च किया गया।

नगेन्द्र०। वह अब मै तुमको वताता हूँ। आज वहुत दिनो की वात हुई कि कुछ नवयुवको ने रक्त-मडल नाम की एक संस्था खोली। उसका पूरा पूरा हाल तो यहा वताने का समय नही है फिर कभी सुनाऊँगा. मगर उसका उद्देश्य यही था कि देश को गुलामी से छुटकारा दिलाना। इस काम के लिये ही वह सास्था खुली थी और उसने दुश्मन को हिला दिया, मगर वडी ही वेदर्दी और कडाई से उसको दवाया गया और उसके मुख्य कार्यकर्ता जीते जला दिये गये जिससे वह टूट सी गई, मगर इसके कुछ ही दिन वाद न जाने किस तरह उसके वचे खुचे सदस्यो को मेरा पता लगा। वे सव मेरे पास आए, आपनी सभा का सव हाल मुझसे कहा, और मेरी मदद चाही। मैंने जवाव दिया, "मै क्षत्रिय हूँ, खुले आम शत्रु को ललकार कर मैदान मे तलवार वजाना मेरा धर्म है और उसके लिये मै तैयार हूं पर तुम्हारी तरह छिपी लुकी कार्रवाई करने और धोखे मे वार करने को मेरी तवीयत नही करती। तुम लोग अगर सशस्त्र विद्रोह करने को खडे हो जाओ और एक राष्ट्रीय सेना वना कर दुश्मनो से मोरचा लेने को तैयार हो तो मैं उसका सेनापति क्य एक मामूली सिपाही वन कर भी लडने को अपना सौभाग्य समझूँगा,

---

* इस भयानक शब्द का पूरा हाल जानने के लिये 'लाल-पंजा' नाम का उपन्यास देखिये।

मगर अचानक मे वार करने को मैं कायरता समझता हूँ और वह मै कभी करूंगा नहीं।" मेरी बात सुन वे सब बोले कि 'खैर तब आप और किसी तरह से हम लोगो की मदद कीजिये !, मैंने पूछा, "और किस तरह से मै मदद कर सकता हूँ ?" वे बोले, "रुपये से, हम लोगों को अपने काम के लिये करोड़ों रुपयो की जरूरत है !" मैने उसी समय प्रतिज्ञा की कि 'दो करोड़ रुपया जिस तरह होगा तुम लोगों को दूँगा। तुम उसे जैसे चाहो खर्च करो, मगर शर्त यह होगी कि किसो गरीब या दुखिया को कभी सताना न होगा और बेकसूर की जान न लेनी होगी।' उन्होने इसे मंजूर किया और मैंने भी दो करोड रुपया देना स्वीकार किया। उसी वादे को पूरा करने के लिये मैने लाल-पंजे का रूप धरा और ईश्वर की दया से अपना वादा पूरा भी कर सका।

नरेन्द्र०। यानी दो करोड़ रुपया इकट्ठा कर के उन्हे दिया ?

नरेन्द्र०। हाँ एक तरह पर, यानी एक करोड तो मैने उन्हे दिया और एक करोड़ इस शर्त पर अपने पास रक्खा कि उस पहिली रकम के खर्च हो जाने और किस तरह पर वह खर्च हुई यह जान लेने पर उन्हे दिया जायगा।

नरेन्द्र०। अच्छा तब ?

नगेन्द्र०। इस बात को कितने ही दिन बीत गये और उन्होने अपनी कोई खोज खबर मुझे न दी पर मै इतना जानता रहा कि वे सब गुप्त रूप से कुछ न कुछ कर जरूर रहे हैं। इधर थोडे दिन हुए कि वे सब फिर मुझसे आ कर मिले और बाकी के एक करोड़ की ख्वाहिश की। मेरे सब हाल पूछने पर उन्होने पहिले करोड के खर्चे का कुछ विवरण सुनाया और यह भी बताया कि उनकी सँस्था[1] ने जिसमे कई श्रेष्ठ वैज्ञानिक भी है शत्रुओं से युद्ध करने के कई भयानक अस्त्र आविष्कार किये है जिनकी पूर्ति के लिये और उन्हे काम लायक बनाने को एक करोड रुपया और चाहिये।

नरेन्द्र०। वे अस्त्र कैसे थे ?

नगेन्द्र०। मै सब बताता हूँ। उनकी बाते सुन मुझे बडा कौतूहल हुआ और मैने वह अस्त्र शस्त्र देखना चाहा। वे मुझे अपने गुप्त स्थान पर ले गये और वहाँ पर मैने कई अद्भुत चोजे देखी, उस विचित्र यंत्र को भी देखा जो बहुत ही छोटा था

---

1 इस संस्था - । पूरा हाल जानने के लिये 'प्रतिशोध' नामक उपन्यास देखिये।

और इसी से उसकी शक्ति भी वहुत ही कम तथा सीमा बहुत परिमित थी पर तो भी उसमे गजव की ताकत थी। मुझे विश्वास हो गया कि उस तरह का यदि काफी वडा यन्त्र तैयार हो सके तो एक दो मुल्क क्या समूचा संसार वस में किया जा सकता है। मैंने उन्हे वाकी का एक करोड रुपया दे दिया और उस यन्त्र का वडा माडेल वनाने को कहा। कुछ दिन वाद वडा माडेल भी वन कर तैयार हो गया पर उसको खडा करने लायक और सव तरह से सुरक्षित कोई स्थान उन्हें नहीं मिलता था। तव मैंने इस किले का पता उन्हें दिया, उन्होंने यहा आकर वह यन्त्र खड़ा किया और तव मुझे यहां वुला कर उसको दिखलाया। उसे देख और उसकी शक्ति की जाच कर मुझे विश्वास हो गया कि जिसके पास यह यन्त्र और इससे वने अस्त्र हैं उसको दुनिया का मालिक वनते कुछ भी देर नही लग सकती।

नरेन्द्र०। (ताज्जुव से) वह यन्त्र कैसा है, क्या करता है और कैसे काम करता है ?

नगेन्द्र०। सो मैं तुम्हे पूरा पूरा वताता हूँ वल्कि तुम्हे ले चल कर उसे दिखला ही देता हूँ, उठो और मेरे साथ चलो।

नगेन्द्रनरसिंह उठ खडे हुए और नरेन्द्रसिंह उनके साथ हुए। दोनो आदमी वाहर के कमरे मे आए और वहाँ से सीढियो की राह उतर कर उस आँगन जैसी जगह मे पहुँचे जहाँ तहखाने की राह किले के वाहर से नरेन्द्रसिंह भीतर आये थे। यहाँ से एक दूसरे दर्वाजे को लांघ कर नगेन्द्रनरसिंह एक दूसरे मैदान मे निकले और पूरव की तरफ रवाना हुए।

लगभग पाच सौ गज जाने के वाद नरेन्द्रसिंह को ऐसा मालूम हुआ मानों उनके पैर के नीचे की धरती काप रही हो। किसी वहुत वडी मशीन के चलने से उसके आस पास की जमीन मे जिस प्रकार का कंपन होता है यह कंपन भी वैसा ही था पर वहुत गौर से चारो तरफ देखने पर भी नरेन्द्रसिंह को कही कोई मशीन या दूसरी चीज दिखाई न पडी और न कोई मकान या इमारत ही ऐसी दिखी जिसके भीतर किसी प्रकार के यन्त्रों के होने का गुमान किया जा सके। उन्होने नगेन्द्रनरसिंह से इसके वारे में पूछना चाहा पर कुछ सोच कर चुप रहे।

आश्चर्य इस वात का था कि किसी तरह की कोई भी आवाज कान में बिल्कुल नही पड़ रही थी। पर नगेन्द्रनरसिंह को इसका कुछ ख्याल न था। ऐसा

मालूम होता था मानो नित्य का साथ होने के कारण उन्हें इसकी विशेषता जान नहीं पड़ रही है। वे नरेन्द्र को लिये ऊँचे ऊँचे पेड़ों के एक झुरमुट की तरफ सीधे बढ़े जा रहे थे जो उनके सामने नजर आ रहा था।

झुरमुट के पास इन दोनों के पहुंचते ही फौजी वर्दी पहिने और हथियारो से लैस कई सिपाही निकल आये पर नगेन्द्रनरसिंह को देखते ही सलाम कर पीछे हट कहीं गायब हो गये और वे नरेन्द्र को लिये इस झुरमुट के अन्दर घुसे और कुछ ही देर में उस छोटे जंगल के बीचोबीच में जा पहुँचे। इस जगह ऊपर के पेड़ों की डालें इस कदर एक दूसरे से गुथी हुई थी कि आसमान दिखाई नही पड़ता था और चारों तरफ ऊँची ऊँचो झाड़ियों ने सब तरफ का दृश्य रोका हुआ था, जिससे यहाँ दिन का समय होने पर भी अन्धेरा था।

थोड़ा आगे बढ़ने पर नरेन्द्र को अपने सामने एक गुफा का मुहाना दिखाई पड़ा जो ठीक ऐसी मालूम होती थी मानों किसी शेर की माँद हो। वह नीचे की तरफ झुकती हुई जमीन के एक दम अन्दर घुस गई थी और उसके भीतर घोर अन्धकार था, इन दोनों के उस जगह पहुँचते ही किसी जगह से कई सिपाही वहाँ आ गये और नगेन्द्र को देख सलाम कर अदब से खड़े हो गये। किसी विचित्र भाषा में नगेन्द्र ने उनसे कुछ कहा जिसे सुन दो आदमी वहाँ से चले गये और कुछ ही देर में एक लालटेन लिए हुए लौट आये, तथा बाकी के सब आदमी पुनः जहाँ से आये थे वही गायब हो गये। लालटेन लिये दोनो सिपाही इस गुफा में घुसे और उनके पीछे पीछे नगेन्द्र और नरेन्द्र जाने लगे।

विचित्र तरह से घूमती और चक्कर खाती हुई वह गुफा बराबर जमीन के अन्दर ही घूमती जा रही थी और अगल बगल की दीवार और छत को देखने से मालूम होता था कि शुरू का हिस्सा चाहे स्वाभाविक ही हो मगर अब यह मनुष्य के उद्योग द्वारा बनाई हुई है। ज्यों ज्यों नीचे उतरते जाते थे जमीन की थरथराहट बढती जाती थी तथा कुछ और नीचे उतरने पर मशीनों के चलने की भी हलकी आहट मिलने लगी। नरेन्द्र ताज्जुब कर रहे थे कि कब यह गुफा समाप्त होगी और किस तरह के यन्त्र वे देखेंगे।

काफी दूर तक इन लोगो को उस गुफा मे जाना पड़ा और तब एक मोड़ लेकर गुफा समाप्त हो गई। नरेन्द्रसिंह को अपने सामने लोहे का एक मजबूत

दर्वाजा दिखाई पड़ा जो भीतर से वन्द था और जिसके सामने दो मजबूत कद्दावर सिपाही खडे थे। नगेन्द्र को देखते ही उन लोगों ने फौजी सलाम किया और उनके कुछ कह देने पर एक ने एक रस्सी खीची जिसका दूसरा सिरा दर्वाजे के दूसरी तरफ गया हुआ था। थोडी ही देर वाद दर्वाजे के वीच की एक छोटी खिड़की खुली और किसी ने झाँक कर देखा। सिपाहियो ने उससे कुछ वाते की जिसे सुन उसने सिर भीतर कर लिया। इसके थोडी देर वाद घडघड करता हुआ यह भारी दर्वाजा खुल गया। दोनो सिपाही तो वाहर ही रह गये और नरेन्द्र को साथ लिये नगेन्द्र भीतर घुस गये। इनके भीतर होते ही दर्वाजा फिर वन्द हो गया।

यहा पहुँचते ही नरेन्द्र को मालूम हुआ मानो उनके पास ही कही कोई वहुत बड़ी मशीन चल रही है, मगर वह सकरी कोठरी जिसमे वे लोग इस समय थे, विल्कुल खाली थी। हा सामने की तरफ एक वन्द दर्वाजा दिखाई पड रहा था और उसके पास एक आदमी खड़ा था जिसने नगेन्द्र का इशारा पाते ही वह दर्वाजा खोल दिया। एक दूसरा दर्वाजा मिला और उसके वाद तीन और दर्वाजे लाघने पडे।

अव ये लोग एक वहुत ही बडे कमरे मे पहुँचे जहाँ वहुत से आदमी चलते फिरते और काम करते दिखाई पड रहे थे। कमरे के चारो तरफ तरह तरह की वहुत सी मशीने चल रही थी जिनके शोरगुल के मारे कान के पर्दे फटे जा रहे थे। यहा गर्मी भी वहुत थी मगर वहुत से विजली के पखो के कारण जो तेजी से घूम कर गंदी हवा को वाहर निकाले जा रहे थे, वहुत तकलीफ नही होती थी। विजली की रोशनी के कारण यहां दिन की तरह उजाला था और अपने पीछे जिन कोठरियों को लांघते हुए वे यहा तक आये थे उनमे भी विजली की रोशनी हो रही थी।

इन दोनो को देखते ही सुफेद वालो वाला एक वूढा आदमी आगे वढ आया जिसकी उम्र साठ वर्ष से कम न होगी, मगर फिर भी फुर्ती और तेजी उसमे अभी तक मौजूद थी तथा ऊँचा माथा वुद्धिमानी का परिचय दे रहा था। इसको देख नगेन्द्र ने कहा, "देखिये इन्जीनियर साहव, ये मेरे एक वडे पुराने मित्र आये है जो नैपाल सरकार के एक सेनापति भी है। ये आपके आविष्कार का कुछ हाल जानना चाहते है और मुझे उम्मीद है कि आगे चल कर इनसे हम लोगो को वहुत कुछ मदद मिलेगी।"

सौजन्यता के साथ उस वृद्ध ने नरेन्द्रसिंह को हाथ जोड़ा और तव कहा,

"यहाँ तो मशीनों के शोर के मारे कान देना मुश्किल है, मेरे आफिस में चलिये तो बातें हों।" वह उन्हें लिये हुए बगल के दर्वाजे से होता एक छोटे से कमरे में पहुँचा जो आफिस के ढंग पर सजा हुआ था और यहां दीवारों पर चमड़े के गद्दे मढ़े रहने तथा दर्वाजों में शीशों के दोहरे पल्लों के कारण शोरगुल बहुत कम था। यहां पहुँच सब लोग कुर्सियों पर बैठ गये और बातें होने लगीं।

नगेन्द्र०। (बूढ़े से) केशवजी, मैं चाहता हूं कि आप इनको अपने आविष्कार का हाल बतायें क्योंकि अगर मैं भूलता नहीं हूं तो मेरे मित्र को अपनी पढ़ाई के दिनों में विज्ञान से बड़ा प्रेम था और ये उसमें काफी गति भी रखते थे।

केशव०। बहुत अच्छा। (नरेन्द्र की तरफ देख कर) मैं समझता हूँ आपको प्रसिद्ध एक्स-रेज का हाल जरूर मालूम होगा!

नरेन्द्र०। जी हाँ, मैं एक्स किरणों का हाल अच्छी तरह जानता हूं। अभी हाल ही में उनकी सहायता से मेरे एक मित्र ने अपने फेफड़ों का चित्र उतरवाया और इलाज करवाया था।

केशव०। करीब करीब उसी तरह की मगर उससे कई हजार गुना अधिक ताक़त रखने वाली 'डेथ-रेज' अर्थात् 'मृत्यु-किरण' का मैंने आविष्कार किया है। इन किरण में अनन्त शक्ति है। यह जिस चीज पर पड़ती है उसे जला डालती है। संसार का कोई भी पदार्थ इसकी शक्ति के प्रभाव से बाहर नहीं है, यहां तक कि अभी उस दिन मैं एक छोटी पहाडी को इन किरणों की सहायता से भस्म कर देने में समर्थ हुआ हूँ!!

नरेन्द्र०। पहाड़ी को भस्म कर सके हैं!!

केशव०। जी हाँ।

नरेन्द्र०। यह तो बड़े आश्चर्य की बात है! अच्छा इन किरणों की उत्पत्ति किस प्रकार से होती है?

केशव०। इनकी उत्पत्ति का मूल तो वही बिजली है। बिजली की असंख्य शक्तियों में से एक यह भी है कि वह गर्मी पैदा कर सकती है। मेरे यन्त्र उस गर्मी को इच्छानुसार कम-बेश करते और जहाँ चाहते वहाँ भेजते हैं। आप जानते हैं कि सूर्य की किरणों में गर्मी है। साधारण रूप से जितनी गर्मी उससे यहाँ पहुँचती है वह नुकसान पहुंचाने योग्य नहीं है पर किसी आतशी शीशे की मदद से

अगर ज्यादा जगह की धूप एक बिन्दु पर इकट्ठी कर दी जाय तो उतनी दूर की गर्मी भी उस जगह इकट्ठी हो जाती है और वहां असह्य गर्मी हो जाती है। इसी सिद्धान्त पर मैं भी अपने यन्त्रों द्वारा बहुत सी बिजली की गर्मी एक बिन्दु पर इकट्ठी करता हूँ और इससे वह चीज जिस पर मैं यह बिन्दु फेंकूं चाहे कुछ भी क्यो न हो तुरन्त भस्म हो जाती है। ये सब यन्त्र जो आप देख रहे हैं सिर्फ बिजली पैदा करते हैं, इसके बगल के कमरे मे वे यन्त्र लगे हैं जो उस बिजली की शक्ति में से उसकी गर्मी पैदा करने वाली शक्ति को छाट कर अलग करते हैं और उसके बाद के कमरे मे वे यन्त्र हैं जो उस गर्मी को संग्रह करके इच्छानुसार 'मृत्यु-किरणो' के रूप में जहां चाहे भेजते अथवा इकट्ठी करके रख लेते हैं।

नरेन्द्र०। मगर इतने यंत्रों को चलाने लायक कोयला आपको इस बीहड़ जगह मे कैसे मिलता है?

केशव०। मेरे यन्त्र कोयले या तेल से नहीं चलते। आपको मालूम है कि यह पृथ्वी अन्दर से बड़ी गर्म है, साथ ही इसके अन्दर बिजली भी भरी हुई है। मैं उस गर्मी और बिजली से काम लेता हूँ। इस जगह बहुत से पाइप दो दो और तीन तीन मील नीचे तक जमीन के अन्दर गाड़ दिये गये हैं जो उस बिजली और गर्मी को इकट्ठा करके ऊपर भेजते हैं और उन्हीं की सहायता से मेरे ये यन्त्र चलते हैं। आइये उठिये तो मैं सब चीजें आपको दिखाऊं।

इतना कह केशवजी उठ खडे हुए और ये दोनो आदमी भी उनके साथ हुए। भिन्न भिन्न कमरो मे ले जा कर केशवजी ने अपनी मृत्यु-किरण का सब हाल अच्छी तरह समझाया और अद्भुत तथा विचित्र यन्त्र भी दिखलाए जिनसे वे किरणें उत्पन्न होती थी। इन सब चीजो का विवरण इतना कठिन और ऊंचे दर्जे के वैज्ञानिक तथ्यो से पूर्ण था कि उसका बयान यहां करना हमारे पाठको का केवल समय नष्ट करना होगा। उनमे से बहुतो को तो स्वयम नरेन्द्रसिंह भी समझ न सके पर इतना जान गये कि इन यन्त्रो के बनाने और उन्हे इस स्थान मे खड़ा करने मे करोडो ही रुपये लगे होंगे।

सब तरफ दिखाते और हाल सुनाते हुए केशवजी नगेन्द्रनरसिंह और नरेन्द्रसिंह को उस कमरे में लाए जो सब का केन्द्र था अर्थात् जहा वे किरणें इकट्ठी होती थी और जहा से इच्छानुसार चलाई जा सकती थी। इस बड़े कमरे के बीचोबीच

में कई गोल टेवुल रक्खे हुए थे जिनके ऊपर लोहे के मोटे मोटे पाइप लगे हुए थे जो छत तक चले गये थे। इन टेवुलों के ऊपर घिसे हुए शीशे लगे हुए थे और उन पाइपों की राह कहीं से आती हुई रोशनी उन शीशों पर पड़ रही थी। केशवजी ने उनमें से एक टेबुल के पास जा कर कहा, "यह कमरा जमीन से पाँच सौ फुट नीचे है अस्तु हमे ऊपर का हाल देखने के लिए उस तरह के पेरिस्कोप लगाने पड़े हैं जैसे कि पनडुब्बी नावों में लगे रहते है और जिसके द्वारा वे समुद्र के नीचे रह कर भी ऊपर का हाल देख सकती हैं। मेरे पेरिस्कोपों मे एक विशेषता यह भी है कि इनमें आँख लगा कर देखना नही पड़ता वल्कि मेरे ईजाद किये हुए एक खास शीशे की मदद से ऊपर आकाश तथा चारो तरफ की तस्वीर इस टेबुल पर वनती रहती है, जिससे अगर चाहें तो उसकी फोटो भी ले सकते है—अच्छा अव देखिये।"

इतना कह केशवजी ने हाथ वढ़ा कर ऊपर के नलके मे लगे एक पहिये को घुमाया जिसके साथ ही नलके से निकलने वाली रोशनी तेज हो गई और तब टेबुल के शीशे पर (जो घिसा हुआ यानी उस तरह का था जैसा फोटो उतारने के केमरे के पीछे लगा रहता है) ऊपर के आकाश मैदान और पहाड़ों का एक चित्र वन गया। सव लोग कौतूहल के साथ झुक कर देखने लगे।

जैसा दृश्य नरेन्द्रसिंह ऊपर देख आये थे ठीक वही इस समय छोटे रूप में उन्हें उस शीशे पर वना हुआ दिखाई पड़ा। आकाश पर धूप पड़ने से चाँदी की तरह चमकने वाले दौड़ते हुए वादल, चारो तरफ की ऊँची ऊँची पहाड़ी चोटियों के भीतर दवा हुआ यह किला, और दूर की वर्फ से ढंकी हिमालय की चोटियाँ सव साफ दिखाई पड़ रही थी। खूब गौर करने पर नरेन्द्रसिंह को अपना वह घोड़ा भी दिखाई पड़ गया जिसे वे यहाँ आती समय पहाड़ पर ही छोड़ आये थे और जो टापों से जमीन खोदता हुआ गरदन हिला रहा था। उन्होंने उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा, "वाह, यह शीशा तो बहुत दूर-दूर तक की चीजें साफ वता रहा है! यह देखिये मेरा घोड़ा खड़ा है, वापस जाने को उतावला मालूम होता है!" साथ के लोगो ने झुक कर उसे देखा और तव केशवजी कहने लगे, "जो नलका आपको यह दृश्य दिखा रहा है वह अभी सिर्फ पेड़ों की चोटियो तक ही निकला हुआ है ताकि दुश्मन दूर से उसे देख कर संदेह न कर सकें लेकिन जरूरत पड़ने पर वह इससे कई गुना ऊँचा किया जा सकता है और तव पचासों

कोस तक की चीजे उसकी मदद से साफ मालूम पडती है।"

इतना कह कर केशवजी ने एक दूसरे पहिये को हाथ लगाया और उसे घुमाना शुरू किया। ज्यो-ज्यों पहिया घूमता था त्यो त्यो टेवुल के शीशे पर वनती हुई तस्वीर मे भी ऐसा अन्तर पडता जाता था मानों देखने वाला ऊँचे चढ़ता जा रहा है। पास की चीजे तो कुछ धुँधली परन्तु दूर की चीजे स्पष्ट होती जा रही थी। यकायक नगेन्द्र ने कुछ देख कर कहा, "प्रोफेसर साहव, ठहरिये! देखिये यह क्या है?"

केशवजी ने पेच घुमाना वन्द कर दिया और सव कोई नीचे पड़ती तस्वीर पर उस जगह देखने लगे जहाँ नगेन्द्रनरसिंह ने इशारा किया था। ऐसा मालूम होता था मानो वहुत दूर कही पर एक काफिला चला आ रहा है जिसमे पचासों आदमी और वोझ ढोने के जानवर है। नगेन्द्र इसी को देख कर चौंके थे। केशवजी ने वहुत गौर से उस काफिले को देखा और तव कहा, "ये लोग अभी यहाँ से पचास साठ मील से ज्यादा दूर हैं, मगर कौन हैं यह साफ पता नही लगता। अच्छा देखिये मैं कुछ वन्दोवस्त करता हूं।"

केशवजी ने उस नलके के साथ लगे कई पेचो को किसी क्रम से घुमाना शुरू किया। अव उस तस्वीर का और सव भाग तो अस्पष्ट होने लगा सिर्फ वह जगह जहाँ काफिला था साफ और नजदीक मालूम होने लगी। पहिले से वह तस्वीर वड़ी भी हो गई। सव कोई पुनः उस जगह झुके और देखने लगे।

ऐसा मालूम होता था मानो पचास साठ आदमियो का एक झुण्ड इसी किले की तरफ चला आ रहा है। आगे वहुत से 'याक' थे जिन पर डेरे खेमे आदि लदे हुए थे। वहुत से कुलियों की पीठ पर अन्य समान थे तथा कई हथियारवंद सिपाही भी साथ थे और उनसे कुछ पीछे हट कर तीन चार आदमी घोड़सवारों के हाथो में दूरवीनें थी और वे उनके जरिये से वार वार इसी किले की तरफ देखते और आपुस मे कुछ वातें करते आ रहे थे।

सव लोग कुछ देर तक गौर से इन लोगों की तरफ देखते रहे और इसके वाद केशवजी ने कहा, "ये लोग न जाने कौन हैं? मगर इसमे संदेह नहीं कि इनका लक्ष्य यही किला है।"

नगेन्द्र ने यह सुन नरेन्द्र की तरफ घूम कर कहा, "नैपाल सरकार की तरफ से तो ये लोग नही आ रहे है?" नरेन्द्र ने जवाव दिया, "नही, ये लोग हमारे

आदमी नहीं हैं, ये सिपाही जो पोशाक पहिने है वह हमारी वर्दी नहीं है। मैं जब वहाँ से चला था तब तक इस तरह की खबर भी नही सुनी थी कि इस किले की तरफ आने की कोई बातचीत हो रही हो।"

नगेन्द्र ने यह सुन कुछ सोच कर कहा, "तब ऐसी हालत में यह जरूर सरकार की भेजी हुई वही पार्टी है जिसकी खबर हम लोगो को लगी थी।"

इसी समय दर्वाजे पर थपकी की आवाज सुनाई दी और केशवजी के "कौन हैं, भीतर आओ!" कहने पर एक फौजी वर्दी वाला सिपाही अन्दर आया जिसके हाथ में एक कागज था। सलाम कर उसने वह कागज केशवजी के हाथ में दे दिया। केशवजी ने पढ़ा, यह लिखा था, "बेतार के टेलीफोन से अभी यह समाचार आया है—सरकार की भेजी पार्टी कई दिन हुआ किले का पता लगाने के लिये बड़ी गुप्त रीति से रवाना हो गई। अभी मुझे यह खबर लगी है। वे अब किले के पास पहुँचते ही होंगे—बी० एस० ९९।"

केशवजी ने वह कागज नगेन्द्रनरसिंह की तरफ बढ़ा दिया जिन्होंने उसे बड़े गौर से पढ़ा और तब कहा, "आप बी० एस० ९९ से पूछिये कि क्या गोपालशंकर भी उस पार्टी में हैं?" केशवजी ने यह सुन कर "बहुत अच्छा" कह एक कागज पर कुछ लिखा और उसी सिपाही के हाथ में दे दिया जो सलाम करके चला गया, ये लोग फिर उसी शीशे पर झुके और उस आने वाले गरोह की चालढाल देखने लगे।

संध्या होने में कुछ ही देर थी अस्तु ये आने वाले एक मुनासिब जगह देख कर पड़ाव डालने का प्रबन्ध कर रहे थे। जमीन के समथर टुकडे पर काफिला रुक गया था और सब असबाब जमीन पर उतार कर बोझ के जानवर अलग कर दिये गये थे। कुछ लोग तो जानवरों के मलने दलने और चराने मे लगे थे और कुछ डेरा खेमा खड़ा करने की फिक्र में थे मगर वे घुड़सवार जो सबके पीछे थे एक ऊँचे टीले पर चढ़ गये थे और वहाँ पर कुछ कर रहे थे। थोड़ी देर तक बड़े गौर से इनकी कार्रवाई देखने के बाद केशवजी बोल उठे, "ये लोग बेतार की तार खड़ी कर रहे है। ये देखिये दोनों खंभे हो चुके है और उनके बीच का जाल खड़ा किया जा रहा है।" गौर से देखने पर और लोगों को भी मालूम हो गया कि बेशक यही बात है और अब वे लोग और भी दिलचस्पी और गौर के साथ उन लोगों की कार्रवाई देखने लगे।

इसी समय फिर दर्वाजे पर से आहट आई और केशवजी के हुक्म देने पर वही सिपाही फिर भीतर आया। इस समय इसके हाथ मे एक दूसरा कागज था जिसे केशवजी ने ले लिया और पढ़ा, यह लिखा था, "गोपालशंकर कई दिनों से आगरे मे बीमार पड़े हुए हैं यह अभी मैंने सुना है इससे सम्भव नही मालूम होता कि वे भी इस पार्टी मे हों—बी० एस० ९९।" केशवजी ने वह पुर्जा नगेन्द्रनरसिंह के हाथ मे दे दिया और कुछ पूछना ही चाहते थे कि इसी समय एक दूसरा सिपाही एक और कागज लिये आ पहुंचा। इस पुर्जे को पढ़ने पर केशवजी ने यह लिखा पाया, "गोपालशंकर की बीमारी की खबर बिलकुल गलत है। अभी मालूम हुआ कि वे अपनी जगह पर किसी दोस्त को बीमारी की नकल करने के लिये छोड़ कर आज ग्यारह दिन हुए कही चले गये है—ए० जी० ६७।"

यह कागज भी नगेन्द्रनरसिंह के हाथ मे दिया गया और वे उसे पढ़ कर कुछ गौर करने के बाद बोले, "तब गोपालशंकर इसी गरोह मे हैं। मामला बेढब मालूम होता है। आप इन दोनो जासूसो को कहला दे कि बहुत होशियार रहें और कोई नई खबर मालूम होते ही सूचना दें और खुद अब खूब होशियार हो जांय। ताज्जुब नहीं कि ये लोग लड़ाई के सामान से लैस होकर आये हों। उस समय मोरचा लेने की आवश्यकता पडेगी। आपके इन्जिनो को पूरी तेजी से काम करना पडेगा, आपको बहुत होशियार रहना पड़ेगा। न मालूम कब ये आने वाले बादल फट पड़ें।"

केशवजी के वृद्ध चेहरे पर लाली दौड़ गई और आंखों मे चमक दिखाई पड़ने लगी। उन्होंने तन कर कहा, "मेरे पास इस समय इतनी बिजली तैयार है कि आधा राज्य तीन मिनट के अन्दर गारत कर सकता हूं! आप सब तरफ से निश्चिन्त रहे। ये थोडे से आदमी तो क्या इनके सौ गुने भी यहाँ आ कर हमारा कुछ नही बिगाड़ सकते !!"

नगेन्द्रनरसिंह ने यह सुन प्रसन्नता से कहा, "मुझे भी आपकी मृत्यु-किरण से ऐसी ही आशा है" और तब नरेन्द्रसिंह से बोले "अब लौटना चाहिये, मुझे बहुत कुछ इन्तजाम करना पड़ेगा।" दोनो आदमी बाते करते हुए पीछे की तरफ लौटे और जिस रास्ते यहा तक आये थे उसी राह से होते हुए यहाँ के बाहर हो गये।

[३]

पौ फटने का समय है। गिरिराज की बर्फीली चोटियो पर अरुणोदय के

समय की लाली कुछ विचित्र सुनहली छटा दिखा रही है। मन्द मन्द किन्तु, अत्यन्त ठंडी हवा चल रही है और चारो तरफ एक विचित्र प्रकार की सुगन्ध फैला रही है जो उस जंगल के कुदरती फूलों के पौधों से आ रही है जिसके पास ही वह पडाव पड़ा हुआ है जिसका हाल हम ऊपर लिख आये है।

यह पड़ाव जिसमे लगभग पचास आदमियों के होंगे एक गोल घेरा ले कर वना हुआ है। डेरे खेमे यद्यपि वहुत ज्यादा तो नही है मगर उतने आदमियों और जानवरो का मौसिम से वचाव करने को काफी हैं जो इनके साथ हैं। वाकी की सव छोलदारियाँ और डेरे तो गोल घेरा वांध कर वाहर लगे हुए हैं मगर वीचो-वीच मे कुछ मैदान छोड़ कर एक सूफियाना छोटा और सुन्दर खेमा है जिसके दर्वाजे पर का मोटा पर्दा हवा के कारण हिल रहा है। ऐसे समय मे हम एक घुड़सवार को इस डेरे की तरफ आते देखते है जो उसी तरफ से आ रहा है जिधर वह पहाड़ी किला था जिसका हाल ऊपर लिखा जा चुका है। सुवह का समय और ठंढ का वक्त होने पर भी इसका घोड़ा पसीने से लथपथ है जिससे मालूम होता है कि यह वहुत दूर से तेजी के साथ आ रहा है और वास्तव मे वात भी यही थी।

पड़ाव के पास पहुँच कर इस आदमी ने घोड़े की वाग खीची और जमीन पर उतर पड़ा। दूर ही से देख कर इसने निश्चय कर लिया था कि अभी तक इस लश्कर का कोई आदमी जागा नहीं है और यह भी उसे विश्वास हो गया कि इस समय की ठंडी हवा अभी घंटे आध घंटे तक किसी को रजाई के वाहर मुंह निकालने की इजाजत न देगी, अस्तु वह कुछ वेखटके था। घोडे से उतर वह कई कदम पड़ाव की तरफ वढ़ आया और तव चारो तरफ फिर गौर की निगाह डाल और इस वात का निश्चय कर के कि कोई उसे देख नही रहा है उसने एक गठरी खोली जो उसकी पीठ से लटक रही थी। इस गठरी मे से कोई चीज़ निकली जिसे उसने जमीन पर रख दिया और तव जेव से एक लिफाफा निकाला, इसके वाद अपना नेजा जमीन में खोंस कर खड़ा किया और उस चीज को उसी नेजे की नोक पर गाड़ कर जमा दिया। मालूम होता है कि सिर्फ इतना ही करने वह आया था क्योकि इसके वाद ही वह पुनः अपने घोड़े पर जा चढ़ा और रवाना हो गया, उस तरफ नहीं जिधर से आया था वल्कि उस तरफ जिधर वह जा रहा था अर्थात् नैप[illegible] [illegible]धानी काठमान्डू की तरफ।

उस घुड़सवार को गुमान था कि उसका इस तरह आना और वह चीज रख कर चले जाना किसी डेरे वाले ने नही देखा मगर वास्तव मे यह बात न थी। बीच वाले खेमे के दर्वाजे का पर्दा जरा हटा हुआ था और उसके अन्दर से किसी आदमी की तेज निगाहे उसकी सब कार्रवाई देख रही थी। सवार के कुछ आगे जाकर एक टीले की ओट मे होते ही यह आदमी पर्दा हटा कर खेमे के बाहर आ गया और सीधा उस तरफ चला जहा नेजा और वह चीज रक्खी गयी थी। दूर से वह नही जान सका था कि यह क्या चीज है पर जब नजदीक आया तो उसके मुंह से एक चीख निकल गई। उसने देखा कि नेजे पर की चीज एक आदमी का कटा हुआ सर है जो ताजा ही मालूम होता है क्योंकि उसकी गरदन की तरफ से अभी तक कभी कभी खून की बूंदे निकल निकल कर जमीन पर गिर रही थी। उसकी भयानक आँखें डरावनी तौर पर फैली हुई हो चुकी थी और उसके खुले हुए मुंह मे एक लिफाफा खोसा हुआ था।

यह विचित्र और डरावनी चीज देख कर एक दफे तो वह आदमी हिचका मगर फिर हिम्मत करके आगे बढ़ा। सिर के पास पहुँच कर उसने खून से तर बालों को अलग किया और सूरत पर तेज निगाह डालते ही दुःख भरे स्वर मे कहा, "हाय हाय! रघुनन्दन; तुम्हारी यह दशा!!" एक सायत के लिए उस आदमी की कुछ विचित्र हालत हो गयी मगर बड़ी कोशिश करके उसने अपने को सम्हाला और तब वह लिफाफा निकाला जो उस सिर के मुंह में खोंसा हुआ था। लाल लिफाफा देख कर उसे कुछ ख्याल आ गया क्योंकि उसने अपनी आखें बन्द कर ली और उसके माथे पर आई सिकुड़ने गवाही देने लगी कि वह कोई गंभीर बात सोच रहा है; मगर फिर तुरंत ही उसने वह लिफाफा फाड़ डाला और भीतर की चिट्ठी के मजमून पर गौर किया। यद्यपि सूर्यदेव के निकलने में देर थी फिर भी पल पल भर मे बढ़ती जाने वाली रोशनी इतनी हो गई थी कि वह चीठी पढ़ी जा सके। लाल कागज पर लाल ही स्याही से लिखा हुआ था:—

"जिसको तुमने भेद लेने भेजा था उसी का सिर तुम्हे खबरदार करता है कि होशियार हो जाओ और आगे बढने का ख्याल छोडकर यही से वापस जाओ नही तो एक एक की वही गत होगी जो इस जासूस की हुई है। होशियार! होशियार!!"

इसके नीचे किसी का दस्तखत न था मगर एक लाल निशान इस तरह का

जरूर पड़ा हुआ था मानों खून की एक बहुत बड़ी बूंद वहां पर गिर पड़ी हो।

पढ़ने वाले ने उस मजमून को खतम करके पुनः पढ़ने के लिये निगाह ऊंची की ही थी कि पीछे से कुछ आहट आई और उसने तेजी से पीछे घूम कर देखा। एक नौजवान अंग्रेज खड़ा हुआ था जिसे देखते ही वह बोला, "आह एडवर्ड! यह देखो मेरे शागिर्द रघुनन्दन की दशा! बेचारा इतनी हिम्मत करके दुश्मनों में घुस तो गया मगर अपनी जान इन नरपिशाचों ने बचा न सका और मारा गया। यह देखो यह चीठी हम लोगों को भी लौट जाने को कह रही है।" कह कर उसने वह चीठी एडवर्ड के हाथ मे रख दी और आप इधर उधर देखने लगा क्योंकि उसकी आँखें डबडबा आयी थी और कलेजा रघुनन्दन की याद करके भर आया था।

एडवर्ड बड़े गौर से उस चीठी को पढ गया और तब सिर हिला कर बोला, "तब तो इस बात मे कोई भी शक नही रह गया कि रक्त-मंडल का सदर इसी जगह कही है। अगर ऐसा न होता तो रघुनन्दन मारा न जाता और हम लोगों को भी इस तरह बार बार भागने को कहा न जाता। मेरी समझ मे तो पंडितजी अब बहुत होशियारी के साथ ही आगे बढ़ना चाहिये।"

जिसे एडवर्ड ने 'पंडितजी' कह कर सम्बोधन किया इन्हे हमारे पाठक अच्छी तरह जानते हैं क्योंकि ये वे ही पंडित गोपालशंकर हैं जिनका बहुत कुछ जिक्र पहिले आ चुका है। एडवर्ड की बात सुन कर गोपालशंकर बोले, इसमें कोई भी शक नही है, मगर इसके साथ यह बात भी है कि रघुनन्दन के इस तरह मारे जाने का हाल हमे किसी से कहना न चाहिये क्योंकि अगर इन डरपोक पहाड़ियों को यह मालूम हुआ तो ये एकदम ही घबड़ा जायंगे बल्कि ताज्जुब नही कि हमारा साथ छोड़ कर भाग जायं। यों ही ये सब भूत प्रेत और पिशाचों के डर के मारे आगे बढ़ने मे आनाकानी कर रहे है, यह हाल सुन कर तो एकदम ही इन्कार कर देंगे।"

एडवर्ड ने यह सुन कहा, "बेशक आपका कहना बहुत ठीक है और ऐसी हालत में इस सर को इसी जगह कही गाड़ देना ही मुनासिब होगा।" गोपालशंकर की भी यही राय हुई और दोनों ने मिल उसी जगह एक गड़हा खोद उस सिर को गाड़ दिया। मिट्टी से गड़हा भर कर उसके ऊपर निशान और जानवरों से बचाने के खयाल से पत्थर के कई भारी ढोके रख दिये गये और तब वे दोनों आदमी पुनः अपने खेमे में चले आये।

खेमे के एक तरफ तो दो सफरी खाट पड़े हुए थे और दूसरी तरफ छोटा टेबुल तथा तीन कुरसियाँ रक्खी हुई थी। एडवर्ड और गोपालशंकर उन कुरसियो पर जा बैठे और वह लम्प तेज कर दिया गया जो टेबुल पर रक्खा जल रहा था। बगल का सन्दूक खोल कर गोपालशंकर ने कागज का एक लम्बा पुलिन्दा निकाला जो वास्तव मे नक्शा था और उसे टेबुल पर फैला कर एक जगह उँगली रखते हुए बोले, "हम लोग इस समय यहाँ पर हैं और यह सब हिस्सा वह है जो इस तरफ के लोगों मे 'भूतो का घर' के नाम से मशहूर है और जहाँ कोई भी पहाड़ी किसी भी काम के लिये अपनी मर्जी से जाना मंजूर नही करता। वह किला जो हमारा लक्ष्य है यहा से चालीस पचास मील पर है और नैपाल की राजधानी इस तरफ लगभग उतने ही फासले पर पड़ती है। अगर हम लोग कोशिश करे तो कल दोपहर को किसी समय उस किले के पास पहुँच जा सकते है, मगर अब सवाल यह है कि क्या वहाँ तक बेधड़क चले जाना मुनासिब होगा?"

एडवर्ड ने कहा, "यही तो मै भी सोच रहा हू। यद्यपि हम लोगो के साथ लगभग पैंतीस के मजबूत पहाड़ी, पन्द्रह सिपाही और दस गोरखे है मगर फिर भी दुश्मन की ताकत जाने बगैर यह नही कहा जा सकता कि ये काफी है।"

गोपाल०। यही मेरा भी खयाल है। जैसा कि रंग ढंग से मालूम होता है रक्त-मंडल वाले सब तरह से चौकन्ने है और कोई ताज्जुब नही कि लड़ाई भिड़ाई के लिये भी तैयार हों, ऐसी हालत मे बहुत सोच समझ के ही आगे बढ़ना ठीक होगा।

एड०। मगर इस तरह एक मामूली धमकी पर बिना कुछ काम किये पीछे लौट जाना भी तो बड़ी हँसी की बात होगी। मेरी तो यह राय है कि हम लोग उस ऊँची पहाड़ी की चोटी तक तो चढे ही चले जायं जहा से इस किले मे जाने की राह गयी है और तब वही पड़ाव डाल कर आगे का काम हवाई जहाज से लिया जाय।

गोपाल०। बस बहुत ठीक है, यही राय मेरी भी है। आज शाम तक हम लोग उस पहाड़ी तक पहुच जायंगे, वही डेरा गिरा दिया जाय और कल खूब सवेरे ही बल्कि कुछ रात रहते ही 'श्यामा' पर उड़ चला जाय। मुझे विश्वास है कि वे लोग कितना भी छिप कर क्यो न रहते हो मगर आसमान से हम लोग उनका पता लगा ही लेगे।

एडवर्ड०। जरूर, मगर साथ ही मेरा यह भी कहना है कि 'श्यामा' पर मैं

अकेला ही जाऊंगा। हम दोनों का एक साथ जाना ठीक नही, क्या जाने किसी तरह का खतरा हो जाय तो दोनो के दोनों एक साथ ही दुश्मन के मुंह में चले जा सकते हैं।

गोपाल०। (हंस कर) तुम्हारी सभी रायें ठीक होती हैं! अच्छा यही सही। मगर फिर तुम्हे भी वहुत होशियार रहना होगा, कही ऐसा न हो कि लड़कपन करके खामखाह अपने को किसी आफत में फँसा लो।

इन दोनों में इसी तरह और भी कुछ वातें होती रहीं और तव तक पूरी तरह सवेरा भी हो गया। लश्कर के लोग जाग गये और जरूरी कामों से निपटने की फिक्र में पड़े। एडवर्ड और गोपालशंकर भी खेमे से वाहर निकल आये। पड़ाव को खवर दे दी गयी कि एक घन्टे के भीतर ही कूच हो जायगा। सव लोग तरह तरह की तैयारी में लग गये और चारो तरफ दौड़ धूप मच गई। इसके घंटे ही डेढ़ घंटे के वाद यह पड़ाव उठ गया और आगे की तरफ रवाना हो गया।

[४]

संध्या होने से कुछ पहिले ही पंडित गोपालशंकर का लश्कर उस स्थान के करीव जा पहुँचा जहाँ पर पड़ाव डालने का वे आज सुवह विचार कर चुके थे। पड़ाव पर पहुँचने के काफी पहिले ही गोपालशंकर और एडवर्ड अपने अपने घोड़ों पर सवार उस जगह पहुँच गये थे और दूरवीनें ले ले कर अपने चारो तरफ के पहाड़ों और खास कर उस वीच की नीची जमीन की तरफ गौर से देख रहे थे जहाँ वह विचित्र जमीदोज किला था।

इन दोनों को गुमान था कि अगर रक्त-मंडल का सदर यही है तो वे जरूर कही न कही कुछ आदमियों को चलते फिरते देखेंगे, मगर ऐसा न था। अपने सामने नीचे और ऊपर तथा अगल वगल कोसों तक देर तक देखने पर भी उन्हें सिवाय जंगल और पहाड़ों के कही कुछ भी दिखाई न पड़ा मगर हां पीछे की तरफ निगाह करने से उन्हें पहाड़ी रास्ते की पतली पगडंडी से आते और सांप की तरह दूर तक फैले हुए अपने लश्कर के वे आदमी जरूर दिखाई पड़ रहे थे जो संध्या हो जाने के खयाल से तेजी के साथ इधर वढ़े आ रहे थे। इन आदमियों के सिवाय और कहीं किसी मनुष्य की सूरत दिखाई नही पड़ रही थी।

एडवर्ड ने पीछे की तरफ से आते हुए अपने आदमियों को दूरवीन से देख

कर कहा, "आधे घन्टे के अन्दर हमारे आदमी यहाँ आ पहुंचेंगे। अव कल क्या करना होगा इसे सोचना चाहिये।"

गोपाल०। वही-जो आज सुवह हम लोगो ने सोच लिया है। तुम अपना वायुयान रात भर मे ठीक कर सकते हो ?

एडवर्ड०। मै उम्मीद तो करता हू कि वह ठीक हो जा सकता है, पर इतनी दूर के इस लम्वे सफर मे यदि कोई पुर्जा टूट टाट गया होगा तो मुश्किल होगी।

गोपाल०। खैर उस हालत मे तो लाचारी है मगर...... (रुक कर) वह कौन आ रहा है ?

एडवर्ड ने भी दूरवीन उठायी और गौर से उस तरफ देखा। एक सवार तेजी से घोडा दौडाता इन्ही दोनो की तरफ चला आ रहा था। कुछ ही मिनटों में वह पास आ पहुंचा और तव घोडे से उतर कर इन लोगों की तरफ वढ़ा। सवार कोई फौजी जवान मालूम होता था वल्कि उसके नैपाली फौज का कोई अफसर होने का गुमान होता था। नजदीक आ कर उसने फौजी सलाम की और अदव के साथ एक चीठी इन लोगो की तरफ वढाई। गोपालशंकर ने चीठी ले ली और खोल कर पढा। यह नैपाल सरकार की तरफ से आयी थी और उसमें यह लिखा हुआ था :—

"जनाव पंडितजी साहेव,

"हम लोगो को एक नयी और वडे ताज्जुव की वात का पता लगा है जिससे आपको आगाह कर देना वहुत जरूरी है। मेहरवानी करके इस खत को देखते ही आप और मिस्टर एडवर्ड केमिल इस सवार के साथ यहां चले आयें। आपका लश्कर जहा हो वही रोक दीजिये क्योकि इस नई वात की छानवीन किये विना एक कदम भी आगे वढाना खतरनाक होगा। मैं यहाँ से कुछ ही दूर पर हूं।

(दः) कप्तान किशन सिंह

आफिसर कमांडिग ११ वी व्रिगेड,

वहुक्म

श्रीमान महाराजा वहादुर।

| मुहर |

गोपालशंकर ने ताज्जुव के साथ चीठी को दोवारा पढ़ा और तव एडवर्ड के हाथ में देते हुए उस नौजवान से पूछा, "कप्तान साहव कहां पर है?" उस आदमी ने जवाव

में पश्चिम की तरफ हाथ उठा कर कहा, "उस तरफ लगभग डेढ़ दो कोस पर उनका डेरा पड़ा हुआ है और उन्होंने इस चीठी के इलावे जुवानी भी कहला भेजा है कि इस खत को पाते ही मेरे पास चले आवे और अपने लश्कर को जहाँ वह हो उसी जगह रोक दें, एक कदम भी आगे न वढ़ने दें, नहीं तो वड़ी आफ़त होगी।"

गोपाल०। (ताज्जुव से) मगर मेरी समझ मे कुछ भी नही आता कि यकायक ऐसी कौन सी नई वात पैदा हो गई है। अभी तीन चार दिन हुए मैं महाराजा साहव से खुद रेजीडेन्ट साहव के सामने सव वाते तय कर चुका हूं; तो अव यह क्या वात पैदा हो गयी है?

सवार०। (लाचारी दिखाता हुआ) अफसोस कि मैं इसके सिवाय और कुछ नही कह सकता कि आज कोई डाकू पकड़ा गया है और उसी की जुवानी कोई ऐसी वात कप्तान साहव को मालूम हुई है कि उन्होंने तुरन्त ही मुझे आपकी तरफ दौड़ा दिया है।

गोपाल०। कोई डाकू पकड़ा गया है!

सवार०। जी हाँ।

गोपाल०। तव तो कहीं......?

गोपालशंकर ने कुछ सोचा और तव एडवर्ड से धीरे धीरे कुछ वातें कीं। इसके वाद वे उस सवार से वोले, "हम दोनों तुम्हारे साथ चलने को तैयार है मगर मुश्किल यह है कि अपने लश्कर को यहाँ तक आने का हुक्म दे चुका हूं, अव उसके यहां पहुंचने की राह देखनी पड़ेगी।

सवार०। अगर आप हुक्म दे तो मैं अभी उसके पास चला जाऊं और आपके सन्देश सुना दूं। आप यह भी कर सकते है कि उसी तरफ से होते हुए कप्तान साहव के पास चले, रास्ते में उन्हे जो कुछ मुनासिव समझे हुक्म देते चलें, यद्यपि कुछ फेर इस तरह जरूर पड़ जायगा मगर कोई हर्ज नही, हम लोग चांदनी रहते अपने ठिकाने पहुँच जायंगे।

गोपालशंकर ने यह राय पसन्द की और तीनों आदमी पीछे की तरफ लौटे। इस वीच में उनका लश्कर वहुत कुछ पास आ चुका था अस्तु थोड़ी ही देर में वे उसके पास जा पहुँचे और तव अपने आदमियों को उसी जगह पहुँच कर जहां से ये अभी अभी आये थे डेरा गिराने का हुक्म दे तथा और भी कई जरूरी वातें

समझा कर गोपालशंकर एडवर्ड को लिए उस सिपाही के साथ कप्तान किशनसिंह से मिलने रवाना हो गये। इस समय सूर्य डूबने में लगभग एक घन्टे की देर थी।

गोपालशंकर के चले जाने वाद उनका लश्कर भी आगे बढ़ा और कुछ ही देर में ठिकाने पहुँच कर डेरा खेमा गाड़ने के प्रवन्ध में लगा।

[५]

मशीन-रूम के भीतर के उस कमरे में जहां पेरिस्कोप के शीशे लगे हुए हैं केशवजी और नगेन्द्रनरसिंह खड़े गौर से कुछ देख रहे हैं। उनके सामने वाले शीशे पर ऊपर के मैदानों का दूर दूर तक दृश्य वना हुआ है और वे गौर से उन दो सवारों की तरफ देख रहे हैं जो किसी पहाड़ी पर खडे दूरबीनें लिये चारो तरफ देख रहे हैं।

यकायक एक तीसरा सवार उन दोनों की तरफ आता दिखाई पड़ा। उसे देखते ही नगेन्द्र ने चौंक कर कहा, "देखिये नम्बर सत्तावन उन दोनो के पास जा पहुँचा। मुझे विश्वास है कि वह जरूर उन दो ों को वहका कर ले जायगा।"

केशवजी ने कुछ जवाव न दिया वल्कि और गौर से उस तस्वीर को देखने लगे। इस नये सवार से उन दोनों की कुछ देर तक वाते होती रही और तव वे तीनो ही पीछे की तरफ मुड़ कर उधर को चल पडे जिधर से आदमियों और जानवरो की एक लम्वी कतार इधर ही को आती दिखाई पड रही थी। नगेन्द्र ने खुश होकर कहा, "हम लोगो की चाल खूव सच्ची वैठी, अव आप भी तैयार हो जाइये।"

केशवजी यह वात सुन कर अपनी जगह से हटे और एक आलमारी के पास पहुँचे, जिसमें लोहे के पल्ले लगे हुए थे और एक वहुत मजवूत ताला वन्द था। अपने पास की ताली से केशवजी ने उस ताले को खोला और तव पल्ला खोलने पर उस आलमारी के अन्दर सजे वहुत से छोटे छोटे शीशे के गोले दिखाई पडे जिनके अन्दर न जाने क्या भरा था कि वे एक विचित्र तरह की वहुत ही हल्की हरी रोशनी से चमक रहे थे। केशवजी ने वडी सावधानी से उनमे से दो गोले उठा लिये और उन्हे लिये हुए कमरे के कोने मे खड़ी एक अद्भुत मशीन के पास पहुँचे जिसके विचित्र कल पुर्जे न जाने किस शक्ति की सहायता से तेजी के साथ चल रहे थे। उस मशीन के भीतर के किसी हिस्से मे केशवजी ने वे दोनों शीशे के गोले डाल दिये और तव पुनः आलमारी के पास लौट गये। इस कमरे के चार कोनो

में उस तरह की चार मशीनें थीं जिनमें से हर एक में केशवजी ने दो दो गोले डाल दिये और तब आलमारी वन्द कर ताला लगा कमरे के बाहर निकल गये। उनके बाहर होते ही मशीन-रूम में से शोरगुल की आवाज बढ़ने लगी और कुछ ही देर में इतनी बढ़ी कि ऐसा मालूम होने लगा मानों कान के पर्दे फट जायंगे। लगभग पन्द्रह मिनट तक यही हालत रही और तब धीरे धीरे वह तेजी कम होने लगी। आधे घन्टे के बाद फिर सब पूर्ववत हो गया और गड़गड़ाहट की आवाज भी धीरे धीरे वैसी ही धीमी हो गयी जैसी पहिले आ रही थी। इसी समय केशवजी ने पुनः कमरे में पैर रक्खा।

नगेन्द्रनरसिंह ने कहा, "लीजिये अब लश्कर-ठिकाने आ पहुँचा है" जिसे सुन केशवजी बोले, "कोई हर्ज की बात नही, मेरे इन आठ गोलों में इस वक्त इतनी ताकत भर गयी है कि ये पचास साठ आदमी क्या उस समूचे पहाड़ को उड़ा दे सकता हूँ जिस पर वे लोग है।"

दोनों आदमी पुनः उस शीशे पर झुक कर देखने लगे। पड़ाव अब उसी पहाड़ी पर पड़ गया था और चारो तरफ लोग दौड़ धूप कर रहे थे। कोई खेमे खड़ा कर रहा था, कोई जानवरों के दाने घास का प्रबन्ध कर रहा था, और कोई बरतन लिये पानी की खोज में इधर उधर घूम रहा था। केशवजी कुछ देर तक इस दृश्य को देखते रहे और तब बोले, "कहिये अब क्या हुक्म होता है? क्या इस लश्कर को मैं ऐसा साफ कर दू कि धूल तक का पता न रहे?"

नगेन्द्रनरसिंह ने यह सुन कहा, "एक नयी बात मेरे खयाल में आयी है, क्या आप ऐसा नही कर सकते कि ये सब के सब आदमी मरें नहीं बल्कि बेहोश हो जायँ? क्या आप अपनी मृत्यु-किरणों की शक्ति कुछ कम करके उसका प्रयोग इस लश्कर पर नही कर सकते?"

केशवजी ने कुछ सोचते हुए और सिर खुजलाते हुए कहा, "क्या आप चाहते हैं कि समूचा लश्कर का लश्कर बेहोश हो जाय मगर कोई आदमी मरे नही?"

नगेन्द्र०। हाँ मैं यही चाहता हू, क्या ऐसा हो सकता है?

केशवजी कुछ देर तक कुछ सोचते रहे, इसके बाद उन्होने जेब से कागज पेन्सिल निकाली और कुछ हिसाब करने लगे। इसके बाद यकायक खुश होकर बोले, "हाँ मै ऐसा कर सकता हूँ!"

नगेन्द्र०। (खुश होकर) वाह, अगर ऐसा हो सके तो बात ही क्या है! वस तो देर करने की जरूरत नहीं, आप वैसा ही करिये जिसमे सव के सब कम से कम तीन-चार घन्टे के लिये एकदम वेसुध हो जायँ।

केशवजी कोने की एक मशीन के पास गये और उसके किसी पुर्जे को घुमा कर फिर वीच वाले शीशे के पास आ गये। हम ऊपर लिख आये हैं कि शीशे के ऊपर लोहे के नलके लगे हुए थे जिनके साथ वहुत से पेच थे। अव केशवजी ने उन पेंचों को किसी खास क्रम से घुमाना शुरू किया।

नगेन्द्रनरसिंह शीशे के ऊपर झुके गौर के साथ उस लश्कर की तरफ देख रहे थे। यकायक उन्हे ऐसा मालूम हुआ मानो एक तरह की हरी विजली उस लश्कर पर चमक गई हो। इसके साथ ही उस लश्कर मे एक विचित्र तरह की वेचैनी और घबराहट दिखाई पड़ने लगी। सव लोग घवराहट के साथ इधर उधर देखने और कई इधर उधर दौडने लगे। सवारी और वोझ के जानवर भी वँधे होने पर भी इधर से उधर अपने अपने रस्सो की पहुँच तक दौड़ने भागने लगे।

इसी समय वह हरी विजली पुनः चमकी। अव सभो की वेचैनी वहुत ही वढ गई। वहुतो ने तो अपने कपडे उतार उतार कर फेंकने शुरू कर दिये मानों वे पागल हो गये हों या उन्हे वहुत गर्मी मालूम हो रही हो, और वहुत से लोग जमीन पर गिर कर हाँफने लगे।

यकायक केशवजी वहाँ से हटे और एक दूसरी मशीन के पास जा उसके किसी पुर्जे को छेड पुनः अपने ठिकाने आ गये। अव पहिले से भी ज्यादा तेजी से और पुनः पुनः वह हरी विजली चमकने लगी और उस लश्कर के लोगो की वेचैनी पहिले से सौगुनी ज्यादा हो गई। देखते देखते वहाँ के लोग एक एक करके जमीन पर गिरने लगे। आधी घड़ी के अन्दर उस लश्कर का हर एक आदमी और जानवर वेहोश हो गया था।

नगेन्द्रनरसिंह ने खुश होकर कहा, "वाह केशवजी, आपने तो कमाल किया! अव यह वताइये कि इन लोगो की वेहोशी कव दूर होगी?"

केशवजी वोले, "अगर मै और कोई कार्रवाई न करूं तो सुवह की वर्फीली हवा लगने के वाद ही इन्हे होश आ सकता है, क्या यह काफी होगा?"

नगेन्द्रनरसिंह ने कहा, "वहुत काफी! आप वस यह ख्याल रक्खें कि तीन

कोशिश कर लेने दें, मैं उधर से होकर इस पहाड़ पर चढने की कोशिश करता हूं। अगर मेरा ख्याल ठीक है और वह शिकारगाह इसी पहाड पर है तो रास्ते का पता लगाना कोई मुश्किल न होगा।

गोपाल०। खैर जाओ मगर बहुत देर न लगाना क्योंकि अंधेरी बढ़ती आ रही है।

"नहीं मैं बहुत जल्द आऊँगा" कह कर नौजवान ने घोड़े का मुँह फेरा और देखते देखते आँखो की ओट हो गया। एडवर्ड और गोपालशंकर वहीं खड़े अपने ऐसा बेमौके फँसने पर चिन्ता करते रहे।

नौजवान को गये घडी बीती, दो घड़ी बीती, तीन घड़ी बीती, मगर वह न लौटा। धीरे धीरे अंधेरा बढने लगा और जंगल के दरिन्दे जानवरों की बोलियाँ सुनाई पड़ने लगी। अब इन लोगों की घबराहट बढी और वहां रुके रहना खतरनाक मालूम होंने लगा। आखिर एडवर्ड ने बेचैन हो कर कहा, "मालूम होता है वह नौजवान खुद भी कहीं भटक गया, अब क्या करना चाहिये?"

गोपालशंकर बोले, "एक बार इस घाटी के दूसरे सिरे तक चल कर देखना चाहिए और अगर कुछ पता न लगे तो फिर इस पहाड़ पर चढ कर उस बंगले की खोज करेगे जिसका वह जिक्र करता था।"

दोनों आदमी पीछे लौटे। लगभग सौ कदम के जाने बाद ये लोग ऐसी जगह पहुचे जहाँ एक पतली पगडंडी बीच वाली घाटी को काटती हुई एक तरफ से दूसरी तरफ को निकल गई थी और जिस पर इस तरफ आती समय इन दोनो मे से किसी ने भी खयाल न किया था। इसी जगह जमीन पर एक लाल लिफाफा पड़ा हुआ था जिस पर गोपालशंकर की निगाह पड़ी और उन्होंने घोडे से उतर कर उसे उठा लिया। लिफाफा खुला हुआ था और उसके भीतर लाल रंग का कागज था जिसे निकालने पर लाल स्याही से कुछ लिखा हुआ पाया गया। यद्यपि रोशनी बहुत ही कम हो गई थी फिर भी गोपालशंकर ने वह मजमून पढ ही लिया, यह लिखा हुआ था:—

"गोपालशंकर,

"हम लोगो के मना करने पर भी तुम आगे बढ़ ही आये। खैर एक मौका तुम्हें और दिया जाता है। अब भी सम्हल जाओ और पीछे को लौटो।

यदि हमारी बात मान कर पीछे लौट गये तो ठीक ही है, नही तो याद रक्खो कि और आगे बढ़ने का ख्याल करते ही तुम्हारा और तुम्हारे लश्कर की धूल का भी पता न रह जायगा।

"अगर इसी समय अपने लश्कर में जाना चाहो तो बाईं तरफ जाओ और रात भर रह कर सुबह जाने का विचार हो तो दाहिनी तरफ घूमो, मगर खबरदार, हमारी बात मत भूलो !!"

इसके नीचे 'रक्त-मंडल' का खूनी निशान, खून की बडी बूंद के बीच में चार अंगुलियो का दाग, बना हुआ था जिसे देखते ही गोपालशंकर सब मामला समझ गये और चीठी एडवर्ड की तरफ बढ़ाते हुए बोले, "जिसका मुझे सन्देह था वही हुआ ! हम लोगो को धोखा दिया गया और यह सब रक्त-मंडल की कार्रवाई थी !!"

एडवर्ड ने भी उस चीठी को पढ़ा और तब दोनो मे सलाह होने लगी कि अब क्या करना चाहिए। आखिर सोच विचार कर यही निश्चय किया गया कि अंधेरी रात के समय अनजान जंगल मे से हो कर जाना ठीक नही है, रात भर आराम किया जाय और सुबह होते ही अपने लश्कर को चले चला जाय। यह निश्चय कर दोनो आदमी दाहिनी तरफ घूमे और उस पगडंडी पर चलने लगे जो चक्कर खाती हुई पहाड के ऊपर चढ गई थी।

लगभग आधा कोस जाने के बाद ये लोग उस पहाड की चोटी पर पहुँच गये और वहाँ इन्हे एक छोटा सा बंगला दिखाई पड़ा जिसका दर्वाजा खुला हुआ था। ये दोनो बेधड़क उस बगले के अन्दर घुसे। बंगला छोटा ही था मगर सब तरह के जरूरी सामानो से लैस था और बगल की कोठरी मे नहाने धोने वगैरह का भी इन्तजाम था, पीछे की तरफ एक अस्तबल सा भी बना हुआ था।

इन लोगो ने अपने अपने घोड़ो को मल दल कर उस अस्तबल मे बाधा और कुछ घास जो वही पड़ी हुई थी उनके आगे डाल कर अपने नहाने धोने की फिक्र मे पडे। जलपान का कुछ सामान भी वहाँ एक आलमारी मे था परन्तु दोनो ने खाना मंजूर न किया और यो ही जाकर उन दो कोचों पर लेट गये जो बंगले मे रक्खे हुए थे। बातचीत करते करते रात हो गई और धीरे धीरे ये लोग नीद मे गाफिल हो गये। सोने के पहिले गोपालशंकर ने

चार घण्टे तक इनमें से कोई होश में आने न पावे, बस मेरा काम हो जायगा।"

केशवजी के मुँह से "ऐसा ही होगा, आप बेफिक्री से अपना काम करें" सुनते ही नगेन्द्रनरसिंह तेजी के साथ उस कमरे के बाहर निकल गये। इस समय तक सूरज डूब गया था और अंधेरी चारो तरफ से झुकी आ रही थी।

[६]

पेचीले और तंग पहाड़ी रास्तों पर से घूमता हुआ वह फौजी जवान गोपालशंकर और एडवर्ड को कुछ दक्खिन झुकते हुए पश्चिम की तरफ ले चला।

सूर्यास्त का समय होने से दृश्य बड़ा ही सुहावना हो रहा था। बर्फ से ढंकी हुई चोटियाँ खून की तरह लाल हो रही थीं और अपने अपने घोसलों में आ कर आराम लेने वाले परिन्दो की आवाज से जंगल गूंज रहे थे। मस्ती लाने वाली संध्या की हवा बह रही थी और हर तरफ नई बहार दिखा रही थी जिसका आनन्द लेते हुए प्रकृति-प्रेमी गोपालशंकर अपने तन-मन की सुध भूले हुए थे। उन्हें कुछ भी खयाल न था कि किधर जा रहे हैं या किस काम के लिये जा रहे हैं, केवल एडवर्ड के साथ जंगल में उस सवार के पीछे पीछे चले जा रहे हैं इतनी ही उन्हें होश थी। वे कितनी देर से चल रहे हैं या अपने मुकाम से कितनी दूर आ गये है इसकी भी उन्हें सुध न थी।

परन्तु इसी समय यकायक उस सवार के मुंह से कुछ सुन कर उनकी मोह-निद्रा टूटी। वह सवार चलता चलता रुक गया था और कह रहा था, "गजब हो गया! मालूम होता है मैं रास्ता भूल गया!!" अब गोपालशंकर भी चौंके और अपने चारों तरफ गौर से देखने बाद उन्हें मालूम हुआ कि वे कैसे बीहड़ स्थान में आ पहुँचे हैं।

दो तरफ ऊँचे पहाड़ और सामने की तरफ गहरा गड्ढा था जिसकी खड़ी दीवार एक दम नीचे उतर गई थी। दोनो तरफ के पहाड़ो पर चढ़ना असम्भव था और पीछे वह घोर जंगल था जिसमे से होते हुए वे यहाँ तक पहुँचे थे। वह नौजवान सवार उस गड्ढे के पास खड़ा कह रहा था, "जरूर मैं रास्ता भूल गया, उस जगह से दाईं तरफ नही बल्कि बाईं तरफ मुड़ना चाहिये था। अब क्या होगा? इस घोर जंगल में से हो कर रात के वक्त वापस जाना भी खतरे से खाली नहीं है। अब मैं बेमौत मरा। कप्तान साहब मेरी गलती की

खबर सुनेंगे तो तुरत मुझे जेल भेजवा देंगे बल्कि गोली मार देने का हुक्म दे दें तो भी ताज्जुब नहीं। हाय, अब मैं क्या करूँ ?"

अब एडवर्ड और गोपालशंकर को भी अपनी भयानक स्थिति का पता लगा। हिमालय की पेचीली पगडण्डियों और उसके भयानक जंगलों का हाल वे बखूबी जानते थे और यह भी अच्छी तरह समझते थे कि एक बार रास्ता भूल जाने पर बिना घंटों भटके ठीक राह पर आना बड़ा ही मुश्किल है, खास कर ऐसे मौके पर जब रात की अंधियारी चारों तरफ से झुकी आ रही हो और सामने खड्ड और पीछे वह भयानक जंगल हो जिसमें तराई के प्रसिद्ध शेर चक्कर लगा रहे हों। दोनों तरफ खड़े ऊँचे पहाड़ किसी तरफ जाने का मौका नहीं देते थे और न उन पर चढ़ना ही सहज था। इस समय की अपनी हालत देख बहादुर एडवर्ड और दूरदर्शी गोपालशंकर भी कुछ घबड़ा गये और खड़े होकर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये।

आखिर वह नौजवान कुछ सोच विचार कर बोला, "इस समय अंधेरी रात में उस जंगल से होकर लौटने की राय तो मैं नहीं दे सकता, यदि दिन का वक्त या चाँदनी रात भी होती तो एक बात थी मगर यों जाना एकदम खतरनाक है। ईश्वर न करे अगर किसी मुसीबत में पड़ गये तो बड़ा ही बुरा होगा। मुझे खयाल पड़ता है कि यहाँ कहीं करीब ही में महाराज का एक शिकारगाह है और छोटा बंगला सब तरह के सामानों से लैस वहाँ मौजूद है, अगर आप लोग कुछ देर यहीं रुकने की तकलीफ करें तो मैं जाऊँ और उसका पता लगाऊँ।"

गोपाल०। वह शिकारगाह किस तरफ है ?

नौजवान०। इसी बाईं तरफ वाले पहाड़ पर कहीं है। इसके ऊपर चढ़ने से मुझे विश्वास होता है कि उसका पता लगेगा।

गोपाल०। (ऊपर की तरफ देख कर) मुझे गुमान होता है कि अगर हम लोग अपने घोड़े इसी जगह छोड़ दें और पैदल चढ़ना शुरू करें तो इस पहाड़ पर चढ़ सकते हैं।

एडवर्ड०। मुझे भी यही उम्मीद होती है। कम से कम एक दफे कोशिश करके तो देखना ही चाहिये।

नौजवान०। मेरी राय तो यही है कि आप जल्दी न करें। एक दफे मुझे

दोनों तरफ साल और दूसरे कई तरह के वड़े वड़े जंगली पेड़ों ने घनी छाया की हुई थी जिससे वह स्थान ऐसा हो गया था कि इधर-उधर से जाने वाले इक्के दुक्के मुसाफिर की भी आँख उन पर नही पड़ सकती थी। यह जगह अपने काम की समझ गोपालशंकर यही ठहर गये और अपना सब सामान उतार कर एक पत्थर की चट्टान पर रखने वाद कपड़े भी उतार डाले। यद्यपि हिमालय की वर्फीली हवा शरीर को कँपा रही थी फिर भी उन्होने अपना वदन एक दम नंगा कर डाला और तव अपने साथ लाए हुए सामानो में से एक शीशी निकाली जिसमें किसी तरह का तेल था। यह तेल उन्होने अपने तमाम वदन मुँह हाथ पांव और एक कपड़े की सहायता से अपनी पीठ मे भी अच्छी तरह मला और तव पेडो की आड़ में से निकल कर वाहर आ गये जहाँ एक ऊँची चोटी की आड़ छोड़ कर निकलते हुए सूर्यदेव की किरणे अभी-अभी आ कर गिरी थी। ताज्जुव की वात थी कि ज्यों ज्यो धूप उनके वदन मे लगती थी वह काला होता जा रहा था यहाँ तक कि देखते देखते ही उनका तमाम वदन इस तरह काला हो गया मानो वे अफ्रिका के कोई हवशी हो। केवल रंग वदल कर ही नही रह गया वल्कि उनके वदन का चमड़ा भी जगह जगह से एक विचित्र प्रकार से सिकुड़ने लगा और थोड़ीं ही देर में उनके तमाम वदन में इस प्रकार की झुरिये पड गई मानों वे नौजवान न हो कर पचास साठ वर्ष के कोई अधेड़ या वूढ़े आदमी हो। अव उनको देख कर उनका वडे से वड़ा दोस्त भी अचानक उन्हें पहिचान नहीं सकता था। तेल लगाने के घंटे भर वाद जब उनकी हालत एक दम वदल गई तव उन्होने एक मोटा कपड़ा लेकर समूचे वदन को खूव रगड़ कर पोंछ डाला और तव कपडे पहिन लिये; वे कपड़े नहीं जिन्हे पहिन वे लश्कर के वाहर हुए थे वल्कि एक दूसरे ही ढंग के कपड़े जो उन पहाड़ियो के कपड़ो से वहुत कुछ मिलते जुलते थे जो अकसर इस प्रान्त में आते जाते दिखाई पड़ते थे और जिनका निवास स्थान तिव्वत या भूटान की सरहद होता था। न जाने उन्होने ये कपड़े कहाँ से पाये थे या अपने साथ किस लिये रख लिये थे।

इन कपड़ो को पहिनने के वाद उन्होने एक छोटा सा शीशा निकाला और उसमे अपना मुँह अच्छी तरह देखा। खूव गौर से देखने के वाद उन्होने सिर

हिलाया, मानो उन्हें इस रूप-परिवर्तन पर प्रसन्नता नही हुई थी। अब उन्होंने एक अस्तुरा निकाला और अपनी मोछ और सिर को एक दम सफा कर डाला। इन स्थानो पर भी वही तेल मला जिससे ये भी काले हो गये और तब कपडे से पोछ कर उस तरह की गोल टोपी सिर पर पहनी जैसी इधर के पहाड़ी लोग पहिनते है। अब ये ठीक कोई पहाड़ी मालूम होने लगे थे।

एक वार फिर शीशा लेकर गोपालशंकर ने अपनी शकल देखी। इस समय उन्हे देख कर उनका सगा भाई भी उन्हें पहिचान न सकता था मगर गोपालशंकर को अब भी पूरा संतोष न हुआ। उन्होने अपने सामान से ढूंढ कर लम्बे और मैले तथा पोले वनावटी दाँतो की दो पंक्तियाँ निकाली जो वड़ी कारीगरी से पतली कमानियो के साथ लगे हुए थे और इन्हे अपने दाँतो पर लगाया। ये वनावटी दाँत कुछ इस तरह वने हुए थे कि उनके असली दाँतो के साथ एक दम चिपक कर कुछ इस तरह वैठ गये कि नजदीक से देख कर भी यह जानना कठिन था कि ये असली नहीं नकली हैं। इन दाँतो ने उनकी शकल इतनी वदल दी कि उनकी माँ भी अब उन्हें देख कर पहचान नही सकती थी। अब फिर उन्होने शीशा उठाया और बड़े गौर से अपना चेहरा देख कर प्रसन्नता के साथ गरदन हिला कर वोले, "अब रक्त-मंडल का होशियार से होशियार जासूस भी मुझे पहिचान नही सकता, मैं वेखटके......!" पर यकायक वे रुक गये। उन्हे ख्याल आया कि उनकी आवाज अब भी वदली नही है।

गोपालशंकर कच्ची गोलियाँ नही खेलते थे। वे जिस काम मे भी हाथ डालते उसे पूरी तरह से करते थे और यही उनकी विशेषता थी। उन्होने पुनः अपना सामान उलटा पुलटा और उसमे से एक दूसरी शीशी निकाली जिसमे छोटी छोटी बहुत सी चमकीली गोलियाँ थी। इसमे से कई गोलियाँ निकाल कर उन्होने मुँह मे रख ली और तब दूसरे काम मे लगे। अपने सामान से कागज और कलम निकाल कर खूब सोच सोच कर वे एक चीठी लिखने लगे।

इस चीठी का मजमून क्या था यह तो हम नहीं कह सकते पर इतना जानते है कि इसके लिखने में गोपालशंकर ने बडी मेहनत की और कई तरह की कलमों और स्याहियों का प्रयोग किया तथा बारबार कई कागज भी बदले। लगभग घंटे भर में जब वह चीठी खतम हुई तो उन्होने उसे कई बार पढ़ा

बंगले के सब खिड़की दरवाजे मजबूती से बन्द कर लिए थे और अपनी पिस्तौल दुरुस्त कर के सिरहाने रख ली थी।

× × × ×

सुबह होते ही गोपालशंकर और एडवर्ड उठे और जरूरी कामों से छुट्टी पा अपने लश्कर की तरफ लौटे। लगभग दो घण्टे के सफर के बाद ये लोग उस जगह के पास पहुँचे जहाँ उनका लश्कर पड़ा हुआ था। दूर ही से देख कर गोपालशंकर ने कहा, "हमारे लश्कर के सब आदमी या तो मारे गये और या फिर बेहाश पड़े हैं।"

दोनों ने घोड़े तेज किये और थोड़ी ही देर में लश्कर में जा पहुँचे। लश्कर की विचित्र हालत थी, चारो तरफ लोग जमीन पर पड़े हुए थे, कहीं कोई होश में न था, दूर से ऐसा मालूम होता था मानो सब मुर्दे हों मगर पास जाने पर मालूम हुआ कि वे लोग मरे नहीं है किन्तु बेहोश है। ताज्जुब की बात यह थी कि रात की भयानक सर्दी में बाहर की ओस में पडे रहने पर भी वे सब जीते क्योंकर बच रहे थे और जंगली जानवरो ने उन्हें क्यो छोड़ दिया था। बेहोशी चाहे जिस चीज की भी हो पर इतनी कड़ी और ऐसा गहरा असर करने वाली थी कि लश्कर के जानवरों मे से भी बहुतेरे अपनी अपनी जगहो पर बेहोश पड़े हुए थे। गोपालशंकर और एडवर्ड परेशान थे क्योंकि उनकी कुछ भी समझ मे नहीं आ रहा था कि आखिर यह हो क्या गया।

अब एक और बात की तरफ भी इन लोगो का ध्यान गया। इन लोगों ने अपने साथ एक छोटा हवाई जहाज ले लिया था जो पैक कर के बहुत थोड़ी जगह में आ सकता था और जिसके कल पुर्जे और सामान छोटे बड़े कई सन्दूकों में बंद थे। गोपालशंकर की तेज निगाहों ने देख लिया कि वे सभी बक्स गायब है।

जाँच करने से यह बात ठीक मालूम हुई और साथ ही इस बात का भी पता लगा कि इन लोगों के साथ रसद का जो कुछ सामान था उसका भी बहुत सा हिस्सा गायब हो गया है और सिर्फ इतना ही बच गया है जिससे लश्कर का दो दिन का काम चल सके। वे बहुत से यन्त्र आदि जो इनके साथ थे वे भी गायब हो गये थे। अब गोपालशंकर बिल्कुल घबड़ा गये और कुछ बदहवासी के साथ उनके मुँह से निकला, "हवाई जहाज गया, वे यन्त्र

जिन्हें वरसो की मेहनत में मैने तैयार किया था गये, और रसद भी गई ! अव सिवाय इसके और क्या चारा रह गया कि यहाँ से पीछे लौट जाऊँ !!"

गोपालशंकर ने पत्थर की एक चट्टान पर वैठ कर सिर झुका लिया और एडवर्ड उनके वगल मे खड़ा अफसोस की मुद्रा से चारो तरफ देखने लगा।

—०—

दुश्मन के किले में

[१]

अपनी मुहिम पर इस प्रकार असफल होने से पंडित गोपालशंकर को वडा ही अफसोस हुआ। सव से वडा अफसोस उन्हे उस हवाई जहाज और उन यंत्रो के जाने का हुआ जिन्हे वड़ी मुश्किल से उन्होने वरसो मे तैयार किया था और जिनकी मदद से वे वहुत कुछ करने की उम्मीद रखते थे। फिर भी वे सहज ही में हिम्मत हारने वाले आदमी न थे। एडवर्ड की सलाह थी कि इस समय लौट चला जाय और फिर दूसरी दफे इससे मजवूत दल वल के साथ वापस आया जाय मगर गोपालशंकर कुछ और ही सोच रहे थे। उन्होने एडवर्ड को हुक्म दिया कि वह सभो को लेकर वापस जाय और खुद अकेले ही कही जाने की तैयारी करने लगे। कुछ खास खास जरूरी सामानो की उन्होने एक छोटी सी गठरी वनाई और दो तमंचे तथा वहुत से कारतूस भी साथ ले लिये। इसके वाद जो दो चार लोग होश मे आ चुके थे उन्हे वुला कर उनसे वेहोश होने के वारे मे उन्होंने कई तरह के सवाल किये पर सिवाय इसके और कुछ न जान सके कि यकायक उन लोगो को वहुत गर्मी मालूम पडी जो दम के दम मे इतनी वढी कि वरदाश्त के वाहर हो गई और उसी के असर से वे वेहोश हो गये थे। इतनी वात से कुछ भी मतलव निकलना सम्भव न था अस्तु उन लोगो को विदा करके उन्होने एडवर्ड को ताकीद कर दी कि जहाँ तक हो उनके चले जाने का हाल लश्कर वालों को मालूम न होने पावे। कुछ और भी गुप्त वाते वताने और समझाने के वाद वे पैदल ही एक तरफ को रवाना हो गये।

लगभग दो कोस जाने वाद गोपालशकर एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ दो पहाड़ो की जड़े मिली थी और उसके वीच में एक छोटा झरना वह रहा था।

जगह जमीन पर लेटा दिया। नगेन्द्र उठ कर उस पहाड़ी के पास आए। सूरत शक्ल का वह एकदम काला और चालढाल से भूटानी या तिब्बती पहाड़ी मालूम होता था। नगेन्द्र कुछ देर तक बड़े गौर से देखते रहे इसके बाद उन सिपाहियों से बोले, "यह क्या बिलकुल बेहोश है?" सिपाहियों ने जवाब दिया, "जी नही, मगर रह रहकर इसे गश आ जाता है, मालूम होता है कही बहुत दूर से चला आ रहा है और साथ ही गिर कर चुटीला भी हो गया है।"

इसी समय उस पहाड़ी ने करवट बदली और उसके मुँह से कुछ अस्पष्ट बाते निकली। नगेन्द्र के इशारे से एक सिपाही ने उसे सहारा दे कर उठाया और दूसरे ने उसके मुँह पर पानी के छींटे दिये। पानी पड़ते ही उसने आँखें खोल दी और तब अपने चारो तरफ विचित्र निगाह से देख कर पहाड़ी बोली और भारी आवाज मे न जाने क्या क्या कह गया जो नगेन्द्रनरसिंह की समझ में कुछ भी न आया। उन्होने उससे पूछा, "तुम कहाँ से आ रहे हो और यहाँ तुम्हारा क्या काम है?"

न मालूम उस पहाड़ी ने नगेन्द्र की बात समझी या नही मगर वह फिर पहिले की तरह किसी विचित्र जंगली भाषा में कुछ कह गया। एक सिपाही ने यह देख नगेन्द्रनरसिंह से कहा, "इसकी बात कुछ समझ में नही आती, रास्ते में भी इसी तरह न जाने क्या क्या रह रह कर बक उठता था।"

नगेन्द्र ने उस पहाड़ी से कहा, "तुम न जाने क्या कहते हो, हमारी समझ में नही आता। क्या तुम हमारी भाषा नहीं बोल सकते हो?"

यह सुन उस पहाड़ी ने बड़े गौर से नगेन्द्रनरसिंह की तरफ देखा और तब मानो उनका मतलब समझ गया हो इस तरह पर हँसा जिससे उसके मैले पीले दाँत दिखाई पड़ने लगे, इसके बाद उसने अपने जेब से एक चीठी निकाली और दूसरे हाथ से एक अशर्फी दिखाता हुआ फिर उसी तरह अस्पष्ट भाषा मे कुछ कह गया, मगर इस बार उसकी बात कुछ-कुछ समझ मे आती थी। मालूम होता था कि वह अपना आशय समझाने के लिये यहाँ की बोली बोलने की कोशिश कर रहा है मगर भाषा न जानने के कारण कृतकार्य नही हो रहा है।

आखिर बहुत देर तक माथापच्ची करने के बाद नगेन्द्रनरसिंह ने उसकी बातों का मतलब निकाल ही लिया और समझ गये कि यह पहाड़ी घर जा

रहा था जब किसी ने इसे वह अशर्फी और यह चीठी देकर कहा कि इस चीठी को यहाँ पहुँचा दो तो यह अशर्फी ले सकते हो। इतना समझ कर नगेन्द्र ने हाथ बढा कर पहाडी से वह चीठी ले ली और उसे खोल कर पढ़ने लगे। उधर वह चीठी नगेन्द्र के हाथ मे देते ही वह पहाड़ी फिर गश मे आकर गिर पड़ा।

न जाने उस चीठी मे क्या लिखा था कि पढते ही नगेन्द्रनरसिंह चौंक पडे। उनके माथे पर चिन्ता की रेखाएँ पड़ गई और कुछ सायत के लिये वे किसी गहरे सोच मे डूब गये। इसके बाद वे कुछ पूछने के लिये फिर उस पहाडी की तरफ झुके मगर देखा कि वह गश मे पड़ा हुआ है और दोनों सिपाही उसे होश मे लाने का उद्योग कर रहे है। यह देख कर उन्होंने कहा, "इसे यहाँ से ले जाओ, होश में ला कर ताकत देने वाली कोई चीज दो। अगर इसे कहीं चोट चपेट लगी हो तो इलाज करो और खाने को दो। जब इसकी तबीयत ठीक हो जाय तो इसे फिर हमारे पास लाना। देखो इसे किसी तरह की तकलीफ न होने पावे, और होशियार, यह यहाँ से भागने भी न पावे। अभी इससे मैंने बहुत कुछ पूछना है।"

हुक्म सुन दोनों सिपाहियों ने उस पहाड़ी को उठाया और बाहर ले चले। यह क्या केवल हमारा भ्रम है या सचमुच इस समय पहाड़ी के होंठो पर एक हँसी की रेखा दिखाई पड़ कर तुरत गायब हो गई?

[३]

लगभग घण्टे भर के दिन चढ़ चुका होगा। नगेन्द्रनरसिंह स्नान ध्यान आदि से छुट्टी पाकर अपने कमरे मे बैठे हुए जरूरी कागजात देख रहे है। इसी समय पहरेदार ने उनके हाथ मे एक बन्द लिफाफा लाकर दिया। उन्होने खोला, भीतर एक कागज निकला जिस पर यह लिखा हुआ था—

"एक— किला— नं०—

नई घटनाएँ—मुलाकात जरूरी—पूरा मण्डल—कमेटी—आज रात—इन्तजाम—

'—चार'

कागज पढ़ते ही नगेन्द्रनरसिंह समझ गये कि यह किले की बेतार की तार द्वारा मिला हुआ एक सन्देसा है जिसे रक्त-मंडल के भयानक-चार ने उनके

और तव इस प्रकार सिर हिलाया मानो वे अव सव तरह से संतुष्ट हो गये हों।

इन सव कामों में उन्हें कई घन्टे से ऊपर लग गये और सूर्य अव ऊँचे हो कर मध्याह्न की तरफ आ रहे है यह देख उन्होंने जल्दी करनी शुरू की। अपने सामानो में से कुछ वहुत ही जरूरी चीजें तो उन्होने कमर में खोसी और वाकी की चीजे कपड़े की एक गठरी में वाँधी जिसे दो चट्टानो के वीच की एक दरार में छिपा कर उसका मुँह पत्थर के छोटे छोटे ढोंकों से वन्द कर दिया, वह चीठी जो अभी लिखी थी अपनी जेव में डाली और तव एक डंडा हाथ मे ले उठ खड़े हुए। पहाड़ियो की तरह लम्वे लम्वे डग भरते हुए शीघ्र ही वे पुनः अपने रास्ते पर आ पहुँचे और तव तेजी के साथ उधर को रवाना हुए जिधर वह जमीदोज किला था जो इनकी उस विफल मुहिम का लक्ष्य था।

[२]

संध्या का समय है। सूर्यदेव अस्ताचलगामी हुआ ही चाहते है और उन की लाल किरणें हिमालय की वर्फ से ढकी चोटियों पर पड़ कर उन्हे खून से नहला रही है। ऐसे समय में उस जमीदोज किले की एक सफील के ऊपर हम एक नौजवान को कुछ चिन्तित भाव से सर झुकाये टहलते हुए देख रहे है। पाठक इस नौजवान को वखूवी पहिचानते है क्योंकि ऊपर वे इससे मिल चुके हैं। इनका नाम नगेन्द्रनरसिंह है और इस किले के इस समय ये ही सव से वड़े अफसर है। इस समय ये किसी गहरे तरद्दुद में पड़े हुए मालूम होते है क्योकि इनके माथे पर की सिकुड़ने यह वतला रही है कि इन्होंने कोई फिक्र पैदा करने वाली खवर सुनी है।

यकायक एक लम्वी सांस लेकर उन्होंने सिर उठाया और गरदन घुमा कर किसी को वुलाना या कुछ कहना ही चाहते थे कि अचानक उनकी निगाह सामने के मैदान पर पड़ी। उनकी तेज निगाहों को कोई नई वात दिखाई पडी और उन्होने तुरत वगल से लटकती हुई दूरवीन को उठा कर आँख से लगाया।

उन्होने देखा कि कुछ दूर के एक मैदान में एक लावे कद का पहाड़ी अकेला चला आ रहा है जिसकी चाल और आकृति से मालूम होता था कि वह वेतरह थक गया है। थोड़ी थोड़ी दूर चल कर वह रुकता और किसी चट्टान का ढासना लेकर खड़ा हो जाता था, पर इसके वाद फिर एक निगाह

इस किले की तरफ डाल कर आगे बढ़ना शुरू कर देता था। कुछ देर तक गौर के साथ देखते ही नगेन्द्रनरसिंह समझ गये कि वह पहाड़ी न केवल थकावट ही से चूर हो रहा है वल्कि कुछ चुटीला या वीमार भी है, और यह वात ठीक भी निकली क्योंकि यकायक उस पहाड़ी को एक चक्कर आया जिससे वह लडखड़ा गया और तव दोनो हाथ फैला कर अपने को सम्हालने की चेष्टा करते करते ही जमीन पर गिर पड़ा।

नगेन्द्रनरसिंह कुछ देर तक उस तरफ देखते रहे, इसके वाद न जाने उन के मन मे क्या आया कि वे घूमे और उन्होंने जोर से ताली वजाई। ताली की आवाज के साथ ही एक फौजी जवान उनके सामने आ खड़ा हुआ, नगेन्द्र ने उससे कहा, "वह देखो वहाँ पर एक पहाड़ी पड़ा हुआ है, उसे जल्दी उठा कर मेरे पास लाओ।"

"जो हुक्म" कह उसने फौजी सलाम किया और वहाँ से चला गया। नगेन्द्रनरसिंह और थोडी देर तक उस जगह टहलते रहे इसके वाद वहाँ से हटे और अपने वैठने के कमरे मे चले आये जहाँ एक वडे टेवुल के ऊपर इधर के प्रान्तो का वहुत वड़ा नक्शा फैला हुआ था। नगेन्द्रनरसिंह उसी नकशे के पास खड़े हो कर उसमे कुछ देखने लगे। कुछ देर तक देख भाल कर वह नक्शा लपेट कर एक तरफ रख दिया और तव कुरसी पर वैठ सिर पर हाथ रख कुछ सोचने लगे।

न जाने कितनी देर तक वे इसी तरह वैठे रहे। संध्या हो गई और नौकरो ने वहां आकर रोशनी कर दी। समूचा किला अन्धकार से ढक गया क्योंकि सिवाय इनके कमरे के और उस मशीन-रूम के जो जमीन के अन्दर वना हुआ था या जहाँ वह भयानक मृत्यु-किरण तैयार की जाती थी, उस किले भर मे और कहीं भी रोशनी करने की इजाजत न थी। चारो तरफ निस्तब्धता का साम्राज्य छा गया जिसके वीच मे कभी कभी सन्तरियो या पहरा देने वालों की आहट के सिवाय और किसी तरह की आवाज सुनाई नही पड़ती।

यकायक दरवाजे पर से ताली वजने की आवाज सुन कर नगेन्द्रनरसिंह चौंके और वोले, "कौन है, भीतर आओ।" जिसके साथ ही दरवाजा खुला और दो सिपाही उसी वेहोश पहाड़ी को उठाये हुए अन्दर आए जिसे नगेन्द्रनरसिंह ने दूर से देखा था। नगेन्द्र का इशारा पाकर सिपाहियो ने उस पहाड़ी को उसी

नगेन्द्र० । हां वे ही, उनकी एक चीठी आई है कि उनकी वहिन अचानक वहुत सख्त वीमार हो गई है, बचने की उम्मीद नही है, उसको देखना हो तो आ जाओ, दूसरे.........

इसी समय सामने की दीवार पर लगी एक घंटी वज उठी जिसे सुनते ही केशवजी उठ खड़े हुए और कमरे का दोहरा दरवाजा खोल वाहर चले गये, थोड़ी देर वाद जव वे लौटे तो उनके हाथ में एक कागज था जिसे उन्होने नगेन्द्रनरसिंह को दिखाते हुए कहा, "मालूम होता है आपके सन्देशे का जवाव आया है। इसे भयानक-चार ने ही भेजा है। मै अभी इसे साफ करता हूँ तो ठीक पता लगेगा।"

वेतार से आया हुआ वह तार सांकेतिक भाषा में था। केशवजी ने अपने पास की ताली से लोहे की मजवूत आलमारी खोली जो कमरे की दीवार में वनी हुई थी और उसमें से एक मोटी किताव निकाल कर उसकी सहायता से उन सांकेतिक शब्दों का अर्थ निकालना शुरू किया। थोड़ी देर में यह काम समाप्त हो गया और एक दूसरे कागज पर उसका आशय लिख कर केशवजी ने नगेन्द्रनरसिंह के हाथ में दिया। उन्होंने सरसरी निगाह उस पर डाली और साथ ही चौंक कर पुनः गौर से पढने लगे, इसके वाद केशवजी की तरफ देखा और बोले, "यह मामला तो वड़ा गहरा होता दिखाई पड़ता है!"

केशवजी ने कहा, "वेशक!" और तव दोनों में धीरे धीरे कुछ वातें होने लगीं।

[४]

आधी रात का समय है, इस किले में सव तरफ सन्नाटा है, कहीं कोई चलता फिरता दिखाई नहीं देता, न कहीं से किसी तरह की आहट ही आ रही है।

एक छोटे कमरे मे जो किले के किसी वड़े ही गुप्त स्थान में है, हम एक छोटी कुमेटी होते देख रहे हैं। कमरा जो मुश्किल से दस हाथ चौड़ा और लम्वा होगा सिर्फ एक दीवारगीर की रोशनी पा रहा है जिसके शीशे के चारो तरफ पतला लाल कपड़ा लपेट कर रोशनी और भी कम कर दी गई है जिससे वहाँ एक प्रकार से अन्धकार ही है और वैठे हुए आदमियो की सूरत शक्ल देखना कठिन हो रहा है। वीच में एक गोल टेवुल है जिसके ऊपर लाल कपड़ा विछा है। टेवुल पर एक मनुष्य की खोपड़ी का ढाँचा रक्खा हुआ है जिसके नीचे हाथ की दो

हड्डियां रक्खी हुई है और दोनों तरफ दो भैंसों के ताजे कटे और खून से सने सिर रक्खे हुए है। सब कुर्सियों पर भी लाल कपड़ा बिछा हुआ है और उन पर लाल ही कपड़ा पहिने तथा लाल नकाव से अपना चेहरा ढांके हुए चार आदमी वैठे हुए है। कमरे में आने का सिर्फ एक ही दर्वाजा है जो इस समय वन्द है और उसके आगे भी लाल पर्दा पड़ा है। सन्नाटे और अंधेरे मे वे भीषण महिष-मुन्ड और नर-कपाल बड़े ही भयानक मालूम हो रहे है और उनके चारो तरफ वैठे हुए वे चारो निस्तब्ध आदमी भी पिशाचो की तरह दिखाई पड़ते है।

यकायक दूर से किसी जगह शख वजने की हल्की आवाज उस कोठडी मे पहुँची। आवाज आते ही वे आदमी उठ खडे हुए, किसी अज्ञात शक्ति को उन सभों ने माथा नवाया, और तव पुनः सब के सब वैठ गये। इसके साथ ही कमरे का दर्वाजा खुला और नगेन्द्रनरसिह भीतर आते दिखाई पडे। दर्वाजा वन्द कर वे एक खाली कुर्सी पर आ वैठे। उन चारो मे से एक आदमी खडा हुआ और उसने धीमी मगर गम्भीर आवाज मे कहना शुरू किया :—

"आज वहुत दिनो के वाद हम लोग पुनः इकट्ठे हुए है।

"वड़ी प्रसन्नता की वात है कि इस समय वे महोदय भी हमारे वीच में मौजूद है जिनके हाथ मे हम लोगो ने एक तरह से अपने मंडल की वागडोर दे दी है। उन्होने पिछले दिनो मे जिस प्रकार हमे सहायता पहुँचाई और आज भी पहुँचा रहे है उससे हम किसी प्रकार उऋण नही हो सकते, पर उसका वर्णन करने को यह समय और स्थान उपयुक्त नही है। हमारा केवल यही कहना है कि वे अव भी इस भयानक-चार के परिचालक वने रहे और इसका काम चलाते रहें।

"पिछली वैठक मे जो आज से साल भर पहिले हुई थी यह तय हुआ था कि हम चारों मे से एक तो यहाँ रह कर सब यन्त्रो और आविष्कारो को पूर्ण करे और वाकी के तीन समूचे देश मे घूम घूम कर उस आग को फिर से जलाने की कोशिश करे जो कई वरस पहिले वुझ चुकी थी। वैसा ही किया गया और उस महाशक्ति को धन्यवाद देना चाहिये कि इसमे पूरी सफलता मिली। यद्यपि ऊपर से वह आग वुझी दिखती थी पर भीतर इतनी गर्मी मौजूद थी और इतनी चिन-गारियाँ उठ रही थी कि हम लोगो के जरा सा हवा देते ही राख उड़ गई और भयानक अग्नि पुनः जलने लग गई। छः महीने से कम के ही उद्योग में दस

पास भेजा है और कहा है कि कुछ नई घटनाओं के सबब से उनका इनसे मिलना जरूरी हो गया है और इस लिए आज रात को पूरे मंडल की एक कमेटी होगी जिसके लिए वे मुनासिब इन्तजाम करें।

तार पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह के माथे पर सिकुड़ने पड़ गईं। देर तक वे न जाने क्या सोचते रहे और इसके वाद एक कागज पर कुछ लिख कर उन्होंने उस आदमी को दिया जो चीठी लाया था। जब वह कागज ले सलाम कर जाने लगा तो उन्होंने कहा, "वाहर से किसी सिपाही को भेजते जाओ।" वह आदमी चला गया और उसी समय एक सिपाही ने कमरे में पैर रक्खा। नगेन्द्र-नरसिंह ने उससे कहा, "कल जो पहाड़ी मिला है उसे मेरे पास लाओ।"

वह सिपाही चला गया मगर थोड़ी ही देर बाद लौट आ कर बोला, "उस पहाड़ी की हालत तो बहुत खराब है, उसे रात भर बेहोशी रही और आज सुबह से वहुत तेज बुखार चढा हुआ है जिसमे वह बकझक कर रहा है, कभी कभी उठ कर दौड़ता भागता भी है। उसके साथ बातचीत करना एक दम असम्भव है।"

सुन कर नगेन्द्रनरसिंह ने अफसोस के साथ कहा, "खैर उसकी पूरी खबर-दारी की जाय और इलाज मे किसी तरह की त्रुटि न होने पावे। जैसे ही उसकी हालत ठीक हो मुझे खबर दी जाय।"

"जो हुक्म" कह सलाम करता हुआ वह सिपाही चला गया। उसके जाने के वाद कुछ देर तक नगेन्द्रनरसिंह वही बैठे रहे और तब उठ खड़े हुए। अपने कमरे से वाहर आकर सीढ़ियाँ उतरते हुए बीच वाले आँगन में पहुँचे और वहाँ से उस तरफ रवाना हुए जहाँ जमीन के अन्दर बना हुआ मशीन-रूम था। यह कैसे गुप्त स्थान में था और यहाँ का रास्ता कैसा सुरक्षित था यह सब हम पहिले लिख आये है अस्तु यहाँ यह सब पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नही है।

मशीन-रूम के दर्वाजे पर ही इन्हे केशवजी मिले जो इनके आने की खबर पाकर इन्हें लेने आ गये थे। नगेन्द्रनरसिंह केशवजी को लिए उनके प्राइवेट आफिस में चले गये और दोनो मे बाते होने लगीं।

नगेन्द्र०। मैंने जो संदेसा भेजवाया था वह आपने रवाना करवा दिया?

केशव०। जी हाँ, मगर अभी तक उसका कोई जवाब नही आया है।

नगेन्द्र०। आज 'भयानक-चार' की बैठक होगी।

केशव० । जी हाँ, यह तो सांकेतिक शब्दो के अनुवाद के समय ही मुझे मालूम हो गया । जान पड़ता है कोई बहुत जरूरी बात है जो सब के सब ही आ रहे हैं ।

नगेन्द्र० । जरूर कोई ऐसी ही बात है, परन्तु मेरा विचार तो अब यहाँ का प्रबन्ध उस 'भयानक-चार' पर डाल कुछ दिनों के लिए नैपाल जाने का हो रहा है ।

केशव० । (चौंक कर) सो क्यो ? आपके जाने से तो सभी गडबड हो जायगा ।

नगेन्द्र० । आखिर यह बोझा तो 'भयानक-चार' का ही है ।

केशव० । मगर एक तरह पर वे आपकी शरण मे आ गये है और आपने उनकी सहायता करना स्वीकार कर लिया है ।

नगेन्द्र० । हाँ सो भी ठीक है, मगर इधर मैंने कुछ समाचार ऐसे सुने हैं जिनसे मेरा मन एकदम व्यग्र हो गया है । फिर यहाँ फिलहाल कोई ऐसा जरूरी काम नही है । जितने रुपयो की जरूरत थी वह इकट्ठा हो गया है, गोपालशकर वाला लश्कर लौट गया है, नैपाल का खतरा कम से कम कुछ समय के लिये टल गया है, और अंग्रेजी सरकार के किसी नये हमले की खबर नही है, अस्तु कुछ समय के लिये चले जाने से कुछ हानि की भी सम्भावना नही है ।

केशव० । आप बुद्धिमान है—जो कुछ भी करेंगे समझ बूझ कर ही करेंगे, परन्तु मेरी समझ मे यह शान्ति तूफान आने के पहिले की शान्ति है और उतनी ही खतरनाक भी जितना कि तूफान स्वयम् होता है । हमे युद्धारम्भ के पहिले के इस थोडे से मौके का पूरा लाभ उठा कर अपने को इतना मजबूत कर लेना चाहिये कि बडी से बडी शक्ति भी हमारा कुछ बिगाड न सके ।

नगेन्द्र० । हाँ सो तो आप ठीक कहते हैं........मगर......

केशव० । क्या मैं जान सकता हूँ कि वह मामला क्या है जिसने आपको इतना व्यग्र कर दिया है ?

नगेन्द्र० । कई बाते है, एक तो......आप शायद उन नरेन्द्रसिंह को भूले न होगे जिन्हे मैं उस दिन यहाँ लाया था ?

केशव० । हा हां, वही नैपाली फौज के अफसर ।

हजार से अधिक व्यक्ति हमारे झण्डे के नीचे आ गये जिनमें से प्रत्येक ने हमारी शपथ खाई है और जिनमें से हर एक देश के लिये जान दे देना अपना सौभाग्य समझेगा।

"अवश्य ही इतने बड़े दल में कुछ काली भेड़ो का आ मिलना स्वाभाविक था, वल्कि उसे हम लोग रोक ही नहीं सक्ते थे। सरकार को हमारे उद्योग का पता लग गया और हमे पुनः चूर्ण करने की तैयारी होने लगी। और सव जगहों में तो जो कुछ हुआ सो हुआ ही, हमारे दुश्मन को किसी तरह यह पता लगगया कि हमारा केन्द्र यह किला है और इस पर हमला करने की तैयारी की गई। एक तरफ से नैपाल राज्य पर दवाव डाला गया, दूसरी तरफ से एक दल यहाँ की खुली तरह से जाँच करने वास्ते भेजा गया और तीसरी तरफ से एक वड़ी पल्टन यहाँ से दो तीन दिन की मुहिम के फासले पर इकट्ठी की गई जिसका उद्देश्य इस किले पर हमला करना ही है। एक वड़े अंग्रेज अधिकारी और नैपाल मन्त्री के वीच में मुलाकात का प्रवन्ध किया गया। इसमे कोई सन्देह नही कि कुछ ही समय के वाद अवश्य ही ये वादल फट पड़ेगे। आज की वैठक इसी लिए की गई है जिसमें यह निश्चय हो जाय कि अव क्या करना चाहिये।

'यहाँ आने के पहिले हम लोगों ने प्रान्तीय मुखियाओ के साथ मिल कर जो कुछ तय किया है उसका सार भी वैठने के पहिले मैं वता देना चाहता हूँ। इस समय यहाँ के दो वड़े और स्वतन्त्र देशी राज्यो से सरकार की जिस प्रकार चखचख चल रही है वह भी सभी जानते है और एक विदेशी राज्य केहमले का मुकाविला करने के लिए जो फौज तैयार हो रही है उससे भी सव परिचित है। इसके सिवाय देश में गुप्त रीति से जो कुछ आन्दोलन हम लोग कर सके है उसका प्रभाव भी आशाजनक हुआ है, अस्तु इस समय हम लोगों की राय में खुला विद्रोह कर देने का वड़ा सुन्दर मौका आ गया है जिसे हाथ से जाने नही देना चाहिये। जैसा कि सूचनाओ से मालूम हुआ है, जो शक्ति हमारे हाथ मे 'मृत्यु-किरण' के आविष्कार ने दे दी है वह अमोघ है और उससे हम इस देश क्या संसार भर पर विजय पा सकते हैं अस्तु हम लोगो की राय में यह ऐसा मौका है जव कम से कम खूनखरावा कर के हम यहाँ का शासन-सूत्र अपने हाथ में ले सकते है अस्तु इस समय हमें चोट कर देनी चाहिये यही हम लोगों की राय है। हम अपनी यह राय उन महोदय के सामने पेश करते है जिन्होंने वड़े आड़े हमारी

सहायता की, कर रहे हैं, और करते रहेंगे। उनके हाथ में हमने अपने को पूरी तरह पर दे दिया है, अब वे जैसी आज्ञा दें हम लोग वही करें।"

इतना कह वह आदमी बैठ गया और कमरे में सन्नाटा छा गया।

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। इसके बाद नगेन्द्रनरसिंह खड़े हो धीमी मगर मजबूत आवाज में कहने लगे :—

"जिस समय, आज से बहुत दिन पहिले-आप लोग, या आप में से कुछ क्योंकि समय और आद्या-शक्ति ने कुछ को आपसे अलग कर दिया है, मेरे पास आये थे और मैंने काफी रुपया आपको देना स्वीकार किया था। उस समय आपकी मदद करने का कारण यह नहीं था कि आप उसी भूमि के रहने वाले थे जिसके एक कोने में मेरा भी देश है। मैंने जो आपकी सहायता की वह केवल इसी लिये कि आप एक दुःखी और पददलित जाति के उत्थान का प्रयत्न कर रहे थे। आज जो जाति आपको अपने नीचे दबाये हुए है वही यदि कल उस अवस्था में हो जाय जिसमें आज आप हैं तो मैं वैसी ही प्रसन्नता के साथ उसकी भी सहायता करूँगा। मेरा मतलब यह कि संसार की प्रत्येक पददलित पराधीन जाति से मेरी सहानुभूति है और मैं सभी जातियों को स्वतन्त्र और बराबरी के दर्जे पर देखना चाहता हूँ, इसी से मैंने आपकी सहायता करना स्वीकार किया। आपको किसी प्रकार, जिस प्रकार भी मुझसे हो सका बटोर बटार या लूटमार कर, मैंने एक करोड़ रुपया दिया और आपने उसे भी खर्च कर दिया—यद्यपि कहना पड़ेगा कि उसका कोई सुफल देखने में नहीं आया बल्कि एक ऐसी धौल खानी पड़ी कि इतने दिनों का किया कराया सभी कुछ चौपट हो गया।

"मैं उसी समय इस बात को जानता था और शायद आपको याद हो या न हो मैंने रुपया देती समय ही अपना सन्देह प्रकट कर दिया था कि आप जिस रीति का अवलम्बन कर रहे हैं उससे मुझे सहानुभूति नहीं है और वह शायद सफलता का मार्ग भी नहीं है। छिपी हत्याओं और पीछे से किये हुए हमलों ने आज तक किसी देश को स्वतन्त्र नहीं किया और न एकान्त निरीहता और शान्तिप्रियता ही किसी जाति को पराधीनता से छुड़ा सकती है। पाशविक शक्ति का सामना पाशविक शक्ति ही कर सकती है। आग के भयंकर उत्ताप को चिनगारियाँ नहीं रोक सकती, उसको पत्थर की दीवार या पानी

की मोटी धाराएँ चाहिये। जिस जाति ने पाशविक बल की सहायता से आपको दवा रक्खा है उसको हटाने के लिए उतनी ही वड़ी पाशविक शक्ति की ही आवश्यकता है यह मेरा विश्वास था और आज भी है। अस्तु उस समय जव आपकी असफलता का हाल मैंने सुना तो दुःख होते हुए भी मुझे आश्चर्य नहीं हुआ क्योंकि आपके पीछे कोई मजवूत पाशविक शक्ति नही थी।

"यही सवव है कि दूसरी वार जव एक दूसरे प्रकार का प्रस्ताव ले कर आप लोग मेरे पास आये तो मैंने उसे खुशी के साथ सुना। आपने अपने ही एक प्रख्यात वैज्ञानिक द्वारा आविष्कृत 'मृत्यु-किरण' का हाल मुझसे कहा और मेरे दिल ने मुझसे उसी समय कह दिया कि हाँ यह सफलता का मार्ग हो सकता है। मैंने खुशी से उस अविष्कार का पूरा अनुसन्धान करने और उसका काम करने लायक माडल वनाने के लिये एक करोड़ रुपया दिया। महामाया की कृपा से आपका अविष्कार सफल हुआ। मैंने भी उसकी जाँच की और उसकी शक्ति की सम्भावना ही से मैं मुग्ध हो गया। उसे खड़ा करने के लिए मैंने आपको अपना यह किला दिया जो यद्यपि अव नैपाल राज्य का कहलाता है परन्तु वास्तव में मेरे पूर्वजों की ही सम्पत्ति है। आपने अपने यन्त्र आदि यहाँ खड़े किये और उनकी अपार शक्ति देख कर मैं इतना प्रसन्न हुआ कि तव से मैं अक्सर ही यहाँ आता रहता हूँ।

"अव काम करने का वक्त आ गया ऐसा आप लोग कहते है, मैं इसके वारे में कुछ नही जानता क्योंकि मुझे आपके देश की भीतरी हालत की कुछ अधिक जानकारी नहीं है और न उसकी गतिविधि पर ही मैंने अधिक लक्ष्य ही रक्खा है, अस्तु इसके सव से उत्तम परीक्षक तो आप ही हो सकते है। मै तो सिर्फ एक सिपाही हूँ। मेरा जन्म जिस वंश में हुआ वह मशहूर लड़ाका वंश था और मेरी शिक्षा दीक्षा भी वैसी ही हुई। परिस्थितियो से अव तक वरावर मैं लड़ता ही आया हूँ, अस्तु लड़ाई के नाम से ही मुझे प्रसन्नता होती है। अगर आप समझते है कि इस समय शत्रु के विरुद्ध खुला विद्रोह करने का समय आ गया है तो वहुत अच्छा है, जरूर युद्ध आरम्भ कर दीजिये, मेरा दिल आपके साथ है, मेरी तलवार आपके साथ रहेगी। हाँ यह आपको अच्छी तरह सोच लेना चाहिये कि लड़ाई शुरू करने का वक्त आ गया कि नही, इसके वारे में मैं आपको कोई सलाह नहीं दे सकता।"

नगेन्द्रनरसिंह बैठ गये। उनके बैठते ही एक तीसरा आदमी उठा और बोला, "इस सम्बन्ध में मैं आपको यह कह देना चाहता हूँ कि 'भयानक-चार' की राय में युद्ध छेड़ने का मुनासिब मौका आ गया है। अगर केवल इतने ही से आपका मतलब हो तो यह कहने की जिम्मेदारी हम लोग अपने ऊपर लेने को तैयार है कि जैसा मौका इस समय है वैसा पिछले डेढ़ सौ वर्षों में कभी नहीं आया था।"

नगेन्द्रनरसिंह यह सुन बोले, "यह आप लोग जानिये, युद्ध-घोषणा करना आपका काम है।"

जो आदमी सब से पहिले बोला था उसने नगेन्द्रनरसिंह की बात सुन कहा, "युद्ध-घोषणा करने को हम लोग तैयार है और हमारे पास अब सेना भी मौजूद है, परन्तु हमें अफसोस यही है कि हमारे पास सेनापति कोई नहीं। युद्ध-संचालन एक वास्तविक कला है जिसका प्रयोग योद्धा ही कर भी सकता है। हमारे देश मे इस समय नेता हजारो है और फिलासफर लाखो परन्तु योद्धा एक भी नहीं है। शताब्दियो की हमारी पराधीनता का वह परिणाम है। इसी अभाव के कारण हम लोग युद्ध-घोषणा करते डरते है। आज मुख्यतः हम आपसे यही प्रार्थना करने आये थे कि आप हमारे सेनापति का काम सम्हालिये।"

नगेन्द्रनरसिंह यह सुन कुछ सोच मे पड़ गये, थोड़ी देर के लिये उनकी आँखें बन्द हो गईं, तब इसके बाद वे बोले, "मैं आप लोगो की जरूरत समझता हूँ इस लिये और विशेष कर इस लिये कि युद्ध का नाम ही सुन के मेरी भुजाएँ फड़कने लगी है, मैं आपका सेनापतित्व ग्रहण करने को तैयार हूँ, परन्तु एक शर्त पर।"

सब बोल उठे—"क्या ? क्या ?" नगेन्द्रनरसिंह ने कहा, "वह शर्त यह होगी कि आप लोगो को बिल्कुल मेरी इच्छानुसार चलना पड़ेगा। अवश्य ही मैं आपसे सलाह लिया करूँगा—पर जहाँ आपकी सलाह और मेरी इच्छा मे विरोध पड़ेगा वहाँ मेरी राय ही बलवती मानी जायगी।" चारो एक साथ बोल उठे, "यह तो मानी हुई बात है। युद्ध-संचालन मे तो एक राय को सर्वोपरि मानना ही होगा। आप इधर से एक दम बेफिक्र रहे, हम लोग बिल्कुल आपकी आज्ञानुसार चलने को तैयार है और बराबर रहेगे।" नगेन्द्रनरसिंह इस पर बोले, "एक बात और, मै तभी तक आपका संचालक रहूँगा जब तक युद्ध में सफलता मिलती जायगी। जैसे ही मै देखूँगा कि मेरी बुद्धि इतने बड़े भार को

सहने योग्य नहीं है और मेरा इस पद पर रहना आपकी हानि करेगा मै उसी समय सेनापति का पद छोड़ दूँगा और आपको मेरा इस्तीफा स्वीकार कर यह भार खुद लेना पडेगा या किसी दूसरे को अपना सेनापति वनाना पड़ेगा। उस समय आप इनकार न कर सकेंगे। मेरा यह मतलव नही है कि मैं अपनी शक्ति भर युद्ध नही करूँगा, नही, मैं अपनी पूरी वुद्धि और अन्तिम वल लगा दूँगा पर जैसे ही यह देखूँगा कि मैं इस कार्य के अयोग्य हूँ वैसे ही वागडोर छोड़ दूँगा। उस समय आप लोग मुझ पर यह दोप न लगा सकेंगे कि मैं आपको गड्हे मे डाल कर जा रहा हूँ। यह आप समझ लीजिये और इसे स्वीकार कीजिये तभी मैं आपका सेनापतित्व ले सकता हूँ।"

भयानक-चार एक स्वर से वोले, "हमें विल्कुल मंजूर है और इसी क्षण से आप हमारे सेनापति हुए। अव आप इस वात को सोचिये कि युद्ध के लिए पहिले वहुत कुछ तैयारी करनी पड़ती है, अपनी सेना रसद और गोला वारूद के डिपो वनाने पड़ते है, और साधारण कार्य-संचालन का एक क्रम तैयार कर लेना पडता है। आप अव वही करिये और हम लोगों के सुपुर्द भिन्न भिन्न काम करके युद्ध का एक कार्यक्रम भी तैयार कर लीजिये।"

नगेन्दनरसिंह हँस पडे पर फिर तुरन्त ही गम्भीर हो कर वोले, "सच तो यह है कि मैं आज कई दिनो से यही सोच रहा था कि यदि कभी युद्ध आरंभ हो ही गया तो किस किस तरह से, क्या क्या करना पडेगा और कैसी लड़ाई लड़नी होगी और मेरे दिमाग में एक नक्शा भी वन गया है। यदि आप चाहें तो मैं अभी अपना इरादा आप पर जाहिर कर सकता हूँ।"

'भयानक-चार' की इच्छा जान नगेन्द्रनरसिह उठ खडे हुए और एक आल्मारी खोल कर वड़ा सा नक्शा निकाल लाए। नक्शा दीवार पर एक तरफ टांग दिया और रोशनी कुछ तेज कर दी। नगेन्द्रनरसिह अपना युद्ध का कार्य-क्रम 'भयानक-चार' को समझाने लगे जो उनके आस पास आ खडे हुए।

लगभग घन्टे भर के इस काम में लग गया और उसके वाद सव लोग पुनः उस टेवुल पर लौट आए। नगेन्द्रनरसिंह ने कहा, "मैने अपना विचार आप पर प्रकट कर दिया, अगर आप लोगो को यह स्वीकार हो तो इसके अनुसार काम कल ही शुरू कर दिया जा सकता है।"

सब बोल उठे, "हाँ यह हमे स्वीकार है और वर्तमान स्थिति मे इससे अच्छा युद्ध-क्रम हो ही नही सकता। अब आप इसी समय हम लोगों के सुपुर्द काम कर दीजिए जिसमे कल ही से कार्रवाई जारी हो जाय।"

"बहुत अच्छा" कह कर नगेन्द्रनरसिंह ने कुछ देर के लिए आँखें बन्द की और तब पुनः कहना आरम्भ किया। इस समय उनकी आवाज पहिले से अधिक गम्भीर हो गई थी और उसमे एक विचित्र मजबूती भी आ गई थी।

नगेन्द्र०। मेरी इच्छा है कि इस युद्ध में जहाँ तक कम खून खराबा हो उतना ही अच्छा है क्योंकि आखिर इसमे हमारे ही देश के अधिक मनुष्यों की जाने जायेगी। युद्ध के दो बहुत बडे अस्त्र है—अपने केन्द्र को मजबूत रखना और दुश्मन का नैतिक अधःपतन कर देना। इस युद्ध का केन्द्र यह किला ही रहेगा। इस समय यहाँ जो बेतार की तार का यन्त्र मौजूद है वह इस देश क्या आधी दुनिया की खबरे लेने और देने के योग्य है, 'मृत्यु-किरण' का यह उत्पत्ति-स्थान ही ठहरा, और स्वाभाविक रक्षा भी यहाँ खूब है। यहाँ से हमारी पीठ और दोनो बगल सुरक्षित है या रहेंगी। अगर हम नैपाल का प्रबन्ध रख सके—और मुझे विश्वास है कि वह मैं रख सकूँगा—तो दुश्मन हमारे सिर्फ एक दिशा मे रहेगा और उस पर हम बखूबी वार कर सकेंगे। पहाडी स्थान और चारो तरफ से ऊँचे पहाड़ो से घिरा होने से फौजे भी जल्दी और सफलतापूर्वक इस किले पर हमला नही कर सकती, अस्तु केन्द्र बनाने के लिए यही किला सबसे उपयुक्त है।

"अब दूसरी बात रही दुश्मन का नैतिक अधःपतन। इसके लिए मै यह सोचता हूँ कि आपके एजेन्ट या आप लोग स्वयं ऐसा प्रबन्ध करे कि जहाँ जहाँ दुश्मन की फौज रहने के अड्डे अर्थात् कैन्टोनमेंट्स है वहाँ वहाँ आपके भी आदमी रहे जो उनको इस प्रकार सन्त्रस्त रक्खे कि वे न तो दूसरी जगह कहीं मदद को ही जा सकें और न अपना ही सिर उठा सके और जब ऐसा करने का प्रबंध पूरा हो जाय तो सरकारी केन्द्रो पर हमला शुरू कर दिया जाय।

"हमारे केशवजी ने मेरी राय से अपनी मृत्यु-किरण के बड़े ही सुन्दर फल-प्रद गोले बनाये हैं। यद्यपि वे साधारण बमो की तरह ही है परन्तु उनमे उनसे कही ज्यादा ताकत है और इसका परिचय आपको मिल भी चुका है। ये गोले

जहाँ फूटे उसके दस वीस गज के भीतर कोई भी चीज रहने नहीं पाती, उसका अस्तित्व ही लोप हो जाता है। मैंने इम्तिहान के लिए सिर्फ थोड़े गोले वनवाए थे पर जाँच से वे वडे ही अच्छे सिद्ध हुए अस्तु उनमें के वहुत से तैयार करके दल-दल में वांट दिये जांय और वे ही युद्ध के हमारे मुख्य शस्त्र हो। अवश्य ही उनका उचित प्रयोग और अपने दल का उचित संचालन मेरी आज्ञानुसार एक दम ठीक और फौजी कड़ाई के साथ हो इसका प्रवन्ध आपको रखना होगा।

"आप लोग चारो आदमियों के सुपुर्द मै चार काम कर देना चाहता हूँ। नम्वर एक केशवजी का तो यहाँ रहना जरूरी ही है। नम्वर दो को मैं इस किले के चारो तरफ दो दो सौ मील का क्षेत्र सुपुर्द कर देना चाहता हूँ। नम्बर तीन के सुपुर्द देश का उत्तरी समूचा भाग और नम्वर चार के जिम्मे सारा दक्षिणी भाग रहेगा। अपने मातहत अफसर आप लोग स्वयम् चुन ले। आपके कर्तव्य और मेरी आज्ञाएं किस प्रकार आपके पास पहुँचेंगी और कैसे उन्हें पालन करना होगा यह मैं कल आप लोगों को वताऊंगा, आज सिर्फ एक वात और कह के मैं यह वैठक समाप्त करना चाहता हूँ।

"सरकार के भेजे हुए जिस दल के नष्ट-भ्रष्ट होने का हाल आप लोग जान चुके है उसके सामानों में से दो चीजे वहुत काम की हमारे हाथ लगी है। एक तो एक वायुयान और दूसरा वेतार की तार लेने और भेजने का एक वहुत ही छोटा परन्तु वड़ा ही शक्तिशाली यन्त्र। ये दोनों ही चीजे मुझे प्रसिद्ध वैज्ञानिक पंडित गोपालशंकर की कृति मालूम होती है जो दुनिया मे अकेले आदमी है जिनसे मैं भी भय खाता हूँ। उस वायुयान की विशेषता यह है कि उसके चलने में आवाज विल्कुल नही होती—आप जानते ही है कि वायुयान का सव से भारी शत्रु उसकी भयानक आवाज है जो उसके आने की सूचना दूर से ही देती रहती है—और उस वेतार के यन्त्र की विशेषता यह है कि एक ही यन्त्र भेजने और लेने दोनो का काम करता है और एक हजार मील तक की शक्ति रखता हुआ भी इतना छोटा है कि उसे दो घोड़ों पर पूरे सा-सामान सहित खुशी से लादा जा सकता है। एक तारीफ उसकी यह भी है कि उससे काम लेने के लिए विजली के वड़े यन्त्रो की आवश्यकता नहीं है वल्कि मामूली कुछ वैटरियो से ही वह वहुत ठीक काम कर सकता है। वैसे वैसे

और उसी माडल के वल्कि उससे भी छोटे और अधिक कार्य-क्षम यन्त्र तैयार करने के लिये केशवजी तैयार है और उनका कहना है कि एक महीने के वाद वे ये दोनो ही चीजे—वायुयान और वेतार का यन्त्र, अवश्य ही परिमित संख्या में—दे सकेगे। इन दोनों चीजों की सहायता से हमे अपने युद्ध में कितनी सहायता मिल सकती है यह आप लोग खुद सोच सकते है।"

नगेन्द्रनरसिंह की इस बात ने 'भयानक-चार' को एक दम प्रसन्न कर दिया और वे लोग इन दोनों चीजों के वारे मे तरह-तरह के सवाल करने लगे। नगेन्द्रनरसिंह मे और उनमें लगभग एक घन्टे तक और भी वातें होती रहीं जिनमें वहुत कुछ तय हुआ और तव यह वैठक वर्खास्त हुई।

× × × ×

जिस समय ये लोग उस कमरे के वाहर हो रहे थे उसी समय मैले और फटें कपड़ो वाला लाँवे कद का एक काला पहाडी उस कमरे की छत से उतर कर एक तरफ को जा रहा था। रात के तीन वज चुके थे और चारो तरफ की निस्तव्धतापूर्ण शान्ति और पिछली रात की सर्दी ने पहरेदारो की भी आँखे झपकानी शुरू कर दी थी जिससे उस पहाड़ी को अपने ठिकाने पहुँच जाने मे कुछ भी तरद्दुद न हुआ और वह वेरोक टोक अपनी जगह पहुँच कर लेट गया। दो ही मिनट के वाद उसकी नाक इस तरह वजने लगी मानो वह कई रात का जगा हुआ हो।

[५]

दूसरे दिन सुबह ही से उस जमीदोज किले मे कुछ विचित्र प्रकार की हलचल दिखाई पडने लगी। सिपाही और अफसर इधर उधर घूमने और मोरचे कायम करने लगे और इंजिनियर लोग चारो तरफ दूर-दूर तक घूम-घूम कर जहाँ जहाँ से इस किले पर हमला हो सकता था अथवा जहाँ जहाँ से इसको घेर रखने वाले जंगलो और मैदानो मे आने का रास्ता वनाया जा सकता था उन जगहो को मजवूत करने की फिक्र करने लगे। यो तो वैसे ही यह स्थान वड़ा ही सुरक्षित था लेकिन उस पर भी जहाँ जहाँ कमजोरी की सम्भावना थी वहाँ मजवूती करने की पूरी चेष्टा होने लगी। किले के एक कोने मे एक छोटा मैदान पेड़ पौधो से साफ किया जाने लगा और अन्दाज से मालूम पड़ा कि यह वायुयान के उतरने

चढ़ने के लिये बनाया जा रहा है। उसी जगह एक तरफ ऊँचे पेड़ों की झुरमुट के अंदर वह वायुयान भी खड़ा दिखाई पड़ने से यह संदेह और भी पुष्ट होता था।

इन सब इन्तजामों और तरद्दुदों में पड़े हुए नगेन्द्रनरसिंह और भयानक-चार का वह समूचा दिन दौड़ धूप में ही बीत गया और शाम को जब करीब करीब सभी बातो का सिलसिला दुरुस्त हो गया तो भयानक-चार में से तीन व्यक्ति तो नगेन्द्रनरसिंह से आखिरी हुक्म लेकर वहाँ से चले गये, और एक अर्थात् केशवजी अपने मशीन-रूम में चले गये। उस समय नगेन्द्रनरसिंह को इतनी मोहलत मिली कि अपने कमरे में जाकर थोड़ी देर विश्राम कर सकें। उसी समय उस पहाड़ी की भी याद आई और उन्होंने उसे तलब किया।

थोड़ी ही देर बाद वह पहाड़ी उनके सामने लाया गया। अब उसका बुखार छूट गया था और चोटों के दर्द में भी बहुत कुछ कमी हो गई थी फिर भी वह बड़ा ही दुर्बल और घबड़ाया हुआ सा मालूम होता था। जो लोग उसे लाये थे उन्हीं की जुबानी मालूम हुआ कि वह अपने घर जाने के लिए घबड़ा रहा है बल्कि उठ उठ कर भागता है और बड़ी मुश्किल से धर पकड़ कर वे लोग उसे रोके हुए है। नगेन्द्र ने यह सुन सिर हिलाया और इशारे से सिपाहियों को वहाँ से चले जाने को कहा। जब निराला हो गया तो वे उस पहाड़ी से बातें करने लगे।

दो तीन दिन तक यहाँ रहने और सिपाहियों के लगातार उससे कुछ न कुछ बातें करते ही रहने के कारण वह हिन्दी में कुछ कुछ बातें करने के लायक हो गया था, फिर भी वह इतना बड़ा उजड्ड और बेवकूफ था कि बहुत देर तक माथापच्ची करने के बाद ही उसकी कोई बात समझ में आती थी। जो कुछ टूटे फूटे शब्दो मे और बड़ी खीचातानी के बाद नगेन्द्रनरसिह को मालूम हो सका उसका सारांश यही था कि 'वह काठमान्डू से अपने देश को जा रहा था जब एक दिन एक औरत ने उसे वह चीठी और एक अशर्फी दे कर इस किले का पता बताया और कहा कि अगर यह चीठी वहाँ के अफसर को देकर इसका जवाब ला सको तो दो अशर्फी और इनाम में मिलेंगी। इन्ही अशर्फियों को लालच में वह अपने देश जाना छोड़ जंगल पहाड़ छानता गिरता पड़ता वहाँ तक पहुँचा है। रास्ते में वह एक जगह गार में गिर कर बहुत चुटीला भी हो गया था बारे किसी तरह जीता जागता पहुँच गया। अगर वह चीठी यहाँ

की ही हो तो उसका जवाब उसे मिले ताकि वह दो अशर्फी और पा जाय और अगर यहाँ की न हो तो वह चीठी ही वापस मिले।"

बड़ी माथापच्ची के बाद उस बेवकूफ की बातों से ऊपर कहा हुआ मतलब नगेन्द्रनरसिंह निकाल सके, मगर इससे उनका काम बखूबी बन गया। उन्होंने उसी समय उस चीठी के जवाब में एक चीठी लिखी और उसे लिफाफे में बन्द कर मुहर करने के बाद उस पहाड़ी को दे कर कहा, "यह उस चीठी का जवाब है, इसे उसी को दे देना जिसने तुम्हें यह चीठी दी थी और यह लो इसका इनाम !" कह कर उन्होंने चार अशर्फी उस जंगली के हाथ पर रख दी।

चार अशर्फी पाते ही तो वह जंगली खुशी के मारे नाचने लग गया। अपनी विचित्र भाषा में न जाने क्या कहते हुए उसने नगेन्द्रनरसिंह को कई दर्जन सलाम बजा दिये और उनके पैरों की धूल माथे से लगाई। इसके बाद वह जाने को तैयार हुआ और शायद उसी समय रात के वक्त और रास्ते की भीषणता का कुछ भी खयाल न करके चल पड़ता मगर नगेन्द्रनरसिंह ने उसे समझाया कि रास्ता बहुत खतरनाक है और आज सिपाहियों का पहरा दूर-दूर तक पड़ रहा है जो जरा भी शक होते ही उसे गोली मार देंगे, अस्तु वह सुबह अपनी मुहिम पर रवाना हो। नगेन्द्रनरसिंह की बात से वह देहाती खुश नहीं हुआ फिर भी उसने उनका कहा मान लिया। नगेन्द्र ने उसी समय एक सिपाही बुला कर उसके सुपुर्द उस जंगली को कर दिया और कह दिया कि कल खूब सवेरे ही इसे खुद साथ लेकर अपनी हद के बाहर कर देना और ख्याल रखना कि कोई इसके साथ रास्ते में छेड़-छाड न करे और न कोई आज रात को ही किसी तरह पर इसे तंग करे।

× × × ×

सुबह होने में अभी देर थी। नगेन्द्रनरसिंह अपने कमरे में पलंग पर सोये कोई सुन्दर स्वप्न देख रहे थे क्योंकि उनके होठों पर हँसी थी, कि यकायक किसी ने उन्हें जोर से झोंके दे दे कर जगाना शुरू किया। वे चौंक कर उठे और आँखें मलते हुए बोले, "कौन है ? है, केशवजी ! आप इतनी सुबह सुबह यहा कहां ?"

केशवजी बोले, "उठिये उठिये, बड़ा गजब हो गया !! रात को कोई मेरे प्राइवेट आफिस में घुसा और बहुत से कागज-पत्र, मृत्यु-किरण सम्बन्धी मेरे आविष्कार के बहुत से नोट, उसके बनाने वाले यन्त्र का छोटा माडल और

बहुत सी और चीजे निकाल ले गया !!"

नगेन्द्रनरसिंह केशवजी की बात सुन एक दम उछल पड़े और बोले, "है, आपके आफिस में और चोरी ! उस जमीदोज और इतनी मजबूत तथा सुरक्षित जगह मे चोरी !!" केशवजी बोले, "जी हाँ, वहीं चोरी ! किसी बड़े जिगरे वाले चोर का यह काम मालूम होता है !"

नगेन्द्रनरसिंह खिड़की खोल कर जोर से सीटी बजाते हुए बोल, "चोरी हुई किस तरह ? आपका मशीन-रूम जमीन से कई सौ फीट नीचे है, और वहाँ जाने के रास्तो मे कई लोहे के दर्वाजे है जो सब भीतर से बन्द होते है, तब यह किसने किया ? क्या हमारे ही किसी आदमी का यह काम है ?"

केशव०। नहीं, वहाँ के हमारे सब आदमी तो अब तक बेहोश पड़े हुए हैं। चोर, चाहे वह कोई भी हो, बड़ा चालाक और जीवट का आदमी मालूम होता है। वह उस बड़े नलके (दूर की चीज देखने वाले चोगे) की राह भीतर घुसा जो मैंने हाल ही मे एक नया पेरिस्कोप बनाने के लिए खड़ा किया है। आपको मालूम ही होगा कि ट्यूब की सब से तंग जगह की मोटाई भी अढ़ाई फीट है। मैं गुमान करता हूँ कि चोर उसी रास्ते सब चीजे लेकर निकल भी गया, साथ ही साथ कुछ ऐसी भी कार्वाई कर गया जिससे वहाँ के सब आदमी और पहरेदार बेहोश भी हो गये।

नगेन्द्रनरसिंह की सीटी के साथ ही किले भर मे चारो तरफ पचासों आदमी दिखाई पड़ने लगे। कई सिपाही इस कमरे मे भी आ गये जिन्हे देख नगेन्द्र ने कहा, "कोई आदमी केशवजी के कमरे में से कई जरूरी चीजे ले कर भागा है, चारो तरफ के पहरेदारो को खबर कर दो कि कोई भी आदमी किले के बाहर न जाने पावे, दूर पर भी अगर कोई आदमी जाता दिखाई पडे तो उसे फौरन गिरफ्तार कर लो, और दस दस आदमियो की चार टुकड़ी चारो तरफ पता लगाने को भेजो कि वह चोर किधर गया।"

देखते देखते लोग चारो तरफ फैल गये। नगेन्द्रनरसिंह ने केशवजी से कहा, "आप जा कर उस हवाई जहाज को ठीक करे जो गोपालशंकर के लश्कर मे से पाया गया है। उसमें पूरा पेट्रोल भरवाइये और कुछ 'मृत्यु-किरण' के बम भी रखवा दीजिए, उस पर चढ़ कर हम लोग जल्दी ही चोर का पता लगा सकेंगे।

वह अभी बहुत दूर नही गया होगा।"

केशवजी बोले, "उसमे सब सामान तैयार है, मैंने आज स्वयं उसमें उड़ने का विचार किया था और इस लिए कल ही उसे सब तरह से जाँच कर दुरुस्त कर डाला था।" नगेन्द्रनरसिंह यह सुन उनका हाथ पकड़ कमरे के बाहर निकलते हुए बोले, "तब चलिए, अभी हम लोग उस पर उड चलें।"

दस मिनट में ये दोनों उस जगह पहुँच गये जहाँ वह वायुयान रक्खा गया था, मगर यह देख दोनो के ही पेर के नीचे की मिट्टी खसक गई कि वह वायुयान यहाँ नही है और उसके दोनों पहरेदार बेहोश पडे हुए है। यह बात देख नगेन्द्रनर-सिंह के सिर मे चक्कर आ गया और वे अपना माथ थाम कर खड़े रह गये।

कुछ देर बाद यकायक उन्हे कुछ याद आया और वे उठ कर लपकते हुए उस जगह पहुँचे जहाँ वह पहाडी आदमी रक्खा गया था। आस पास के लोगों से उन्होने पूछा, "वह पहाड़ी कहाँ गया?" लोगो ने जवाब दिया, "हम लोग खुद ही बहुत देर से उसे ढूँढ रहे है कि आपके हुक्म के मुताबिक उसे किले के बाहर पहुँचा दे मगर उसका कही पता ही नही लग रहा। जिस बिछौने पर वह सोया था वह खाली पड़ा है, केवल यह चीठी उस जगह मिली।"

नगेन्द्रनरसिंह ने काँपते हाथो से वह लिफाफा खोला और भीतर की चीठी निकाल कर पढी। यह लिखा हुआ था:—

"नगेन्द्रनरसिंह,

"जिसने पहिले एक बार तुम्हे परास्त किया था वही फिर तुम्हारी खोपड़ी पर आ मौजूद हुआ। होशियार हो जाओ और अपनी कुशल चाहते हो तो यह सब बखेड़ा छोड़ अपने देश को चले जाओ। अपने दोस्त उस 'भयानक-चार' को भी समझा दो कि सरकार के विरुद्ध हथियार उठाना हँसी खेल नही है। अब भी यदि वे सम्हल जायँ और फजूल का खून खराबा न करे तो मै वचन देता हूँ कि उनका पिछला सब कसूर माफ कर दिया जायगा—नही तो वे कही के भी न रहेगे और उनकी लाशो का भी पता न लगेगा। बस, खबरदार!!

तुम्हें होशियार करने वाला—

गो० शं०"

चीठी पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह ने दाँत पीसा और उसको केशवजी की तरफ

बढ़ाते हुए गुस्से से भरे स्वर में कहा, "अफसोस, मेरा जानी दुश्मन और मेरे ही किले में आकर अछूता निकल जाय ! खैर कोई हर्ज नहीं, समझ लूंगा। वह वन का गीदड़ जायगा किधर।"

इसी समय दौड़ते हुए दो आदमी उस जगह आ पहुँचे। नगेन्द्रनरसिंह और केशवजी ने पहिचाना कि ये उनके मातहत इंजिनियर थे। इन्होने घवराहट भरे स्वर में कहा, "मृत्यु-किरण' के वम बनाने के लिए जो नई मशीन वनाई गई थी उसे न जाने किसने इस तरह तोड़ दिया है कि वह बिल्कुल वेकार हो गई है और वह नया पाया गया हुआ वेतार की तार का यन्त्र भी जिसकी नकल का एक दूसरा तैयार करने का हुक्म हुआ था टूटा फूटा पड़ा है।"

नगेन्द्रनरसिंह ने केशवजी की तरफ देखा और केशवजी ने नगेन्द्रनरसिंह की तरफ। दोनों के चेहरो पर निराशा की कालिमा दौड़ गई थी।

—०—

दांव-पेंच

[१]

अपने आलीशान वंगले की लेवोरेटरी में पंडित गोपालशंकर टेवुल के सामने खडे है जिस पर किसी मशीन का एक छोटा सा माडल रक्खा हुआ है जिसके पचासो छोटे छोटे कल पुर्जे और पहिये वड़ी तेजी से घूम रहे है। मशीन के वाई तरफ से दो काले रंग के डंडे ऊपर को उठे हुए है जिनके सिरों पर दो गोले है जो एक दूसरे से लगभग तीन इंच के फासले पर है। इन दोनो गोलों के वीच में विजली की अविराम धारा वह रही है और रह रह कर चटचट पटपट शब्द के साथ विजली की किरणे दोनों गोलो के वीच में चमक उठती है पर आश्चर्य की वात है कि इन किरणो का रंग लाल या सुफेद नही है वल्कि हरा है। गोपालशंकर वड़े गौर से इन डंडों पर झुके हुए विजली की इन लपटों को देख रहे है और साथ ही साथ कुछ सोचते भी जा रहे है।

इसी समय उनके नौकर ने कमरे का दर्वाजा खटखटाया और उनकी आज्ञा पर भीतर आया। उसके हाथ में दो विजिटिंग कार्ड थे जिन्हें उसने पण्डितजी के सामने वढ़ा दिया। बिना उन्हें हाथ लगाए ही गोपालशंकर ने

दूर से उन पर के नामो को पढा । एक पर लिखा था—'मैकडोनल्ड स्लाई' और दूसरे पर लिखा था—'वाहिद अली खा ।'

वाहिद अली खॉ इस प्रान्त के खूफिया विभाग के सव से वडे अफसर थे और इधर के थोडे ही दिनो मे गोपालशंकर से इनकी गहरी जान पहिचान हो गई थी, मगर वे दूसरे महाशय इनसे बहुत वड़े और ऊँचे दर्जे के थे अर्थात् स्वयम् इस प्रान्त के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर सर ब्रूहम मैकडोनल्ड स्लाई फर्गूसन थे । जव ये गुप्त रूप से अकेले कही जाते थे और अपना सरकारीपन दूर रखना चाहते थे तो केवल 'मैकडोनल्ड' के नाम से अपना परिचय देते थे और इस वात को गोपालशंकर अच्छी तरह जानते थे ।

यकायक छोटे लाट साहव के इस प्रकार आने ने गोपालशकर को कुछ ताज्जुव मे डाल दिया परन्तु उन्होने नौकर से कहा, "कुरसिये यहाँ लाकर रक्खो ।" नौकर 'जो हुक्म' कह चला गया और गोपालशंकर वाहर जाकर अपने सम्मानित मेहमान से मिले । आदर के साथ दोनो से हाथ मिलाने और मिजाज-पुर्सी करने के वाद छोटे लाट और वाहिद अली खाँ को लिये हुए गोपालशंकर फिर अपनी लेवोरेटरी मे चले आये । तीनो आदमी कुर्सियो पर बैठ गये और सभो मे अग्रेजी में वातचीत होने लगी ।

गोपाल० । (छोटे लाट से) आपके इस तरह आने से मैं वड़ा कृतज्ञ हुआ मगर साथ ही आश्चर्य कर रहा हूँ कि आपके स्वयम् कष्ट करने की क्या जरूरत पड़ी । आपकी आज्ञा पाते ही मै स्वयम् सेवा मे उपस्थित हो जाता ।

लाट साहव० । आपने नैपाल के सफर और वहाँ से वापस आने का कुछ हाल लिख कर जो खलीता भेजा था वह मुझे दिल्ली में मिला जहाँ इसी 'भयानक-चार' वाले मामले के सम्बन्ध में कुछ वात करने को बडे लाट ने मुझे वुलाया था । उस खलीते मे आपने उनकी 'मृत्यु-किरण' के वारे मे जो हाल लिखा था उसे पढ मैं एक दम घवडा गया । अगर आपका कहना सही है तो दुनिया का सव से भयानक हथियार उन लोगों के कब्जे मे आ गया है जिसका मुकावला हमारा वर्तमान विज्ञान किसी प्रकार भी नही कर सकता और जिसकी मदद से वे लोग जो चाहें कर सकते है । मैंने यह हाल वड़े लाट साहव को सुनाया जिसे सुन उन्हें भी वहुत अन्देशा हुआ और उन्होंने इसके वारे में पूरा हाल जानना

चाहा। वे तो आपको बुलाने के लिए अपने प्राइवेट सेक्रेटरी को भेजना चाहते थे पर फिर यह सोच कर रुक गये कि आपने अपने पत्र के अन्तिम अंश में लिखा था कि 'मैं उस मशीन का एक छोटा माडल और तत्सम्बन्धी अन्य कागजात भी लेता आया हूँ जिनकी सहायता से मैं स्वयम् जाँच कर देखना चाहता हूँ कि 'मृत्यु-किरण' वास्तव में क्या वला है। वह मशीन अपनी लेवोरेटरी में मैं खड़ी कर रहा हूँ और उसकी अच्छी तरह जाँच करने के वाद ही किसी से मिलने का समय पाऊँगा।' इन शब्दों ने उन्हें रोक दिया और उन्होंने मुझसे कहा कि वेहतर होगा कि आगरे जाने पर तुम पंडितजी से मिलो और सब वातों का ठीक ठीक हाल जान कर मुझे लिखो। यहाँ लौटने के वाद से ही मैं वह मशीन देखने को व्याकुल हो रहा था और आखिर कौतूहल ने यहाँ तक दवाया कि खाँ साहव को साथ लेकर मुझे खुद ही आज आना पड़ा।

गोपाल०। आपके आने से मैं वड़ा अनुगृहीत हुआ। अगर पहिले से पता लगता तो मैं आपकी अगवानी का उचित प्रवन्ध कर रखता और इस तरह वे-सरो-सामान आपकी......

छोटे लाट०। (हँस कर) पंडितजी! आप शायद यह वात भूल गये कि आप प्रान्त के छोटे लाट से वातें नहीं कर रहे हैं वल्कि 'मैकडोनल्ड स्लाई' से वातें कर रहे हैं जो आपकी अद्भुत प्रतिभा का हाल सुन आपसे मिलने आया है!

गोपालशंकर ने भी यह सुन हँस दिया और तव कहा, "अच्छी वात है, परन्तु इस समय हम दोनों ही का समय वड़ा अमूल्य है अस्तु मैं सीधा मतलव पर आ जाता हूँ। यह देखिये इस टेवुल वाली मशीन को, यही वह माडल है जो मैं भयानक-चार के किले से लाया हूँ। कितनी छोटी चीज है और कोई खिलौना ही मालूम होती है मगर इसकी भयानक ताकत को देख कर मैं भी डर गया हूँ। यह देखिये एसवेस्टस की यह एक रस्सी है। आप जानते ही होंगे कि एसवेस्टस तेज से तेज आँच में भी नहीं जलता, मगर 'मृत्यु-किरण' में पड़ते ही देखिये उसकी क्या दशा होती है।"

छत के साथ रवर और रेशम से वनी एक रस्सी टंगी हुई थी जो उन डंडों के ठीक ऊपर थी जिनमें से मृत्यु-किरण की भयानक लपटें निकल रही थीं। गोपालशंकर ने इस रस्सी से वांध कर वह एसवेस्टस की रस्सी इस तरह लटका

दी कि वह ठीक उन दोनों गोलों के बीच मे लटकने लगी। गोलों के बीच दौड़ती हुई हरी किरणो ने उसे लपेट लिया और दूसरे ही क्षण में वह एक मामूली रस्सी की तरह जल उठी, केवल उससे लपट किसी तरह की नही निकली। बात की बात में उसका उतना अंश जो मृत्यु-किरण में पड़ा जल कर राख हो गया।

सब लोग ताज्जुब करने लगे। गोपालशंकर ने कहा, "इन नीचे पड़ी राखो से पता लगेगा कि करीब करीब संसार की सभी चीजे इस किरण में पड़ कर भस्म हो जाती है। मैंने लोहा बालू अबरक आदि सभी पर इसका प्रयोग किया और सभी भस्म हो गये। न जाने इन किरणो मे कितनी शक्ति है!"

लाट साहब ने कहा, "अगर ऐसा है तो सचमुच यह भयानक चीज है। अभी तक इतनी गर्म आँच मैंने कही देखी न थी जो एसबेस्टस या अबरक को भी जला दे पर इन मृत्यु-किरणो ने वह भी कर दिया। मगर यह बात मेरी समझ मे नही आती कि इन किरणो से युद्ध का काम कैसे लिया जा सकता है?"

गोपाल०। इस मशीन के साथ जो कागजात मै लाया हूँ उनसे मालूम होता है कि इन मशीनो के तीन भाग होते हैं, अभाग्यवश मैं सिर्फ पहिले भाग का ही माडल ला सका। यह अंश केवल मृत्यु-किरणो को पैदा करता है, दूसरी मशीन (जैसा कि कागजो से प्रगट होता है) उन्हे इकट्ठा कर के किसी विशेष प्रकार के बरतनो बरतनो मे संग्रह करती है, और और तीसरी मशीन उन किरणो को इच्छानुसार जहाँ पर जिस परिणाम मे चाहा जाय भेजती है। वही सबसे भयावन है। उससे एक ही जगह बैठ कर सैकड़ों कोस की चीजे छार की जा सकती हैं।

लाट०। और आपका कहना है कि इन्ही किरणो के उन लोगो ने बम भी बना डाले हे?

गोपाल०। जी हाँ, यह बात मैंने खास उन भयानक-चार के मुखियो के मुंह से सुनी है जिसका इरादा है कि वैसे वैसे कितने ही बम तैयार करके मुल्क के दूर दूर के हिस्सो मे भेजे जायँ और उनके खयाल से भी मेरा कलेजा दहल उठता है, क्योकि दुनिया की कोई भी शक्ति उन्हे रोक नही सकती।

लाट०। (चौंक कर) वैसे वैसे बम मुल्क भर में सब तरफ भेजे जाने वाले है!! आप ठीक जानते हैं?

गोपाल०। हां मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ।

लाट०। तब तो इस किले और इन यंत्रों का जहाँ तक जल्दी हो नामो-निशान मिटा देना चाहिये। देर होने से न जाने वे सब क्या कर गुजरें !

गोपाल०। (हँस कर) मगर क्या आप इसको मामूली बात समझते हैं ! अगर मैं गलती नही कर रहा हूँ तो इस समय उस किले के चारो तरफ सौ सौ कोस तक उनका एकछत्र साम्राज्य है जिसके अन्दर वे जो चाहें सो कर सकते है। एक परिन्दे की भी मजाल नही कि बिना उनकी मरजी के वहाँ पर भी मार सके। क्या आप भूल गये कि हमारा लश्कर किले से पचास साठ मील दूर था जब वह नाश कर दिया गया ! वहाँ उन लोगों ने जो यंत्र खड़े किये हैं ये इस माडल से सैकड़ों गुना बड़े और भयानक हैं और उनका मुकाबला दुनिया की कोई ताकत नही कर सकती, वे अगर चाहे तो पहाड़ों के टुकड़े उड़ा सकते हैं ?

लाट०। क्या हम आस्मान से बम गिरा कर उस जगह को बर्बाद नहीं कर सकते ?

गोपाल०। हरगिज नही ! एक तो जिस जगह उन्होंने इन मशीनों को खड़ा किया है वह जमीन की सतह से पांच सौ फीट से भी अधिक नीचे है और आपके बड़े से बड़े बम उतना नीचे कुछ नुकसान पहुँचा नही सकते, दूसरे आपके किसी हवाई जहाज की भी यह ताब नही है कि उनके किले के ऊपर से बिना उनकी मर्जी के उड़ जा सके। मृत्यु-किरण की एक हलकी सी लपट हवाई जहाज को मय उड़ाकों के इस तरह जला देगी कि जमीन पर गिरने के लिए भी कुछ न बच जायगा !

लाट०। यह तो आप विचित्र बात कह रहे हैं। क्या आपका मतलब है कि ये थोड़े से शैतान इतने मजबूत हो गये है कि गवर्नमेन्ट उनका कुछ बिगाड़ ही नही सकती ?

लाट साहब के चेहरे पर व्याकुलता और क्रोध के साथ अविश्वास भी झलक मार रहा था जिससे उनके दिल के भाव का पता लगता था। वास्तव में यह अनुमान करना भी कि थोड़े से आदमियो का एक दल अपने सामने सरकार की पूरी ताकत को बेकार कर देगा असंभव मालूम होता था पर चतुर और दूरदर्शी वैज्ञानिक गोपालशंकर 'मृत्यु-किरणो' की शक्ति जान गये थे और समझ गये थे कि उनका मुकाबला करना हँसी खेल नहीं है, अस्तु लाट साहब

की बात के जवाब में उन्होंने शान्ति और गम्भीरता के साथ सिर्फ इतना ही कहा, "बेशक ! आपकी सरकार का सेना-बल उन्हे पराजित नहीं कर सकता !!"

[२]

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। लाट साहब की सूरत से जान पड़ता था कि वे समझ नही पा रहे थे कि गोपालशकर को पागल समझें या अपने को ! आखिर कुछ देर बाद उन्होने कहा "तब क्या किसी तरह भी वे दुष्ट हराए नही जा सकते ?"

गोपालशंकर चुप रहे। मालूम पड़ता था मानो वे कोई बडी ही गंभीर बात सोच रहे है। लाट साहब इस तरह उनका मुँह देख रहे थे जैसे कोई रोगी वैद्य का मुँह देखता हो। अन्त में कुछ देर बाद गोपालशंकर ने कहा, "विज्ञान का जवाब विज्ञान ही दे सकता है। मृत्यु-किरण को मृत्यु-किरण ही दबा सकती है। अगर आप लोग कोशिश करके इसी माडल के आधार पर मृत्यु-किरण पैदा करने वाले कुछ बहुत ही बड़े और शक्तिशाली यंत्र बना सकें तो सम्भव है कि वे दुष्ट बस में किये जा सकें। जब तक ये यन्त्र बन न जाँय तब तक इन लोगो की कार्रवाई को रोकना (खाँ साहब की तरफ देख कर) आपके जासूस विभाग का काम होना चाहिये और उतने समय तक इस बात का खयाल करना कि उस किले में नया सामान मशीन या रसद अथवा सिपाही न पहुँच सकें यह आपकी फौज का काम होना चाहिये जो उस किले की मृत्यु-किरणो की मार के बाहर बाहर रहती हुई ऐसा घेरा डाले रहे कि किले में न तो कोई जा सके और न कोई वहाँ से आ सके। इस काम में आपके हवाई जहाज भी बहुत मदद दे सकते है।"

लाट०। हाँ यह तो आपका कहना ठीक है मगर आपने खुद ही कहा है कि मृत्यु-किरणों से काम लेने के लिये तीन प्रकार के यन्त्र चाहिएँ जिनमें से केवल एक ही का माडल आपके पास है। तब बाकी दोनो मशीनों के बने बिना कैसे काम चल सकता है ?

गोपाल०। उन्हे यदि सम्भव हो तो उन कागजों की मदद से बनाना पडेगा जिन्हें मैं किले से ले आया हूँ।

लाट०। उसमे क्या पूरा हाल दिया है ?

गोपाल० । मैंने अभी सभों को पढ़ा तो नहीं मगर सरसरी निगाह से देखा जरूर था जिससे उम्मीद होती है कि उनकी मदद से बाकी दोनों मशीनें शायद बन सकें तथापि मैं मैकैनिक या इन्जीनियर नहीं हूँ और इस विषय में सब से पक्की राय आपके इन्जीनियर लोग ही दे सकेंगे।

लाट० । ठीक है, अच्छा तो मेरी यह राय है कि कल किसी समय आप मेरे यहाँ आने का कष्ट करें। मैं और मेरे सेक्रेटरी तो मौजूद रहेहींगे इसके इलावा खाँ साहब, कैप्टेन रूबी, मि० टेम्पेस्ट और गवर्नमेन्ट इन्जीनियर भी रहेंगे। आप यह माडल और वे कागजात लेते आवें और वहीं सब कुछ अच्छी तरह तय कर लिया जाय। अगर आपकी राय हो तो मैं गवर्नमेन्ट आर्म्स फैक्टरी के सुपरिंटेंडेंट को भी बुला लूँगा।

गोपाल० । अच्छी बात है, मैं आने को तैयार हूँ। आप वक्त ठीक कर के मुझे इत्तिला दें।

लाट० । रात को रखिये।

गोपाल० । अच्छी बात है तो आप दोपहर को किसी को भेज दें जो यह माडल और अन्य कागजात ले जावे क्योंकि वहाँ मौजूद सभी आदमी इन चीजों को पहिले से ही देख लें तो उत्तम होगा।

लाट साहब० । हाँ यह ठीक है। (पीछे घूम कर) खाँ साहब, आप कल इन चीजों को पंडितजी के यहाँ से मेरी कोठी पर भेजने का प्रबन्ध कीजियेगा।

खाँ साहब ने—"जो हुक्म !!" कहा और मुलाकात खत्म हुई। छोटे लाट और वाहिद अली खाँ को गोपालशंकर बँगले के फाटक तक छोड़ आए और जब उनकी मोटर चली गई तो कुछ सोचते हुए पुनः अपनी लेबोरेटरी को लौट गये।

[२]

दोपहर का समय है। पं० गोपालशंकर ने आज सुबह ही से अपनी लेबोरेटरी में किसी वैज्ञानिक प्रयोग में व्यस्त रहने के कारण देर से भोजन किया है और अभी अभी आ कर आराम-कुर्सी पर बैठे हैं। सामने के टेबुल पर कई अखबार पड़े हैं जिनमें से एक [illegible] है।

समाचारों के [illegible] सरसरी निगाह डालते हुए [illegible] और अचानक [illegible] [illegible] वह था :—

"सिकन्दराबाद छावनी में धड़ाका !
मेगजीन में आग !
पचासों सिपाहियों की मौत ! कारण अज्ञात !!

दक्षिण हैदराबाद शहर के पास की सिकन्दराबाद की छावनी में कल यकायक एक धड़ाका होने से भयानक आग लग गई जिससे छावनी तथा मेगजीन का बहुत बड़ा अंश उड़ गया और बहुत से सिपाही भी साथ साथ ही उड़ गये। घायलों की संख्या कई सौ बताई जाती है। धड़ाके का कारण अज्ञात है।"

गोपालशंकर ने इस समाचार को पढा और तब अखबार हाथ से रख कर कुछ सोचने लगे। कुछ देर बाद उनके मुँह से निकला, "मालूम होता है रक्त-मंडल की कार्रवाई शुरू हो गई। यह उन्ही के आदमियो की करतूत मालूम होती है। मृत्यु-किरण के बमो की बदौलत ऐसी आग तो कही भी बात की बात में लगाई जा सकती है। अगर इन दुष्टों को अभी ही नही रोका गया तो थोड़े दिन बाद तो ये सब न जाने क्या कर डालेंगे।"

इसी समय टेबुल पर रक्खे टेलीफोन की घंटी जोर से बज उठी। गोपालशंकर कुर्सी से आगे झुके और चोगा कान से लगा सुनने लगे। किसी ने पूछा, "क्या आप पंडित गोपालशंकर साहेब हैं?" गोपालशंकर ने कहा, "हाँ, आप कौन है ?" जवाब मिला, "मैं हूँ—वाहिद अली खाँ। आज शाम की मीटिंग के लिए आप तैयार है तो !" गोपालशंकर ने कहा, "क्यो क्या कोई गडबड़ी है ?" जवाब आया, "नही कुछ नही, मैंने इसलिए दरियाफ्त किया कि क्या उस मशीन और कागजो के लिए मैं अपने आदमी भेजूँ ?" गोपालशंकर ने कहा, "जी हाँ, भेजिए, मगर आदमी विश्वासी हो। वे चीजें अगर हाथ से निकल गईं तो दुश्मनों का मुकाबला करना और भी मुश्किल हो जायगा।" तार पर जवाब आया, "इस बात को मैं बखूबी समझता हूँ। वे लोग मेरे खास आदमी होगे। आप तैयारी करिये, वे लोग कुछ ही देर मे पहुँच जायँगे।"

आवाज बन्द हो गई, गोपालशंकर ने चोगा टाँग दिया। जरा देर वे कुछ सोचते रहे, इसके बाद उठे और अपनी लेबोरेटरी में चले गये जहाँ उन्होने मृत्यु-किरण का माडल और उसके सम्बन्धी सब कागजात तथा अपने कुछ नोट्स भी काठ के एक मजबूत बक्स मे बन्द कर दिये, इसके बाद लेबोरेटरी के बाहर

निकले, मगर तभी कुछ और बात उनके खयाल में आई जिससे वे पुनः अंदर चले गये और दरवाजा भीतर से बन्द कर कुछ करने लगे। लगभग आधे घण्टे के बाद वे बाहर आये और अपने बैठक वाले कमरे में जा कर कुछ लिखने लगे।

इसी समय बाहर बरसाती में मोटर की आवाज सुनाई पड़ी और नौकर ने आ कर कहा, "दो आदमी आए हैं जो अपने को खाँ बहादुर वाहिदअली खाँ साहब के आदमी बताते हैं, उनके साथ चार कांस्टेबल भी हैं, यह चीठी लाये हैं और कहते हैं कि जो चीज लाट साहब के यहाँ जायगी वह उन्हें दे दी जाय।"

गोपालशंकर ने वह चीठी खोल कर पढ़ी, सिर्फ इतना ही लिखा था, "आदमी भेजता हूँ, माडल और कागज भेज दीजिये—वाहिद अली खाँ।" उन्होंने अपने नौकर से कहा, "उन दोनों आदमियों को यहाँ बुला लाओ।"

थोड़ी ही देर में दो आदमियों ने उस कमरे में पैर रक्खा जिन्होंने गोपालशंकर को अदब से सलाम किया और खड़े हो गये। गोपालशंकर ने पूछा, "तुम लोगों को खाँ साहब ने भेजा है?" उन्होंने कहा, "जी हाँ।" गोपालशंकर ने फिर पूछा, "जो चीज लेने आये हो कुछ मालूम है वह क्या चीज है?" एक ने जवाब दिया, "जी यह तो नहीं मालूम मगर सुना है कि कोई बड़ी ही कीमती चीज है, इसी लिये हिफाजत के खयाल से कांस्टेबल भी साथ कर दिये गये हैं।" गोपालशंकर ने पूछा, "उसे ले कर कहाँ जाओगे? खाँ साहब के घर न?" उन्होंने कहा, "जी हाँ।"

जवाब सुन कर गोपालशंकर ने एक तेज निगाह उन पर डाली मगर तुरत ही हटा ली और तब बोले, "अच्छा तुम लोग बाहर चलो मैं वह चीज भेजता हूँ, मगर देखना बहुत ही होशियारी से ले जाना, क्योंकि बड़ी ही कीमती चीज है। अगर खो गई तो तुम लोग बड़ी आफत में पड़ जाओगे।" "जी नहीं आप बिल्कुल बेखतर रहें, उस चीज पर जरा भी आँच न आवेगी।" कहते हुए वे दोनो सलाम कर बाहर चले गये।

उनके जाने बाद गोपालशंकर ने अपने विश्वासी नौकर मुरारी को बुलाया और उसे ताली दे कर कहा, "लेबोरेटरी में बड़े टेबुल पर जो लाल रंग का बक्स रक्खा हुआ है वह लाकर इन लोगों को दे दो, यह चीठी जो मैं लिख रहा हूँ इसे भी ले जा कर उन्हें ही दे देना।" मुरारी चला गया और थोड़ी देर

लौटा, इस बीच गोपालशंकर ने चीठी खतम कर ली थी जिसे एक सादे लिफाफे में वन्द कर मुहर लगा दी और दे कर कहा, "यह चीठी भी दे देना और कह देना कि जिसने तुम्हें भेजा है उसे दे दें।" नौकर जाने लगा तो वे बोले, "चीठी और वक्स दे कर तुम फिर मेरे पास आओ।"

थोड़ी देर बाद मोटर की आवाज आई और उसी समय उनका नौकर भी वहाँ लौट आया। गोपालशंकर ने उससे पूछा, "वे लोग गये?" उसने जवाब दिया, "जी हाँ।" गोपालशंकर ने उसे इशारे से नजदीक बुलाया और कान में कहा, "तुम अपनी शकल कुछ बदल लो और मोटर साइकिल पर चढ़ कर उनका पीछा करो, देखो वे लोग कहाँ जाते हैं। मगर काफी पीछे पीछे रहना ताकि उन्हें पता न लगे।" मुरारी "जो हुक्म" कह चला गया और कुछ ही देर बाद रवाना हो गया।

इन लोगों को गये मुश्किल से पन्द्रह मिनट गुजरे होंगे कि बाहर पुनः किसी मोटर की आवाज आई। मोटर बरसाती में रुकी और उस पर से कई आदमी उतर कर बारामदे में आये। गोपालशंकर के कान में वाहिदअली खाँ के बोलने की आवाज आई जिसे सुन इसके पहिले कि नौकर उनके आने की इत्तिला करे ये स्वयम् ही बाहर निकल आये। वाहिदअली खाँ और शहर के कोतवाल कई सिपाहियों के साथ खड़े हुए थे। मामूली साहब सलामत के बाद वाहिदअली खाँ ने कहा, "मैंने सोचा कि आदमियों के जरिये वे चीजें मँगाने में शायद कोई खतरा हो जाय इससे मैं खुद ही वह माडल लेने आ गया।" गोपालशंकर ने यह सुन ताज्जुब से कहा, "हैं! क्या आप वह माडल लेने आये हैं?"

वाहिद०। जी हाँ, मगर क्यों, आपको ताज्जुब किस लिए हुआ।

गोपाल०। इस लिए कि अभी थोड़ी ही देर हुई आपके आदमी आकर मुझसे वे सब चीजें ले गये।

वाहिदअली यह सुनते ही चौंक कर उछल पड़े और बोले, "पंडितजी, यह आप क्या कह रहे हैं! मैंने तो किसी को नही भेजा!!"

गोपाल०। यह आप बड़े ताज्जुब की बात कह रहे हैं। अभी आधा घण्टा भी नही हुआ कि आपकी चीठी लेकर कुछ पुलिस कांस्टेबलो के साथ दो आदमी आये और सब चीजें ले गये।

वाहिदअली का चेहरा उड़ गया और वे कांपती आवाज से बोले, "नही नही, मैंने तो कोई खत नहीं भेजा, मालूम होता है आपको धोखा हुआ।"

वाहिदअली की घबराहट देख कर गोपालशंकर के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई। वे कुछ हँस कर बोले, "मुझे तो शायद धोखा नही हुआ मगर आप अपनी चीठी पहिले देख लीजिए।" कह कर उन्होने उन सभों को बैठाया और कमरे से जा कर वह खत ले आये जो उन दोनों आदमियो ने उन्हें दिया था। लिफाफे में से चीठी निकाल कर वाहिदअली खाँ के हाथ में दी और कहा, "लीजिये देखिए आप ही की लिखावट और आप ही का दस्तखत है या नहीं!"

चीठी का मजमून पढ़ कर वाहिदअली के माथे पर पसीना आ गया। उन्होंने कांपती आवाज में कहा, "हरूफ तो हूबहू मेरे ही जैसे है और दस्तखत भी ठीक वैसा ही है जैसा मैं करता हूँ, मगर मैं कसम खा कर कह सकता हूँ पंडितजी कि यह चीठी मेरी लिखी कभी नही है! अफसोस, दुश्मन बड़ी चालाकी खेल गये!!"

वाहिदअली खाँ ने सिर झुका लिया और लम्बी लम्बी साँसें लेने लगे। गोपालशंकर ने यह देख कहा, "खाँ साहब, अगर आपकी यह चीठी पाकर मैंने चीजें उन लोगो के हवाले कर दी तो बताइये मेरी क्या गलती है?"

वाहिदअली बोले, "जी बेशक आपकी कोई गलती नहीं है, मगर मैं गरीब बेमौत मारा गया, लाट साहब के कान में जब बात पहुँचेगी तो मेरे बारे में वे क्या सोचेंगे! मालूम नही मेरी नौकरी भी रहेगी या जायगी!!"

वाहिदअली खाँ माथे पर हाथ रख कर बैठ गये और उनके साथी भी अफसोस करते हुए उन्हें घेर कर खड़े हो गये। कमरे में थोड़ी देर के लिए सन्नाटा छा गया।

थोड़ी देर बाद गोपालशंकर ने कहा, "खाँ साहब! अब आपको मालूम हो गया होगा कि आपके दुश्मन कितने निडर साहसी और भयानक आदमी हैं और उनकी पहुँच कहाँ तक है!!"

[४]

आगरे के बाहर शहर से लगभग दो कोस निकल जाने बाद आम की एक घनी बारी मिलती है जो कई बिगहे में फैली हुई है और जिसके एक तरफ तो सड़क है और दूसरी तरफ सांप की तरह बल खाती हुई जाने वाली जमुना बह रही है। यह बारी इतनी घनी और गुंजान है कि इस दोपहर के समय भी इसमें धूप का नाम निशान नहीं है और यहाँ बहुत ही ठंढा और निर्जन है। कई जगहें

तो ऐसी भी हैं जहां छोटी मोटी झाड़ियों ने घेर कर कुंज सा वना रक्खा है जिसमें वहुत से आदमी इस प्रकार छिप कर वैठ सकते हैं कि किसी को जरा भी पता नही लग सकता।

इसी तरह के एक कुंज में हम एक नौजवान को टहलते हुए देख रहे हैं। नौजवान की उम्र लगभग तीस वर्ष के होगी। गोरा रंग, लाँवा कद, चौड़ा माथा, सीधी नाक और मजवूत कलाइयाँ उसे किसी ऊँचे खानदान का होनहार वता रही है। उसके माथे पर हलके रंग का साफा है और पोशाक उस तरह की है जैसी ऊँचे दर्जे के अंगरेज फौजी अफसर पहिनते हैं। पाठकों को ज्यादा तरद्दुद में न डाल कर हम वता देते हैं कि ये उनके पूर्व-परिचित और 'भयानक-चार' के मुखिया राणा नगेन्द्रनरसिंह हैं।

नगेन्द्रनरसिंह घवड़ाहट के साथ इधर से उधर टहल रहे हैं। उनके चेहरे से परेशानी और वेचैनी जाहिर हो रही है और वार वार उनके अपनी कलाई घड़ी देखने से यह भी प्रकट होता है कि वे किसी जल्दी में है। उनके मन में तरह तरह की वातें घूम रही हैं जिनका पता उन टूटे फूटे शव्दों से वखूवी लगता है जो कभी कभी अनजाने में उनके मुँह से निकल पड़ते हैं—"अफसोस.. कम्वख्त गोपालशंकर....सव चौपट कर गया... देख कर मृत्यु-किरण का भेद... सरकार पर अगर प्रकट हो गया... वैसी ही मशीनें वना कर मुकावला किया तो हम लोग ....कम्वख्त माडल तो ले ही गया साथ में प्लैंस भी लेता गया... वम वनाने की मशीन टूटने से वड़ा नुकसान हुआ....अगर वे चीजें वापस न मिली तो हम लोगों की सव आशाएँ नष्ट हो जायँगी....न जाने ये लोग अभी तक क्यों नही आये !!"

नगेन्द्रनरसिंह ने पुनः घड़ी देखी और झाड़ी के वाहर निकल कर उस तरफ देखने लगे जिधर से इस वारी के एक कोने को छूती हुई सडक निकल गई थी। अचानक उनके कानों में तेजी के साथ आती हुई एक मोटर का शव्द पड़ा जिसे सुनते ही वे चैतन्य हो गये और गौर से देखने लगे। कुछ ही देर वाद लाल रंग की एक वड़ी सी मोटर उन्हें दिखाई पड़ी जो वेतहाशा तेजी से चली आ रही थी। मोटर देखते ही नगेन्द्रनरसिंह के चेहरे पर आशा की झलक दिखाई पड़ी और वे सड़क की तरफ वढे।

मोटर यकायक रुक गई। दो आदमी उसमें से उतरे और एक वक्स उठाये

हुए इस आम की बारी में घुसे। नगेन्द्रनरसिंह के चेहरे पर यह देखते ही खुशी की झलक दौड़ गई। उन्होंने जेब से सीटी निकाली और किसी खास ढंग के इशारे के साथ धीरे से बजाई। सुनते ही वे लोग इनकी तरफ घूमे और बात की बात में पास पहुँच गये। नगेन्द्रनरसिंह को देख कर दोनों ने सलाम किया और बक्स जमीन पर रख दिया। नगेन्द्र ने पूछा, "क्या वह चीज मिल गई?" उन्होंने जवाब दिया, "जी हाँ, इसी बक्स में है। नगेन्द्रनरसिंह ने खुश होकर कहा, "एक आदमी कोई औजार लगा इसे खोले और दूसरा जा कर ड्राइवर से कहे कि मोटर को बारी के भीतर ले आवे। इसके बाद सब कोई मिल कर उसका रंग बदल डालो।"

एक आदमी हथौड़ी और रुखानी लेकर बक्स खोलने लगा तथा दूसरे ने जा कर मोटर को बारी के अन्दर ले आने को कहा। जब वह आ गई तो कई आदमी मिल कर रंग के डब्बे और कूँचिएँ ले ले कर उसके लाल रंग पर खाकी रंग चढ़ाने लगे। काम इतनी फुर्ती फुर्ती हुआ कि लगभग पन्द्रह ही मिनट में समूची मोटर का लाल रंग बदल के खाकी रंग हो गया। अब कोई भी आदमी इसे देख कर नही कह सकता था कि यह वही मोटर है जो आध घण्टे पहिले पण्डित गोपालशंकर के बँगले की बरसाती में खड़ी थी।

हथौड़ी और रुखानी की मदद से इधर वह बक्स शीघ्र ही खोल डाला गया। उतावली के मारे नगेन्द्रनरसिंह ने खुद ही वे सब रद्दी कागज आदि हटाने शुरू कर दिये जिनसे उसका ऊपरी हिस्सा भरा हुआ था। जब वह सब हट गया तो भीतर साफ कपड़े में लपेटी कोई चीज रक्खी दिखाई पड़ी। दोनों ने मिल कर उसे बाहर निकाला और जल्दी जल्दी कपड़ा हटाया, मगर यह क्या? मृत्यु-किरण पैदा करने वाले यन्त्र की जगह यह क्या चीज निकल पड़ी?

लगभग हाथ भर के लम्बा और इससे कुछ कम ऊँचा सफेद मिट्टी का बना हुआ एक सुन्दर गधा उस कपड़े में बँधा हुआ था!

देख कर नगेन्द्रनरसिंह की आँखो में खून उतर आया। उन्होंने कड़ी निगाह से उस आदमी की तरफ देखा और कहा, "यही चीज लाने तुम गये थे!!"

आदमी काँप गया और डरती आवाज में बोला, "हुजूर, यही बक्स पण्डित गोपालशंकर ने मुझे दिया! मुझे कुछ नही मालूम कि इसके भीतर क्या चीज है, मैं तो यही समझता था कि वह माडल ही लिये आ रहा हूँ! मेरा कोई कसूर नहीं

है। (जेब से एक चीठी निकाल कर) यह चीठी भी उन्होंने दी और कहा था कि जिसने तुम्हें भेजा है उसी को दे देना, शायद इसके पढने से कुछ मालूम हो !!"

गुस्से से कांपते हुए नगेन्द्रनरसिह ने वह लिफाफा ले लिया। लिफाफे पर किसी का नाम या पता लिखा हुआ न था मगर जोड़ पर मुहर जरूर की हुई थी। बेचैनी के साथ नगेन्द्रनरसिंह ने लिफाफा फाड डाला। भीतर से एक कागज निकला जिस पर कुछ लिखा हुआ था। नगेन्द्रनरसिंह पढने लगे—

"जो लोग देश को विद्रोह और विप्लव के गढ़े मे ढकेल देना चाहते है और यह नही सोच पाते कि ऐसा करने का आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक फल क्या होगा उनकी बुद्धि को सहायता देने के लिये मैं यह उपहार भेज रहा हूँ।

—गो० शं०।"

चीठी पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह का चेहरा लाल हो गया। उन्होंने इस जोर की एक लात उस गधे को मारी कि वह चूर चूर हो गया। चीठी को फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर दिया और गुस्से से दाँव पेंच खाते हुए मोटर की तरफ बढ़े। डर से कांपता हुआ वह आदमी भी उसके पीछे पीछे चला। थोड़ी ही देर बाद वह खाकी मोटर एक तरफ को तेजी से रवाना हो गई।

× × ×

न जाने कब से एक आदमी पेड़ों की आड़ मे छिपा हुआ यह सब दृश्य देख रहा था। उन लोगों के जाते ही वह भी उस आम की बारी के बाहर हुआ। बारी से दूर सड़क के किनारे ही एक ढोंके की आड़ में एक मोटर साइकिल रक्खी हुई थी जिसे उसने उठा लिया और सड़क पर ला सवार हो तेजी से शहर की तरफ रवाना हो गया। बताना नही होगा कि यह गोपालशकर का विश्वासी नौकर मुरारी था जिसे उन्होने उस मोटर का पीछा करने को भेजा था—मगर यह मोटर साइकिल कैसी है ! इसके इंजिन में कोई आवाज क्यों नही है !!

[५]

यकायक गोपालशकर हँस पड़े, वाहिदअली की बेचैनी और घबराहट देख उन्हे दया आ गई, उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "खाँ साहब ! आप इतना बेचैन न होइये। आपकी चीज गई नही है, सुरक्षित है !!"

खाँ साहब परसे मानो मनो बोझ उतर गया, वे खुश होकर बोले, "हाँ, सच-मुच ? क्या वह माडल और वे कागजात आपके पास अभी तक मौजूद हैं ?"

गोपालशंकर ने कहा, "जी हाँ, मुझे उन आदमियों की बातों से कुछ शक हो गया जिससे मैंने असल चीजें उन लोगों के हवाले न करके कुछ दूसरी चीजें दे दी जिन्हें जब वे लोग देखेंगे तो जरूर खुश होंगे।"

वाहिदअली खाँ के चेहरे से अफसोस और रंज एक दम दूर हो गया। वे खुशी खुशी बोले, "वाह पंडितजी, आपने तो कमाल किया! बेशक आपकी जो तारीफ मैं सुनता था बिल्कुल वाजिब थी। अगर आपने उन शैतानों के फेर मे पड़ कर वे चीजें दे दी होती तो गजब हो जाता!"

गोपालशंकर बोले, "ईश्वर की कृपा थी कि मुझे समय पर बात सूझ गई नही तो जरूर मुश्किल हो जाती, खैर अब आप उन चीजों को ले जाकर लाट साहब तक पहुँचाइये, मैं भी ठीक समय पर आ जाऊँगा।"

गोपालशंकर उठ कर लेबोरेटरी में गये और थोड़ी ही देर मे काठ का एक बक्स लिए हुए वापस आये। ढकना खोल कर उन्होंने खाँ साहब को उसके भीतर रक्खा हुआ वह यंत्र और साथ के कागज-पत्र दिखला दिये और कहा, "लीजिए यह अपनी धरोहर सम्हालिये, अब अगर ये हाथ से गुम हुईं तो आप जिम्मेदार होंगे।"

वाहिदअली बोले, "आप खातिर जमा रखिये, अब ये चीजें कही जा नही सकती।"

वह बक्स मोटर पर रख दिया गया और सब लोग गोपालशंकर से विदा हुए। उसी समय मुरारी भी मोटर साइकिल पर आ मौजूद हुआ। आँख के इशारे से गोपालशंकर ने उसे अन्दर कमरे मे जाने को कहा और जब इन लोगों की मोटर रवाना हो गई तो खुद भी भीतर चले गये। मुरारी ने सब हाल खुलासा कह सुनाया। जो हुलिया उसने बताया उससे गोपालशंकर समझ गये कि स्वयम् राणा नगेन्द्रनरसिंह ही इस माडल को वापस लेने आये हैं। इससे उन्हें कुछ चिन्ता भी हुई क्योंकि मन ही मन वे नगेन्द्रनरसिंह की चालाकी होशियारी और हिम्मत का लोहा मानते थे, पर जब सन्दूक के अन्दर से गधा पाने पर उमड़ने वाले उनके गुस्से का हाल सुना तो वे खिलखिला कर हँस पड़े। मुरारी से उन्होंने और भी कई सवाल किये और तब उसे बिदा किया। घड़ी की तरफ देखा तो तीन नही बजा था। छोटे लाट साहब के यहाँ जाने में अभी देर थी। वे पुनः अपनी लेबोरेटरी में चले गये और दरवाजा बन्द कर कुछ करने लगे।

—०—

कपास का फूल

[१]

आगरे शहर के उस बाहरी हिस्से मे जिधर सरकारी अफसरों के बंगले है तथा वह आलीशान इमारत भी है जिसमें इस प्रान्त के छोटे लाट यहाँ आने पर ठहरते है, एक बड़ी मोटर तेजी से जा रही है।

इस मोटर में पीछे की तरफ शहर के कोतवाल और डिप्टी पुलिस सुपरिंटेंडेंट कमाल हुसैन तथा उनके बगल में प्रान्त के खूफिया विभाग के सब से बड़े अफसर वाहिदअली खाँ बैठे है, और आगे की तरफ ड्राइवर के इलावे दो हथियारबन्द पुलिस के सिपाही है। वाहिदअली खाँ और कमालहुसैन के बीच में लकड़ी का एक मजबूत बक्स रक्खा हुआ है जिस पर वाहिदअली खाँ एक हाथ इस तरह पर रक्खे हुए है मानो वह कोई बड़ी ही कीमती चीज है। मोटर तेजी से लाट साहब की कोठी की तरफ जा रही है जो यहाँ से बहुत दूर नही है।

इनकी मोटर के आगे आगे खाकी रंग की एक दूसरी मोटर जा रही है जिसमें कई आदमी बैठे हुए हैं। रंग ढंग और पौशाक से ये लोग फौजी अफसर मालूम होते है मगर किसी तरह के हथियार जाहिरा इनके पास दिखाई नही पड़ते। पीछे की तरफ वाली सीट पर बैठे एक नौजवान के हाथ में बहुत ही छोटी एक दूरबीन है जिससे वह पीठ वाली खिड़की की राह पीछे का हाल देखता हुआ जा रहा है। यकायक उसनें अपने साथी को इशारा करके कहा, "देखो तो क्या वही वाहिदअली की मोटर है!" उसने पीछे देखा और तब कहा, "जी हाँ, यही है।"

ड्राइवर को कुछ इशारा किया गया और मोटर की चाल कम हो गई। पीछे वाली मोटर धीरे धीरे पास आने लगी और कुछ ही देर में दोनों मोटरों के

बीच का फासिला दस गज के लगभग रह गया। जिस स्थान पर इस समय ये दोनों मोटरें थीं वह निराला था। दोनों तरफ बड़े बड़े बागीचों की चारदीवारियों के सिवाय किसी तरह के मकान दिखाई नही पड़ते थे और न इस ढलती दोपहरिया की गर्मी मे कोई मुसाफिर ही सड़क पर दिखाई पड़ रहा था।

यकायक एक आदमी ने झुक कर नीचे से काठ का एक छोटा बक्स उठाया और उसमें से शीशे का एक गोला बाहर निकाला, मगर उसी समय उस नौजवान ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, "ठहरो, अभी इसकी जरूरत नहीं है।" वह आदमी रुक गया मगर बोला, "यह जगह निराली है, फिर ऐसा मौका शायद न मिले !" नौजवान ने कहा, "तो क्या तुम इन सभों को मोटर सहित उड़ा देना चाहते हो ? ऐसा करने से वह माडल और वे कागजात भी तो नष्ट हो जायेंगे !" वह आदमी बोला, "दुश्मन के हाथ पड़ जाने से उनका नष्ट हो जाना ही अच्छा है, फिर भी अगर आपने कोई और तर्कीब सोची हो तो कहिए।" नौजवान ने कहा, "हां मुझे सूझी है, बम रख दो और मेरी बात सुनो।"

[२]

पंडित गोपालशंकर कपड़े पहिन कर कहीं जाने को तैयार थे कि उसी समय तार-प्यून ने एक तार ला कर उनके हाथ में दिया। उन्होंने खोल कर उसे पढ़ा, तार काशीजी से आया था और भेजने वाले वहाँ के सुपरिंटेंडेंट मिस्टर केमिल थे। तार का मजमून यह था :—

"रोज गायब है, कहीं पता नही लगता। उसकी जान का खतरा मालूम होता है। कृपा कर तार देखते ही आइये और मदद कीजिये। —केमिल।"

तार पढ़ते ही गोपालशंकर बेचैन हो गये। मिस्टर केमिल की लड़की मिस रोज से उनकी बहुत अधिक घनिष्टता थी और कुछ दिनो से वह घनिष्टता प्रेम के रूप में परिणत हो रही थी। पर यह प्रेम अभी तक दोनों दिलों के अत्यन्त गहरे पर्दे के भीतर ही छिपा हुआ था और किसी पर, यहाँ तक कि एक दूसरे पर भी प्रकट नहीं किया गया था। फिर भी प्रेम एक ऐसा पदार्थ है कि चाहे कितना ही गुप्त और कितने ही प्रयत्न से छिपा कर रक्खा गया क्यों न हो परन्तु प्रेमी पर आने वाली मुसीबत को सुन कर लगने वाला जबर्दस्त धक्का उसे प्रकट कर ही देता है। तार वाला तो तार देकर चला गया मगर गोपालशंकर तार का मज-

सून पढ़ कर उसी जगह एक कुर्सी पर बैठ गये और तरह तरह की बातें सोचने लगे।

न जाने कब तक वह इसी तरह बैठे रहते मगर घड़ी के बजने ने उन्हें चैतन्य किया और उन्हें ख्याल हुआ कि लाट साहब से मिलने जाने का समय हो गया बल्कि बीत रहा है। उन्होंने कोशिश करके अपने को चिन्ता-सागर से निकाला और मुरारी को आवाज दी।

थोड़ी ही देर में मुरारी वहाँ आ मौजूद हुआ। गोपालशंकर ने कहा, "मैं लाट साहब से मिलने जा रहा हूँ और वहाँ से आते ही काशीजी के लिये रवाना हो जाऊँगा। तुम मेरा सन्दूक तैयार कर रक्खो और बाकी भी सब सामान दुरुस्त कर डालो। शायद तुम्हे भी मेरे साथ चलना पड़ेगा।"

कुछ जरूरी चीजें जो वे अपने साथ ले जाना चाहते थे मुरारी को बता कर गोपालशंकर उठे और जाने को तैयार हुए। उसी समय टेलीफोन की घण्टी बजी और सुनने पर मालूम हुआ कि लाट साहब के प्राइवेट सेक्रेटरी दरियाफ्त कर रहे हैं कि 'क्या पण्डित गोपालशंकर घर से रवाना हो चुके हैं'? गोपालशंकर ने जवाब दिया, "एक जरूरी तार आ जाने के सबब से मुझे कुछ मिनटों की देर हो गई. मै अभी आता हूँ।" जवाब आया, "जहाँ तक हो जल्दी आइये, यहाँ एक विचित्र घटना हो गई है।"

गोपालशंकर ने उत्सुकता से पूछा, "क्या हुआ?" सेक्रेटरी ने जवाब दिया, "मिस्टर वाहिदअली और कोतवाल अभी यहाँ पहुँचे है। आपसे वह माडल ले कर रवाना होने बाद वे लोग अब तक कहाँ रहे या क्या करते रहे यह इन सभो को कुछ भी याद नहो है और न वह माडल ही इनके साथ है।"

सुन कर गोपालशंकर ने जोर से एक हाथ टेबुल पर मारा और कहा, "ओफ, ये मूर्ख पुलिस अफसर।" पर यकायक रुक गये। सेक्रेटरी से फिर कुछ बातें की और तब चोगा टाँग दिया, इसके बाद अपनी लेबोरेटरी में गये और वहाँ से कोई सामान लेकर बाहर आ गये। दरवाजे में दोहरा ताला बन्द किया और अपनी मोटर साइकिल पर सवार होकर रवाना हो गये।

[३]

रात के कोई पौने दस बजे होंगे। गोपालशंकर अभी तक लौट कर नही

आये हैं अस्तु मुरारी ड्राइंग-रूम के सामने वाले बारामदे में बैठा उनकी राह देख रहा है। सिर्फ दो चार नौकर इधर उधर काम पर दिखाई पड़ रहे हैं बाकी के सब काम समाप्त कर बाग की चहारदीवारी के साथ बनी हुई उस इमारत में चले गये हैं जो खास कर नौकरों के लिए ही गोपालशंकर ने बनवा दी है। बाग के फाटक पर दो पहरेदार मौजूद हैं और चार आदमी उस बड़े बाग और इमारत में इधर उधर घूम कर चौकसी कर रहे हैं। जब से रक्त-मण्डल का उत्पात शुरू हुआ है गोपालशंकर ने पहरेदार बढ़ा दिये हैं और अपने बँगले की हिफाजत का बहुत ख्याल रखने लगे हैं।

मुरारी गोपालशंकर का सिर्फ नौकर ही नहीं है बल्कि बहुत से कामों में उनका चालाक और होशियार जासूस भी है। विज्ञान से भी इसे बहुत शौक है और यह गोपालशंकर के वैज्ञानिक आविष्कारों से पूरी दिलचस्पी रखता है तथा उनसे काम लेना भी बखूबी जानता है। गोपालशंकर भी इससे बहुत प्रेम रखते हैं। यह लड़कपन से उनके साथ है और जब कभी वे हिन्दुस्तान के बाहर के मुल्कों की सैर करने जाते हैं तो इसे जरूर अपने साथ रखते हैं। थोड़ी बहुत कई भाषाओं में मुरारी को दखल भी है।

इस समय मुरारी के हाथ में कोई उपन्यास या किस्से की किताब नहीं है जिसे वह बड़े शौक से बिजली की रोशनी में दीवार के साथ उठँगा हुआ पढ़ रहा है। यह एक वैज्ञानिक पुस्तक है जिसमें बिजली द्वारा होने वाले आश्चर्य-जनक कामों और उनके अद्भुत यन्त्रों का हाल दिया गया है।

अचानक मुरारी के तेज कानों को किसी प्रकार की आहट मिली। आवाज किस प्रकार की थी इसे तो वह समझ न सका पर रुख पर ध्यान देने से इतना जाना गया कि ऊपर की मंजिल से आ रही है। पहिले तो उसने समझा कि कोई नौकर उठा होगा और कुछ कर रहा होगा पर फिर उसका मन न माना और वह जाँच करने के लिए उठ खड़ा हुआ। हाथ की किताब उसी जगह रख दी और धीरे धीरे पाँव दबाता हुआ सीढ़ियाँ तय कर ऊपर की मंजिल पर पहुँचा। सीढ़ी के मुहाने पर पहुँच वह रुक गया। यहाँ भी नीचे की मंजिल की तरह सामने बारामदा और इसके बाद कई कमरे थे। साधारण रीति से रात को दस बजे के बाद इस बारामदे में सिर्फ एक बिजली की बत्ती बलती रहा करती थी

परन्तु इस समय वह भी बुझी हुई थी और वहाँ घोर अन्धकार था। इस बात ने मुरारी को आश्चर्य में डाल दिया और वह वहीं रुक गया। जो आहट मुरारी के कानों तक पहुँची थी वह इस समय बन्द हो गई थी और वहाँ एक दम सन्नाटा था, मगर कुछ ही देर बाद वह आवाज फिर शुरू हुई और इस बार मुरारी को मालूम हो गया कि यह उस तरफ से आ रही है जिधर लेवोरेटरी है। यह जानते ही मुरारी चौकन्ना हो गया, उसे दुश्मनो का खयाल आया और सन्देह हो गया कि शायद बदमाश लोग उसके मालिक की लेवोरेटरी में घुस कर कुछ कर रहे हैं। अब वह एक सायत भी वहाँ रुक न सका, दबे पांव आगे की तरफ बढ़ा और उस तरफ चला जिधर लेवोरेटरी थी।

इस तरफ भी अन्धेरा था मगर नित्य का परिचित होने के कारण मुरारी को यहाँ तक आने में कोई तरद्दुद न हुआ। कुछ ही देर में वह लेवोरेटरी के दर्वाजे के पास जा पहुँचा और कपड़ा टागने के एक स्टैन्ड की आड़ में खड़ा हो गौर से चारो तरफ देखने लगा। पहिले तो अन्धेरे के सबब कुछ मालूम न हुआ पर जब निगाह जमी तो थोड़ा थोड़ा दिखने लगा और मालूम हो गया कि लेबोरेटरी के दर्वाजे के सामने घुटना टेके हुए बैठा कोई आदमी कुछ कर रहा है। मुरारी यद्यपि बहुत ही पांव दबा कर और आहिस्ते से आया था फिर भी इस आदमी को कुछ आहट लग ही गई थी और वह अपना हाथ रोक पीछे की तरफ मुँह कर चारो तरफ देख रहा था। या तो उसने मुरारी को आते देख लिया था या उसे किसी और बात का शक हो गया था जिससे उसने अपना काम छोड़ दिया और जमीन पर से कोई चीज उठा जो शायद एक बेग था मकान के पिछली तरफ लपका।

मुरारी ने देखा कि शिकार भागा जा रहा है, उसके सिर के पीछे ही बिजली की बत्ती का बटन था। उसने हाथ बढा कर उसे दबाया जिसके साथ ही बारामदे में तेज रोशनी फैल गई और तब उसने आड़ से निकल कड़क कर कहा, "कौन जा रहा है, खड़ा रह !"

जाने वाले ने एक दफे पीछे घूम कर देखा और तब अपनी चाल तेज की। एक क्षण के लिये उसका हाथ कपड़ों के अन्दर गया और तब एक चमकदार चीज उस हाथ में दिखाई देने लगी जिसे देखते ही मुरारी ने समझ लिया कि

हथियार है, पर वह ऐसा कमहिम्मत न था कि कोई मामूली हथियार दिखा कर उसे डरा लेता। वह अपनी जगह से झपटा और दौड़ कर उसके पास पहुँचा, साथ ही उसने जेब से एक सीटी निकाल कर जोर से बजाई। भागने वाले ने दौड़ कर निकल जाना चाहा पर फिर न जाने क्या सोच कर वह रुका और घूम गया। उसके हाथ में एक खुखड़ी थी जिसे दिखा कर उसने कहा, "बस खबरदार जो एक क़दम भी आगे बढ़े!"

इस आदमी के चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी और आवाज पर गौर करने से मालूम पड़ता था मानों वह आवाज बदल कर बातें कर रहा हो। उसके हाथ का शस्त्र भयानक था मगर मुरारी ने उसे कुछ करने का मौका देना उचित न समझा और एक दम झपट कर उससे गुथ गया। एक हाथ से उसने वह कलाई पकड ली जिसमें खुखडी थी और दूसरा कमर में डाल दिया। वह आदमी भी उससे गुथ गया और दोनों में जबर्दस्त कुश्ती होने लगी।

मुरारी का बदन मजबूत था और उसे अपनी ताकत पर घमंड भी था, मगर उसने अपने प्रतिद्वन्दी को अपने से बहुत मजबूत पाया। दो ही चार मिनट के बाद मुरारी जमीन पर गिरा दिया गया और दुश्मन का खखड़ी वाला हाथ ऊँचा हुआ। करीब ही था कि वह भयानक हथियार मुरारी की गरदन अलग कर देता या वह उसकी छाती में खुप जाता कि उसकी ऊपर उठी हुई कलाई को पीछे से किसी मजबूत हाथ ने पकड़ लिया। चौंक कर उस आदमी ने सिर घुमा कर देखा और गोपालशंकर को खड़ा पाया जो न जाने कब और किधर से उसके पीछे आ पहुँचे थे। उसने झटका देकर हाथ छुड़ा लेना चाहा मगर उसे ऐसा मालूम हुआ मानों किसी लोहे के पंजे ने उसका हाथ पकड़ लिया हो जो जरा भी दबना या मुड़ना नही जानता था। अब गोपालशंकर ने धीरे धीरे उस हाथ को ऐंठना शुरू किया, यहाँ तक कि वह दर्द के मारे चिल्ला कर मुरारी पर से उठ खड़ा हुआ। उसी समय मुरारी भी उठ खड़ा हुआ और दोनों ने मिल कर बहुत जल्दी ही उसे बेकाबू कर दिया। मुरारी कहीं से एक रस्सी ले आया जिससे उसके हाथ पैर कस कर बांध दिये गये।

नकाब उठा कर गोपालशंकर ने बड़े गौर से उसकी सूरत देखी पर उसे पहिचान न सके, आखिर बोले, "तुम कौन हो और मेरे घर में क्या करने आये

थे ?" उस आदमी ने जवाब दिया, "मैं चोर हूँ और चोरी करने आया था।" गोपालशंकर ने यह सुन सिर हिलाया और कहा, "तुम मामूली चोर नहीं मालूम होते ! सच सच वताओ तुम कौन हो ?" वह वोला, "आपको अख्तियार है जो चाहें समझें।"

उसी समय गोपालशंकर की निगाह चमड़े के एक वेग पर पड़ी जो उसी जगह पडा हुआ था। उन्होंने उसे उठा लिया और खोला। तरह तरह के ताले खोलने, सेफ तोडने, शीशा और लोहा काटने तथा छेद करने के औजार उसमें पड़े हुए थे जिनमें से कई विजली से काम करने वाले थे। उन्हीं के साथ एक पुर्जा भी पडा था जिसे गोपालशंकर ने निकाल लिया और पढ़ा, यह लिखा हुआ था :—

"६७ ए. जी.—गोपालशंकर की लेवोरेटरी के सेफ में कुछ फोटो के प्लेट हैं। उन्हें आज ही लाना होगा। आज वारह वजे रात के पहिले वे घर न लौटेंगे। उसके पहिले ही उन प्लेटों को कब्जे में करो और ठिकाने पहुँचाओ।"

इसके नीचे रक्त-मंडल का प्रसिद्ध निशान खून का लाल दाग और उसके वीच में चार उँगलियों का निशान वना हुआ था जिसे देखते ही गोपालशंकर सव मामला समझ गये। जेव से तालियों का एक गुच्छा निकाल कर उन्होंने मुरारी को दिया और कहा, "इसे तेंतीस नम्वर की कोठरी में वन्द कर दो और एक पहरेदार वहाँ मुकर्रर कर दो जिसमें भागने न पावे, बिजली का कनेक्शन लोहे के छडों के साथ कर देना, यह वहुत भयानक आदमी है !"

मुरारी ताली का गुच्छा और उस आदमी को साथ लिये नीचे चला गया और गोपालशंकर अपनी लेवोरेटरी के पास पहुँचे। उस समय उन्हें मालूम हुआ कि किसी तेज औजार से दर्वाजे का वह हिस्सा जिसमें दोहरा ताला वन्द किया जाता था काट डाला गया है। तीन तरफ कट चुका था और सिर्फ एक जगह थोडा सा लगा था जिसके कटते ही दर्वाजा खुल जाता। वे समझ गये कि वह आदमी इसी काम में लगा था जव मुरारी ने उसके काम में वाधा डाली थी। उन्होंने इसी समय काशीजी जाने का विचार छोड़ अपनी लेवोरेटरी की मजवूती का इन्तजाम किया वल्कि रात उसी कमरे में काटी और दूसरे दिन सवेरे ही कारीगरों को वुला कर लेवोरेटरी के सव दर्वाजों और खिड़कियों में लोहे के मोटे छड़ों वाले दोहरे दर्वाजों का इन्तजाम किया।

[४]

सूर्योदय में अभी एक घण्टे का विलम्ब है। सरकार के मेकैनिकल एडवाइजर और बेतार की तार के एक्सपर्ट कप्तान रूबी गहरी नींद में मस्त हैं और उनकी नाक से खुर्राटों की बारीक आवाज निकल रही है। न जाने कब तक वे पड़े रहते मगर एक खानसामा ने डरते डरते उनके पलंग के पास जा कर उन्हें जगाया और कहा, "हुजूर, हुजूर! उठिये, जरूरी टेलीफोन आया है!"

एक करवट बदल कर कप्तान रूबी ने आखें खोलीं और पूछा, "क्या बात है?" खानसामा ने फिर कहा, "जरूरी टेलीफोन आया है।" उन्होंने पूछा, "कौन बुला रहा है?" खानसामा बोला, "पंडित गोपालशंकर।" गोपालशंकर का नाम सुनते ही वे चौंक पड़े और उठ बैठे। रात का कपड़ा बदलने की परवाह किये बिना ही वे उस कमरे में पहुँचे जिसमें टेलीफोन था। खानसामा दरवाजे पर खड़ा हो गया जिसे इशारे से दूर जाने को कहा और तब टेलीफोन में बोले, "कौन है?" जवाब आया, "मैं हूँ गोपालशंकर, आप क्या कप्तान रूबी हैं?" उन्होंने जवाब दिया, "जी हाँ, कहिए क्या है?" दोनों में टेलीफोन पर बात होने लगी।

गोपाल०। कल जो शक मैंने किया था वह ठीक निकला!

रूबी०। क्या?

गोपाल०। रक्त-मंडल को पता लग गया कि मैंने उस माडल और उन कागजों के फोटो उतार कर रख लिये हैं जिन्हें वाहिदअलीखाँ को धोखा दे के वे ले गये हैं।

रूबी०। (चौंक कर) हैं, मालूम हो गया! क्या उन्होंने कोई कार्रवाई की?

गोपाल०। हाँ, उनका एक आदमी मेरी लेबोरेटरी का दर्वाजा काटता हुआ पकड़ा गया जिसके पास एक कागज भी था जिसमें इस बात का जिक्र था।

रूबी०। वह आदमी कहाँ है?

गोपाल०। मेरे कब्जे में है।

रूबी०। उसे मार पीट कर उससे कुछ हाल दरियाफ्त करना चाहिए!

गोपाल०। क्या आप समझते हैं कि रक्त-मंडल के जासूस मार पीट धमकी या सजा से डर कर कुछ भेद बतावेंगे? कभी नहीं। मगर मैंने इसके लिए एक दूसरी तर्कीब सोची है।

रूबी०। सो क्या?

गोपाल० । आपसे कल मैंने अपने उस यन्त्र का जिक्र किया था जो मनुष्य के मनोभावों का चित्र उतारता है। मैं उसी को काम में लाना और देखना चाहता हूँ कि इसमें कहाँ तक सफलता होती है।

रूबी० । हाँ ठीक, मुझे खयाल आ गया। तो आप जिस समय उस यन्त्र का इम्तिहान इस आदमी पर करें उस समय मुझे भी जरूर बुला लें। मुझे आपकी बात सुन कर बड़ा कौतूहल हुआ है और मैं देखना चाहता हूँ कि आपका यन्त्र क्या कर सकता है।

गोपाल० । यही नही बल्कि मैं चाहता हूँ कि आप खुद ही उस यन्त्र का इम्तिहान लें। मुझे दो घण्टे के भीतर ही बनारस के लिये रवाना हो जाना है जहाँ मेरे दोस्त मिस्टर केमिल बड़े तरद्दुद में पड़ गये हैं। इसलिए मुझे उस यन्त्र से काम लेने का मौका नही मिलेगा और इस बात का भी कुछ ठीक नही है कि मैं कब तक लौटूं। देर होने से न जाने क्या हो जाय, अस्तु मैं चाहता हूँ कि मेरी गैरहाजिरी में आप ही उस यन्त्र से काम लें और देखें कि कहाँ तक सफलता मिलती है।

रूबी० । मैं खुशी से यह काम करने को तैयार हूँ, मगर यह आपने क्या कहा कि मिस्टर केमिल बड़े तरद्दुद मे पड़ गये! उन पर क्या मुसीबत आई है ?

गोपाल० । उनकी लड़की रोज कही गायब हो गई है। उसकी जान का अंदेशा किया जाता है। मुझे तो यह रक्त-मंडल की कार्रवाई जान पड़ती है! मिस्टर केमिल का कल एक तार मुझे मिला जिसमें उन्होने मुझसे तुरत आने को कहा है और मैं आज थोड़ी देर में बनारस के लिए रवाना होने वाला हूँ।

रूबी० । तो फिर जरूर जाइये, मुझे भी यह समाचार सुन बहुत अफसोस हुआ, अगर कोई मदद देने लायक होता तो मैं भी जरूर आपके साथ ही चलता। खैर वहाँ का हाल मुझे बराबर लिखते रहियेगा। अच्छा उस यन्त्र के बारे में—क्या मैं उससे काम ले सकूँगा ?

गोपाल० । हाँ यह कुछ भी मुश्किल नही होगा, मैं उसके सब भेद आधे घंटे में आपको समझा दूँगा। आप अगर इसी समय आ सकें तो बहुत ठीक है।

रूबी० । मैं आधे घण्टे के अन्दर आपके बंगले पर पहुँचता हूँ।

गोपाल० । अच्छी बात है, आती समय रास्ते में मिस्टर डगलस से मिल कर उस आदमी के पकड़े जाने का हाल कह यह भी निश्चय कर लीजियेगा कि वे इस

कैदी को आपके पास रहने दें अथवा इस बात का प्रबंध कर दें कि वह जेल में बहुत ही होशियारी के साथ रक्खा जाय और आप जब चाहें तब उस पर प्रयोग कर सकें।

रूबी०। अच्छा, मैं कलेक्टर से मिल कर इस बात को भी तय करता आऊँगा।

बातचीत खतम हुई और टेलीफोन का चोंगा टाँग कर कप्तान रूबी उठ खड़े हुए, पर इस बात की उन्हें कुछ खबर न हुई कि उस जगह के पास की एक खिड़की के बाहर खडे होकर उनके खानसामा ने उनकी सब बातें अच्छी तरह सुन ली हैं।

जैसा कि उन्होंने वादा किया था, आधे घण्टे के अन्दर ही कप्तान रूबी गोपालशंकर के बँगले पर पहुँच गये। गोपालशंकर अपनी लेबोरेटरी के दरवाजे और खिड़कियाँ मजबूत करने का प्रबन्ध कर रहे थे जब इनके आने की उन्हें खबर मिली। वे नीचे आकर आदर के साथ उनसे मिले और तब उन्हें अपनी लेबोरेटरी में ले गये जहाँ टेबुल के ऊपर विचित्र तरह का एक यन्त्र रक्खा हुआ था। यही मनोभावों का चित्र उतारने वाला गोपालशंकर द्वारा आविष्कृत वह यन्त्र था जिसका उन्होने जिक्र किया था। गोपालशंकर उस यन्त्र का भेद कप्तान रूबी को समझाने लगे।

लगभग पौन घण्टे तक दोनों वैज्ञानिकों में बातचीत होती रही। सच तो यह है कि गुणी की कदर गुणी ही कर सकता है। जब कप्तान रूबी उस यन्त्र के सब कल पुर्जो को अच्छी तरह समझ गये तो उन्होंने प्रेम के साथ गोपालशंकर का हाथ दबाया और कहा, "पण्डितजी, मैं नहीं समझता था कि आपके दिमाग में इतनी विद्या और बुद्धि भरी हुई है। मैं करीब करीब सब मुल्कों में घूमा हूँ, यूरोप और अमेरिका के प्राय: सभी प्रसिद्ध विद्वानो और वैज्ञानिको से मेरा परिचय है, पर मैं सच कहता हूँ कि आप के जैसी योग्यता मैने कही नही देखा। मैं आपकी बुद्धि की तारीफ नही कर सकता। आपका यह यन्त्र ही बताता है कि आप वैज्ञानिक जगत में कितना ऊँचा स्थान ग्रहण किए हुए है। मगर अफसोस कि आप ऐसे देश में पैदा हुए है जो पराधीन होने के साथ ही साथ अपना मनोवृत्तियों में भी यहाँ तक पंगु हो गया है कि अपने गुणियों की आप ही कदर नहीं करता, नही तो अगर आप पश्चिम में पैदा हुए होते तो जगत के एक रत्न समझे...."

मगर गोपालशंकर ने अपना हाथ हिला कर कप्तान रूबी को रोका और

मतलब की बात पर आ गए। दोनों आदमियों में कुछ देर तक बातचीत होती रही, इसके बाद कप्तान रूबी विदा हुए। उनके साथ एक आदमी वह यन्त्र लिए हुए था और दो कान्स्टेबुल हथकड़ी पहिने उस आदमी को लिए हुए जिसे कल रात गोपालशंकर ने गिरफ्तार किया था।

कप्तान रूबी के जाने बाद गोपालशंकर ने मुरारी को बुलाया और कहा, "मैं चाहता था कि तुम्हे भी अपने साथ ले जाता पर रक्त-मंडल की कार्रवाइयों को देख मुझे ख्याल होता है कि मेरे पीछे किसी होशियार आदमी का यहाँ रहना जरूरी है जो बंगले की पूरी हिफाजत रक्खे, अस्तु तुम्हें यही छोड़े जाता हूँ। तुम खूब चौकसी रखना और सब जगह की, खासकर मेरी लेबोरेटरी की, खूब हिफाजत रखना! मुझे सन्देह है कि मेरे पीछे दुश्मन लोग जरूर कुछ न कुछ आफत करेंगे मगर तुम होशियार हो और उनका पूरी तरह मुकाबला कर सकते हो अस्तु तुम्हारे यहाँ रहने से मैं निश्चिन्त रहूँगा। लेबोरेटरी की हिफाजत के लिए रात भर म मैंने कुछ और सामान किये हैं, उनके बारे में मैं तुम्हें समझाए देता हूँ, उनके रहते किसी की मजाल नहीं कि भीतर झाँक सके, फिर भी अगर कोई तरद्दुद पड़े तो सीधे यहाँ के कलेक्टर मिस्टर डगलस के पास चले जाना, वे मुनासिब इन्तजाम कर देंगे, मैंने बात कर ली है।"

गोपालशंकर ने मुरारी को बहुत सी बातें समझाईं और इसके बाद काशीजी जाने की तैयारी करने लगे। दो घंटे के बाद वे वहाँ के लिए रवाना हो गये। उनके साथ बहुत ही मुख्तसर सा सामान था और आदमी या नौकर कोई भी नही।

[५]

मिस्टर केमिल को हमारे पाठक कदाचित् भूले न होंगे जिनका नाम इस उपन्यास के आरम्भ में आ चुका है। ये पहिले आगरे के पुलिस सुपरिंटेंडेंट थे और अब बदल कर काशीजी आ गए हैं। इनके पहिले के सुपरिंटेंडेंट मिस्टर गिबसन क समय मे बनारस में रक्त-मंडल ने जो कार्रवाइयाँ की उनकी भीषणता और अपराधियो का कुछ भी पता न लगने के कारण ऊंचे अफसर मिस्टर गिबसन से कुछ असन्तुष्ट हो गए थे और इसी सबब से वे बनारस से बदल कर एक छोटे और अपेक्षाकृत कम महत्व क शहर मे भेज दिए गए थे। मिस्टर केमिल जब म यहाँ आए थे तब से ऐसी घटनाओ का होना बन्द हो गया था पर यह

नहीं कहा जा सकता कि इसका कारण उनकी होशियारी और चालाकी थी या रक्त-मंडल का ध्यान दूसरी तरफ होना।

परन्तु यह शान्ति कुछ ही दिनों के लिए थी और अन्त में स्वयम् मिस्टर केमिल को ही कुचक्रियों के भीषण षड़यन्त्र में फँस जाना पड़ा।

संध्या का समय था। गर्मी की भीषणता से व्याकुल होकर मिस्टर केमिल, उनकी पत्नी, और लड़की मोटर-बोट पर चढ़ कर गंगाजी में सैर करने निकली थीं। पूर्णमासी का दिन था और जल पर पूर्ण चन्द्र की शोभा देखने की सभी की इच्छा थी अस्तु बोट तेजी के साथ छोड़ दिया गया और इस समय वह रामनगर को पीछे छोड़ता हुआ चुनार की ओर बढ़ रहा था।

रोज के हाथ में एक दूरबीन थी जिससे वह चारो तरफ का दृश्य देखती और उन पर तरह तरह की टिप्पणियाँ करती जा रही थी। यकायक उसने कहा, "माँ, देखिए हमारे आगे एक और मोटर-बोट जा रही है। वह चाल में हमारी नाव से तेज मालूम पड़ती है।" रोज ने माँ के हाथ में दूरबीन दी और उसने देख कर कहा, "हाँ बहुत सुन्दर और तेज जाने वाली बोट है, मगर उसकी चाल कम हो रही है, जान पड़ता है उसके इन्जिन में कुछ खराबी आ गई है।"

घूमती हुई दूरबीन मिस्टर केमिल के हाथ गई और उन्होने भी उस बोट को देखा जिसका इन्जिन अब बन्द हो गया था पर जो फिर भी तेजी से पानी को काटती हुई आगे बढी जा रही थी। यकायक केमिल ने देखा कि बोट के पिछले हिस्से में तीन चार बरस का एक सुन्दर लड़का आ खड़ा हुआ और इनकी नाव की तरफ देखने लगा। उसी समय तेजी से अचानक उस बोट का इन्जिन जो न जाने क्यों रुक गया था चल पड़ा और बोट तेजी में आगे बढ़ी। एक कड़ा झटका लगा और झोंके को बर्दाश्त न कर सकने के कारण वह छोटा लड़का पानी में गिर पड़ा। मिस्टर केमिल के मुँह से यकायक—"अरे! लड़का गिरा !!" निकल गया, और उन्होंने दूरबीन रख के जोर जोर से अपनी बोट का भोंपू बजाना शुरू किया जिसमें बोट वालों का ध्यान आकर्षित हो, पर वे बोट वाले न जाने किस काम में मग्न थे कि उन्होंने कुछ भी ख्याल न किया और लड़के को उसी तरह पानी में छोड़ उनकी नाव आगे बढ गई।

मिस्टर केमिल की नाव उस नाव से लगभग पाँच या छः फरलाँग दूर होगी जब यह घटना हुई। इस घटना को देखते ही उन्होंने अपना इन्जिन तेज किया और उस तरफ बढ़े जहाँ वह लड़का पानी में गिरा था। उनकी स्त्री दूरबीन हाथ में लिए उस लड़के पर निगाह जमाये हुए थी जो एक बार डूब कर अब फिर उतरा आया था और पानी पर हाथ पैर मार रहा था।

अब उस अगली नाव वालों का ध्यान भी इस दुर्घटना की तरफ गया। एक आदमी पीछे की तरफ आया और झाँक कर देखने लगा। नाव का मुँह घूमा और एक सायत के लिए ऐसा मालूम हुआ मानो वह लौटेगी और उस बेचारे लडके को उठावेगी परन्तु ऐसा न हुआ। क्या जाने केमिल साहब की बोट देख कर या न जाने किस कारण से उस नाव ने अपना मुँह फिर सीधा कर लिया और पहिले से भी ज्यादा तेजी से आगे की तरफ बढ़ी। लडका पीछे छूट गया। पर इसी समय मिस्टर केमिल की नाव उस लड़के के पास पहुँच गई, केमिल जल में कूद पड़े और तेजी के साथ उस लडके के पास पहुँच कर उन्होंने उसे उठा लिया जो अबकी शायद आखिरी दफे पानी के अन्दर जा रहा था। उनकी स्त्री मोटर-बोट घुमा कर पास ले आई और सभों ने लड़के को पकड़ा और फिर मिस्टर केमिल को सहारा दे नाव पर चढ़ा लिया।

लडका यद्यपि पानी पी गया था पर फिर भी होश मे था। मिसेज केमिल ने उसके कपडे बदल कर अपना कोई कपडा उसे उढ़ाया और हाथ पाँव मल कर बदन गर्म किया और केमिल साहब ने भी गीले कपडे उतारे। उस बीच में उस अगले बोट पर से इन सभों का ध्यान हट गया था पर अब जो देखा तो वह दूर जा पहुँचा था और फिर भी बढ़ा ही जा रहा था। रोज यह देख बोली, "वे लोग कौन हैं जो लड़के को पानी में छोड़ इस तरह भागे जा रहे हैं। कैसी निष्ठुरता है !!" केमिल बोले, "मुझे भी इस पर ताज्जुब हो रहा है। उस आदमी ने आ कर देखा था इससे यह भी नही कहा जा सकता कि उन लोगों को इस दुर्घटना की खबर नही।" मिसेज केमिल बोली, "शायद उस आदमी की निगाह लड़के पर न पड़ी हो और उसने इसे डूब गया समझा हो !" इस पर रोज बोली, "तो भी रुक कर पता लगाना उनका फर्ज था, वे तो इस तरह भागे मानों ---- चोरी का हो !"

अब तक दोनों नावों के बीच में कोई आध मील का फासला पड़ चुका था। मिस्टर केमिल ने अपनी नाव की चाल तेज की और चाहा कि उस नाव के पास पहुँच लडका उन लोगों के हवाले कर दें और यह भी दरियाफ्त करें कि उसे इस वेदर्दी के साथ पानी में छोड़ भागने का क्या सबब था, पर उनकी यह इच्छा भी पूरी न हुई। उनकी नाव की चाल तेज होने के साथ ही अगली नाव की चाल भी तेज होती दिखाई पड़ी और वह पहिले से भी ज्यादा तेजी से पानी काटने लगी। मिस्टर केमिल ने यह देख कहा, "जरूर यह कुछ भेद की बात है। वे लोग या तो इस लड़के को नही चाहते और या हम लोगों से डरते हैं !!" यह बात मुँह से निकलने के साथ ही उनको कुछ और खयाल हुआ और वे एक दूसरी ही बात सोचने लगे। कुछ ही देर बाद उन्होंने बोट का मुँह घुमाया और घर की तरफ लौटे, मगर अब हम थोड़ी देर के लिए इनका साथ छोड़ते है और उस अगली मोटर-बोट के साथ चलते हैं।

इस बोट में सिर्फ दो आदमी है जिनमें एक तो इंजिन के पास है और दूसरा आगे के हिस्से में खड़ा चिन्ताकुल आँखों से कुछ देख रहा है। नाव में तरह तरह के सामान भरे हुए हैं। बहुत सी छोटी बड़ी गठरियाँ, कुछ चमड़े के बेग, कई ट्रंक और इसी तरह की और चीजें बतला रही है मानों किसी रईस का सामान जा रहा हो। इंजिन अपनी पूरी तेजी से चल रहा है और नाव पानी को काटती हुई तीर की तरह जा रही है।

काफी देर बाद आगे वाले आदमी ने यह कह कर सन्नाटे को तोड़ा— "मुकुन्द, अब क्या हो ? सरदार जब लडके का हाल सुनेंगे तो क्या कहेंगे ?"

इंजिन के पास खड़ा आदमी बोला, "कहेंगे क्या पूरी दुर्दशा होगी ! न जाने क्या समझ सोच कर उन्होंने यह सब सामान और उस लड़के को अपने पास मँगवाया था। लड़के के चले जाने से उनकी कार्रवाई में कितना बड़ा विघ्न पड़ जायगा कौन कह सकता है ? असल में रामू तुमने गलती की जो लौट कर उसे उठा नही लिया।"

रामू०। गलती क्या की ? केमिल की बोट सिर आ पहुँची थी। हम लोग लड़का उठाने को लौटते तो जरूर उनसे बातें होतीं, सवाल जवाब होते, किसका लड़का है पूछने पर हम क्या बताते ? उनसे और बटुकचन्द से सुनते है जान

पहिचान भी है। अगर उन्होंने पहिचान लिया कि वटुकचन्द ही का खोया हुआ लड़का यह है तो क्या होता सोचो!

मुकुन्द ने इसका कुछ जवाब नही दिया क्योंकि इस जगह गंगाजी का रुख घूम गया था और तरखा बहुत तेज था जिससे वह नाव सम्हालने में लग गया था। यकायक सामने की तरफ आकाश में हरे रंग की ऐसी चमक दिखाई पड़ी मानो कोई आकाशवान छोड़ा गया हो। देखते ही रामू चौंक पड़ा और बोला, "देखो, शायद सरदार बुला रहे हैं।" मुकुन्द ने कहा, "ऐसा ही मालूम होता है, तुम भी एक वान छोड़ो।"

जवाब में रामू ने एक वान छोड़ा और थोड़ी देर वाद सामने से दो वान छूटते दिखाई पड़े। वोट की चाल तेज की गई और थोड़ी देर वाद वीच गंगा में खडे एक बड़े वजड़े की धुंधली शकल दिखाई देने लगी। कुछ ही देर में वोट इस वजड़े के पास पहुँच गया और उसके साथ जा लगा। वजड़े पर बहुत से मल्लाह दिखाई पड़ रहे थे जिन्होंने वोट को रस्सों से बाँध दिया और कुछ इस वोट पर भी चले गये। रामू और मुकुन्द वजडे पर चढ़े और कुछ ही देर वाद भीतर बुला लिये गये।

यह वजडा जितना वडा ऊँचा लम्बा और आरामदेह था उतना ही तेज जाने वाला भी मालूम होता था, और इस पर तीन पालों के लगने के मस्तूल दिखाई पड रहे थे। अगला हिस्सा तो इस प्रकार का था कि लगभग चालीस मल्लाह वहाँ वैठकर खे सकते थे और पीछे की तरफ वक्त पर मदद करने के लिए पंखी और एक छोटा इंजिन भी लगा हुआ था। इसके भीतर मल्लाहों के रहने की जगह के इलावा छोटे वडे कई कमरे थे जो भिन्न भिन्न कामों में लाये जाते थे और इन्ही में से एक में विछे पलंग पर गाव-तकिये के सहारे लेटे और सिर्हाने के टेवुल पर रक्खे लम्प की रोशनी में कुछ पढते हुए एक नौजवान के सामने रामू और मुकुन्द पहुँचाये गये जो उसे सलाम कर अदव से खडे हो गये।

नौजवान ने इन लोगों की तरफ सिर उठा कर देखा और पूछा, "तुम लोग आ गये?" मुकुन्द ने जवाव दिया, "जी हाँ, मगर....!"

नौजवान०। मगर क्या?

मुकुन्द ने यह सुन रास्ते में जो कुछ हुआ था सब पूरा-पूरा कह सुनाया

और अन्त में यह भी कहा, "केमिल साहब ने थोड़ी देर तक हम लोगों का पीछा किया मगर फिर वापस लौट गये।"

मुकुन्द की बात सुन नौजवान कुछ देर के लिए चिन्ता में पड़ गया। मुकुन्द और रामू धड़कते कलेजे के साथ सोच रहे थे कि देखें अब उन्हे क्या सजा मिलती है मगर ऐसा कुछ न हुआ और थोड़ी देर बाद नौजवान ने कहा, "तुम लोगों से गलती तो बड़ी भारी हो गई कि उसी समय लौट कर लड़के को उठा न लिया पर खैर अब जो हो गया सो हो गया। जो कुछ सामान उस मकान से लाये हो उसे इस बजड़े पर पहुँचा दो और इसके बाद इसी समय उस बोट को बीच गंगा में डुबा दो। बजड़े को हुक्म दो कि ऊपर की तरफ चले, घण्टा भर दिन चढने से पहिले अड्डे पर पहुँच जाना चाहिए। अब मै सोता हूँ, रात को कोई मुझे तंग न करे।"

"जो हुक्म" कह दोनों आदमी सामने से हट गये। नौजवान के हुक्म की पूरी तामील की गई। मोटर-बोट का सब सामान बजड़े पर पहुँचाया गया और तब वह डुबा दी गई। इसके बाद बजड़ा खुल गया और दो बड़ी पालों की सहायता से तेजी के साथ ऊपर को तरफ चढ़ने लगा। नौजवान कुछ देर तक खिड़की से चाँदनी रात की छटा देखता रहा, इसके बाद उसने लम्प बुझा दिया और सो गया।

[६]

दूसरे ही रोज, शायद केमिल साहब के इशारे से ही, यह बात सारे शहर में फैल गई कि गंगाजी में बहता हुआ एक लडका पाया गया है जो बड़ा ही सुन्दर है और शायद किसी बहुत ऊँचे खानदान का है। कई लोग उस लड़के को देखने के लिए आने लगे और बहुतों ने उसे ले कर पालने की भी दर्खास्त की मगर केमिल साहब को विश्वास था कि लड़के के साथ किसी विचित्र घटना का कोई सम्बन्ध अवश्य है अस्तु उन्होने किसी को भी वह लड़का देना स्वीकार न किया। रोज को उस लडके से मुहब्बत हो गई थी और वह भी उसे रखना चाहती थी। इधर केमिल साहब इस तरफ से भी बेफिक्र नही थे कि जो लोग इस तरह से उस लडके को जल में छोड़ कर चले गये वे कौन थे इसका पता लगावें। उन्होंने पुलिस और जासूसो की मदद से इसकी कुछ छानबीन की और कुछ पता भी

लगाया जिसका हाल आगे चल कर मालूम होगा।

घूमती फिरती यह खवर पुत्र-शोक से व्याकुल रायसाहव वटुकचन्द के कानों में भी पहुँची कि केमिल साहव को कही से तीन चार वरस का एक वहुत सुन्दर लडका मिला है। यह सुनते ही उनके मन में कुछ अजीव तरह की घडकन पैदा हो गई और वे किसी तरह अपने को रोक न सके। उन्होंने उसी समय अपनी मोटर मँगवाई और उस पर चढ केमिल साहव के वंगले पहुँचे। इत्तिफाक से रोज उस समय उस लडके को लिए वंगले के सामने छोटे नजरवाग में टहल रही थी। फाटक के अन्दर घुसते ही वटुकचन्द की निगाह उस लडके पर पडी। अपने दिल के टुकडे को उसी दम उन्होंने पहिचान लिया। वे झपट कर उसके पास पहुँचे और उसे उठा कर छाती से लगा लिया, तथा वह लडका भी 'वावूजी' कह कर उनके गले से चिपक गया।

रोज ताज्जुव से यह हाल देख रही थी। वह असल मामला तुरत समझ गई क्योंकि उसे रक्त-मंडल द्वारा वटकचन्द के लडके के छीने जाने का हाल मालूम था। वह दौडी हुई जा कर केमिल साहव को वुला लाई। केमिल साहव से वटुक-चन्द का पहिले का कुछ परिचय था। इस समय उन्होंने उनसे वातचीत कर जव निश्चय कर लिया कि यह लडका उन्ही का है तो वहुत प्रसन्नता प्रकट की और लडका सही सलामत पा जाने पर उन्हें मुवारकवाद दी। वातचीत करते वे उन्हें वंगले में ले आये और चाय लाने का हुक्म दिया।

सव लोग चाय पीने के साथ साथ हँसी खुशी की वातें कर रहे थे कि चपरासी ने लाकर दो लिफाफे टेवुल पर रख दिये। लाल रग के एक ही नाप के दोनो लिफाफों में से एक पर केमिल साहव का नाम लिखा हुआ था और दूसरे पर राय वटुकचन्द का। केमिल साहव के पूछने पर चपरासी ने जवाव दिया कि लाल कपडा पहिने एक आदमी ये दोनों चीठियाँ दे गया है और कह गया है कि 'वहुत जरूरी है, अभी जा कर दे दो'। केमिल ने यह सुन वटुकचन्द की चीठी उनकी तरफ वढा दी और अपनी लेकर लिफाफा खोला। लाल रंग का एक कागज निकला जिस पर लाल हो स्याही में यह लिखा था :—

"मिस्टर केमिल,

"हम आपको सूचना देते हैं कि जो लडका परसों आपको मिला है वह

हमारा है और कल सुबह हम उसे लेने आवेंगे। अगर आप हमारी मर्जी के खिलाफ उसे किसी गैर के हवाले कर देंगे तो तकलीफ उठावेंगे। कल सुबह या तो उसे लेकर अपने फाटक पर तैयार हमें मिलिये या अपने किसी रिश्तेदार का वियोग सहने के लिए तैयार हो जाइये।"

इस चीठी के नीचे रक्त-मंडल का मशहूर निशान—खून के दाग के बीच में चार उँगलियें, बना हुआ था।

चीठी पढ़ कर केमिल साहब चौंक गये। उसी समय उन्होंने वटुकचन्द की तरफ निगाह उठाई तो देखा कि उनका चेहरा पीला पड़ गया है। उनके हाथ में भी लाल कागज देख वे समझ गये कि उन्हे भी रक्त-मडल ने ही कोई सन्देशा भेजा है। बिना कुछ कहे उन्होंने अपनी चीठी उनकी तरफ बढा दी और उनकी आप लेकर पढ़ना शुरू किया। इस चीठी का मजमून यह था :—

"वटुकचन्द,

"हमारे आदमियों की गफलत से यह लड़का हमारे हाथ से निकल गया मगर फिर भी इतना समझ रक्खो कि जब तक हमारा दो लाख रुपया हमें मिल न जायगा तुम इसे अपने पास कदापि रख न सकोगे। अगर तुम इसे रखना चाहते हो तो आज ही रात को दो लाख रुपये राजघाट के पुराने किले के उत्तर वाले कूएँ में डाल दो, वरना याद रक्खो कि तुम किसी तरह जीते नही बचोगे और तुम्हारे बाद यह लड़का भी जिसे तुम अपना कहते हो उसी के पास पहुँचा दिया जायगा जिसका नाम लेने की भी हिम्मत तुम्हारी नही है।

" 'कपास के फूल' की बात याद करो और जो हम कहते है बिना सोचे विचारे कर डालो, नहीं तो अच्छा न होगा।"

इस चीठी के नीचे भी रक्त-मंडल का खूनी निशान बना हुआ था!

केमिल साहब और वटुकचन्द एक दूसरे की तरफ कुछ देर तक एकटक देखते रहे। वटुकचन्द की आँखो से भय और लाचारी प्रकट हो रही थी, केमिल साहब की आँखें क्रोध और दृढता बता रही थी। कुछ देर बाद वटुकचन्द ने प्रश्न की निगाह केमिल साहब पर डाली और अपने लड़के की तरफ देखा। केमिल ने लापरवाही के साथ गरदन हिलाई और कहा, "राय साहब, आप अपने लड़के को ले जा सकते है, मगर मैं राय दूंगा कि इसकी और अपनी जान की या तो

खूब हिफाजत कीजिये और या फिर इन शैतानों को दो लाख का घूस देने को तैयार रहिये।"

वटुकचन्द ने दीनता के साथ कहा, "आप जैसा हुक्म करें वैसा ही करने को मैं तैयार हूँ। मैं कोई बहुत बडा अमीर आदमी नही, दो लाख रुपया कहाँ से पाऊँगा जो इन्हे दूँगा, मगर यह लडका भी मेरे जिगर का टुकडा है, इसे भी किसी तरह छोड नही सकता!"

केमिल साहब सिर हिला कर बोले, "अगर मैं आपकी जगह होता तो अपनी जान दे देता मगर इस तरह दब के रुपया तो न देता!!"

वटुकचन्द लाचारी और उदासी से रुकते रुकते बोले, "यही तो मेरी भी राय है, अगर....आप मेरी मदद करने को .. मगर....!"

केमिल बोले, "मैं सब तरह से पूरी मदद करने को तैयार हूँ। मैं तो आपको यह राय दूँगा कि कुछ दिनों के लिए इस लडके को ले कर अपने किसी गाँव या दूर के किसी शहर में चले जाइये, तब तक मैं इन शैतानों को ठीक करता हूँ।

वटुक०। (खुश होकर) हाँ यह बात तो आपने ठीक कही। मैं ऐसा ही करूँगा, मेरा लखनऊ में एक गाँव है, अगर आप कहिये तो मैं वही चला जाऊँ।

केमिल०। हाँ आप ऐसा ही करें, लखनऊ के पुलिस सुपरिंटेंडेण्ट और कलेक्टर भी मेरे बहुत बडे दोस्त है, मैं उनके नाम को चीठियें दे दूँगा और कई दूसरे उपाय भी बताऊँगा जिनसे आप बहुत सुरक्षित रह कर बेफिक्री के साथ कुछ वक्त काट सकेंगे।

केमिल साहब और वटुकचन्द में धीरे धीरे कुछ बातें होने लगीं। आधे घण्टे के बाद जब बातों का सिलसिला टूटा तो वटुकचन्द उठ कर टेलीफोन के पास गये और चोंगा उठा अपने मकान पर फोन किया। उनके खास नौकर ने जवाब दिया जिससे वे बोले, "मुझे एक बहुत ही जरूरी काम से इसी समय लखनऊ के लिये रवाना होना है। मैं यहाँ से सीधा स्टेशन जा रहा हूँ। तुम मेरा सूटकेस और सफर का जरूरी सामान ले तुरत वही मुझसे मिलो।"

केमिल और वटुकचन्द में कुछ और बातें हुई, इसके बाद मिस्टर केमिल ने अपने हाथ से लिख कर दो चीठिये वटुकचन्द को दी और इस बारे में और भी कई बाते समझा कर उन्हे बिदा किया। अपने प्यारे लड़के को लिए हुए वटुक-चन्द अपनी मोटर में जा बैठे और ड्राइवर को स्टेशन चलने का हुक्म दिया, मगर

उनका दिल धड़क रहा था और वे डरे हुओं की तरह चारों तरफ देख रहे थे कि कहीं रक्त-मंडल का कोई आदमी उन्हें भागते हुए देख तो नही रहा है।

यकायक उनकी निगाह मोटर की छत की तरफ चली गई। उन्होंने देखा कि कपास का एक फूल लाल धागे से बँधा छत से लटक रहा है। न जाने क्यों इस सुन्दर फूल को देख वे काँप गये। उनके मुँह से आह निकल गई और उन्होंने दोनों हाथ से अपने प्यारे लड़के को छाती से दबा लिया।

× × × ×

दूसरा दिन केमिल साहब का तरह तरह का इन्तजाम करने में बीत गया। कहना नहीं होगा कि रक्त-मंडल की चीठी के अनुसार वे सुबह फाटक पर वटुकचन्द के लड़के को लिए हुए मौजूद नहीं थे, उस चीठी की धमकी को तो उन्होंने एक दम ही अग्राह्य किया था। उस दिन आधी रात गये तक वह पुलिस के अफसरों और जासूसों के साथ न जाने क्या क्या सलाह मशविरा करते रहे।

दूसरे दिन बहुत सवेरे ही उनके नौकर ने उन्हे जगाया और जब वे आँख मलते हुए उठे तो एक तार और एक चीठी उन्हे दी। चौक कर धड़कते हुए दिल से उन्होंने तार खोला, यह लिखा था :—

"राय वटुकचन्द को रात कोई जान से मार गया। उनका लड़का गायब है।"

तार छूट कर उनके हाथ से गिर गया और वे यह भी देखने लायक न रहे कि उसको भेजने वाला कौन है। कांपते हाथों से उन्होंने दूसरा लिफाफा खोला, लाल कागज पर लाल स्याही से सिर्फ इतना लिखा हुआ था :—

"आखिर अपनी वेवकूफी, झूठे घमंड, और जिद्द के कारण तुमने वटुकचन्द की जान ली, अब अपनी जान बचाने की फिक्र करो। तुम्हारी लड़की को ले कर हम लोग जाते है।"

इसके नीचे रक्त-मंडल का खूनी निशान था जिसे देखते ही मिस्टर केमिल चौक कर उठ खड़े हुए और बोले, "रोज! रोज! रोज कहाँ है? देखो और उसे अभी मेरे पास लाओ!"

मगर रोज का कहाँ पता लगता था! नौकर चाकर बंगले के कमरों कोठरियों और बाग का पत्ता पत्ता छान आये मगर वह कही न थी।

केमिल साहब ने सिर पर जोर से हाथ मारा और अपनी खाट पर गिर गये।

—०—

मुठभेड़

[१]

अब हम कुछ पीछे की तरफ हटते और थोड़े दिन पहिले की एक घटना का एक हाल लिखते हैं ।

अँधेरे और डरावने जंगल के बीच में छोटा सा मैदान जिसमें इस समय हम सौ सवा सौ आदमियों की एक भीड़ देख रहे हैं ।

बीच में एक गोल टेबुल है जिसके ऊपर लाल कपडा बिछा हुआ है । उसके ऊपर मनुष्य की खोपड़ी का पूरा ढाँचा रक्खा हुआ है और उसके दोनों तरफ भैंसे के दो कटे हुए सिर रक्खे है जिनमें से ताजा खून अभी भी कभी कभी निकल पड़ता है और बूँद बूँद करके लाल कपडे को तर करता हुआ नीचे जमीन पर गिर जाता है । भैंसो के सिरो के दोनो तरफ खून से सने दो खाडे रक्खे हुए हैं और उनके बगल में मनुष्य के हाथ की दो हड्डियाँ रक्खी हुई है ।

टेबुल की सजावट तो यह है । उसके पीछे तीन कुरसियाँ रक्खी हुई है जिन पर लाल कपडा उढाया हुआ है । इस कपड़े पर भी सुफेद रेशम के काम से मनुष्य की खोपड़ी बनी हुई है जिसके नीचे मनुष्य के हाथ की दो हड्डियाँ एक दूसरे को काटती हुई बनी हैं । ये कुरसियाँ खाली है अर्थात् इन पर अभी तक कोई बैठा हुआ नही है ।

सामने और टेबुल के चारो तरफ की भीड़ में जो सौ सवा सौ आदमियो से अधिक की नही होगी कोई विशेषता नही है सिवाय इसके कि ये सब के सब लाल रंग का कपडा पहिने हुए और अधिकाश नवयुवक हैं । इन लोगों में धीरे धीरे कुछ बाते हो रही है जिससे एक तरह की गूँज फैल रही है । साधारण रूप से यह भी जान पड़ता है कि एक तरह की उत्तेजना भीतर ही भीतर काम

कर रही है और ये सभी उपस्थित लोग किसी के आने की उत्कंठा-पूर्वक राह देख रहे है।

यकायक कहो से शंख की आवाज आई जिसे सुनते ही उपस्थित भीड की उत्तेजना बढ गई और सभी इधर उधर देखने लगे। अचानक फिर शंख की आवाज आई और साथ ही सामने की तरफ से तीन आदमी आते हुए दिखाई पड़े जिनकी पोशाक लाल रंग की थी और चेहरे भी लाल कपड़ो से ढँके थे। इनको देखते ही सब के सब उठ खड़े हुए और साथ ही 'भारत माता की जय' शब्द से वह जंगल गूँज उठा। धीरे धीरे चलते हुए वे तीनों आदमी आकर उन कुरसियों पर बैठ गये और एक वार फिर वही रव गूँज उठा।

फिर शंख की आवाज हुई और इन नये आए हुओं में से एक आदमी उठ खडा हुआ। उसने हाथ के इशारे से सभों को बैठने के लिए कहा और जब सब बैठ गये तो गम्भीर स्वर में कहना आरम्भ किया :—

"भाई हिन्दियों,

"आज वरसों ही बाद हम लोग फिर यहाँ इकट्ठे हुए है। हम लोगों ने पहिले कहाँ तक काम किया था और किस प्रकार हम लोग दबा दिये गये—ये दोनों ही बातें कहनी अब बेकार है और हमें तो केवल इसी बात के लिए परमात्मा को धन्यवाद देना चाहिए कि आज इतने दिनों के बाद और इस प्रकार वदल गये हुए वायुमंडल में भी हम लोग इतने आदमी ऐसे इकट्ठे हो सके जो अपना पहिला उद्देश्य भूले नही है और जो आज भी कुछ कर सकने की हिम्मत रखते है। और कुछ नही तो देश के लिए प्राण त्याग करना तो आज भी हमारे हाथ में है और वहाँ तक करने को हम तैयार है—यही बहुत है।

"आज आप लोगों को इतने दिनों के बाद हम लोगों ने जो बुलाया इसका एक विशेष कारण है। आप सब लोग पिछले इतिहास को पूरी तरह जानते है और आपको यह बतलाना व्यर्थ है कि पहिली बार हम लोगों की पराजय केवल इसी लिए हुई कि हमारे हाथ में कोई ऐसा अस्त्र नही था जिससे हम उस विशाल शक्ति का ठीक तरह से मुकावला कर सकते जिसने इस देश का शासन-सूत्र पकड़ा हुआ है। परन्तु आज अवस्था वदल गई है। आज हमें एक ऐसा अस्त्र मिल गया है जिसकी सहायता से यदि हम चाहें तो घड़ी भर में इस सरकार क्या इस

समूची दुनिया का नाश कर दे सकते हैं। आज हम इस योग्य हो गये हैं कि संसार की बड़ी से बड़ी शक्ति का मुकाबला कर सकें।

"आप पूछेंगे कि वह शक्ति क्या है? वह और कुछ नहीं, वैज्ञानिक संसार का एक आविष्कार है। आपको भुलावे में न रख कर मैं आपको उस शक्ति का एक छोटा सा नमूना दिखलाए देता हूँ।"

इतना कह उस आदमी ने टेबुल के नीचे से काठ का एक बक्स निकाला। इसके भीतर किसी मसाले में रक्खा हुआ अन्य एक छोटा बक्स था जो इसमें से बाहर निकाला गया और उसके भी अन्दर से रूई की तहों में बड़ी हिफाजत से रक्खा हुआ शीशे का एक गोला निकाला जो कद में बड़े अंडे के बराबर होगा। इस गोले को हाथ में ले और सिर के ऊपर उठा कर लोगों को दिखाते हुए उसने फिर कहना शुरू किया :—

"आप लोग इस शीशे के गोले को देखते हैं! यह कितना छोटा और साधारण मालूम होता है! पर इसके अन्दर वही सब से भयानक शक्ति छिपी हुई है जिसकी सहायता से हम अपने देश को स्वाधीन करना चाहते हैं। आप लोग इस छोटे से गोले की शक्ति देखें।"

उस आदमी ने बड़े जोर से उस गोले को एक तरफ फेंका। वह सनसनाता हुआ एक बड़े भारी पेड़ के तने से जाकर लड़ा और फूट कर टुकड़े टुकड़े हो गया। लोगों को यकायक मालूम हुआ मानो एक प्रकार की हरी बिजली वहाँ पर चमक गई हो। उसी में वह पेड़ यकायक जल उठा और शीघ्र ही इस प्रकार सुलगने लग गया मानों वह बरसों का सूखा काठ हो या उस पर मिट्टी का तेल छिड़क दिया गया हो। लगभग पाँच मिनट के अन्दर ही वह समूचा पेड़ धांय धांय कर के जलने लग गया। कुशल यही थी कि वह पेड़ उस जंगल के और पेड़ों से एकदम अलग था और उसके सबब से अन्य पेड़ों में आग लगने की संभावना नहीं थी, नहीं तो शायद शीघ्र ही वहाँ एक भयानक दृश्य उपस्थित हो जाता, फिर भी बिना समुचित कारण अंडे के बराबर के एक छोटे गोले से एक विशाल हरे पेड़ का इस तरह जलने लग जाना भी कोई कम भय पैदा करने वाली बात न थी। सब लोग डर के साथ उस तरफ देख रहे थे कि अचानक उस बोलने वाले की आवाज ने पुनः सबका ध्यान अपनी तरफ खींचा, वह कह रहा था—

"आप लोगों ने एक छोटे से गोले की करामात देखी ! इस तरह के और इससे कई गुना बड़े गोले सैकड़ों और हजारों की तायदाद में हम तैयार कर सकते हैं और उनकी मदद से क्या किया जा सकता है यह आप खुद ही सोच सकते हैं।"

सुनने वालों के उत्साह का पारावार न था, लोग मतवाले से हो गये थे मगर बोलने वाले के एक इशारे ने उन्हें शान्त किया। वह कहने लगा—

"ऐसे ऐसे गोले तैयार करने के लिए हम लोगों ने इसी देश में एक कार-खाना बना लिया है जहाँ ये अनगिनत तैयार हो सकते है। अब हमें जरूरत है ऐसे कार्यकर्ताओं की जो जान का डर छोड़ कर इन गोलों को इस्तेमाल करने को तैयार हो जायँ। क्या आप लोग इसके लिए तैयार हैं ?"

"तैयार है! तैयार है!!" की आवाज से जंगल गूँज उठा। उसने पुनः कहा—

"मुझे आप लोगों का उत्साह देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई, मगर इस काम के लिये बहुत ज्यादा आदमियों की जरूरत है। कम से कम दस हजार आदमी हुए बिना संगठित रूप से कोई अच्छा काम नही हो सकता। आज आप लोगों को बुला कर मै यही आदेश देना चाहता हूँ कि आप खूब ढेर से कार्यकर्ता तैयार कीजिए। मै खूब जानता हूँ कि इस समय देश में लाख लाख नवयुवकों का खून जोश मार रहा है मगर वे इस जोश के निकालने का कोई रास्ता नही पा रहे है। रास्ता मैने दिखा दिया, ऐसे नवयुवको को खोज लाना अब आप लोगों का काम है। जिस दिन दस हजार ऐसे नवयुवक हमें मिल जायेगे जो देश के लिये सहर्ष अपना प्राण देने को तैयार हों उसी दिन हम संसार की सबसे बड़ी शक्ति को पैरों के नीचे रौदने लायक हो जायेगे। क्या मैं उम्मीद करूँ कि देश ऐसे दस हजार नवयुवक दे सकेगा ?"

जंगल की छाती को फाड़ती हुई—"जरूर ! जरूर !!" की आवाज गूँज उठी। उस आदमी ने फिर कहा, "मैं भी यही समझता हूँ। आज मैने आपको दिखा दिया कि अब हम वैसे कमजोर नहीं रहे जैसे कुछ बरस पहिले थे, अस्तु अब आपको अधिक हिम्मत और आत्म-विश्वास के साथ काम करना चाहिये। आज के ठीक एक महीने बाद अर्थात् अगली अमावस को पुनः इसी जगह आप लोग इकट्ठे हों। जो नये और विश्वासी साथी आपको मिल सकें उन्हे भी लेते

आवे। उस दिन मैं कुछ और वैज्ञानिक अस्त्र शस्त्रों का नमूना आप लोगों को दिखाऊँगा और साथ ही आप से एक नई प्रतिज्ञा करा कर आपको नये युद्ध का सैनिक बनाऊँगा। आज बस इतने ही के लिये आप लोग बुलाए गये थे।"

कहने वाला चुप हो गया, 'भारत माता की जय' का घोर शब्द एक बार फिर गूँज उठा, और तब शान्ति हो गई। वक्ता के एक इशारे पर सब लोग उठ खड़े हुए और एक एक दो दो करके अलग अलग पगडंडियों की राह जंगल के बाहर होने लगे। वह टेबुल खोपडी महिष-मुन्ड आदि न जाने कहाँ गायब हो गये। वे तीनो नकाबपोश भी न जाने किधर गुम हो गये। कुछ देर के बाद ऐसा मालूम होने लगा मानों वहाँ कभी कोई रहा ही नही या बरसों से उस जंगल ने किसी मनुष्य की शकल भी नही देखी थी, हाँ केवल वह सुलगता हुआ पेड़ अपनी कहानी अब भी कह रहा था।

[२]

एक सूनसान सड़क पर से जो नैपाल और अंगरेजी भारत की सीमा पर पड़ती है, एक अंगरेजी रिसाला जा रहा है।

रिसाला न कह कर इसे एक छोटी टुकड़ी कहना ठीक होगा। इसमें आगे आगे लगभग दो सौ पैदल सिपाही, उनके पीछे चार तोपों का एक तोपखाना, और उसके पीछे लगभग एक सौ के घुडसवार है। अफसर इत्यादि कायदे के साथ हैं और पूरे मिलिटरी ढंग से कूच हो रहा हैं। नैपाल के महाराज किसी कारण से भारत की सीमा पर आ रहे है, उन्ही की अगवानी के लिये यह टुकडी जा रही है और आज संध्या से पहिले ही अपने ठिकाने पर पहुँच जायगी जिसमें कल महाराज के आने के वक्त से तैयार रहे। कई अन्य छोटे बड़े सरकारी अफसर दूसरे रास्ते से वहाँ पहुँच चुके है और स्वयम् प्रान्त के लाट साहब आज शाम को पहुँच जायेंगे!

इतनी शान शौकत दिखाने या इस प्रकार नैपाल के महाराज और प्रान्तीय लाट की भेंट होने का वास्तविक कारण क्या है यह तो हम कुछ भी नही जानते परन्तु कोई गूढ बात अवश्य है इसमें सन्देह नही। इस पलटन के आगे जाने वाले कैप्टन मोरलैंड और उनके मातहत अफसर सैंडरसन में इसी सम्बन्ध में धीरे धीरे कुछ बातें होती जा रही है। इन्हे पाँच हो सात मील और जाना है

इससे कोई विशेष जल्दी न होने के कारण इनके घोड़ों की चाल तेज नही है और पलटन मन्द गति से ही चल रही है।

यकायक बातें करना छोड़ कैप्टेन मोरलैंड ने गौर से सामने की तरफ देखा और कहा, "वह क्या है!" सैंडरसन ने भी गौर से सामने देखा और कहा, "एक गाड़ी और कुछ सवार मालूम होते है।" मोरलैंड ने अपनी दूरबीन उठाई और उस तरफ देखने लगे।

जहाँ पर ये लोग थे वहाँ से सड़क आगे की तरफ कुछ ढालुई थी और काफी दूर तक नीचे ही की तरफ झुकती चली गई थी। दोनों तरफ पेड़ों के भी न होने के कारण यहाँ से बहुत दूर तक का रास्ता साफ दिखाई पड़ रहा था। मोरलैंड ने बड़े गौर से देख कर कहा, "सरकारी खजाने की गाड़ी है और साथ में छः सवार और एक अफसर है, मगर न जाने क्यों ये लोग वही रुके हुए है।"

मोरलैंड ने सैंडरसन के हाथ में दूरबीन दे दी और उसने भी बहुत गौर से देखा, तब कहा, "जी हाँ, यही बात है, मगर वहाँ आगे की तरफ जहाँ सड़क पहाड के बगल से घूमती है दो सवार और है जो इसी तरफ देख रहे है बल्कि उनमें से एक के हाथ में दूरबीन भी हैं। उन पर शायद आपने गौर नहीं किया?" "नही तो" कह मोरलैंड ने फिर दूरबीन पकड़ी और देख कर कहा, "हाँ, ठीक तो है, मगर वे लोग हमारी तरफ के नही है। यद्यपि उनकी पौशाक फौजी ही मालूम पडती है फिर भी वे किसी दूसरी जगह के जान पड़ते है। मगर हम लोगों को देख कर तो वे जंगल में घुस चले!"

ये लोग बाते भी करते जाते थे और चलते भी जाते थे। लगभग एक घड़ी के बाद उस जगह पहुँच गये जहाँ वह गाड़ी और सवार खडे थे। सचमुच सरकारी खजाने की एक गाड़ी और उसके साथ सात सवार थे। इस पलटन को आते देख उन छहों सिपाहियों का अफसर इधर ही बढ़ आया और मोरलैड को सलाम कर के बोला, "आप लोग बड़े मौके पर आ गये नही तो आज सरकारी खजाना जरूर लुट जाता!!"

मोरलैंड०। क्यो सो क्यों, और बात क्या है? आप लोग कहाँ जा रहे थे, और देर से इसी जगह क्यों खड़े है?

अफसर०। मैं यह खजाना लेकर 'त्रिपन-कूट' के सरकारी खजाने में दाखिल

करने जा रहा था। यहाँ से जब लगभग आध मील ऊपर पहुँचा हूँगा मेरे घोडे के सामने एक तीर आकर गिरा जिसके साथ एक पुर्जा बँधा हुआ था। मैंने तीर से खोल कर उस पुर्जे को पढा तो उसमें यह लिखा पाया, "खजाने की गाड़ी यही छोड कर तुम लोग फौरन पीछे लौट जाओ नही तो एक आदमी भी जीता बचने न पायेगा।" मैं इस धमकी की कोई परवाह न कर बराबर बढ़ता चला गया मगर जब यहाँ पहुँचा तो दूसरा पुर्जा उसी तरह का मिला जिसमें लिखा था—"यह न समझो कि तुम लोग सात आदमी हो और इस तरह हमारे हुक्म को काट कर जा सकते हो! हम पुनः हुक्म देते है कि अभी जहाँ हो वही खजाना छोड़ कर फौरन पीछे लौट जाओ। अगर अब एक कदम भी आगे रखा तो तुम लोगो की बोटी बोटी का पता न लगेगा।" यह पुर्जा पा कर और यह सोच कर कि शायद हमला करने वाले बहुत ज्यादा आदमी है और आगे बढ़ने से सरकारी खजाने पर जोखिम आ जाय, मैं रुक कर सोच रहा था कि अब क्या करना चाहिये कि आपकी टुकडी दिखाई पडी और मैं इस लिये रुका रह गया कि आप लोग भी पहुँच जांय तो आपके साथ ही आगे बढें।"

कप्तान मोरलैंड के मुँह पर हँसी दिखाई पड गई, मानो उनके मन में यह बात दौड गई कि हिन्दुस्तानी भी कैसे डरपोक होते है! एक जरा से पुरजे पर डर कर ये सात सात जवान खडे है और यह हिम्मत नही पड़ती कि आगे बढ़े!—मगर उन्होंने तुरत ही अपने भाव को छिपा कर पूछा, "क्या आपको मालूम है कि इस गाड़ी में कितना रुपया है?" अफसर ने जवाब दिया, "मैं ठीक ठीक तो नही कह सकता पर सुनता हूँ कि सोलह लाख रुपए की अशर्फियाँ है।"

"सोलह लाख!!" ताज्जुब के साथ यह कहते हुए मोरलैंड के चेहरे पर बल पड गये। उन्होंने गौर के साथ कुछ सोचा और तब कहा, "अच्छा आप मेरी फौज के पीछे पीछे चले आवें, मैं आपको 'त्रिपन-कूट' छोड़ दूँगा।"

फौजी सलाम कर उस अफसर ने गाडी एक बगल कर दी और मोरलैंड अपने सिपाहियो को लिये आगे बढा। जब सब फौज आगे हो गई तो खजाने की गाड़ी उसके पीछे पीछे चलने लगी और पुनः सफर शुरू हुआ।

मगर मुश्किल से ये लोग सौ गज आगे गये होंगे कि यकायक मोरलैंड के घोड़े के सामने एक तीर आकर गिरा जिसके साथ एक पुर्जा बँधा हुआ था।

उन्होंने चिहुँक कर घोड़ा रोका और एक सिपाही को इशारा किया जो वह तीर उठा कर उनके पास लाया। उन्होंने पुर्जा खोला और पढ़ा, लाल रंग के कागज पर लाल ही स्याही में यह लिखा हुआ था—"इस खजाने पर हमारी आँख लग चुकी है और इसे हम लोग किसी तरह नहीं छोड़ेंगे, अगर अपनी जान की खैर चाहते हो तो खजाने की गाड़ी छोड़ कर तुम लोग आगे बढ़ जाओ नहीं फजूल ही सबके सब मारे जाओगे।"

इसके नीचे किसी का दस्तखत न था केवल लाल रंग की एक बड़ी बूँद का सा निशान बना हुआ था जिसके बीचोबीच में चार उँगलियों का सुफेद निशान दिख रहा था।

पुर्जा पढ़ कर मोरलैंड ने गुस्से से उस तीर को जमीन पर पटक दिया और पुर्जे को फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला। इसके बाद क्रोध से मोछें चबाते हुए उस फौजी जवान ने अपनी पिस्तौल कमर से निकाली और हवा में छोडी, मानों उस अदृश्य व्यक्ति को जिसने यह संवाद भेजा था खबर कर दी कि वे मोर्चा लेने को तैयार हैं और खजाना कभी न देंगे। कड़कती हुई आवाज में मोरलैंड ने कोई हुक्म दिया जिसके साथ ही सब पैदल और घुड़सवार फौज ने बन्दूकें सीधी की और उनमें टोटे भर लिये। दूसरा हुक्म हुआ और पुनः डबल मार्च से कूच शुरू हो गया। भला एक फौजी अफसर जिसके साथ तीन सौ पैदल और घुड़सवार फौज के साथ साथ एक तोपखाना भी हो ऐसी मामूली धमकियों की क्या परवाह कर सकता था !!

यकायक दूर से बन्दूक छूटने की भारी आवाज मोरलैंड के कान मे आई। वे उस पर गौर कर ही रहे थे कि सनसनाता हुआ एक तीर कही से आया और उनके घोड़े के पास ही के एक पेड़ के तने में घुस कर काँपता हुआ रुक गया। एक सिपाही ने उसे निकाल कर मोरलैंड के हाथ में दिया मगर उन्होंने गुस्से से उस सवार को अपनी जगह जाने का हुक्म दिया और पुर्जे को बिना पढ़े तीर को तोड़ कर सड़क पर फेंक दिया, इसके बाद घोड़ा बढाया।

मगर अभी मोरलैंड के घोड़े ने मुश्किल से दो कदम आगे रक्खे होंगे कि यकायक कही से आकर शीशे का एक गोला बीच सड़क पर गिरा और गिरते ही फूट गया। एक हरी बिजली सी लोगों की निगाहों के सामने चमक गई

और दूसरे ही क्षण में डरे हुए सिपाहियों ने देखा कि कैप्टन मोरलैंड और उनके घोड़े का कही पता भी नही है सिर्फ कुछ अधजली हड्डियों के टुकड़े सड़क पर पड़े है और अजीब तरह की चिरायंध सी उठ रही है।

सिपाहियों के कलेजे काँप गये और पैर मन मन भर के हो गये। वमों और तोप के गोलो से तो वे लोग अच्छी तरह परिचित थे मगर इस तरह के गजव ढहाने वाले शीगे के गोले का ख्याल स्वप्न में भी नही हो सकता था। मगर उन्हे कुछ सोचने का भी मौका न मिला और सैंडरसन ने आगे वढ कर कप्तान मोरलैंड की जगह लेते हुए कडक कर कहा, "फायर!"

एक साथ दो सौ बन्दूको की आवाज से कानों के परदे फट गये। घोडे चिग्घाड उठे, जंगल के परिन्दे और दरिन्दे जानवर एकदम चौंक पडे। कितने ही पेड़ों के तने चलनी हो गये और धूएँ से आसमान भर गया। थोडी देर में धूँआ साफ हो गया और सैडरसन ने 'मार्च' का हुक्म दिया, साथ ही सिपाहियों ने पुनः वन्दूके भर ली।

मुश्किल से फौज ने चार पाँच कदम आगे रक्खे होंगे कि कही से उसी तरह का एक दूसरा गोला आया और सैंडरसन के घोडे के पीछे जमीन पर गिर कर फटा। यह पहिले से दूना वडा और शायद आठ गुना भयानक था। इसकी हरी चमक से चौंधियाए हुए सिपाहियों की आंखे जव खुली तो देखा गया कि सैंडर-सन के साथ ही साथ आगे की चार पंक्ति सिपाहियो की भी गायव है। केवल अधजले हड्डियो और कपड़ो के कुछ टुकडे जमीन पर इधर उधर पडे हुए हैं।

डर के मारे सिपाहियो की वुरी हालत थी। अगर दुश्मन सामने होता और वन्दूक तलवार वगैरह मामूली हथियारो से लडता तो वे वार का वदला वार से चुकाते, पर इस अदृश्य दुश्मन और भयानक गोलो का क्या जवाव दिया जाय! फिर भी उन्होने हिम्मत न हारी और पैदल तथा घुडसवार फौज ने दनादन ऊपर नीचे अगल वगल चारो तरफ फायर करने शुरू कर दिये। तोपखाने के अफसर ने भी हुकूमत अपने हाथ में ली और तोपो में गोले भरे, मगर छोडने की नौवत न आ सकी, एक वड़ा सा शीशे का गोला चारो तोपों के वीच में आकर गिरा और दूसरे सायत में तोप और तोपखाना सभी गायव हो गया। उधर पैदल और घुडसवार फौज में चार पाँच गोले आकर गिरे जिन्होंने और

भी तहलका मचा दिया और देखते देखते आधे से ऊपर सिपाही मारे गये, मारे गये कैसे कहूँ, एक दम दुनिया से गायव ही हो गये। वचे हुए सिपाहियों ने तो अव विल्कुल ही हिम्मत हार दी और जिसको जिधर रास्ता मिला वह उधर ही को भाग खड़ा हुआ। कुछ ही देर वाद वहाँ की जमीन विल्कुल साफ हो गई। लेकिन वह खजाने की गाड़ी और उसके चारो खच्चर अछूते वच गये थे। इस विचित्र लडाई की यह भी विशेषता थी कि जख्मी कोई भी न था और न कोई मुर्दा ही नजर आता था। जिस जिस को उस हरी विजली ने छूआ वह एक दम गायव ही हो गया था तथा जिसे उसने नहीं छूआ था वह वेदाग वच गया था और इस समय अपने प्राण वचाने वास्ते कही भाग रहा था।

खजाने की गाडी के खच्चर भी भागने के लिये जोर कर रहे थे और आखिर उस भारी गाड़ी को लिये एक तरफ को तेजी से दौड़े मगर वे कही जा न सके। दूर से तेजी के साथ आते हुए दो घुड़सवारों ने वहाँ पहुँच कर उन्हे फुर्ती से रोका, एक ने उनकी लगामें पकड़ कर खीची और दूसरा अपने घोड़े से कूद कर हाँकने वाले की जगह जा बैठा। गाड़ी रुक गई।

दूसरा सवार घोड़े से उतरा। उसके हाथ में लाल कागज का एक टुकडा था जिसे उसने एक पेड़ के तने पर रक्खा और दूसरे हाथ से पीठ पर से एक तीर निकाल कर उसके ऊपर से पेड़ में गाड़ दिया। इसके वाद उसने दूसरे सवार के घोड़े की लगाम पकड़ ली और अपने घोड़े पर सवार हो गया। खच्चरों पर चावुक पड़ी और खजाने की गाडी घडघड़ करती हुई तेजी से रवाना हुई, वगल में वह दूसरा सवार जाने लगा। कुछ ही दूर जाते जाते दोनों आँखों की ओट हो गये और उस जगह मौत का सन्नाटा छा गया।

[३]

रक्षाल से लगभग पचास मील ऊपर चढ़ कर पड़ने वाले पहाड़ो मैदान में जहाँ से हिमगिरि की वर्फीली चोटियों की छटा बड़ी ही मनोहर मालूम होती है एक वड़ा लश्कर पड़ा हुआ है। यहाँ से नैपाल राज्य की सीमा वहुत दूर नही है और काठमांडू का रास्ता भी इसी तरफ से गुजरता है। यह लश्कर भारत सरकार का हैं जिसके कई ऊँचे अफसर इस समय यहाँ दिखाई पड़ रहे है। कई नैपाली सरदार और फौजी अफसर भी इन्ही में मिले जुले दिखलाई पड़ रहे है।

एक वडे खेमे के आगे पेडों की छाया के नीचे एक वडा टेवुल और वहुत सी कुरसियाँ रक्खी है जिन पर कई अंगरेज और नैपाली अफसर वैठे है। इन्ही में लाट साहव के सेक्रेटरी मिस्टर फर्गूसन भी है। आइये हम लोग इन्ही के पास चलें और सुने ये लोग क्या बाते कर रहे है।

फर्गूसन०। कप्तान वर्न, ताज्जुव की वात है कि हमारी फौजी टुकडी अभी तक यहाँ नही पहुँची, उसे दोपहर तक ही पहुँच जाना चाहिये था!

वर्न०। मैं खुद इसी वात पर ताज्जुव कर रहा हूँ। न मालूम क्या वात है। मोरलैंड तो वक्त का वडा पावन्द अफसर है, उसका इस तरह देर करना ताज्जुव में डालता है।

फर्गूसन०। (घडी देख कर) दो वज रहा है, ढाई घण्टे में लाट साहव आ पहुँचेंगे। महाराजा साहेव भी शायद आते ही होंगे। ये सिपाही नही आये तो वडा वुरा होगा। (एक नैपाली सरदार की तरफ देख कर) कहिये किशनसिंहजी साहव! आपकी भी तो कुछ फौज आने वाली थी?

किशनसिंह०। जी हाँ और मै भी ताज्जुव कर रहा हूँ कि वह क्यों अव तक नही आई? महाराजा वहादुर ने पाँच वजे आने का वक्त दिया था, उनके आने के पहिले अगर फौज नही पहुँची तो मैं कही का न रहूँगा!

फर्गूसन०। मेरी कुछ समझ में नही आ रहा है कि क्या मामला है?

किशनसिंह०। (अपने पीछे वैठे एक अफसर की तरफ देख कर) रामसिंह, दो सवार दौडाओ, जा कर खवर लावे कि हमारी फौज कहाँ है? जहाँ भी वह हो वहाँ से दौडा दौड आये!

रामसिंह उठा और सलाम कर चला गया। फर्गूसन ने यह देख अपने पीछे खडे एक अफसर की तरफ देखा और वह भी मतलव समझ तुरत उठ कर चलता हुआ। इधर ये लोग आपस में फिर वाते करने लगे।

यकायक दूर कुछ आदमियो के एक छोटे गिरोह पर इन लोगो की निगाह पडी जो इधर ही को आ रहा था। पहिले तो इन्हे खयाल हुआ कि यह इन्ही की फौज है मगर फिर तुरत ही विश्वास करना पडा कि ये लोग कोई दूसरे ही है। थोडी देर में वे पास आ गये और इस लश्कर के वाहरी हिस्से पर पहुँच कर रुक गये। केवल एक सवार जो कोई अंग्रेज मालूम होता था आगे वढा और कुछ

ही देर में जहाँ ये लोग बैठे हुए थे वहाँ आकर घोड़े से उतर पडा। अब मिस्टर फर्गूसन ने पहिचाना कि यह उनके दोस्त मिस्टर केमिल का भतीजा एडवर्ड है। उसे पहिचानते ही उन्होंने कहा, "हलो एडवर्ड! तुम यहाँ कहाँ!!"

सभों ने एडवर्ड से हाथ मिलाया और वह थके हुओ की तरह एक कुर्सी पर गिर गया। उसके चेहरे से इतनी गहरी परेशानी और उदासी टपक रही थी कि सभों को विश्वास हो गया कि उस पर जरूर कोई दुर्घटना घटी है। सब लोग ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देखने लगे। आखिर फर्गूसन ने पूछा—

फर्गूसन०। एडवर्ड, तुम बड़े ही सुस्त और उदास मालूम हो रहे हो! आखिर मामला क्या है? तुम तो किसी मुहिम पर न गये थे?

एडवर्ड०। जी हाँ, मगर हमें कोई सफलता न मिली और हम लोगों को बुरी तरह जक खा कर लौटना पड़ा।

फर्गूसन०। जक खा कर लौटना पडा! सो क्या? तुम्हारे साथ तो सब तरह का सामान और एक एरोप्लेन भी था?

एडवर्ड०। वह सब लुट गया।

फर्गूसन०। लुट गया! सो कैसे? सब हाल मुझसे खुलासा कहो और यह भी बताओ कि पण्डित गोपालशंकर कहाँ हैं?

एडवर्ड०। वे वापस नही लौटे, मैंने बहुत कुछ समझाया परन्तु वे किसी तरह नही माने, मुझे सब लश्कर को ले पीछे लौटने का हुक्म दिया और आप पैदल ही कही चले गये।

फर्गूसन०। अकेले ही! खैर तुम सब हाल मुझे पूरा सुनाओ।

एडवर्ड ने वह सब हाल जो हम ऊपर लिख आये है पूरा इन सभों को कह सुनाया और अन्त में कहा, "मेरे पास सिर्फ दो दिन की रसद रह गई थी जिससे बड़ी मुश्किल से काम चलाता हुआ आज चौथे दिन यहाँ पहुँचा हूँ। सारा लश्कर अधमूआ हो रहा है। बारे किसी की जान नही गई, मगर पण्डित गोपालशंकर का कहीं पता नहीं है। उनको मदद पहुँचाने की शीघ्र ही कोशिश होनी चाहिये नही तो वे बड़े खतरे में पड़ेगे।"

फर्गूसन०। सो तो हई है मगर मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसी कौन सी कार्रवाई की गई जिससे तुम्हारा पूरा लश्कर बेहोश हो गया और किसी को तनोबदन की सुध न रही! इसमें तो शक ही नहीं कि यह रक्त-मंडल वालों की कार्रवाई है मगर उन्होंने कौन सी तर्कीब की यह कुछ मालूम नहीं होता।

एडवर्ड०। हम लोगों ने भी बहुत सोचा विचारा मगर कुछ समझ में न आया और इसी का पता लगाने पण्डितजी गये भी हैं।

फर्गूसन कुछ कहना चाहते थे कि यकायक बहुत से घोड़ों के टापो की आवाजों ने उन्हे चौंका दिया और वे उधर की तरफ देखने लगे जिधर से लगभग पचास साठ सवार तेजी से इन्ही की तरफ आ रहे थे! पोशाक और रग ढंग से अंगरेजी फौज के ही सिपाही मालूम होते थे मगर इस समय ये सब इस तरह बेतरतीब दौड़े चले आ रहे थे मानों कही लडाई से भाग कर आ रहे हों। थोडी ही देर में वह गरोह भी पास आकर रुक गया और उनमें से दो आदमी जिनमें से एक वह नौजवान अफसर था जो फर्गूसन के हुक्म पर अपनी फौज का पता लगाने गया था, आगे बढ कर इन लोगों के पास पहुँचे।

फर्गूसन ने ताज्जुब की निगाह उनकी तरफ उठाई। नौजवान ने घबडाए हुए स्वर में कहा, "गजब हो गया! हमारी फौज तो तहस नहस हो गई!! किसी दुश्मन ने उस पर हमला करके आधे से ज्यादा आदमियों को मार डाला, बाकी जो बचे वे भाग गये। उनमें से कुछ मिले जिन्हे मैं साथ ले आया हूँ। चारो तोपें भी बरबाद हो गईं और वह खजाने की गाड़ी भी लुट गई जो त्रिपनकूट ले जाई जा रही थी!!"

यह सुन कर फर्गूसन इस प्रकार चौंक पड़े मानों उन्हे किसी ने तीर मार दिया हो। वे एकदम उठ कर खड़े हो गये और चिल्ला कर बोले, "हैं, सरकारी खजाना लूट लिया गया और अंगरेजी फौज बर्बाद हो गई! यह क्या मैं ठीक सुन रहा हूँ!!"

नौजवान बोला, "मुझे अफसोस से कहना पडता है कि यह बिल्कुल ठीक है। जो कुछ मैं इन सिपाहियों की बातों से मतलब लगा सका हूँ वह यह है कि हमारी फौज इधर चली आ रही थी कि रास्ते में वह खजाने की गाडी उन्हें मिली जो रुकी हुई थी। उसके साथ जो सिपाही थे उनके अफसर ने कप्तान मोरलैंड से कहा कि किसी ने उन्हें खजाना वही छोड कर चले जाने को कहा था इसी से वे वहाँ रुक कर सोच रहे थे कि अब क्या करना चाहिये। मोरलैंड ने उन लोगों को अपने साथ ले लिया मगर थोड़ा ही आगे बढने पर उन्हे तीर में बँधा एक पुर्जा मिला जिसमें शायद वही बात फिर लिखी हुई थी। उन्होंने अवश्य ही उस पर कोई खयाल नही किया और आगे बढ़े मगर उसी समय कुछ शीशे के गोले आ कर उस फौज पर गिरे जिनके गिरते ही आग लग गई और

हमारी आधी फौज और पूरा तोपखाना देखते देखते उड़ गया। वस इतनी ही तो वात है।"

यह विचित्र समाचार सुन फर्गूसन का तो वह हाल हो गया कि वे यह भी भूल गये कि जागते है कि सो रहे है। उन्होंने गुस्से से टेवुल पर हाथ पटक कर कहा, "ये झूठी वातें! कूड़े का ढेर! यह क्या कभी मुमकिन है! दो चार शीशे के गोलो से हमारी आर्मी क्या नष्ट हो सकती है! ऐसा कहने वाला पागल है!"

वहाँ मौजूद वाकी लोगो को भी इस वात पर विश्वास नही होता था पर जव उस फौजी टुकड़ी में के कई आदमियों को वुला कर पूछा गया और सभी के मुँह से एक ही वात निकली तो सभों को विश्वास करना ही पड़ा।

इस ताज्जुव की वात पर वडी ही गुरचूँ गुरचूँ मची और सभो में वड़ी तेजी से वहस होने लगी कि आखिर यह क्या वात है। यह वहस न जाने कव तक चलती रहती अगर एक सवार तेजी से आकर वहाँ न पहुँचता। वह सवार नैपाल राज्य का था जिसने सलाम कर किशनसिंह के हाथ में एक चीठी दी और पीछे हट गया। किशनसिंह ने चीठी खोल कर पढी और तव फर्गूसन से कहा, "वड़े अफसोस की वात है कि महाराज साहव की तवीयत यकायक खराव हो गई है और वे तशरीफ नही ला रहे है। डाक्टरों ने एक हफ्ते तक उन्हे किसी प्रकार की भी मेहनत करने से मना किया है।"

फर्गूसन ने यह सुन तेजी से पूछा, "सो क्या? महाराजा साहेव को क्या हो गया? खैर तो है?" किशनसिंह ने जवाव दिया, "कोई डर की वात तो नहीं कही गई है मगर खुलासा कोई हाल भी नहीं दिया है। कोई दूसरा खत आवे तो मालूम हो।"

इतने ही में वह सवार पुनः आगे वढ़ा और एक लाल कागज का टुकड़ा आगे वढ़ाता हुआ वोला, "मैं आ रहा था तो रास्ते में एक जगह सड़क पर ऐसा मालूम पड़ा मानों कुछ लड़ाई झगड़ा या खून खरावा हुआ हो। उसी जगह एक पेड़ के साथ तीर से दवा हुआ यह कागज दिखा जिसे मैं उठा लाया हूँ।"

किशनसिंह ने वह कागज खोल कर पढ़ा। पढते ही वे इस तरह पर चौंक उठे मानों उन्हे विजली लगी हो, इसके वाद वह कागज फर्गूसन की तरफ वढ़ाते हुए वोले, "यह तो वड़े ताज्जुव की वात है!!"

फर्गूसन ने वह कागज देखा और पढा। लाल कागज पर लाल ही स्याही से लिखा होने के कारण वह मुश्किल से पढ़ा जाता था फिर भी कोशिश करके उसे पढ़ा। यह लिखा हुआ था :—

"रक्त-मडल के 'भयानक-चार' का हुक्म न मानने की यही सजा होती है। आगे से लोग होशियार रहे।"

"अगर मिस्टर फर्गूसन को यह कागज मिले तो वे भी होशियार हो जायँ और समझ ले कि अव जल्दी ही यहाँ की हुकूमत दूसरे हाथों में जाने वाली है। उन्हे चाहिये कि अपना डेरा खेमा सरहद से उठा ले जायँ। अव एक महीने तक महाराज और लाट साहव में मुलाकात नही हो सकती। अगर वे अपना डेरा उठा नही लेंगे तो उन सव लोगो की भी वही हालत होगी जो इस फौज की हुई है।"

इसके नीचे खून की एक वडी सी बूँद की तरह का दाग था जिसके वीचो-वीच में चार उँगलियों का सुफेद दाग नजर आ रहा था।

फर्गूसन साहव के माथे पर वहुत से वल पड़ गये। वे क्रोध में आ कर कुछ कहना ही चाहते थे कि यकायक कैंप के तार-घर का पियन तार का एक लिफाफा लिये हुए आ पहुँचा। सलाम कर उसने लिफाफा फर्गूसन के हाथ में दिया जिन्होने आवेश से काँपते हाथों से उसे लिया और खोल कर पढ़ा, यह तार था :—

"रेलवे लाइन वहुत दूर तक टूट जाने के कारण लाट साहव की स्पेशल आ नही सकती। वे पीछे लौट रहे हैं। मुलाकात के लिए दूसरा दिन ठीक करके वतला दिया जायगा। कैम्प तोड दो। —डगलस।"

डगलस साहव प्रान्त के लाट के प्राइवेट सेक्रेटरी थे। फर्गूसन ने तार भेजे जाने का मुकाम देखा और समझ लिया कि यहाँ से लगभग सौ मील दूर यह घटना हुई है। उन्हे रक्त-मंडल के भयानक-चार की चीठी का वह जुमला वार वार याद आने लगा, "अव एक महीने तक महाराज और लाट साहव में मुलाकात नही हो सकती—"

कुछ देर तक वे चुप रहे, इसके वाद काँपते स्वर में उन्होंने अपने चारो तरफ खडे उत्सुक अफसरों से टूटे फूटे शब्दों में कहा, "रेलवे लाइन टूट गई, लाट साहब वापस चले गये हैं, कैम्प तोड़ देने का हुक्म हुआ है।"

॥ पहिला भाग समाप्त ॥

१९७८ ई०] वारहवाँ संस्करण [१५०० प्रति

मुद्रक—लहरी प्रेस, वाराणसी।

॥ श्रीः ॥

रक्त-मंडल

दूसरा भाग

रण-ताण्डव

[१]

"खबरदार बस आगे कदम न रखना !"

"हट रास्ते से ! तू मुझे रोकने वाला कौन ?"

"मैं ? तेरा यम !!"

कहने वाले का हाथ बढा और कोई ठंढी गोल चीज सामने वाले के माथे से छू गई।

अमावस्या की काली रात को घनघोर बादलों ने और भी काला कर रक्खा है। ठंढी हवा सांय सांय चल रही है जो इस वक्त मैदान मे निकलने वाले के बदन की हड्डियां तक कंपा देती है। कभी कभी पानी की कोई कोई बूंद गिर जाती है और यह बता देती है कि बहुत जल्दी ही पानी बरसने वाला है। अंधेरे में चारो तरफ फैले हुए और मरे हाथियो की तरह नजर आने वाले पत्थरो के ढोके बता रहे हैं कि यह किसी पहाडी की तलहटी है जहां पर वे दोनों आदमी जिनकी छोटी मगर मतलब से भरी बात ऊपर लिखी गई खड़े है।

अगर दिन का समय होता या चांदनी रात ही होती तो हम बत

सकते थे कि इन दोनो आदमियो का नखसिख कैसा है या किस तरह की पौशाक से दोनों ने अपने को ढाका हुआ है परन्तु इस समय इतना घोर अंधकार है कि हाथ को हाथ दिखाई नही देता। दोनो आदमियो के वारे मे ज्यादा से ज्यादा जो कुछ जाना जा सकता है वह उनकी आवाज से। पहिली वात कहने वाले की वोली वता रही थी कि वह कोई अधेड उम्र का आदमी है, और दूसरे आदमी की आवाज उसके नौजवान होने का परिचय दे रही थी, वस इससे ज्यादा इनके विषय मे और कुछ भी कहने की इजाजत अंधकार हमें नही देता।

अधेड के हाथ की काली चीज के माथे से लगते ही नौजवान ने जान लिया कि यह पिस्तौल है। यह समझते ही उसका हाथ भी कपडों के अन्दर गया मगर तुरत ही अधेड ने कडक कर कहा, "वस खवरदार ! जरा सा भी जुम्विश खाई तो भेजे के टुकडे टुकड उड़ जाएंगे ! चुपचाप खडा रह और वता कि तू कौन है और यहा क्यो आया है ?"

नौजवान काठ के पुतले की तरह खड़ा हो गया। थोडी देर तक सन्नाटा रहा इसके वाद फिर अधेड ने डपट कर पूछा, "चुप क्यो है ? वोलता क्यो नही !!"

नौजवान फिर भी चुप रहा। अधेड एक सायत तक उसके वोलने की राह देखने वाद वोला, "अगर अव भी नहीं वोलता है तो मै लिव-लिवी दवाता हूं !!"

नौजवान ने अव धीरे से कहा, "मैं क्या वताऊ ! मै जो कुछ कहूंगा क्या उस पर आपको विश्वास होगा ?"

इस वार वोलने वाले की आवाज कुछ कापती हुई सी और वहुत ही धीमी थी। मालूम पडता था कि वह या तो वहुत ही डर गया है और या फिर अपनी आवाज को जान वूझ कर विगाड के वोल रहा है। अधेड ने उसकी वात सुन कर कहा, "खैर तू कुछ भी वता तो सही कि कौन है और किस लिए यहा आया है ?"

नौजवान कुछ रुक कर बोला, "मै सत्रहवी पलटन का सिपाही हूँ। इधर किसी काम से आया था।"

अधेड़०। इस आधी रात के वक्त तुझे यहा कौन काम था ?

नौजवान०। क्या सच्ची बात कह देने से आप मुझे वापस लौट जाने या आगे ही बढ़ जाने देंगे ?

अधेड़०। अगर मेरे सवालो का संतोषप्रद उत्तर मिला तो मैं तुझे पीछे लौट जाने दूंगा।

नौजवान०। अच्छा पूछिये।

अधेड़०। जब तुम हमारी ही पलटन के एक सिपाही हो तो तुम्हें आज का इशारा क्यो नही मालूम है ! मेरे पूछने पर तुम उसे क्यो नही बता सके ?

नौजवान०। मैं छुट्टी पर था, थोडी ही देर हुई लौटा हूं इसी से जान न सका।

अधेड़०। किसी से पूछ लेते !

नौजवान चुप रहा। अधेड ने फिर पूछा, "तुम जब हमारे ही सिपाही हो तो जरूर यह भी जानते होगे कि आज कल इस किले में कितना कड़ा हुक्म है कि जो अजनबी रात आठ बजे के बाद दिखाई पड़े वह फौरन गिरफ्तार कर लिया जाय और अगर भागने का इरादा करे तो उसे तुरत गोली मार दी जाय। क्या तुम इस बात को नही जानते थे ?"

नौजवान०। जी हा जानता था।

अधेड़०। तब तुमने बिना इशारा जाने इस आधी रात को इधर आने की हिम्मत क्यो की ?

नौजवान०। अब में आप से साफ ही साफ कह दूं ! मैं इतनी दफे इस रास्ते से इस किले के अन्दर बिना रोक टोक के आ चुका हू कि इस बार भी मैंने सोचा कि कुछ न होगा।

अधेड़० । (ताज्जुब से) क्या तुम कई दफे इसी राह से और इसी तरह छिप के यहां आ चुके हो ?

नौजवान० । जी हा ।

अधेड़० । क्यो, किस काम के लिये ?

नौजवान० । (कुछ हिचकिचाता हुआ) मुझे बताते शर्म मालूम होती है ।

अधेड० । अगर अपनी जान बचाना चाहते हो तो साफ साफ कह दो।

नौजवान० । किलेदार की लड़की से मुलाकात करने के लिए ?

अधेड के मुंह से ताज्जुब भरा एक "है !" निकल गया और कुछ क्षण के लिये वह आत्म-विस्मृत सा हो गया । नौजवान को मौका मिल गया । झटके से उसने एक मजबूत हाथ उस पिस्तौल पर मारा जो मौत की तरह उसके माथे से सटी हुई थी। पिस्तौल छटक के दूर जा गिरी और दूसरे ही क्षण नौजवान की पिस्तौल उस अधेड के माथे से सट गई। नौजवान ने डपट कर कहा, "बस अब खबरदार जो जरा भी हाथ पैर हिलाया है !"

सफलता के जोश मे इस बार नौजवान की आवाज मामूली से कुछ ज्यादे जोर की और स्वाभाविक हो गई थी। मगर उसका यह नया स्वर कान मे जाते ही अधेड चौक पड़ा और बोला, "हैं ! यह मैं किसकी आवाज सुन रहा हू ! अमरसिह !!"

नौजवान ने दांतो तले जीभ दबा ली। अब तक, इतनी बातें कर जाने पर भी, वह अपनी आवाज को इस तरह दवाए और बदले हुए था कि यह अधेड़ मनुष्य उसे पहिचान न सका था, मगर जरा सी ही चूक ने उसका भेद खोल दिया। वह अपनी गलती पर पछताता हुआ चुप खड़ा रहा। अधेड़ ने फिर पूछा, "अमर, तुम यहा कैसे ?"

नौजवान फिर भी चुप रहा। अधेड़ ने बेचैनी से उसका हाथ पकड़ कर कहा, "अमर, तुम चुप क्यो हो ? कुछ बोलते क्यो नही ? क्या तुम

समझते हो कि मेरे कलेजे के टुकडे की आवाज मेरे कानों मे जायगी और मैं उसको पहिचान न सकूंगा !!"

अवकी नौजवान को लाचार होकर अपना मुंह खोलना पड़ा उसने दवती ज़ुवान से कहा, "जी हां पिताजी, मैं ही हू !"

[२]

वाप ने बेटे को पहिचाना, मगर कैसे मौके पर ? जव कि एक जलालावाद के पास की वड़ी अंगरेजी छावनी सुपौल के छोटे किले के ऊंचे अफसरों की ड्यूटी पर था और दूसरा आधी रात को चोरो की तरह उसी किले मे घुस रहा था। फौजी कानून कहता था कि इस चोर का सिर उतार लिया जाय, पितृ-स्नेह कहता था कि यह कलेजे का टुकडा जो वरसों से खोया हुआ था फिर कलेजे से लगा लिया जाय !

कुछ देर तक सन्नाटा रहा। इसके वाद सरदार रघुवीरसिंह ने अपने लड़के से कहा, "अमर, सच सच वताओ तुम इस किले में किस लिए आये हो ?"

अमर ने कुछ रुकते हुए जवाव दिया, "यह पता लगाने कि यहां का गोले वारूद का खजाना कहां है।"

रघुवीर०। यह जान कर तुम क्या करते ?

अमर०। उसमें आग लगा देता।

रघुवीर०। आग लगा देते !! मगर सो क्यों ?

अमर०। अपने देश की रक्षा के लिए।

रघुवीर०। देश की रक्षा के लिये ! मेगजीन मे आग लगा कर एक किला उडा देने और हजारो आदमियो की जान लेने तथा देश की रक्षा करने मे भला क्या निस्वत !!

अमरसिंह चुप रहा। रघुवीरसिंह ने कुछ देर राह देख फिर पूछा, "अमर, मालूम होता है तुम्हारे सिर पर आज भी वही भूत सवार है जो वरसो पहले चढ़ा था।"

अमर अब भी चुप रहा। रघुबीरसिंह ने फिर कहा, "अमर, अमर, बोलते क्यो नही ? क्या तुम्हें अपने बूढे बाप पर कुछ भी दया नही आती? क्या तुम इतने बरस के बाद भी अपने बाप को देख कर उससे दूर रहा चाहते हो ?"

अमरसिंह ने कहा, "पिताजी, मै आप से दूर नही हुआ, आप ही ने मुझे दूर कर दिया। आज इतने दिनो के बाद जो आप इस तरह मुझे देख रहे हैं इसके कारण भी आप ही है। आप ही ने मुझे घर से निकाल दिया था। तब आज फिर उस बात का अफसोस क्यो कर रहे है ?"

रघुबीर०। अमर, अमर ! क्यो पुरानी बातें याद करा कर मुझे चोट पहुचा रहे हो ! मैने तुम्हें निकाला था या तुम खुद ही मुझसे दूर हट गये थे ? तुमने बलवाइयो का साथ दिया और ऐसे कामो को करने का मनसूबा बाधा जो हमारे मुल्क को तहस नहस कर देते और जिनके बदले मे तुम्हे मौत की सजा मिलती, मगर मैने तुम्हें बचाया। सिर्फ तुम्हारे लिये मैने अपनी नौकरी छोड दी और अलग हो गया कि शायद इससे तुम्हें संतोष हो मगर फिर भी वह खफ्त तुम्हारे सिर पर से नही उतरा। तुमने एक ऐसा काम किया कि सरकार को तुम्हें जिन्दा या मुर्दा पकड लाने वाले को एक लाख रुपया इनाम देने का इश्तिहार करना पडा, अर्थात् तुमने बडे लाट पर बम फेंका। मैने तुम्हारी हिफाजत की और इस कसूर को भी माफ कर तुम्हें मुल्क के बाहर भाग जाने की सलाह दी मगर तुम न माने और मुझसे अलग हो न जाने कहा चले गये। तुम्हारे गम मे बेचारी तुम्हारी मा घुलक घुलक कर मर गई। मालूम नही तुम्हे इस बात की खबर लगी या नही पर मैने उम्मीद की थी कि इतने पर तो तुम अपने बेचारे बूढे बाप पर तरस खाकर उसके पास लौट आओगे, परन्तु तुमने वह भी न किया। कितने ही बरस बीत गये और मुझे मजबूर हो फिर सरकार की नौकरी करनी पडी। इतने दिनों के बाद आज मै तुम्हें देख रहा हू मगर किस तरह पर—तुम सरकार के इस किले

मे चोरो की तरह घुसते हुए पकडे गये हो जिसका मै ही इस समय सब से वड़ा अफसर हूं और आज भी तुम उसी मर्ज के मरीज बने हुए हो ! क्या तुम जानते हो कि इस समय तुम्हारे साथ क्या होना चाहिये ?

अमर० । जानता हूँ, मुझे सुवह होते ही गोली मार दी जानी चाहिए ।

रघुवीर० । ठीक है, ओर क्या तुम इसके लिये तैयार हो ?

अमर० । (कलेजे पर हाथ रख कर) पूरी तरह से, खुशी से, भला वह दिन भी तो आवे कि मै जननी-जन्मभूमि के लिये अपनी जान दे सकूं !

रघुवीर० । तुम्हें अपनी जान देने का कुछ भी अफसोस न होगा ?

अमर० । सिर्फ इतना ही कि अव दूसरा जन्म लेने तक मुझे उसकी सेवा से विरत रहना पडेगा !

रघुबीर० । पागल, पागल लड़के ! क्या तुझे अपने बूढे वाप पर कुछ भी तरस नही आता ।

अमर० । मैने अपनी जन्म-भूमि को अपनी माता और 'रक्त-मंडल' को अपना पिता वना लिया । अव सांसारिक माता पिता भाई वहनों से मेरा कोई भी रिश्ता नही ।

रघुवीर० । (गुस्से से) ऐसा ! अच्छा तो फिर मेरा भी अव तुझसे कोई रिश्ता नही । मै अपने हाथ से तुझे गोली मारूंगा ? दुश्मन के जासूस, मरने के लिए तैयार हो जा !!

रघुवीरसिंह ने अपनी पिस्तौल जो जमीन पर गिर पडी थी उठाने के लिए झुकना चाहा मगर अमरसिंह ने कड़क कर कहा, "खबरदार दुश्मन के सिपहसालार, अपनी जगह से जरा भी हिले तो भेजा टुकड़े टुकड कर दूंगा !" रघुवीरसिंह चुपचाप खडे हो गये मगर ताज्जुव से वोले, 'अमर, तुम अपने वाप पर गोली चलाओगे ! क्या तुम्हारा कलेजा इतना कड़ा हो सकेगा !!"

अमर० । वेशक ।

रघुवीर० । क्या इसलिए कि वह वाप तुम पर गोली चलाने वाला था !

अमर० । नही, वल्कि इसलिए कि मातृ-भूमि का कल्याण इस समय इसी में है। मेरे मंडल का हुक्म है कि इस देश मे जितनी भी फौजी छावनिया है सव उडा दी जाय। मै उसी काम के लिये आया हूं। मेरा पिता मेरे काम मे वाधा देता है, मै उसे अपने रास्ते से हटा कर अपना काम करूंगा।

रघुवीर० । चाहे इसके लिये तुम्हें अपने वाप को मारना ही पडे!

अमर० । भले ही।

रघुवीर० । और अगर मै इस समय तुम्हें छोड दूं तो तुम क्या करोगे।

अमर० । इस समय आपके हाथ मे मेरा छोडना न छोडना नही है वल्कि मेरे हाथ मे आपका छोडना न छोडना है क्योकि इस समय मेरी पिस्तौल आपको अपना निशाना वनाये हुई है।

रघुवीर० । तो तुम अव मेरा क्या करोगे?

अमर० । अगर आप मेरे कहने से मान जायंगे तो आपका हाथ पैर वाध कर रख दूंगा और आगे वढ कर वह काम करूंगा जिसके लिये आया हूँ।

रघुवीर० । अर्थात् इस किले की मेगजीन में आग लगा कर इसे उड़ा दोगे?

अमर० । हां।

[३]

रघुवीरसिह के दिमाग मे तेजी के साथ वहुत सी वातें दौड गई। यह सच था कि आज कितने ही वरसों के वाद अपने इकलौते वेटे को सामने पा उनका पितृ-स्नेह उमड आया था और वह पुनः उसे अपने कलेजे के साथ लगा लेने के लिए उतने ही उत्सुक हो उठे थे जितना इस वात के कि उनके जरिये उनके लडके का कोई अनिष्ट न होने पावे, परन्तु साथ ही वे एक फौजी अफसर भी थे और उनका कर्तव्य उन्हें वता रहा था कि उनके किले में दुश्मन का जो भेदिया घुस आया है उसे वापस न जाना

चाहिये, मगर इसके साथ ही साथ अपनी बेबसी—दोनों तरह की बेबसी—को भी वे अच्छी तरह समझ रहे थे। अगर वे अमर के रास्ते को रोकते थे तो उसकी पिस्तौल उन्हें रास्ते से हटाने को तैयार थी, और अगर वे खुद अमर के रास्ते से हट जाते थे तो अमरसिंह उन्हें, अपने को, और साथ ही इस समूचे किले को, उडा देने पर तुला हुआ था। दोनों तरह से दोनो की मौत थी। उनकी गति साप और छछुन्दर की सी हो रही थी।

उधर अमर भी कुछ कम चिन्ता में न था। अगर वह जानता कि इस किले मे आने पर उसके वाप से उसकी भेंट हो जायगी तो कदाचित् वह यहां आता ही नही। अव यहां आ जाने और उनसे सामना हो जाने पर उसकी समझ में नही आता था कि किस तरह अपने को उस जंजाल से छुड़ावे जिसमें वह आ फंसा है। अगर वह आज विना कुछ काम किये यहां से लौट जाता है तो ताज्जुव नहीं कि फिर उसे कभी यहां घुसने का मौका ही न मिले और वह काम जिसके करने के लिए 'रक्त-मंडल' की आज्ञानुसार वह अपनी जान पर खेल कर यहां तक आया था अधूरा ही रह जाय, और अगर वह इस काम को करने ही का निश्चय करता है तो इसके लिये उसे अपने वाप का खून करना पड़ता है जिसके माथे से उसकी पिस्तौल इस समय भी सटी हुई है।

कुछ देर तक दोनों आदमी चुपचाप रहे। आखिर वहुत कुछ सोच विचार कर रघुवीरसिंह ने कहा, "अमर, मेरा कर्तव्य तो यह कहता है कि चाहे तुम मुझे मार ही डालो मगर मैं इसी समय सीटी वजा कर पहरेदारों को होशियार कर दूं और तुम्हें गिरफ्तार करा दूं, मगर वैसा होने से कल ही तुम्हें इस दुनिया को छोड़ देना पडेगा जो मेरा दिल किसी तरह कुवूल कर नही सकता। इसके सिवाय तुम्हारा एक वहुत वडा अहसान भी मेरी गरदन पर है। तुमने एक दिन दलवाइयों के हाथ से मेरी जान वचाई थी, उस समय मैंने वादा किया था कि इसके वदले

* श्री दुर्गाप्रसाद खत्री रचित 'प्रतिशोध' नामक उपन्यास देखिये।

एक दफे तुम्हारी जान भी बचा दूंगा। आज मैं अपना वह वादा पूरा करता हूँ और तुम्हे सरकार के पंजे से निकल जाने देता हूं। तुम्हें पन्द्रह मिनट का समय दिया जाता है, इसके बीच मे तुम इस किले के बाहर हो जाओ। तुम यह न समझो कि मैं तुम्हारी पिस्तौल से डर कर तुम्हें जाने दे रहा हूं। नही, मैं बखूबी जानता हूँ, और शायद तुम भी समझते होगे, कि मेरी जान लेकर न तो तुम इस किले से जिन्दा ही निकल सकते हो और न आगे कुछ कर ही सकते हो। तम्हारी पिस्तौल की आवाज सुनते ही तुरत पचासों सिपाही यहा इकट्ठे हो जायंगे और तुम्हें अपनी गोली का निशाना बनावेंगे। अस्तु इस समय तुम चुपचाप यहा से निकल जाओ, मैंने तुम्हें पन्द्रह मिनट का अवसर दिया।"

इतना कहते ही रघुवीरसिंह घूम गये और दूसरी तरफ चलते हुए शीघ्र ही पेडों की आड़ मे हो गये। अमरसिंह ने भी बहुत कुछ सोच विचार कर हाथ की पिस्तौल जेब मे डाल ली और पेडो की आड मे अपने को छिपाता हुआ किले के बाहर की तरफ चल पडा।

धीरे धीरे चलता हुआ जब अमरसिंह अंधेरे मे मिल गया और उसकी आहट आनी भी बन्द हो गई तो सरदार रघुवीरसिंह भी जहां थे वही खडे हो गये। उनके मुंह से एक लम्बी सास निकली जो उनके दिल की आग को सुलगाती हुई बाहर आयी थी। कुछ देर तक तो वे उसी तरफ देखते रहे जिधर अमर गया था और तब पूरब तरफ जाने के लिये घूमे, मगर उसी समय पीछे से कई मजबूत हाथो ने उन्हें कस कर पकड लिया। इसके पहिले कि ताज्जुब भरी कोई चीख उनके गले से निकले एक कपड़ा उनके मुंह मे ठूंस दिया गया और कई आदमियो ने उन्हे हाथो हाथ जमीन से ऊपर उठा लिया।

यह सब काम कुछ ऐसी सफाई और आहिस्तगी के साथ हो गया कि उस सन्तरी को इसकी कुछ भी आहट न लगी जो वहा से पचास कदम से भी कम के फासले पर एक पेड़ के तने से लग कर खड़ा ऊंघ रहा था।

[४]

अमरसिंह करीव करीव किले के वाहर पहुच चुका था जब उसके कान मे कुछ आहट पहुची। उसका हाथ चट अपनी पिस्तौल पर गया और साथ ही उसने घूम कर देखा तो एक काली शकल को अपने पीछे खडा पाया। वह पिस्तौल निकाल कर उसे अपना निशाना वनाया ही चाहता था कि उस शक्ल ने कहा, "सत्तावन !" अमरसिंह की पिस्तौल चट नीची हो गई और उसके मुंह से निकला, "अट्ठासी।"

काली शक्ल ने अमरसिंह को अपने पीछे पीछे आने का इशारा किया और दोनो आदमी एक घनी झाड़ी की आड में हो गए जहा दोनो मे इस तरह वातचीत होने लगी :—

काली श०। लौटे क्यो जा रहे हो ?

अमर०। एक आदमी ने मुझे देख लिया इसी से लौटना पड़ा।

काली श०। मगर देख लेने पर भी तुम्हे गिरफ्तार क्यो नही किया ?

अमर०। (कुछ रुकता हुआ) वे मेरे पिता सरदार रघुवीरसिंह थे !

काली श०। (चौंक कर) क्या सरदार रघुवीरसिंह यहा है !

अमर०। जी हा, इस समय वे ही इस किले के सवसे वडे अधिकारी है।

काली श०। और वे तुम्हारे पिता है ?

अमर०। जी हा।

काली शक्ल कुछ देर के लिए चुप हो गई, इसके वाद उसने कहा, "तुम्हारे पास 'वम' है ?"

अमर०। जी हा।

काली श०। तुम्हे पता है कि यहा मेगजीन किस जगह है ?

अमर०। जी नही।

काली श०। अगर मै उसका ठिकाना तुम्हे वता दूं तो क्या अव भी उसे उड़ा देने के लिए तैयार हो ?

अमर०। हा हा, वेशक ! क्यो नही !

कालो० । मगर उसमे तुम्हारी जान भी जायगी ।

अमर० । सो मुझे मालूम है ।

काली० । और शायद तुम्हारे पिता की भी चली जाय ?

अमर० । सो भी समझता हूं, पर खैर यह उनकी किस्मत !

काली० । तुम्हें इन बातो की कोई परवाह नही है ?

अमर० । अपनी जन्मभूमि पर मै अपने को और पिता माता भाई बहिन सब को न्योछावर करके बैठा हूं ।

काली० । शाबाश ! अच्छा मै तुम्हें मेगजीन का ठिकाना बताता हू । तुम्हें अपने पिता के बारे में भय करने की कोई जरूरत नही, वे हम लोगो की कैद में आ गए है और हमारे आदमी उन्हे लेकर किले के बाहर जा रहे है। (सामने उंगली उठा कर) वह देखो जो लाल तारा वह आसमान में चमक रहा है उसके ठीक नीचे एक ऊंचे बुर्ज की कालिमा दिखाई पडती है तुम्हें ?

अमर० । जी हा ।

काली० । बस वही मेगजीन है, वहा जाओ और काम फतह करो ।

अमरसिंह ने झुक कर काली शक्ल के पैर छूए और उसने प्रेम से अमर की पीठ पर हाथ फेर कर कहा, "मा जन्मभूमि तुम्हारी सेवा स्वीकार करे !" अमर उस बुर्ज की ओर चला, काली शक्ल दूसरी ओर को घूम गई ।

अमरसिंह उस ऊंचे बुर्ज को लक्ष्य करता हुआ आगे की तरफ बढने लगा । कुछ देर तक तो उसे सन्नाटा मिलता रहा मगर इसके बाद संतरियों और पहरेदारों की आहट मिलने लगी और उसे बहुत सावधान होकर जाना पडा । लेकिन अमर अपने काम में बहुत होशियार था। पहरेदारो और सनरियो की आख बचा कर इस तरह निकल जाता था कि उन्हें कुछ गुमान भी नही होने पाता था ।

मगर इसी समय यकायक अमर के कानो में तेज सीटी की आवाज पडी । वह चौका और एक पेड की आड मे छिप गया । उसे संदेह हुआ कि शायद किसी ने उसे देख लिया मगर इसके बाद तुरत ही पुन: सन्नाटा हो गया जिससे

उसे धैर्य हुआ और थोड़ी देर बाद उसने फिर आगे बढ़ना शुरू किया ।

रुकता रुकाता थमता ठमकता और छिपता हुआ अमर उस बुर्ज के बहुत पास पहुंच गया यहां तक कि वह बुर्ज उससे कोई दो डेढ़ सौ कदम के फासले पर रह गया । मगर अब और आगे बढ़ना उसके लिये असम्भव था क्योंकि बुर्ज के चारो तरफ बिजली की तेज रोशनी हो रही थी जिससे वहां की एक एक चप्पा जमीन दिखाई पड़ रही थी । पहरे वाले भी यहां बहुत ज्यादा थे जो चारो तरफ घूम घूम कर पहरा दे रहे थे । उनकी आंख बचा कर आगे बढ़ना और मेगजीन में आग लगाना असम्भव था । एक मोटे पेड़ की आड़ मे खड़ा होकर अमर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये ।

आखिर इधर उधर देखते हुए अमर की निगाह एक कूएं पर पड़ी जिसकी ऊंची जगत जहां वह खड़ा था उस जगह से बाईं तरफ कुछ आगे को बढ़ कर बनी हुई थी । यद्यपि बिजली की तेज रोशनी इस कूएं पर भी पड़ रही थी मगर उसकी जगत के बगल में घनी छाया थी और उस जगह छिप कर खड़े होने का मौका भी था । जहां पर अमर था वहां से मेगजीन का जितना फासला था उससे कम फासला इस कूएं और मेगजीन मे पड़ता था । अमर ने अपने स्कूल के दिनों को याद किया जब वह बडी आसानी से क्रिकेट के लाल गेंद को फील्ड के एक कोने से दूसरे कोने पर फेंक दिया करता था । उसने कूएं और मेगजीन के बीच के फासले को मन मे तौला और निश्चय किया कि उसकी ऊंची जगत पर से फेंका हुआ 'मृत्यु-किरण' का बम मेगजीन पर जा के गिर सकता है । यह निश्चय करते ही उसने धीरे धीरे कूएं की तरफ घसकना शुरू किया, साथ ही अपने कपड़ों के अन्दर से बड़ी होशियारी और मुलायमियत से उसने कोई चीज भी निकाल ली जो एक छोटे गेंद के बराबर थी और रूई की तहों मे लपेटी हुई थी ।

उस कूएं से निकल कर आबपाशी की कई नालियां कई तरफ को

फैली हुई थी जिनमे से एक उस जगह के पास ही से गुजरी थो जहा अमर खडा था और लगभग दो हाथ की ऊंचाई से धीरे धीरे नीची होती हुई दूर तक निकल गई थी। पेड की आड़ से निकल धीरे धीरे घसकता हुआ अमर इस नाली की आड़ मे हो गया और वहा से जमीन पर रेंगता हुआ कूएं की तरफ वढा। यद्यपि वह वड़ा ही हिम्मतवर जवान था मगर इस समय उसका कलेजा धक धक कर रहा था। पकडे जाने पर मारा जायगा इस डर से नही, वल्कि इस आशंका से कि अगर पहरेदारो ने देख लिया तो उसे गोली मार देंगे और तव वह काम अधूरा रह जायगा जिसके लिए 'रक्त मडल' ने उसे यहा भेजा है।

[५]

कई मजवूत हाथो ने सरदार रघुवीरसिंह को उठा लिया और किले के वाहर की तरफ ले चले।

दस ही वीस कदम ये लोग आगे वढे होंगे कि एक काली शक्ल ने पेड़ की आड से निकल कर इनका रास्ता रोका और धीमी मगर हुकूमत भरी आवाज मे पूछा, "काम हो गया?" जवाव मे इन लोगो ने धीरे से कहा, "जी हा।' जिस पर वह वोला, "शावाश, अच्छा खूव होशियारी से इसे ले जाओ। वावली वाले रास्ते से निकाल ले जाना। मगर होशियार रहना क्योकि पहरा वदलने का वक्त हो रहा है। अगर तुम लोगो पर किसी की निगाह पड़ जाय तो इसे ले जाने की फिक्र छोड़ अपने को वचाना, वस अव मैं जाता हू?"

वह काली शकल पेड की आड़ मे होकर आखो की ओट हो गई और ये लोग घवड़ाते और हाथ पाव फटकार कर उनके चगुल से छूटने की व्यर्थ चेष्टा करते हुए रघुवीरसिंह को मजवूत पकडे हुए पश्चिम तरफ को रवाना हुए।

मगर अफसोस, इनके मन वाली पूरी न हुई। जैसा कि इस काली शक्ल ने कहा था, पहरा वदलने का वक्त आ पहुचा था और चारो तरफ

चैतन्यता का साम्राज्य हो गया था जिसका नतीजा यह निकला कि अभी इन लोगों ने आधे से ज्यादा रास्ता तय न किया होगा कि किले के चारो तरफ की कई वुर्जियो पर लगी सर्च-लाइटों मे से एक, जिसने चारो तरफ घूमते फिरते किले के इस अंधेरे उजाड़ और वीरान हिस्से को भी एक पल के लिए रौशन कर दिया था, इस छोटी मंडली पर पडी और उसकी तेज रोशनी ने क्षण भर के लिए इन लोगो को अपना निशाना वनाया। उस तेज चमक के अपने ऊपर पड़ते ही इस मंडली के आदमी मुर्दों की तरह जमीन से चिपक कर लेट गए। बहुत संभव था कि सर्च-लाइट वालों की निगाह इन पर न पड़ती या पड़ती भी तो वे इस तरफ कुछ अधिक ध्यान न देते मगर उसी समय रघुवीरसिंह को मौका मिला और उन्होने वहुत जोर जोर से अपने पांव फटकारना और उनसे जमीन पीटना शुरू किया। अगर दो आदमी उनके दोनो हाथ मजवूती से पकडे हुए न होते तो सम्भव था कि वे अपने मुंह का कपड़ा निकाल कर चिल्ला भी पडते। मगर उनके पाव चलाने ने भी काम कर दिया। सर्च-लाइट जो एक क्षण के लिए वहां रुक कर फिर आगे को वढ़ चली थी पुनः वहां लौट आई और वह जगह रोशनी से भर गई।

इन आदमियों ने समझ लिया कि अव भण्डा फूट गया। सभी ने रघुवीरसिंह का ख्याल छोड़ दिया और सव के सव अलग अलग होकर इधर उधर फैल गये। इसके साथ ही रघुवीरसिंह ने भी अपने मुंह का कपड़ा निकाल कर फेंक दिया और एक वार वहुत जोर से चिल्लाने के वाद उठ खडे हुए। इनके उठने के साथ साथ पचीस जवानो के सिर पर एक हवलदार वहां आ पहुचा।

अपने अफसर को सामने देख सव सिपाहियो के साथ साथ वह हवलदार भी ताज्जुव करने लगा और कोई दुर्घटना होने का ख्याल कर उसने पुन. सीटी ओठो से लगाई मगर साथ ही रघुवीरसिंह ने हुकूमत के साथ कहा, "नही, इसकी जरूरत नही। फौरन अलग अलग हो जाओ और

विना शोरगुल मचाये चारो तरफ फैल कर उन लोगों को गिरफ्तार करो जो मुझे पकड़े लिए जा रहे थे और अभी छोड कर भागे है। देखो एक दम सन्नाटा रहना चाहिये।"

अफसर का हुक्म सुनते ही वह छोटी टुकडी उसके मुताविक काम करने लगी ओर फौजा सलाम कर वह हवलदार भी रघवीरसिंह के सामने से चला गया। रघुबीरसिंह अपनो जगह से हटे और धीरे धीरे किले के बीच की तरफ वढे ।

क्या पाठक समझे कि रघुबीरसिंह ने इस हवलदार को सीटी वजाने से क्यो रोक दिया ? उन्हें शक हुआ कि अगर इसने बाकी के लोगो को होशियार कर दिया तो तुरत किले भर म जाग हो जायगी। उस हालत मे सम्भव था कि वे आदमी पकडे जाते मगर उनके साथ साथ जरूर अमर भो पकडा जाता। अगर ऐसा हुआ तो उन सभो के साथ अमर को भी गोली मार दी जायेगी और उनके वंश का यह टिमटिमाता हुआ चिराग भी वुझ जायगा। अच्छा है कि वे दुष्ट जिन्होने उन्हें गिरफ्तार किया था निकल जायं मगर अमर का यहां पकड़ लिया जाना अच्छा नही। यही सोच कर रघुबीरसिंह ने हवलदार को दुवारा सीटी वजाने से रोक दिया था। ओफ, ममता कर्त्तव्य पर किस प्रकार विजय प्राप्त कर लेती है।

धीरे धीरे रघुबीरसिंह आगे वढते जा रहे थे। क्षण क्षण मे, जरा जरा सी आहट पर, उनका दिल धडक जाता था कि शायद अब अमर पकडा गया। मगर आह, वे नही जानते थे कि अमर के ऊपर यह रियायत करके वे अपनी सरकार के साथ कैसा अत्याचार कर रहे थे। उनका अमर इस समय उनके आगे आगे जाता हुआ उस समूचे किले का ही उडा देने की फिक्र कर रहा था। अनजानते मे ही रघुबीरसिंह भी इस समय ठीक उसी ओर को वढ रहे थे जिधर उनकी इस विचलता और सब चिन्ताओ का मूल कारण (अमर) जा रहा था। सरदार रघुबीरसिंह का सिर जमीन की तरफ झुका हुआ था और वे मन ही मन सोच

रहे थे, "ओफ, अमर कैसे बुरे रास्ते पर जा रहा है! उसकी जिन्दगी कितने दिनों की है! अपने भयानक दुष्कृत्यो के कारण एक न एक दिन वह जरूर पकड़ा जायगा। तब अवश्य उसे फांसी होगी और तब अपने साथ ही साथ वह मेरे इस पुराने और नामी खानदान को भी ले मरेगा!!"

यकायक कोई आहट पा उन्होंने सिर उठाया। अपने सामने की नाली की आड़ से निकल बिजली की सी तेजी के साथ आगे झपट कर कूएं के जगत की आड़में छिपते हुए किसी को उनकी तेज निगाहों ने देखा। वे चौक पड़े और साथ ही यह ख्याल भी उनके मन में दौड़ गया, "क्या यह भी कोई बलवाई ही तो नही, कहीं अमर ही तो नहीं है!"

उनके मन ने सोचा और साथ ही आंखो ने प्रगट भी कर दिया कि उनका सोचना सही है और वास्तव में वह आदमी अमर ही है जो अब कूएं के जगत की आड़ से निकल सीढ़ियां चढ़ता हुआ कूएं के ऊपर चढ़ रहा था। उन्होंने यह भी देख लिया कि उसके हाथ में कोई गोल चीज है।

उनका खोया हुआ कर्तव्य-ज्ञान एक झटके के साथ लौट आया। जिस अमर को घड़ी भर पहिले वह भागने का दूसरा मौका देते हुए चले आ रहे थे उसी को पकड़ लेना अब वे जरूरी समझने लगे क्योंकि उन्होंने समझ लिया कि अमर के हाथ की चीज और कुछ नही बम का गोला है जो अगर मेगजीन पर जाकर गिरा तो केवल मेगजीन ही को नहीं बल्कि अमर को, उनको, इस किले को, और साथ ही उन हजारों आदमियों को भी उड़ा देगा जो इस किले में चारों तरफ पड़े हुए है। उन्होंने अपनी पिस्तौल निकाल ली और उसका घोड़ा चढ़ाते हुए ललकार कर कहा, "खबरदार अमर, जरा भी जुम्बिश खाई तो जान से हाथ धो बैठोगे!"

अमर ने जो अब तक कूएं की जगत पर चढ़ चुका था चौक कर पीछे देखा और साथ ही अपने बाप को पिस्तौल सीधी किए खड़े देख कर

चमक पड़ा। एक सायत के लिए वह रुका मगर त्यों ही उसे ख्याल हुआ कि इस समय अगर वह रुका तो उसका सोचा विचारा सब रह जायगा और जिस काम के लिए अपनी जान पर खेल वह यहा तक पहुंचा है वह अधूरा ही रह जायगा। "अब पीछे हटने का मौका नहीं है !!" सोचता हुआ रघुवीरसिंह की चेतावनी को अग्राह्य कर वह आगे को लपका और साथ ही बम वाला हाथ उसने ऊंचा किया।

रघुवीरसिंह का हाथ एक क्षण के लिये कापा। वे अपने हाथो अपने ही पुत्र पर गोली चलाने जा रहे थे। अपने वंश का चिराग आप ही बुझाने जा रहे थे। मगर नहीं, उनका ज्ञान, उनका कर्त्तव्य, जिनके नौकर थे उनके नमक का फर्ज, उनके विचारों की मजबूती, उन्हें आज्ञा दे रही थी कि घोड़ा दबाओ और अपने लड़के को गोली मार दो। उन्होंने एक सायत का भी विलंब न किया, सच्चा निशाना साधा और घोड़ा दबा दिया। रात के उस सन्नाटे मे पिस्तौल की आवाज भयानक रूप से गूंज उठी।

गोली पहुँची और ठीक निशाने पर पहुंची। तड़प कर अमर पलट पड़ा, साथ ही लड़खड़ाया और दो पाव पीछे को हटा। उसका हाथ उसकी पीठ पर गया, उसके मुंह से निकला, "मा जन्मभूमि, विदा!" त्योरा कर वह कूएं के चारो तरफ लगे पत्थर के खम्भो मे से एक के साथ उठंगा, मगर सम्हल न सका, फिर त्योरी आई, और एक चीख के साथ वह उस कूएं के अन्दर जा गिरा।

मगर उसका प्रयत्न असफल न गया। मातृभूमि के लिए किया गया उसका आत्म-बलिदान व्यर्थ न गया। गोली पहुची तो जरूर और ठीक अपने निशाने पर पहुची, परन्तु एक सायत बाद पहुंची। तब पहुंची जब अमर के हाथो से छूटा हुआ 'मृत्यु-किरण' का बम मेगजीन की तरफ रवाना किया जा चुका था।

रघुवीरसिंह भी इस बात को समझ गये। जिस समय उनके कान अमर के कूएं मे गिरने का धमाका सुन रहे थे उनकी आंखें उस भयानक

बम की उड़ान देख रही थी जिसके ऊपर कहीं से आती हुई सर्च-लाइट की एक किरण ने पड़ कर उसे अचानक चमका दिया था।

× × × ×

तीर की तरह सनसनाता हुआ वह बम मेगजीन की तरफ उडा। बीच का फासला उसने पलक झपकते तय किया और जोर के साथ मेगजीन की दीवार से टकराया। हरे रंग की एक बिजली सी चारो तरफ दौड़ गई, साथ ही एक भीषण चमक दिखाई पड़ी। दूसरे क्षण में ऐसा मालूम हुआ मानों पृथ्वी फट गई है या कोई ज्वालामुखी फूट पड़ा। आग की एक भयानक लपट मेगजीन से ऊपर की तरफ उठी। वह चमक इतनी भयानक थी कि मालूम होता था आकाश को गला देगी। इसके साथ ही एक गड़गडाहट की आवाज आई। जान पडा मानो जमीन का कलेजा फट गया है। सुनने वालों के कानों के पर्दे फट गये। मेगजीन के आस पास रहने वाले सैकड़ों ही आदमियों का तो नाम निशान तक मिट गया। मेगजीन के साथ साथ वह समूचा किला ही नही बल्कि उसको आसपास से घेरे हुई कितनी ही छावनियां भी उड़ गई।

रक्त-मंडल के एक छोटे से जासूस ने मजबूत अंगरेजी सरकार की बरसो की मेहनत को मिट्टी में मिला दिया। एक छोटे से बम ने एक किला, नही नही, एक शहर उड़ा दिया।

यमराज का पेशखेमा गड गया। मृत्यु का प्रलयंकारी रण-ताण्डव होने लगा। एक सायत पहिले जहा मजबूत किला, सुन्दर शहर, और दूर दूर तक फैली छावनियां थी वहां मिट्टी पत्यरो के ढेर, अनार की तरह छूटते हुए आग के फौव्वारे, मेगज़ीन में रक्खे हजारों बमो के फटने के कारण टूट कर उड़ने और अब आसमान से नीचे को लौटने वाले पत्थर के ढोंके, तथा दिग्दिगान्तर को दहला देने वाली आवाजें गूंज रही थी, जिनके साथ जख्मियो और मरते हुओं की मौत की चिल्लाहट मिली हुई थी।

शेर की मांद

[१]

काशी पुरी के झंडे की तरह ऊपर उठे हुए और कोसों दूर से दिखाई देने वाले माधोराव के धरहरो पर जो एक बार चढ चुके है वे अच्छी तरह जानते हैं कि यहां से बीसों कोस दूर तक का मैदान दिखाई पड़ता है। केवल सांप की तरह बल खाने वाली गंगा ही नही वल्कि आस पास के पचासो गांव भी उस पर से इस तरह दिखाई पडते है मानो थोड़ी ही दूर पर हो। यहा से रामनगर का किला बहुत साफ दिखाई देता है और दक्षिण की ओर देखने से विन्ध्य की पहाड़िया भी आंखो से टकराती है।

इस समय इसके दो मे से एक बुर्ज पर हम तीन चार आदमियों की एक छोटी मंडली को चढा हुआ देखते हैं। यों तो दिन भर ही लोग इन धरहरों पर खड़े दिखाई दिया करते है पर इस समय जो लोग इस पर मौजूद है वे कोई मामूली आदमी या मुसाफिर नही है और न उनका इस समय यहां होना ही शुद्ध कौतूहलवश है, बल्कि एक भारी काम के लिए ये लोग यहां आये हैं।

पाठक इनमे स कई को पहिचानते हैं। इनमें दाहिनी तरफ अंगरेजी पौशाक में जो लम्बा नौजवान खड़ा हाथ के इशारे से कुछ वता रहा है वह मशहूर जासूस और वैज्ञानिक पंडित गोपालशंकर है, उनके वाईं तरफ खड़े दूरवीन आखों से लगाये गौर से कुछ देखने वाले वनारस के वर्तमान पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल है, दाहिनी तरफ खड़े हाथ से आंखों पर की धूप वचाते हुए यहां के मजिस्ट्रेट मिस्टर शर्मा हैं, और पीछे की तरफ जो नौजवान अंगरेज खड़ा गौर से गोपालशंकर के हाथ की सीध पर निगाह दौड़ा रहा है वह मिस्टर केमिल का भतीजा एडवर्ड है। सभों के पीछे फौजी पोशाक में कुछ अदव के साथ खड़ा शख्स यहां का कोतवाल अमानुल्ला खां है। आगे वढ़ कर गौर से सुनिये तो आपको खुद ही मालूम हो जायगा कि ये इतने आदमी यहां क्यो इकट्ठे हुए है।

गोपालशंकर कह रहे है—"नही उधर नही उधर नही, वहां देखिए जहां वहुत से ताड़ के पेड़ो का एक समूह है, उनके वाईं तरफ उस जगह जहां गंगा मानों एक पहाड़ फोड़ कर निकलती हुई सी दिखाई पड़ रही है वहां एक छोटे मकान की सफेदी नही दिखाई पड़ती?"

केमिल०। (गौर से दूरवीन के जरिये देख कर) हाँ हाँ, अव मैंने देखा, ठीक है, एक टीले पर छोटा सा मकान गंगा से कुछ ही हट कर है।

गोपाल०। वस वस, वही जगह है।

केमिल०। तो क्या आपका कथन है कि मेरी वेटी रोज उसी मकान में वन्द है?

गोपाल०। जी हा।

केमिल०। तो वहां से उसका छुडा लाना तो कुछ भी मुश्किल नहीं होगा। खां साहव (कोतवाल) अगर पचास जवान लेकर चले जांय तो सहज ही मे उस मकान को घेर कर उसमें रहने वालों को गिरफ्तार कर सकते और मेरी लड़की को छुड़ा ला सकते हैं।

गोपाल० । (हंस कर) यदि यह काम इतना सहज होता तो मैं रोज को खुद ही छुड़ा लाया होता और वे तीन दिन जो मैं यहा से गायव रह कर विता चुका हूँ यो व्यर्थ न जाते । आप शायद भूल गये है कि आपकी वेटी को चुराने वाले 'रक्त-मंडल' के खूंखार आदमी है, और उस मकान को भी क्या आप मामूली समझते है ! उसे एक छोटा मोटा किला ही समझिये किला !

केमिल० । क्या वह इतना मजबूत है कि हम लोग सौ दो सौ आदमी ले जाकर भी वहां से रोज को छुड़ा नही ला सकते ?

गोपाल० । वहुत मुश्किल ! गंगाजी में चलने वाली नावो में से सब से तेज जाने वाली मोटरवोट वहा है, शायद हिन्दुस्तान भर की सबसे ताकतवर मोटरकार वहां है, और अगर एशिया भर में सबसे तेज नही तो भी वहुत तेज उड़ने वाला एक हवाई जहाज भी वहा मौजूद है । किसी तरफ से भी हमला हो वहाँ वाले सहज ही में निकल जा सकते हैं ।

केमिल० । (ताज्जुब से) मगर इतनी वड़ी तैयारी उन लोगों ने कर ली और हम लोगों को कुछ पता तक नही लगा !!

गोपाल० । (मुस्करा कर) इसके लिए तो आपको अपने जासूस विभाग को धन्यवाद देना चाहिये !

केमिल० । (अफसोस के साथ) मुझे शर्म के साथ मंजूर करना पड़ता है कि हमारा जासूस विभाग इस संवन्ध में वहुत ही कमजोर है । (कोतवाल की तरफ देख कर) मुझे उम्मीद है खा साहव कि आप इस मामले में मेरी मदद करेंगे और हिला डुला कर इस विभाग को जगावेंगे ।

कोतवाल साहव ने अस्पष्ट स्वर मे कुछ कहा जिस पर केमिल साहव ने कुछ विशेष ध्यान न दिया और गोपालशंकर की तरफ मुखातिव होकर वोले, "अच्छा तो फिर आप ही वताइये कि मुझे अपनी वेटी को छुड़ाने के लिये क्या कार्रवाई करनी चाहिये ? मै समझता हूँ कि हम लोगो को यहां लाने से जरूर आपका कोई खास मतलव है ।"

गोपाल०। वेशक ! मैंने आपकी लड़की को छुड़ाने के लिये एक तर्कीव सोची है जिसकी पेशवंदी किस तरह की जायगी सो ही बताने के लिये इस समय आप लोगों को यहां लाया हू। हमें अपने काम में सफलता पाना है तो पानी हवा और खुश्की तीनो राहों से एक साथ दुश्मन पर हमला करना पड़ेगा। (अपनी लम्वी दूरवीन आंख से लगा कर) देखिये और मेरी वातो को गौर से सुनिये।

गोपालशंकर कुछ कहने लगे जिसे सव आदमी खूब गौर के साथ सुनने लगे।

[२]

जिस समय ये लोग उस मकान से 'रोज' को छुड़ा लाने की तर्कीवें सोच रहे थे ठीक उसी समय इनके लक्ष्य उस मकान में कुछ और ही कार्रवाई हो रही थी।

एक वडे कमरे में जो मकान की ऊपर वाली मंजिल मे वना हुआ था और जहां से चारो तरफ दूर दूर तक का दृश्य दिखाई पड़ रहा था इस समय एक नौजवान जो फौजी पौशक में था कोच के ऊपर अधलेटा सा पड़ा कुछ सोच रहा था। इस नौजवान का परिचय देने की आवश्यकता नही है क्योकि हमारे पाठक इसे वखूवी जानते हैं। यह गोपालशंकर का कट्टर दुश्मन और 'रक्त-मंडल' के कर्ताधर्ता 'भयानक-चार' का मुखिया नगेन्द्रनरसिंह है।

नगेन्द्रनरसिंह इस समय चिन्तित से दिखाई पड़ रहे हैं। यों तो जिसके ऊपर इतने वडे और भयानक काम की जिम्मेदारी हो उसका चिन्ता से खाली होना ही आश्चर्य की वात कही जायगी परन्तु इस समय इनकी चिन्ता 'भयानक चार' या 'रक्त-मंडल' और अंगरेज सरकार के साथ होते हुए उनके युद्ध के कारण नही वल्कि किसी निजी कारण से है और वह कारण एक पत्र है जो अभी उनके पास पहुंचा और अव भी उनके सामने वाले छोटे टेवुल पर पड़ा है।

कुछ देर वाद एक ठंडी सांस लेकर नगेन्द्रनरसिंह ने उस पत्र को फिर उठा लिया और पढने लगे। उसका मजमून यह था :—

"वहुत जल्दी मे यह पत्र तुम्हें लिख रहा हू। नही जानता यह तुम्हारे हाथ तक पहुचेगा भी या नही पर यदि पहुच जाय तो देखते साथ ही मेरे घर आओ। कामिनी की हालत वहुत खराव हैं और वह न जाने क्यों तुमसे मिलने को वहुत व्याकुल हो उठी है। अगर तुम्हें मेरा और मेरी वहिन का कुछ भी ख्याल हो तो पत्र देखते ही चल पडो।

तुम्हारा मित्र—

नरेन्द्र।"

पत्र पढ कर नगेन्द्रनरसिंह ने एक ठंढी सांस खीची और तव आप ही आप बोल उठे, "अफसोस प्यारी कामिनी, तेरी यह दशा! मगर इस समय मै क्या कर सकता हूँ? यहां का काम छोड कर चले जाना असमव है। जिस समय 'रक्त-मंडल' और सरकार मे युद्ध आरंभ हो गया है ऐसे समय मे एक दिन के लिये भी मेरा गैरहाजिर रहना अनर्थ कर देगा। पर तव क्या मैं कामिनी को फिर कभी भी न देख सकूंगा?"

कह कर उन्होने फिर एक लम्बी सांस ली और उस टेवुल पर रक्खी एक घंटी की तरफ हाथ वढाया ही था कि वाहर से चुटकी वजने को आवाज आई। उन्होने कहा—"आओ" जिसके साथ ही एक फौजी सिपाही ने कमरे मे पैर रक्खा। इस सिपाही के हाथ मे एक तार और एक अखवार था जो इसने अदव के साथ आगे वढ़ा दिया और तव उनके सिर हिला कर चले जाने का इशारा करने पर फौजी सलाम कर कमरे के वाहर निकल गया।

नगेन्द्रनरसिंह ने तार खोला। भीतर गुप्त शब्दो का एक मजमून था जिसका आशय अपनी जेव की एक नोट-वुक मे लिखे इशारों की सहायता से नगेन्द्रनरसिंह ने शीघ्र ही निकाल लिया। तार केशवजी का

भेजा हुआ था और उसका मजमून यह था—"सोडावाटर की मशीन ठीक हो गई, यथेष्ट संख्या मे बोतलें दे सकता हूं।"

पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह का चेहरा खिल गया। उन्होने तार को रख दिया और अखबार उठाया। पहली ही खबर जो मोटे मोटे हेडिंग में दिखाई पडी यह थी—

"जलालाबाद का किला उड़ गया !

मेगजीन में भयानक आग लगी !

सैकड़ों आदमियों की मृत्यु,

समूची छावनी नष्ट।

"चौबीस तारीख की रात को अचानक जलालाबाद के किले की मेगजीन में आग लग गई। समूचा किला उड़ गया, साथ ही किले के बाहर की वडी छावनी का भी एक बड़ा अंश नष्ट-भ्रष्ट हो गया। कई सौ सिपाहियो के मरने की आशंका की जाती है। आग किस तरह लगी इसका कुछ पता नही लगता। इतनी बड़ी दुर्घटना भारत के सैनिक इतिहास में आज तक कभी नही हुई। किले की दीवारो के उडे हुए ढोंके दो मील दूर तक गिरे पाये गये है। पूरा विवरण मिल नही रहा है फिर भी खबर है कि लार्ड गोशेन, कमांडर-इन-चीफ, खुद वहाँ जांच करने गये हैं। भारत सरकार के मिलिटरी सेक्रेटरी भी आज वहां पहुंच जायंगे ऐसा सुना जाता है।"

आखिरी बात पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह कुछ सोच मे पड़ गये। उनकी आंखें बन्द हो गईं और माथे पर पडे-हुए कई बल प्रकट करने लगे कि वे किसी गम्भीर चिन्ता में डूब गए है। कुछ देर बाद उन्होंने आंखें खोली और कुछ बुदबुदाते हुए कहा, "बस यही ठीक है, अगर कमांडर-इन-चीफ और मिलिटरी सेक्रेटरी भी वहां के वही खतम कर दिये जायं

तो एक ही दफे में यहा की फौज पर 'रक्त-मंडल' का पूरा आतंक जम जायगा। अच्छा जलालाबाद में इस वक्त है कौन ?"

उन्होंने जेब से अपनी वही नोट-बुक फिर निकाली और कुछ देखने लगे। थोड़ी देर बाद वे एक जगह पर रुके और बोले, "नम्बर सत्तावन वहां है। बहुत ही हिम्मती आदमी है. उसे यह खबर भी जरूर लग ही गई होगी। अगर उसे मैं कमांडर-इन-चीफ और मिलिटरी सेक्रेटरी को उड़ा देने की आज्ञा दूं तो वह जरूर अपनी जान पर खेल के भी इस काम को पूरा करेगा।"

जल्दी जल्दी नगेन्द्रनरसिंह ने एक कागज पर कुछ लिखा और घंटी बजाई। पहले वाला वही फौजी सिपाही भीतर आया और जंगी सलाम कर सामने खडा हो गया। उसके हाथ में कागज देते हुए नगेन्द्रनरसिंह ने कहा, "बेतार की तार से अभी यह पूरब तरफ भेजा जाय।" सलाम कर वह लौट रहा था जब उन्होंने फिर कहा, "नम्बर चौतीस को मेरे पास भेजो।"

सिपाही के जाने के दो ही सायत बाद एक आदमी ने कमरे के अन्दर पैर रक्खा। नगेन्द्रनरसिंह ने उसे देख कर कहा, "नम्बर चौतीस, तुम्हारा सब इन्तजाम ठीक है ?"

नंबर चौतीस०। जी हां, आपने जो जो बातें कही थी सब का प्रबंध हो गया है। अगर हमलोगों को अचानक यह जगह छोडनी पड़ जाय तो पन्द्रह मिनट के अन्दर हम इस तरह यहां से निकल जा सकते है कि तलाशी की नियत से यहा आने वाले को कुछ भी पता न लगेगा कि यह मकान किस काम में लाया जाता था।

नगेन्द्र०। बेतार की तार के यन्त्र का क्या प्रबन्ध किया है ?

चौतीस०। दो प्रबन्ध है। वह यन्त्र मोटर-ट्रक पर फिट कर दिया गया है, अगर खुश्की से निकल जाने का मौका हुआ तब तो कोई कठिनाई ही नही है, अगर वह मौका न हुआ तो वह ट्रक नम्बर तीन के तहखाने में पहुंचा दिया जायगा।

नगेन्द्र० । नंबर तीन के तहखाने को जलमग्न करने का पूरा इन्तजाम किया जा चुका है ?

चौतीस० । जी हा, हम चार जगह से उसे जलमग्न कर सकते हैं । एक तो सदर फाटक पर से, दूसरा मेरे कमरे से, तीसरा आपके इस कमरे से, और चौथा स्थान यहां से एक मील दूर है ।

यह कह कर नम्बर चौंतीस दीवार के पास गया और वहा लगे एक वटन को दिखा कर वोला, "अगर आप यह वटन दवा देंगे तो तीस मिनट के भीतर वह समूचा तहखाना पानी से भर जायगा । इसके सिवाय अपनी मरजी से मैंने एक इन्तजाम और भी कर लिया है । (उसके पास ही के लाल रंग के एक दूसरे वटन को दिखा कर) अगर यह वटन दवा दिया जाय तो दवने के पांच मिनट वाद यह समूचा मकान उड जायगा । इसका कनेक्शन यहां की मेगजीन से कर दिया गया है । अगर ऐसी ही जरूरत पड़े तो यह आखिरी कार्रवाई यहां के सव भेदों को सदा के लिये छिपा देगी ।

नगेन्द्र० । यह तुमने वहुत अच्छा किया, हमारे भेद दुश्मन के हाथ चले जाने के वनिस्वत हमारा स्वयम् मिट जाना अच्छा होगा । मगर वेहतर तो यह हो कि कुछ ऐसा इन्तजाम हो जाय कि कहीं दूर से भी यह मकान उड़ा दिया जा सके ।

चौतीस० । वहुत अच्छा, आज ही ऐसा भी हो जायगा ।

नगेन्द्र० । तो तुम जाओ मगर सव तरफ से चौकन्ने रहो । न जानें कव यह मकान खाली कर देना पडे । गोपालशंकर काशीजी में आ गया है । कव उसकी वक्रदृष्टि इस मकान पर पड जायगी कुछ कहा नही जा सकता, अस्तु निकल भागने का सव इन्तजाम हर वक्त ठीक रहना चाहिये ।

चौतीस० । हमेशा ठीक रहेगा । हवाई जहाज, मोटरकार और मोटर वोट सभी दिन रात के चौवीसों घंटे तैयार रहती हैं । मेरे इन्तजाम में कोई कमजोरी आप न पावेंगे ।

नगेन्द्र० । (उसे जाने का इशारा करते हुए) शावाश, ऐसी ही मुस्तैदी हमें विजयी वना सकती है ।

फौजी सलाम कर नम्बर चौतीस भी चला गया । अव नगेन्द्रनरसिंह पुनः अपने कोच पर आ वैठे और अखवार उठा कर उलट पुलट करने लगे । उनकी निगाह पत्र के संपादकीय स्तम्भ पर जा पड़ी और वहां के कुछ विचित्र हेडिंग को देख जरा कौतूहल के साथ वे उसे पढ़ने लगे । यह लिखा था :—

तीसरा धड़ाका !

"पहिले सिकंदरावाद, तव रक्सौल, और अव जलालावाद का किला उड गया है । अव शायद जव फोर्ट-विलियम उड जायगा तव हमारी सरकार की आखें खुलेंगी । अव क्या जनता से साफ साफ यह मंजूर कर लेना कि यह सव अचानक होने वाली दुर्घटनायें नही वल्कि षड़यंत्रकारियों के एक दल की खूव सोची विचारी हुई कार्रवाइयां हैं, शासन के लिए अधिक उचित न होगा ? साथ ही यह भी मंजूर कर लेना क्या वुद्धिमानी न होगी कि यह सव काम उसी मशहूर खूनी गिरोह 'रक्त-मंडल' का है जिसने आज के कई वरस पहिले सरकार की नाक में दम कर दिया था । जो सरकार भले आदमियो को जेल में ठूसते देर नही लगाती, जिस सरकार के नामी जासूस चूहों की विलो मे से साजिशें खोज निकालते हैं, जिस सरकार की प्यारी वेटी पुलिस सफेद को काला करने में पूरी सिद्धहस्त है, वही जव असल मुकाविला आ पड़ता है तो किस तरह पीठ दिखा देती है यह ये तीन धड़ाके खूव वता रहे है जो विगत एक सप्ताह के भीतर तीन भिन्न भिन्न प्रान्तो मे हो चुके हैं । अगर यही क्रम जारी रहा तो महीना वीतते वीतते क्या कोई भी फौजी छावनी कायम रह जाएगी ?"

इसी लहजे मे अखवार के गैरजिम्मेदार संपादक महोदय ने अपने दिल का गुब्बार पूरी तरह निकाला था जिन्हें इस वात की कोई खवर न

थी कि कागज पर लिखने और कर दिखाने मे कितना अन्तर होता है।
नगेन्द्रनरसिंह कुछ कौतूहल मिले विनोद के साथ यह लेख पढ़ रहे थे कि अचानक वाहर से ताली की आवाज आई। आज्ञा पा एक नौकर कमरे में आया जो अदब से बोला, "मिस रोज किसी से मिलने को बहुत व्याकुल हैं, कहती हैं कि जो कोई यहा सब से बडा अफसर मौजूद हो वह मुझ पर कृपा करके मेरे पास आवे। अपनी जान दे देने के पहिले मैं उसे कुछ संदेशा देना चाहती हूँ।"

नगेन्द्रनरसिंह के मुंह से निकलने लगा, "नम्बर चौंतीस को भेजो—" मगर उस वात को रोक कर वे बोल उठे, "अच्छा मै खुद चलता हूँ।"

नगेन्द्रनरसिंह वाहर निकले और उस नौकर के पीछे पीछे चलते हुए सीढ़ियां उतर मकान की निचली मंजिल में पहुचे। इस जगह की एक कोठरी के भीतर जाने पर एक तहखाना मिला जिसके नीचे उतर जाने पर एक अंधेरी कोठरी मे ये लोग पहुंचे। नौकर के पास विजली की वत्ती तैयार थी जिसकी रोशनी मे ये लोग उस कोठरी के बाहर निकल कर एक दूसरी तथा कुछ वड़ी कोठरी मे पहुंचे। यह तरह तरह के सामानों से भरी हुई थी और इसकी दीवारो पर कई तरह के हथियार भी लटकते हुए दिखाई पड़ रहे थे। इसके एक कोने में पहुँच कर नौकर ने जमीन पर से एक तख्ता उठाया जिससे नीचे जाने के लिये फिर पतली काठ की सीढ़ियां दिखाई पडी। नगेन्द्रनरसिंह नौकर के पीछे पीछे इन सीढ़ियो के नीचे उतरे। एक वहुत वड़ी कोठरी नजर आई जो तरह तरह के सामानो से भरी हुई थी। इस जगह नमी वहुत ज्यादा थी और कही कही पर दीवार से टपकने वाली पानी की बूंदें वता रही थी कि यह जगह नदी की सतह के नीचे है। इस वड़ी कोठरी के एक तरफ लोहे का एक कठघरा वना हुआ था जिसके अन्दर जलते हुए भद्दे दीये की मद्धिम रोशनी में एक कमसिन लड़की खाट पर वैठी हुई आंसू गिराती दिखाई पड़ी। हमारे पाठक इसको खूब पहिचानते है, क्योंकि यह यहां के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट

मि० केमिल की वही लड़की रोज है जिसे छुडाने के लिए पं० गोपालशंकर इतना उद्योग कर रहे है।

इन लोगों के आने की आहट पा मिस रोज ने अपना उदास चेहरा उठाया और उस तरफ देखा मगर अंधेरे के कारण कुछ पता न लगा सकी कि कौन आया है क्योकि उस जगह पहुचते ही नगेन्द्रनरसिंह के इशारे पर नौकर ने अपने हाथ की विजली की वत्ती वुझा दी थी।

नगेन्द्रनरसिंह ने अपने कपड़ों मे से एक नकाव निकाली और उससे चेहरे को ढांक आगे वढे। मिस रोज आकाक्षा और उद्वेग के कारण उठ कर खडी हो गई थी और जंगले के पास आकर वाहर के अंधेरे पर गौर करके यह देखने की कोशिश कर रही थी कि कौन आदमी उसके पास आया है जव नगेन्द्रनरसिंह ने उसके पास जाकर पूछा, "मिस रोज, क्या आपने मुझे वुलाया है?"

रुंधे हुए गले से मिस रोज ने कहा, "हां अगर आप ही इस जगह के मालिक है, तो भगवान के लिए मुझे इस भयानक कैदखाने से वाहर निकाल दीजिये! अगर कैद ही रखना है तो कही दूसरी जगह वन्द कीजिये, इस गंदी जगह में जहां सांस लेने लायक भी हवा नही है अव अगर और कुछ देर तक मैं वंद रहूंगी तो जरूर मर जाऊंगी।"

नगेन्द्रनरसिंह ने सिर हिला कर कहा, "मगर अफसोस है कि ऐसा नही किया जा सकता। अगर आपको कही दूसरी जगह रक्खा जायगा तो आप जरूर छूटने का उद्योग करेंगी और अगर आपके मददगार आपको देख लेगे तो जरूर छुडाने का उद्योग करेंगे जिस खतरे में हम लोग पड़ना नही चाहते।"

मिस रोज की आंखों से आंसू की झडी वहने लगी। उसने विलख कर कहा, "क्या एक औरत के साथ ऐसा जुल्म करते हुए आप लोगों को दया नही आती!"

नगेन्द्रनरसिंह ने गम्भीर स्वर में कहा, "मिस रोज, जिस काम को

हमलोगों ने अपने हाथ में लिया है उसके लिये सबसे पहिले दया और ममता का ही हमें खून करना पड़ा है ?"

मिस रोज०। (रो कर) फिर भी आप मर्द है, एक मर्द के नाते एक औरत का अगर आप कुछ भी खयाल कर सकते है तो मुझे इस जगह के वाहर करिये, मै आपसे वादा करती हूँ कि आप जहां भी मुझे रक्खेंगे वहा से निकल भागने का जरा सा भी उद्योग मैं न करूंगी। मै आपसे वादा करती हूँ कि अगर मैं अपनी आंखो के सामने से अपने पिता को भी गुजरते हुए देख लूंगी तो अपनी जुवान न खोलूंगी।

नगेन्द्र०। क्या आप इस वात का वचन देती है।

मिस रोज०। (अपने गले से लटकते हुए एक जड़ाऊ सलीव को छू कर) मै सलीव की कसम खाकर कहती हू कि मै अपने छूटने का रत्ती भर भी उद्योग न करूंगी।

नगेन्द्र०। वहुत अच्छा, आपकी प्रतिज्ञा पर विश्वास करके मै आपकी प्रार्थना स्वीकार करता हूं। कल सुवह आप अपने को ऊपर की एक खुली और हवादार जगह मे पावेंगी !

रोज ने कातर भाव से कहा, "जव आपने मुझ पर रहम किया ही है तो फिर एक दिन की देर क्यों ?" जवाव में नगेन्द्र ने कहा, "क्योकि इस छोटे मकान मे जगह की वहुत कमी है और आपके लिए कोई हवादार कोठरी खाली करने मे हम लोगो को विशेष तरद्दुद करना पड़ेगा। जब आपने इतने दिन सब्र किया है तो कुछ घंटों के लिए और वर्दाश्त करें और आज का दिन किसी तरह काट दें। फिलहाल जिस किसी चीज की आपको जरूरत हो कहें वह अभी मुहैय्या कर दी जायगी।"

नगेन्द्रनरसिंह ने उस नौकर की तरफ घूम कर कहा, "देखो मिस रोज को किसी वात की तकलीफ न हो। ऊपर की नम्वर सात वाली कोठरी खाली कर के कल सुवह ही इन्हें वहां कर दो।"

इतना कह कर नगेन्द्रनरसिंह ऊपर चले आये।

[३]

दोपहर के समय मिस्टर केमिल अपने आफिस मे बैठे कुछ काम कर रहे थे कि गोपालशंकर वहा आकर एक कुरसी पर धम्म से बैठ गए।

इस समय गोपालशंकर के चेहरे से थकावट बरस रही थी, बदन पर सेरों धूल चढ़ी हुई थी, कपडे मैले हुए भये और जगह जगह से फट भी गये थे।

केमिल साहब उनकी ऐसी हालत देख चौंक कर बोले, "है! यह आपकी क्या हालत है पंडितजी ?"

गोपालशंकर ने कहा, "मै सुस्ता लूं तो बताऊं। मगर फिलहाल तो आप मेरे नहाने का इन्तजाम कराइये और मेरे लिए कुछ कपड़े भी मंगवाइये।"

दम के दम मे मुनासिब इन्तजाम करा दिया गया और गोपालशंकर बाथरूम में चले गये। पन्द्रह बीस मिनट के बाद जब वे नहा धो और कपड़ बदल कर लौटे तो केमिल साहब ने चाय की तश्तरी उनके आगे खिसकाते हुए पूछा, "अच्छा अब बताइये कि आप कहां गये थे और कहां से चले आ रहे है!"

गोपालशकर ने चाय का प्याला उठा लिया और तब कुछ हंस कर कहा, "मैं शेर की माद में गया था और वहीं से निकला चला आ रहा हू।"

केमिल ने ताज्जुब से पूछा, "इसके माने ? जरा साफ साफ कहिए!"

गोपाल०। मैं उसी मकान से आ रहा हू जहां आपकी लड़की कंद है।

केमिल०। अरे, फिर आप अकेले ही वहां चले गये! आप जरूरत से ज्यादा हिम्मत दिखाते हैं पंडितजी, इसका नतीजा किसो दिन खराबो होगा! खैर क्या कुछ पता लगा ?

गोपाल०। हा बहुत कुछ। (जेब से एक कागज निकाल कर और उसे टेबुल पर फैला कर) यह देखिये मैंने वहा का एक मोटा मोटा नक्शा तैयार कर लिया है। (नक्शे पर उंगली रख कर समझाते हुए) यह तो वह मकान है, यह बाहर वाली लकीर उसके चारो तरफ की चहारदीवारी

है। यह कोई ईंट या मिट्टी की दीवार नहीं है बल्कि लोहे के टुकड़ों का जंगला है जो अंगूठी की तरह चारो तरफ से उस मकान को घेरे हुए है और इस जंगले के साथ रात को बिजली की शक्ति लगा दी जाती है। कोई आदमी धोखे से रात के वक्त या उस समय जब कि इसका कनेक्शन बिजली से हो यदि इसे छू ले तो वहीं चिपक कर मर जायगा।

केमिल०। अच्छा! तो उन लोगों के पास बिजली के डायनमो वगैरह भी हैं!

गोपाल०। डायनमो! अजी वहां ऐसी ऐसी हिफाजत और सुबीते की चीजें मौजूद है जो शायद लाट साहब की कोठी में भी न होंगी। और फिर यह तो सोचिए कि जिस जगह से इस वक्त 'रक्त-मंडल' का पूरा सूत्र संचालन हो रहा है वहां कैसी कैसी चीजें न होंगी।

केमिल०। यह क्या कहा आपने? क्या रक्त-मंडल के 'भयानक-चार' आजकल उसी मकान में है?

गोपाल०। 'भयानक-चार' नहीं उनका भी मुखिया और सिपहसालार महा-भयानक 'एक'! इस वक्त राणा नगेन्द्रनरसिंह खुद उसी मकान में है और वही से इस भयानक सभा की सब कार्रवाइयो को चला रहा है। यह देखिये—

कह कर गोपालशंकर ने कागज का एक टुकड़ा जो मोड़ा माड़ा बहुत गंदा और मैला हो रहा था मिस्टर केमिल के आगे रख दिया। इस पर कुछ अक और अक्षर लिखे हुए थे जिनका मतलब बहुत गौर करने पर भी केमिल साहब की समझ मे न आया। आखिर उन्होंने पूछा, "इस विचित्र लिखावट का अर्थ क्या है?" गोपालशंकर ने हंस कर एक दूसरा कागज उनके सामने रख दिया जिस पर उन्होने पढ़ा, "सोडावाटर की मशीन ठीक हो गई। यथेष्ट संख्या मे बोतलें दे सकता हूं।"

केमिल साहब उछल पड़े। इस संदेश का भयानक तात्पर्य तुरत ही उनकी भी समझ मे आ गया फिर भी उन्होने पूछा, "क्या इसका मतलब

यह है कि 'मृत्यु-किरण' के बम तैयार करने की भयानक मशीन जिसे आप तोड़ फोड़ आये थे उन लोगो ने पुनः ठीक कर ली ?"

गोपाल० । जी हां, और अब आप समझ लीजिये कि आपकी सरकार की कुशल नही है । अभी तो आपकी दो ही तीन छावनिया उडी है, जिस समय समूचे देश की छावनियां इसी तरह उड़ा दी जायंगी और तब लाटों की कोठियो कमांडर-इन-चीफ के बंगलों, छोटे मोटे अफसरो के मकानो और दफ्तरो तथा कचहरियो की बारी आवेगी उस समय तीन सप्ताह के भीतर यहां से शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य का नाम निशान मिट जायगा ।

केमिल साहब कांप उठे । 'मृत्यु-किरण' के प्रलयकारी बमों की शक्ति का कुछ हाल उन्हें मालूम हो चुका था । कुछ देर के लिये सकते की सी हालत मे होकर वे चुपचाप बैठे रह गये । तब उन्होने पूछा, "अब क्या करने की आपकी राय है ?"

गोपाल० । जैसे भी हो राणा नगेन्द्रनरसिंह को उसी मकान के अन्दर गिरफ्तार कर लेना चाहिये । उसके पकड जाने पर ही आपकी सरकार को यह मौका मिलेगा कि हिमालय पर्वत में दबे हुए उस किले पर हमला करके कुछ कामयाबी हासिल कर सके जहा ये मशीनें बैठाई गई हैं ।

केमिल० । जरूर आप ठीक कहते हैं । जैसे भी हो हमे इस शेर को उसकी माद मे ही गिरफ्तार करना पडेगा । मगर पडितजी, मै समझता हूँ कि यह सहज काम न होगा ।

गोपाल० । कदापि नही, सबसे बढ़ कर तो इसलिये कि जिन क्रातिकारियों का वह मुखिया है ठीक उन्ही की तरह नगेन्द्र खुद भी अपनी जान को हमेशा हथेली पर लिये फिरता है और मौत की कुछ भी परवाह नही कर ा । अगर वह जरूरत समझेगा तो अपने को, उस मकान को, और उसके आस पास के सब आदमियो को उसी लापरवाही से उडा देगा जिस तरह लड़के पटाका छोड़ते हैं । ऐसे आदमो को जिन्दा पकडना बहुत ही कठिन है ।

केमिल० । (क्रोध से) तब हम उसे मुर्दा ही पकड़ेंगे ! अब जब

वह हमारी निगाह की पकड़ में आ गया है तो उसे निकलने नहीं देना चाहिये। मगर पंडितजी, एक वात का मुझे डर है।

गोपाल०। वह क्या ?

केमिल०। जिस तरह राणा नगेन्द्रनरसिंह क्रान्तिकारियों का प्राण है उसी तरह हमारी सरकार के जीवन इस समय आप हो रहे हैं। आप ही अकेले आदमी हैं जो इन कुचक्रियो से हमारी सरकार की रक्षा कर सकते हैं, और इसीलिये हमारे लिये आपकी जान भी वड़ी वेशकीमत हो रही है। ईश्वर न करे कहीं उन सभों का कोई वार आप पर हुआ तो हम लोग कहीं के न रहेंगे।

गोपाल०। (हंस कर) ताकतवर व्रिटिश साम्राज्य में वहादुरों की कमी नहीं है।

केमिल०। ठीक है, मगर वहादुरी के साथ जव हिम्मत, हिम्मत के साथ चालाकी, और चालाकी के साथ विज्ञान मिलेगा तव आप सा आदमी तैयार हो सकेगा। हमारे यहां जासूस भरे पड़े है मगर सव वही वछिया के ताऊ, वहादुर खंचियो पड़े हैं मगर वही मक्खी के लिये नाक काट लेने वाले। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप जो कुछ भी करें यह सोच समझ के करें कि आप अगर दुष्टो के फन्दे मे पड़ गये या ईश्वर न करे आपकी जान पर ही कोई वार हुआ तो ये भयानक षड्यन्त्रकारी अवश्य सफल हो जायंगे और तव हमलोगों के किये कुछ न होगा।

गोपाल०। (वात को हंसी में टाल कर) खैर देखा जायगा, उसके लिये आपको फिक्र करने की जरूरत नहीं है। हर एक आदमी को अपनी जान प्यारी है और आप विश्वास रखिये कि मुझे भी अपनी जिन्दगी से प्रेम है। आप मेरी वात सुनिये,—मैंने जो कुछ कहा उसके माने यह है कि इस समय वही मकान षड्यन्त्रकारियों का केन्द्र हो रहा है और इस लिये वहुत जरूरी है कि उसमें रहने वाले सव गिरफ्तार कर लिये जायं चाहे इसके लिये कितना भी तरद्दुद तवालत मार काट या खून खरावा क्यों न करना पड़े।

केमिल० । बेशक, मैं अभी छोटे लाट को इसकी खबर देकर सब तरह का अधिकार ले लेता हूं।

गोपाल० । हां यही मेरी भी इच्छा है, क्योंकि इस समय आपको किस शस्त्र की कब जरूरत पड जायगी कोई कह नहीं सकता। सम्भव है फौजो से वह मकान घेरना पडे, संभव है उस पर गोले चलाने पडें, सभव है हवाई जहाजो से उस पर हमला करना पडे, यह भी सम्भव है कि उस पर घेरा ही डाल कर बैठ रहना पडे, अस्तु जब तक सब कुछ करने का आपको या मुझको अधिकार न रहेगा, मैं कुछ भी करने की जिम्मेदारी न लूंगा। 'रक्त-मडल' के मुखिया को गिरफ्तार करना मामूली काम नही है।

केमिल० । यह मुझे बताने की जरूरत नही। आप अपनी बात खतम कर लीजिये तो मै अभी लाट साहब के सेक्रेटरी को फोन करके जो जो बातें आप चाहते है उनका आपके खातिरखाह इन्तजाम करता हू।

गोपाल० । बहुत अच्छा तो सुनिये मैं इतनी बातें चाहता हूँ। अवश्य ही यह मै पहले कहे देता हूँ कि सब काम ऐसी होशियारी और गुप्त रीति से होना चाहिये कि किसी को कानोकान खबर न लगे। साथ ही मैं यह भी कहे देता हूँ कि यह सब पूरा इन्तजाम आपको खुद कर लेना पड़ेगा क्योंकि मैं एक दूसरे काम मे फंसा रहूगा।

केमिल० । आप कहिये, मै नोट करता हू।

गोपाल० । एक—महाराज काशीराज के किले रामनगर का बिजली का यंत्र बहुत शक्तिशाली है, वहा से एक तार सीधी उस मकान तक जानी चाहिये जिसमे जब चाहें तब उसकी लोहे वाली चहारदीवारी को हम लोग अपनी बिजली द्वारा ऐसा कर सकें कि अन्दर का आदमी बाहर न आ सके। वह जगह रामनगर से बहुत ज्यादा दूर भी नही है।

केमिल० । बहुत अच्छा, और कहिये।

गोपाल० । (हंस कर) आपने 'बहुत अच्छा' तो कह दिया मगर

इसकी मुसीवतों पर खयाल नही किया। कोसों तक विजली की लाइन वैठानी है और इस तरह पर कि किसी को कानोकान खवर न मिले।

केमिल०। मै इसे वखूवी समझता हूँ और आपको याद दिलाता हूँ कि इस समय आपके पीछे मजवूत व्रिटिश सरकार की समूची शक्ति काम करेगी। आप कहे चलिये, जो जो काम जिस तरह पर आप कहेंगे वैसे ही होगा और इस तरह होगा कि किसी को कानोकान खवर न लगे।

गोपाल०। दूसरी वात यह कि जिस रोज हमला होगा आपको दो कम्पनी फौजो से वह जगह इस तरह घिरवा लेनी पडेगी कि मकान के अन्दर का कोई आदमी उस घेरे के वाहर न निकल जा सके।

केमिल०। ठीक है, और वोलिये।

गोपाल०। कम से कम दो हवाई जहाज जो खूव तेज चाल के हो हर दम उड़ने के लिये तैयार रखने होगे।

केमिल०। मंजूर, और वोलिये।

गोपाल०। दो तेज मोटरें, एक मोटर वोट और हवाई जहाजो से लड़ने वाली कम से कम आध दर्जन तोपें तैयार रखनी होंगी। इसके सिवाय दस पांच वहादुर आदमी ऐसे जिन्हें जान का डर न हो खास मेरी मदद के लिये मुझे देने होंगे। वस इतनी चीजें मैं चाहता हूँ।

केमिल०। अच्छी वात है, यह सव आपको मिलेगा। यह वताइये कि कव ग्रापको इनकी जरूरत पडेगी?

गोपाल०। आज ही रात मे!!

केमिल०। (चौक कर) आज! भला आज यह इन्तजाम सव कैसे हो सकता है?

गोपाल०। (हंस कर) जैसे हो कल सुवह नगेन्द्रनरसिंह वह जगह छोड़ देगा और क्रान्तिकारियों के गढ़ उस पहाड़ी किले की तरफ रवाना हो जायगा। अगर उसे गिरफ्तार करना है तो आज ही उस मकान पर हमला करना होगा।

केमिल० । मगर ... ...

गोपाल० । अब अगर मगर का वक्त नही रहा केमिल साहब । छोटे लाट के सेक्रेटरी को, जरूरत हो तो प्रधान सेनापति को, और उनसे भी काम न बने तो खुद बड़े लाट साहब को टेलीफोन कीजिये और जैसे हो इन बातों का प्रबन्ध कीजिये । अगर आज ही नगेन्द्रनरसिंह गिरफ्तार नही किया गया तो कल फिर समझ लीजिये कि आपके ताकतवर फौलादी ढांचे का कहीं पता भी नही रह जायगा । अब आपकी सरकार का कागजी घोडे दौड़ाने वाले प्रस्तावबादियो से मुकाबला नही है, हाथ पर जान ले के कुछ कर दिखाने वाले क्रातिकारियो से मुहिम लेनी है जिनकी मशीन के सब पुर्जे इस वक्त अपने अपने ठिकाने पर और ठीक तरह से काम कर रहे है ।

केमिल साहब ने एक हाथ माथे पर फेरा जिस पर कुछ पसीना आ गया था, दूसरे हाथ से उन्होने टेलीफोन उठाया ।

[४]

रात के करीब दो बज गये होंगे । चारो तरफ घनघोर सन्नाटा छाया हुआ है । कही कोई चलता फिरता दिखाई नही पड़ता, कही से कोई आहट नही मिलती । समूचा संसार इस समय निद्रादेवी की गोद मे मस्त पड़ा है ।

परन्तु नगेन्द्रनरसिंह की आंखो मे इस समय भी नीद नही है । वे अपने कमरे मे उसी कोच पर बैठे हुए है जिस पर सुबह हमारे पाठक उन्हें देख चुके है । उनके सामने एक छोटा टेबुल है जिस पर दो मोमबत्तियो का एक शमादान जल रहा है और उसके ऊपर बहुत से कागज पत्र फैले हुए है जिनमे से एक बडे कागज पर इस समय नगेन्द्रनरसिंह गौर की निगाहें डाल रहे हैं । यह इस देश का एक नक्शा है जिसमे देश भर की फौजी छावनियो का नाम दर्ज है और इस समय इन्ही के बारे मे नगेन्द्र-नरसिंह कुछ सोच रहे है ।

यकायक दर्वाजे पर चुटकी की आवाज सुन वे चौक पडे और बोले,

"कौन है, भीतर आओ !" साथ ही एक आदमी ने दर्वाजा खोल कर अन्दर पैर रक्खा। यह एक कम उम्र नौजवान था और सूरत शक्ल से पढ़ा लिखा भला आदमी सा जान पड़ता था मगर इस समय इसके बदन पर सेरों धूल चढी हुई थी और इस तरह हांफ रहा था मानों बड़ी दूर से दौड़ता हुआ आ रहा हो। इसके पीछे ही इस छोटे मकान या किले के किलेदार अर्थात् नंबर चौतीस ने भी भीतर प्रवेश किया और दर्वाजा अन्दर से वन्द कर लिया।

नगेन्द्रनरसिंह को फौजी सलाम कर दोनों आदमी खड़े हो गये। नगेन्द्र ने आगन्तुक की ओर ताज्जुब से देखा और पूछा, "कौन है, चौवन ? इस तरह ! इस वक्त !!"

नंबर चौवन ने हांफते हांफते कहा, "सरदार वड़ो बुरो खवर है ! इस मकान पर हमला होना ही चाहता है !!"

गंभीर स्वर में नगेन्द्रनरसिंह ने पूछा, "क्या वात है, साफ साफ थोड़े मे कहो।"

चौवन०। अभी घड़ी भर नही हुआ होगा कि गोपालशंकर और केमिल साहव दो सौ सिपाहियो को लेकर इसी तरफ को रवाने हुए हैं, अभी अभी यहा पहुचते ही होगे। मै दौड़ता दौडता यहा आया हू मगर वे सव घोड़ो पर है। उनके साथ शहर कोतवाल और फौज का एक गोरा कप्तान भी है जिसका नाम मैं नही जानता।

नगेन्द्रनरसिंह इस खवर को सुन कुछ सायत के लिए चिन्तानिमग्न हो गए। उनके माथे पर कुछ सिकुड़नें पड़ गईं और आंखें वन्द हो गईं, मगर यह थोडी ही देर के लिए था। तुरन्त ही उन्होने कोई वात सोच निकाली और कहा, "नंबर चौतीस, अपने आदमियों को सव तरफ दौड़ाओ और पता लगाओ कि किस तरफ से हमला हो रहा है ? आदमियों को रवाना कर के तुम पुनः आओ। और चौवन, तुमने इस वक्त बहुत तारीफ का काम किया। तुम्हारी उन्नति के लिये मैं उद्योग करूंगा।

फिलहाल यह लो और इसी वक्त यहा से निकल कही दूर जा के सुस्ताओ ताकि अगर हम लोग गिरफ्तार भी हो जाय तो तुम खवर पहुंचाने के लिये वचे रहो।"

अपने सामने पडा काठ का एक छोटा वक्स जिसमे न जाने क्या चीज थी उठा कर नगेन्द्रनरसिंह ने नम्वर चौवन को दे दिया जिसे पाते ही उसकी बाछें खिल गईं और वह खुशी से फौजी सलाम कर और उसके वाद नगेन्द्र के पैर छू वहा से निकल गया। नम्वर चौतीस पहिले ही कमरे के वाहर जा चुका था।

नगेन्द्रनरसिंह अपनी जगह से उठे और इधर उधर घूम फिर कर कागजो और चीजो को सम्हालने, जिसे जरूरी समझा साथ रखने, और वाकी को कमरे के वीच में इकट्ठा करने लगे। उनके काम मे फुर्ती थी पर घवराहट विल्कुल न थी। मगर इसी समय नम्वर चौतीस ने कमरे मे पैर रक्खा और घवडाये स्वर मे कहा, "सरदार, गजव हो गया! चहार-दीवारी की तारो मे न जाने कैसे विजली की वडी तेज ताकत भर गई है जिसे टप कर वाहर निकलना असम्भव है। हमारे दो आदमी फाटक मे ही चिपक गये और मर गये।"

नगेन्द्रनरसिंह ने चौक कर कहा, "वह विजली वाहर से आई है या तुम्हारे ही इञ्जिनो की है?" चौतीस ने कहा, "जी नही वाहर की है, अपने इंजिन तो मैंने वन्द करा दिये। मालूम होता है दुश्मनो ने वाहर कही से तार लगा कर यह इन्तजाम किया है, और जरूर य. कार्रवाई पहिले से की गई है मगर ताज्जुव है कि हम लोगो को इसकी कोई खवर नही लगी।"

नगेन्द्र०। खैर कोई हर्ज नही, ऐसी ही किसी घटना के ख्याल से मैंने तुम्हें गुदाम मे वहुत से तख्ते रखवा छोड़ने को कहा था। कई तख्ते चारदीवारी के जंगले पर फैला के रास्ता वना लो, इनश्योलेटेड कैंचे दे कर दो तीन आदमियों से कहो तारें कई जगह से काट के कनेक्शन तोड दें,

हवाई जहाज मोटर और मोटर-वोट को तैयार होने का हुक्म भेजो, खतरे की चीजें नम्वर तीन के तहखाने मे भेजो और वेतार के तार का यन्त्र अगर निकाल ले जाने की सुविधा न हो तो उसे भी उसी तहखाने के हवाले करो मगर पहिले यह समाचार भेजवा कर।

जल्दी जल्दी नगेन्द्रनरसिंह ने एक कागज पर कुछ लिखा और उसे नम्वर चौतीस के हवाले किया जिसे ले वह दौड़ता हुआ कमरे के वाहर निकल गया। नगेन्द्रनरसिंह अव खुव वाहर निकले और जरूरी कामो की देख रेख करने लगे। देखते देखते वही मकान जो दस मिनट पहिले शान्त और निस्तव्ध था चलते फिरते और काम करते आदमियों से भर गया। मगर सव काम फुर्ती से होते हुए भी शान्ति थी, क्रम था, विच्छृंखलता कही न थी, न उतावली ही थी। सव लोग इस तरह काम कर रहे थे मानों पहिले पचासों दफे यह सव कर चुके हैं।

सरसरी निगाह सव तरफ और सव के कामो पर डालते हुए नगेन्द्र-नरसिंह एक दफे उस समूचे मकान मे घूम आये। जव उन्होंने देख लिया कि वे सव चीजें जिनके दुश्मन के हाथ मे पड़ जाने पर नुकसान की संभावना थी नम्वर तीन के अर्थात् उस तहखाने मे पहुंच गई जिसमे रोज वन्द थी तो वे मकान के वाहर निकले। दर्वाजे के पास ही नम्वर चौतीस मिला जिसके चेहरे और आवाज से उसकी दिली घवराहट प्रगट हो रही थी। उसने नगेन्द्र को देखते ही कहा, 'सरदार, हम पर सव तरफ से हमला किया गया है। जासूसों से पता लगा है कि फौज ने हमें चारो तरफ से घेर लिया है और सिमटती हुई मकान की तरफ वढ़ रही है। इसके इलावे वहुत से सवार भी तेजी के साथ इसी तरफ आ रहे हैं। दो मोटर-वोटें वहुत तेजी से वढ़ी आ रही है, और कई मोटरें इधर उधर खड़ी दिखाई पड़ी है जिनके इंजिन वन्द है। इसके इलावे...(कुछ रुक कर) यह क्या? अगर मेरे कान धोखा नही देते तो यह एयरोप्लेन की आवाज मालूम होती है। मालूम होता है हम पर जल स्थल और आकाश तीनों तरफ से हमला किया गया है।''

नगेन्द्रनरसिंह ने भी आवाज पर गौर किया और कहा, "वेशक एयरोप्लेन ही है मगर अभी दूर है, अच्छा भागना शुरू करो। यहां जितने आदमी है सब तीन टुकडे हो जाओ ? कुछ एयरोप्लेन से निकलो, कुछ मोटरों से, और कुछ मोटर-वोट मे भाग जाओ।"

चौतीस ने पूछा, "और सरदार आप किस पर जाइयेगा ?"

नगेन्द्रनरसिंह ने कहा, "मेरी फिक्र न करो, मैं इसी मकान में रहूंगा शायद जरूरत दिखाई ही पड गई तो मैं इस समूचे मकान को उडा दूंगा।"

चौतीस ने घवडा कर कहा, "नही नही सरदार, इस काम के लिये वहुत से आदमी है, आपकी जान इस समय रक्त-मंडल के लिये सवसे ज्यादा कीमती है। अगर ऐसा ही है तो मैं रह जाता हूँ।" मगर नगेन्द्रनरसिंह ने हंस कर कहा, "देश के लिये सव की जानें वरावर हैं, पर तुम घवराओ नही, मैं अभी मरूगा नही, जाओ और मैने जो हुक्म दिया है सो करो।"

'हुक्म' शव्द सुनते ही लाचार नम्वर चौंतीस सामने से हट गया और दूसरे ही सायत मे नगेन्द्रनरसिंह के हुक्म के मुताविक कार्रवाई हो गई। उस जगह रहने वाले सव आदमियो के तीन गरोह हो गये और तीन तरफ को चले गये। थोड़ी ही देर वाद तीन भिन्न भिन्न तरह की आवाजों ने नगेन्द्रनरसिंह को वता दिया कि एयरोप्लेन मोटर और मोटर-वोट भागने के लिये तैयार हो गये हैं।

दौडता हुआ यकायक नम्वर चौतीस पुन सामने आया और वोला, "सरदार, वेतार की तार वाली मोटर वाहर ही रही जाती है, दुश्मन सिर पर आ गये हैं !" नगेन्द्र ने कहा, "तुम जाओ, मैं उसका इन्तजाम कर लूंगा। वस अव एक पल मत रुको !" चौतीस ने झपट कर नगेन्द्र का पैर पकड लिया। उसको आखो मे आसू भरे थे, वह चाहता था कि नगेन्द्रनरसिंह भी उसके साथ ही हवाई जहाज पर चढ कर निकल जाय, मगर वह एक फौजी सिपाही भी था, अनुशासन के—'हुक्म', के माने समझता था। नगेन्द्रनरसिंह उसका अफसर था जिसका हुक्म उसे मानना ही पड़ेगा।

वह उठा, नगेन्द्र ने उसे गले लगाया और कहा, "भागो, भागो, और याद रक्खो कि दुश्मन के हाथो पड़ने से मर जाना अच्छा !"

भागते भागते नम्बर चौंतीस ने कहा, "ऐसा ही होगा सरदार, 'रक्त-मंडल के सदस्य मरने से नही डरते। वे हंसते हंसते मरेंगे, मगर मरने के पहिले मार के मरेंगे !"

कान फाड़ने वाली आवाज के साथ एक एयरोप्लेन मकान के सामने के छोटे मैदान से चक्कर लगाता हुआ ऊपर को उठा, भडभडाती हुई दो मोटरें पीछे की तरफ से वाहर को भागी, गंगाजी की छाती को चीरती हुई एक मोटर-वोट ऊपर की तरफ दौड़ी।

मगर इसके साथ ही 'पड़ पड़ पड़' की आवाजों ने यह भी जाहिर कर दिया कि दुश्मन ने राइफिलें चलानी शुरू कर दी है। चारो तरफ भयानक शोरगुल मच गया।

एक सायत के लिये नगेन्द्रनरसिंह पत्थर की मूरत की तरह चुपचाप खड़े रहे, इसके वाद वाईं तरफ को घूमे जिधर एक शेड के नीचे वेतार की तार का यंत्र एक मोटरट्रक पर चढ़ाया हुआ रक्खा था। फुरती से ट्रक का इंजिन चालू किया और ड्राइवर की सीट पर वैठ कर उस तरफ ट्रक को दौड़ाया जिधर मकान की दक्षिणी दीवार पडती थी। इस दीवार में एक वडा सा दर्वाजा दिखाई पड रहा था जो इस समय खुला हुआ था। मोटर लिये दिये नगेन्द्रनरसिंह इस फाटक के अन्दर घुस गये और साथ ही फाटक जो शायद किसी कमानी पर जड़ा हुआ था आप से आप वन्द हो गया।

मगर इस वात का उन्हें कुछ पता नहीं लगा कि ट्रक के पिछले हिस्से को पकड़ कर लटका हुआ एक गैर आदमी भी उनके साथ ही साथ तहखाने के अन्दर घुसा जा रहा है।

[५]

गोपालशंकर और मिस्टर केमिल इस मकान के कंपौन्ड के फाटक पर पहुंच चुके थे जव उनकी आंखों के सामने ही से विप्लवकारियों का वायु-

यान चक्कर खाता हुआ ऊपर को उठा। गोपालशंकर के मुंह से दुःख भरे शब्दों मे निकला, "अफसोस ! जरा सी देर हो ही गई और ये कंबख्त निकल ही भागे !!"

उसी समय मकान के पीछे की तरफ मोटरो और नदी मे से मोटर-वोट के भागने की आवाजें भी उनके कान में पडीं। उन्होने जल्दी से केमिल साहव से कहा, "जरूर इन्ही में से किसी एक पर नगेन्द्रनरसिंह होगा। आप तीनो का पीछा कराइये, मैं जरा अन्दर जाता हूँ।" केमिल ने कुछ पूछने के लिए रोकना चाहा मगर तव तक तो गोपालशंकर चारदीवारी के भीतर पहुच चुके थे।

गोपालशंकर को विश्वास था कि अव इस जगह कोई न होगा मगर इसके खिलाफ उन्होंने एक कद्दावर आदमी को सामने से हट कर एक शेड के अन्दर जाते देखा। अपनी पिस्तील उन्होंने हाथ मे ली और दौड कर उस तरफ चले, मगर उसी समय उनकी वगल मे होती हुई एक मोटर-ट्रक मकान की तरफ चली। जल्दी मे सिवाय इसके वे और कुछ न कर सके कि मोटर के पिछले डंडे को पकड कर लटक जायं। जरा ही देर वाद उन्होने मोटर को घूमते और तव एक फाटक मे घुसते पाया। उनके चारो तरफ अंधेरा छा गया मगर अन्दाज से वे इतना समझे कि मोटर कोई ढाल उतर रही है।

मोटर अन्दर पहुंच कर रुकी और साथ ही उसके आगे वाले लम्प वुझ गये जिससे वहा घोर अन्धकार छा गया। गोपालशंकर उस पर से उतरे और आहट लेने लगे कि यह कौन सी जगह है और वह आदमी जो इस ट्रक को यहा लाया है अव कहां है या क्या कर रहा है। आपने पीछे इन्हें कोई वडा फाटक वन्द होने की आवाज सुनाई दी और तव जूतों की आवाज के अन्दाज से मालूम हुआ कि कोई आदमी सीढियां चढ रहा है। वे समझ गये कि यह कोई तहखाना है जिसमें उस मोटर को वन्द करके वह आदमी अव ऊपर जा रहा है। विजली की तरह से यह

ख्याल उनके मन में दौड़ गया कि अगर उस आदमी ने तहखाने के वाहर जाकर दर्वाजा वन्द कर लिया तो वे उसी जगह फंसे रह जायंगे। यह सोचते ही उन्होने अपनी जेव से टार्च निकाली और उसे वाएं हाथ मे लिया, दाहिने हाथ मे पिस्तौल सम्हाली और तव टार्च का वटन दवाया। तेज रोशनी चारो तरफ फैल गई जिसकी मदद से उन्होने देखा कि सीढ़ियां चढ़ते हुए नगेन्द्रनरसिंह ऊपर की ओर जा रहे हैं। उन्होने कड़क कर आवाज दी, "वस नगेन्द्रनरसिंह खड़े रहो! मेरी पिस्तौल तुम्हें निशाना वनाए हुए है!!"

नगेन्द्रनरसिंह सीढ़ी चढ़ते हुए रुक गये और घूम कर वोले, "मैं भी केवल तुम्हारे ही लिये ठहर गया था। मगर मेरी जान लेने के पहिले तुम अपनी तो वचाओ! यह तहखाना नदी की सतह के नीचे है और यह देखो तुम्हें मुक्ति प्रदान करने को साक्षात् भगवती गंगा तुम्हारे पास चली आ रही है।" नगेन्द्रनरसिंह ने अपने सामने का एक वटन दवा दिया जिसके साथ ही दो गोल छेदो के मुंह जो इस तहखाने की छत के पास वने हुए थे खुल गये और पानी की हाथ हाथ भर मोटी दो धाराएं उस तहखाने मे भयानक शब्द करती हुई गिरने लगी। गोपालशंकर घवड़ा कर उधर देख ही रहे थे कि उसी समय नगेन्द्र ने फिर आवाज दी—"और भी आनन्द लेना चाहो तो उस जंगले के पास जाओ, वह देखो तुम्हारी प्रेमिका तुम्हें पुकार रही है!!"

सचमुच मिस रोज की वारीक आवाज गोपालशंकर के कान मे पड़ी। घवरा कर उन्होने विजली की वत्ती का मुंह दूसरी तरफ घुमाया। देखा तो उनके वगल ही के एक जंगले मे वन्द मिस रोज दोनों हाथ जंगले के वाहर निकाले करुण स्वर मे उनको पुकार रही है। उनके मुंह से अचानक निकला, "है, रोज तुम!!" और वे उसी तरफ झपटे मगर उसी समय एक हंसी और उसके वाद जोर से किसी ढकने के गिरने की आवाज कान में पड़ने से रुक गये। विजली की वत्ती उधर सीढ़ियों की तरफ घुमाई

तो देखा कि नगेन्द्रनरसिंह गायब हैं और सीढ़ी के ऊपर वाले रास्ते का मुंह बन्द हो गया है। दौड कर वे सीढ़ी पर चढ़ गये और उस पटरे को हटाने का उद्योग करने लगे मगर वह वज्र की तरह जमा हुआ था।

तहखाने मे पानी पल पल में चढ़ रहा था। उसके गिरने का भयानक शब्द चारो तरफ गूंज रहा था। किसी तरफ से निकलने का कोई रास्ता दिखाई नही पडता था। बेचैनी की निगाह से चारो तरफ देखते हुए गोपालशंकर के मुंह से निकला, "हे भगवान्! क्या इस बिल मे चूहे की तरह डूब कर मेरी और रोज की मृत्यु होगी!!"

मगर वे इतनी जल्दी निराश होने वाले मनुष्य न थे। तुरत ही उनका ध्यान रोज की तरफ गया। वे नीचे उतरे और उस जंगले के पास पहुंचे जिसके दरवाजे मे ताला बन्द था। इतनी ही देर में उस तहखाने में घुटने घुटने भर पानी हो चुका था।

मजबूत ताले को तोडने की और कोई तर्कीब न थी। गोपालशंकर ने अपनी पिस्तौल की नली उसके ताली लगाने वाले छेद से सटाई और घोडा दबा दिया। भयानक आवाज और धूएं से तहखाना भर गया मगर ताला टूट कर गिर पडा। गोपालशंकर ने दरवाजा खोल दिया और बदहवास रोज उनके बदन से चिपक कर बोली—"शंकर, प्यारे शंकर! इस भयानक कैदखाने से मुझे बचाओ!!"

गोपालशंकर ने प्यार के साथ दिलासा देने वाली बातें कह कर उसे शान्त किया और तब उस तहखाने में चारो तरफ घूम घूम कर बाहर निकलने का कोई रास्ता तलाश करने लगे। मगर वह तहखाना था या मौत की दाढ़ जिसमें से निकल भागने का कोई रास्ता दिखाई नही पडता था।

पानी पल पल भर में बढ़ता जा रहा था। देखते देखते वह कमर तक पहुंच गया। तहखाने की कितनी ही चीजें इधर से उधर तैरने लगी और उन्ही के बीच में गोपालशंकर भी रोज को बगल मे दबाये इधर से

उधर घूमने लगे। पल पल भर में अपनी बिजली की वत्ती चारो तरफ घुमाते थे मगर कहीं भी कोई राह निकलने की पाते न थे।

धीरे धीरे अव उनका पैर भी जमीन से लगना कठिन हो गया, छाती से ऊपर पानी तहखाने में आ चुका था। तहखाने की पाटन सिर के पास आने लगी। रोज जो गोपालशंकर के हिम्मत दिलाने वाले शब्दो की वदौलत दिल मजवूत किए हुए थी, अव अपनी जिन्दगी से विल्कुल ही निराश हो गई। उसके मुंह से निकला "शंकर, प्यारे शंकर ! विदा, अव स्वर्ग मे मिलूंगी !!"

यकायक उनके ऊपर वढ़ जाने वाले वोझ ने गोपालशंकर को वता दिया कि नाजुक-दिल रोज वेहोश हो गई।

× × ×

गोपालशंकर को इस खौफनाक तहखाने मे वन्द कर नगेन्द्रनरसिंह ऊपर निकल गये। सीढ़ी पर का तख्ता मजवूती से वन्द किया और वीच के तहखानो और रास्तों को तय करने तथा उनके दरवाजों को भी मजवूत वन्द करते हुए वे मकान की एक दम छत पर जा पहुंचे।

यहां एक छोटी कोठडी थी। अपने पास की एक ताली से नगेन्द्रनरसिंह ने इसे खोला। भीतर जा कर दर्वाजा वन्द कर लिया और विजली की टार्च वाली। छोटी कोठरी के चारो तरफ न जाने किस धातु के वड़े वड़े सिगार की शकल के चोंगे सजाये हुए थे और छत के साथ रवड़ की मोटी और वहुत वड़ी वोतल के आकार की कोई चीज लटक रही थी। यह एक गुव्वारा था और उन चोंगो मे उस गुव्वारे मे भरने वाली गैस खूव दवाव देकर भरी हुई थी, चोंगो से निकाल कर गुव्वारे में गैस भरने के लिए मुनासिव यन्त्र भी मौजूद था।

वाहर छत पर गुव्वारे को ला कर नगेद्रनरसिंह ने उसे मोटे रस्से द्वारा एक अंकुडे के साथ वांध दिया जो छत के वीचोवीच मे लगा हुआ था और तव गुव्वारे मे गैस भरने लगे। ज्यों ज्यो उन चोगों की गैस

निकल निकल कर गुब्बारे मे भरती जाती थी वह फूल फूल कर मोटा होता जाता था। दो तीन मिनट के भीतर ही वह पूरा भर गया और ऊपर उठने के लिए ज़ोर मारने लगा।

गुब्बारा छोटा था मगर एक आदमी को उडा ले जाने के लिए काफी था। जिस समय केमिल साहब के सिपाही चारो तरफ से उस मकान को घेर कर रस्सियो और सीढियो की मदद से उसके ऊपर चढ़ रहे थे उसी समय नगेन्द्रनरसिंह ने गुब्बारे के नीचे लटकते हुए झूले मे बैठ कर अपने को उसकी रस्सियो से मजबूत बांध लिया और तब कमर से खुखड़ी निकाल कर एक हाथ उस रस्से पर मारा जो गुब्बारे को बांधे हुए था। रस्सा कट गया, सनसनाता हुआ गुब्बारा ऊपर को उठा, कुछ देर बाद थोडा नीचे आया, फिर ऊँचा हुआ, और तब भयानक रूप से हिलता डुलता रात की तेज हवा मे तीर की तरह उत्तर की तरफ को उड़ चला।

सरकार की सब कार्रवाइयों को मात कर और अपने जानी दुश्मन को मौत के मुंह में डाल रक्त-मंडल का मुखिया अपने किले की तरफ उड़ गया था।

बलिवेदी

[१]

भारत के भाग्य-विधाता और यहा के वडे लाट लार्ड गेवर लंच खाकर अभी उठे है। उनके मुंह में एक मोटा टर्किश सिगार है और वे धूएं का वादल उड़ाते हुए आरामकुर्सी पर पांव पसारे पडे उन अखवारों को देख रहे है जो उनका प्राइवेट सेक्रेटरी अभी थोडी देर पहिले रख गया है।

एक खवर पर उनकी आंखें कुछ आश्चर्य के साथ ठहरी। मानों एक वार पढ़ने से कुछ समझ न सके हों इस तरह पर उन्होंने उसे दुवारा पढ़ना शुरू किया। समाचार यह था :—

"हमारे खास संवाददाता ने वहुत जांच के वाद खबर भेजी है कि धरमपुर के राजा ने भारत सरकार की शर्तें नामंजूर कर दी है। उनका कहना है कि सरकार ने उनके साथ व्यर्थ का वैर वांध रक्खा है और तरह तरह के झूठे सच्चे ऐव उन पर लगा कर इस लिये उन्हें गद्दी से उतारना चाहती है जिसमे उनके वाद राज्य की प्रसिद्ध तांवे की खानें सरकार के हाथ लगें। उन्होने निश्चय कर लिया है कि वे स्वयम् कभी गद्दी से न उतरेंगे। अगर सरकार इसके लिए उन्हें मजवूर करेगी तो वे

अपनी तुच्छ शक्ति भर उससे युद्ध करके मर मिटेंगे पर अपने पुरखों का राज्य हाथ से जाने न देंगे।"

इस समाचार को लाट साहब ताज्जुब के साथ पढ़ गये। धरमपुर भारत की सीमा पर एक बहुत छोटा और मामूली सा राज्य था जिसके साथ कुछ दिनों से सरकार की खटपट चली आ रही थी। आज ही कल मे वे उसके राज्य के सिंहासन छोड़ हट जाने का समाचार सुनने की आशा कर रहे थे, पर इसके बदले मे उन्हें यह क्या सुनाई पड़ा? धरमपुर का राजा और भारत सरकार से युद्ध ठाने? खरगोश और शेर मे लड़ाई? क्या वे सच देख रहे है? उन्होंने अखबार के हेडिंग पर निगाह की—यह देखने के लिए कि उनके हाथ मे कौन सा समाचार-पत्र है। देखा तो वह 'स्वाधीन-भारत' था। नफरत के साथ उन्होंने उसे नीचे फेंक दिया। उनका सेक्रेटरी उनके पास कैसे कैसे रद्दी संवादपत्र भेज दिया करता है? इसके लिए उन्हे उसे डांट बतानी पड़ेगी।

उन्होंने अपने प्यारे पत्र 'भारत-दोस्त' को हाथ मे लिया ही था कि इसी समय बाहर से किसी ने उनके स्मोकिंग रूम के दर्वाजे पर थपकी मारी। उनके 'भीतर आओ' कहने पर उनका प्राइवेट सेक्रेटरी भीतर आया जिसके हाथ मे कुछ कागजात थे। इसके पहिले कि वह उनसे कुछ कहे लाट साहब ने जमीन पर पड़े 'स्वाधीन-भारत' की तरफ नफरत की उंगली दिखा कर उससे कहा, "मनरो, यह रद्दी अखबार मेरे पास !!"

मनरो ने नम्रता से कहा, "उसने छपे धरमपुर रियासत सम्बन्धी समाचार पर आपकी निगाह पड जाय इसलिए मैने उसे आज की डाक के साथ कर दिया था माई लार्ड!"

बड़े लाट ने तुच्छता के साथ कहा, "ओह, ये रद्दी अखबार इसी तरह की मनमानी खबरें छापते रहते है जिनमे सचाई की बू भी नहीं होती, और......."

मनरो०। मगर मुझे अफसोस के साथ कहना पडता है माई लार्ड कि

इस खबर में बहुत कुछ सचाई है।

लार्ड गेवर०। (चौक कर) यह क्या कह रहे हो तुम मनरो ?

मनरो०। सीमान्त के हमारे एजेण्ट का यह खत अभी अभी डाक से आया है ?

लार्ड गेवर ने सेक्रेटरी के बढ़ाये हुए खत को ले लिया और कुछ उद्वेग के साथ उसे पढ गए। जो कुछ उन्होने पढ़ा उसका सार यही था कि 'धरमपुर के राजा ने सरकारी शर्तें नामंजूर करके तख्त से उतरने से इनकार कर दिया है ओर कहा है कि चाहे मेरी जान चली जाय मगर मैं अपने बाप दादो का राज्य छोड़ कर हटूंगा नही।'

पूरे विवरण के साथ उपरोक्त हाल देने के बाद एजेण्ट ने लिखा था, "अगर इस राजा के साथ कड़ाई से काम नही लिया जायगा तो आस पास के दूसरे पहाड़ी राजाओं पर भी बहुत बुरा असर पड़ेगा और इससे केन्द्रीय सरकार के सम्मान में बहुत बट्टा लग जायगा, अस्तु शीघ्र ही इस सम्बन्ध में मुनासिब कार्रवाई होनी चाहिये।"

चीठी के पीछे इस सम्बन्ध में पोलिटिकल एजेन्ट और धरमपुर के राजा में जो पत्र व्यवहार हुआ था उसकी नकलें भी नत्थी थी। लार्ड गेवर कुछ बेचैनी के साथ उन्हें सरसरी निगाह से देख गये और तब सवाल की नजर मनरो पर डालते हुए बोले, "यह मामला तो बड़ा बद-मजा होता दिखाई पडता है !"

मनरो०। (गंभीर होकर) बेशक माई लार्ड, और खास करके इसलिये कि इस मामले में हमलोग धरमपुर पर कोई खास इलजाम नही लगा सकते। उसने अगर 'ब्रिटिश कापर ट्रस्ट' को अपने राज्य की तांबे की खानो की लीज देने से इनकार कर दिया है तो अपने हको के भीतर ही काम किया है और हम सिर्फ इतने ही से कसूर पर खुले आम उसे हटा नही सकते है।

लार्ड गेवर०। न्याय बेशक यही कहता है, मगर इस समय तो इस 'ट्रस्ट' का साथ हमें देना ही होगा। इंगलैण्ड से चलती वक्त प्रधान

मंत्री ने खास तौर पर मुझसे कहा था कि इस 'ट्रस्ट' की सहायता करना ही उचित होगा। उन्होंने स्पष्ट ही कहा था कि अगर कोई दूसरा महा-युद्ध छिड़ गया तो ब्रिटिश गवर्नमेन्ट तावे का अभाव अनुभव करेगी।

मनरो०। वेशक, साम्राज्य के हित के लिये इस वक्त हमें धरमपुर को वलि देना ही होगा। गत युद्ध में ही तावे की कमी भयानक असर दिखाती अगर अमेरिका हमारी मदद को न आता। अव दुवारा वैसी ही भूल करना आत्महत्या करना होगा।

लार्ड गेवर०। जरूर! मगर सवाल तो यह है कि अव धरमपुर के राजा को हटाने के लिये वहाना क्या ढूंढ़ा जाय?

मनरो०। वहाने तो एक नही दस मिल जायंगे, उसकी चिन्ता आप न करें। मैंने धरमपुर की फाइल आफिस से मांगी है, उसे देखने से कोई न कोई पायन्ट जरूर मिलेगा, मगर फिलहाल तो कोई कार्रवाई तुरत ही करनी पड़ेगी। जब कि हमारी सरकार इस मामले में यहां तक वढ़ चुकी है कि धरमपुर के राजा को तख्त से उतार देने तक की धमकी दे चुकी है तो अब पीछे हटने से सचमुच ही हमारे एजेन्ट के शव्दो में उधर के पहाडी राजाओं के सामने हमारा 'प्रेस्टिज' एक दम नष्ट हो जायगा।

लार्ड गेवर०। अच्छा मैं कमांडर-इन-चीफ और अपने पोलिटिकल सेक्रेटरी से राय मिला कर वहुत जल्द आगे के लिये कोई कार्रवाई निश्चित करूंगा। वे लोग तो आज लौट आवेंगे न?

मनरो०। जी हा, सिकंदरावाद और रक्सौल के मामले की जांच करके आज सुवह ही उनके लौट आने की वात थी क्योकि आज शाम को वह कमेटी है जिसके लिये आपने हुक्म दिया था।

वडे लाट०। कौन सी? हां ठीक है याद आया, उसी कम्वख्त 'रक्त-मंडल' के वारे में?

मनरो०। जी हां, वही।

वड़े लाट०। ये कम्वख्त भी वुरी वला की तरह पीछे लग गये है। किसी

तरह इनका कोई भेद नहीं फूटता और दिन दिन इनकी शैतानी वढ़ती ही जाती है ।

मनरो० । जी हां, कुछ ही देर हुई इनके बारे मे वनारस के कमिश्नर की एक कनफिडेन्शल रिपोर्ट पहुचो है जिसे सर ह्यूम (यू० पी० के छोटे लाट) ने अपने नोट के साथ यहां भेज दिया है । उससे इनके वारे में कुछ और भी नई वाते मालूम पडी हैं ।

वड़े लाट० । वह क्या ?

मनरो० । (अपने हाथ के कागजो मे से एक अलग करके) इससे प्रगट होता है कि वनारस जिले में कहीं पर रक्त-मंडल ने अपना एक छोटा अड्डा वना रक्खा था । वड़ी चालाकी से पंडित गोपालशंकर ने उसका पता लगाया । परसों उस पर वडी तैयारी के साथ हमला किया गया, मगर एक भी आदमी हाथ न आया उलटे पंडित गोपालशंकर उन लोगो के हाथ में पड़ गये ।

वडे लाट० । हैं, गोपालशंकर उनके हाथ मे पड़ गये ! मगर सो कैसे ? वे अव कहां है ?

मनरो० । उस हमले के वाद से उनका कोई पता नही लग रहा है । मिस्टर केमिल का विश्वास है कि वे या तो मार डाले गये और या दुश्मन उन्हें भी अपने साथ ले भागे । मगर अभी उनकी खोज हो रही है, कोई अन्तिम रिपोर्ट नही आई है ।

वडे लाट० । यह तो वहुत ही वुरी खवर सुनने मे आई । इस कम्वख्त रक्त-मंडल के विरुद्ध अगर किसी ने कुछ भी सफलता पाई थी तो इन्ही गोपालशंकर ने ! ये अगर दुश्मनों के हाथ पड़ गये तो कभी जीते न वचेंगे और इनके हट जाने पर हम लोगो का दाहिना हाथ टूट जायगा । अच्छा कैसे कैसे क्या हुआ जरा कुछ वताओ तो सही ?

मनरो ने अपने हाथ का कागज लार्ड गेवर के सामने रख कर कुछ कहना शुरू किया ही था कि वाहर दर्वाजे पर से कुछ आवाज आई और भीतर

आने की आज्ञा पाने पर एक फौजी अफसर अन्दर आया जिसके हाथ मे एक तार था। इस अफसर का चेहरा इस समय जर्द हो रहा था और इसका वह हाथ जिसमे तार था किसी उद्वेग के कारण कांप रहा था। इसने वडे लाट को फौजी सलाम किया और तब वह तार बढ़ाते हुए कहा, "बड़ी बुरी खबर है, माई लार्ड।"

आने वाला फौजी दफ्तर का एक ऊंचा ओहदेदार था जिसकी बात सुन लार्ड गेवर ने कुछ ताज्जुब से पूछा, "क्यो क्या मामला है शेफर्ड ?" उसने कापती आवाज मे कहा, "कमांडर-इन-चीफ की स्पेशल पर बम फेंका गया है, उनकी मौत हो गई है !"

बड़े लाट लार्ड गेवर इस तरह चमक उठे मानों उन्हें गोली लगी हो। उनके मुह से अस्पष्ट स्वर मे निकला—"है, क्या ? क्या कहते हो ?" और उन्होने जल्दी से तार खोल कर पढ़ा, यह लिखा था :—

"कमाडर-इन-चीफ की स्पेशल ट्रेन बम गिरने से चूर चूर हो गई। उनकी लाश नही मिली है। मै बाल बाल बचा हू, वायुयान से आ रहा हू—गेविन।"

लार्ड गेवर के सिर मे चक्कर आ गया। मनरो और शेफर्ड पागलों की तरह एक दूसरे की तरफ देखने लगे।

[२]

यह भयानक समाचार बात की बात मे देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल गया।

दुर्घटना के दूसरे ही दिन से बड़े मोटे मोटे हेडिंग देकर समाचार-पत्रो में इसके विवरण छपने लगे। पहिले पहिल तो किसी को कुछ ठीक हाल मालूम न पड़ा मगर धीरे धीरे पूरी बातें प्रगट होने लगी। घटना के तीसरे दिन इसके विषय मे 'स्वाधीन भारत' मे जो कुछ छपा वह इस प्रकार था :—

"भारत के इतिहास मे आज तक जो कभी नही हुआ था वह घटना उस दिन हो गई। यहां के जंगी लाट की स्पेशल ट्रेन पर बम फेंका गया

जिसके फलस्वरूप आधी ट्रेन नष्ट हो गई और हमारे कमांडर-इन-चीफ लार्ड गोशेन की जान चली गई। हमारे खास संवाददाता ने जिसे इस दुर्घटना का पता लगाने के लिये हमने रवाना किया था इस संबन्ध में जो समाचार भेजा है वह नीचे दिया जाता है :—

"पुलिस और फौज के कड़े पहरे तथा असल भेदों को छिपाने की सतत चेष्टा करते रहने के कारण दुर्घटना का पूरा विवरण प्रगट नही हो रहा है तथापि जो कुछ पता लगा है उससे जान पडता है कि वुध की रात को करीव दो वजे यह रोमांचकारी घटना हुई है। जैसा कि हमारे पाठकों को मालूम ही होगा, कमाडर-इन-चीफ लार्ड गोशेन वडे लाट के पोलिटिकल सेक्रेटरी मिस्टर गोविन के साथ जलालावाद के किले वाली दुर्घटना की जांच करने पश्चिमोत्तरी सीमांत प्रदेश को गये हुए थे। वहां ही से लौट रहे थे जव की यह वात है।

"सुनने मे आया है कि जलालावाद से जमरूद तक तो लार्ड गोशेन मोटर पर आये और वहां से स्पेशल ट्रेन पर सवार होकर रक्सौल के लिये रवाना हुए। जलालावाद से जमरूद तक सडक के दोनों तरफ और वहां से वरावर पंजाव की सीमा तक लाइन के दोनों तरफ तार के प्रत्येक खंभे के पास सिपाही खड़े थे ताकि कोई उस तरह की दुर्घटना होने न पावे जैसी कि आखिर को हो ही गई।

"दुर्घटना नौशेरा और अटक के वीच में हुई। जिस समय स्पेशल अपनी पूरी तेजी से अटक के पुल की तरफ वढ़ रही थी उसी समय किसी ने उस पर वम फेंका। ऐसा सुनने मे आता है कि लाइन के दोनों तरफ खड़े सिपाहियों में से ही एक की यह कार्रवाई थी। दुर्घटना के स्थान के वाकी सिपाहियो मे से एक से भाग्यवश मेरी मुलाकात हो गई जिसने इस प्रकार हाल वयान किया है :—

"मोड़ के ऊपर ट्रेन के इञ्जिन की सर्चलाइट की चमक देखते ही मैं होशियार हो गया। मैंने अपने सामने के सिपाही से जो तार के खंभे से

लगा ऊंघ रहा था कहा, "होशियार हो जाओ" जिसे सुनते ही वह तन के खड़ा हो गया और उसके बाद वाले सिपाही भी ट्रेन के आने की आहट पा चैतन्य हो गये। इसी समय यकायक मैंने देखा कि मेरे बाईं तरफ अर्थात् जिधर से ट्रेन आ रही थी उधर वाला मुझसे करीब दो या तीन खंभे के फासले पर का सिपाही अपनी जगह से कुछ आगे बढ आया। इन्जिन के सर्चलाइट की रोशनी मे उसका वदन साफ दिखाई पड़ता था। जैसे ही ट्रेन उसके सामने पहुची वह तेजी से दौड कर आगे बढा। उसके हाथ मे कोई चीज थी जिसे उसने जोर से ट्रेन पर फेंक दिया। उसके गिरते ही हरे रंग की एक बिजली सी वहा पर चमक गई, दूसरी सायत मे ट्रेन के तीन डब्बे गायब दिखाई पडे, चारो तरफ शोरगुल मच गया, इन्जिन उलट गया, शोर उठा कि 'ट्रेन पर बम फेंका गया है'।

"मैं इस संबंध मे और जाच कर रहा हू, जो कुछ पता लगेगा फिर लिखूगा, पर जहां तक मालूम हुआ है यह कार्रवाई 'रक्त-मंडल' की है। यह मंडल दिन पर दिन हिम्मत बढ़ाता जा रहा है। अगर जल्दी इसे दबा न दिया गया तो इस देश की भी वही हालत हो जायगी जो जारशाही के समय मे रूस की हुई थी। लोगो मे बडा आतंक छा गया है और जिधर देखो उधर ही यह सवाल हो रहा है कि आखिर 'रक्त-मंडल' क्या बला है और वह चाहता क्या है!"

करीब करीब यही या इससे मिलते जुलते विवरण सब पत्रो में छपे थे और सभी रक्त मंडल के पल्ले इस भयानक काम की जिम्मेदारी बाध रहे थे। अभी तक जिस 'रक्त-मंडल' का नाम लुके छिपे तौर पर केवल कुछ खास आदमी ही जानते थे, इस घटना ने उसे शैतान की तरह मशहूर कर दिया। सबकी जवान पर यही भयानक नाम दौड़ने लगा और 'स्वाधीन भारत' के संवाददाता के कथनानुसार सभी आपस में पूछने लगे—"यह 'रक्त-मंडल' क्या बला है और यह चाहता क्या है?"

सरकार की तरफ से पहिले तो इस दुर्घटना का हाल छिपाने की चेष्टा

की गई परन्तु यह ऐसी भयानक घटना थी कि किसी तरह न दबी। यह भी संभव है कि स्वयम् 'रक्त-मंडल' ने भी इस समाचार को चारो तरफ फैलाने के लिए कोई कार्रवाई की हो।

फलस्वरूप चारो तरफ पकड़ धकड़ जारी हो गई। जहा की यह घटना थी उसके चारो तरफ पचीसों कोस तक के लोग सताये जाने लगे। लाइन के दोनो तरफ के आधी आधी मील तक के सब सिपाही तो उसी समय हिरासत में ले लिये गये थे। मगर किसी की जुवानी कुछ भी पता न लगा। सिर्फ यह जाना जा सका कि जो सिपाही आगे वढ़ कर कोई चीज ट्रेन पर फेंकता हुआ देखा गया था वह रामसिंह नाम का एक नया रंगरूट था जो थोड़े ही दिन हुए सेना मे भरती हुआ था और जिसने अपनी मेहनत और फर्मावर्दारी की वदौलत अपने ऊपर के अफसरो को बहुत ही मेहरवान वना लिया था। जाच से यह भी मालूम हो गया कि उस वम ने रामसिंह को भी जीता न छोड़ा क्योंकि दुर्घटना के स्थान के पास ही उसकी पौशाक का कुछ अधजला हिस्सा भी पाया गया।

भारत ओर लडन के वीच तार दौडने लगे। एक नये सेनापति वहा से जंगी जहाज पर तुरन्त रवाना किये गये और जव तक वे यहां न पहुचें तव तक के लिये वड़े लाट के मिलिटरी सेक्रेटरी थामसन को उनकी जगह काम करने का हुक्म हुआ। वडे लाट की कोठी मे वैठको पर वैठकें होने लगी। खुफिया विभाग के अफसरों पर डाट पडने लगी। पुलिस पर दवाव पडा। सैकड़ो आदमी गिरफ्तार कर जेलो मे ठूस दिये गये, हजारो पर शक शुवहे होने लगे। पर जिन लोगो की यह कार्रवाई थी उनका खाक भी पता न लगा।

[३]

जंगी लाट की मृत्यु से हुई भई हलचल को कुछ देर के लिये अलग छोड़ हम अपने पाठको को आगरे के एक शान्त स्वच्छ महल्ले की तरफ ले चलते है।

इस तरफ जिधर हम पाठको को लेकर चल रहे है और जो शहर का बाहरी प्रान्त है, केवल ऊंचे अफसरों और अमीरो के ही बंगले है और मुख्य शहर की घसपस भीडभाड शोरगुल कुछ भी नही है।

एक खूबसूरत बंगले मे जो यद्यपि स्वयम् तो बहुत बडा नही है पर जिसके चारो तरफ का कम्पौन्ड खूब लम्बा चौड़ा और अच्छी तरह आरास्ता है हम पहुंचते है। यह बंगला भारत सरकार के मेकैनिकल एड-वाइजर तथा बेतार की तार के प्रसिद्ध एक्सपर्ट कैप्टेन रूबी का है और इसमे वे सपरिवार रहते हैं।

सुबह का समय है। एक बडे कमरे मे, जो कि वैज्ञानिक प्रयोगशाला की तरह सजा और तरह तरह के यंत्रो से भरा हुआ है, कप्तान रूबी एक कुर्सी पर बैठे हुए है और उनके सामने की तरफ आरामकुर्सी पर एक नौजवान आदमी जिसकी उम्र चौबीस पचीस बरस से ज्यादा न होगी कुछ विचित्र हालत में पड़ा हुआ है। उसका समूचा बदन नंगा है अर्थात् सिवाय एक जांघिये के जो कमर मे पड़ा हुआ है उसके बदन पर लत्ते का एक टुकडा भी नही है और वह खुद भी आरामकुर्सी के साथ बांधा हुआ है, रस्सियो से नही, बल्कि तांबे का खूब महीन तारो से जो उसके बदन के हर हिस्से को उस कुर्सी के साथ इस तरह बांधे हुई है कि यद्यपि तारें उसके बदन में चुभ नही रही है परन्तु फिर भी इतनी ढीली भी नही हैं कि वह एक आध इंच भी किसी तरफ को टल सके। वह आरामकुर्सी भी जिसके साथ वह नौजवान बंधा हुआ है तांबे की ही बनी हुई है और उसमें बेंत की जगह तांबे के तारो का ही इस्तेमाल किया गया है अर्थात् बेंत की जगह तांबे की तारो से वह बिनी हुई है। इस कुर्सी के चारो पावे भी तांबे के है मगर वे इस समय शीशे की चार मोटी ईंटो पर रक्खे हुए हैं।

नौजवान के पीछे की तरफ शीशे से मढा एक टेबुल है जिस पर विचित्र तरह का एक यंत्र रक्खा हुआ है जिसके अद्भुत अद्भुत कल पुरजे और पहिये कुछ अजीब तरह से चल फिर रहे है। इस यंत्र का

दाहिनी तरफ का हिस्सा एक मोटे वेलन की शकल का है जिसके कई टुकड़े अलग अलग चाल से धीरे धीरे घूम रहे है और उनके उपर मशीन की कई बांहें सी लटकी हुई है जिनमें कई पेन्सिलें फंसी हुई है। बाईं तरफ कुछ कुछ फोनोग्राफ की तरह का एक यन्त्र लगा हुआ है जिसका चोंगा विचित्र तरह से लम्बा हो कर इस तरह आगे को बढा हुआ है कि उसका भोपा नौजवान की कुर्सी के बगल से हो हुआ उसके चेहरे के सामने आ गया है।

पाठकों को ज्यादा तरद्दुद में न डाल हम बताये देते है कि यह नौजवान वही चोर है जो पंडित गोपालशंकर के बंगले में चोरी करते हुए मुरारी द्वारा पकड़ा गया था* और गोपालशंकर के अद्भुत मस्तिष्क की उपज यह विचित्र यन्त्र वही है जो मनुष्य के मनोभावो का चित्र उतारता है। काशी जाती समय पंडित गोपालशंकर इस यन्त्र को कप्तान रूबी के सुपुर्द करके इस नौजवान पर उसका प्रयोग करने को कह गये थे और इस समय रूबी वही काम कर रहे है।

यह नौजवान जो सूरत शक्ल से किसी ऊंचे खान्दान और नामी घराने का होनहार मालूम होता है इस समय शान्ति के साथ चुपचाप कुर्सी पर पड़ा है मगर गौर के साथ देखने वाला तुरत कह देगा कि इसके मन में इस समय कोई तूफान उठ रहा है जिसके वेग को यह बड़ी कठिनता से प्रगट होने से रोक रहा है। इसकी आंखें इस समय किसी भीतरी उद्वेग के कारण चमक रही है और यह एकटक नजर से कप्तान रूबी की तरफ देख रहा है जो अपने हाथ की छोटी नोटबुक को बड़े गौर से पढ रहे है।

नोटबुक समाप्त करके रूबी ने बगल की कुर्सी पर रख दी और तब उस नौजवान की तरफ देख कर लम्बी सांस के साथ कहा, "नौजवान, क्या तुमने निश्चय कर लिया है कि अपनी मर्जी से हमें कुछ न बताओगे?"

नौजवान ने धीरे मगर दृढ़ता से सिर हिलाया। रूबी बोले, "तुम

---

* पहिले भाग की अन्तिम कहानी पढिये।

जानते हो कि चाहे बडे अफसर इसे स्वीकार न करें पर उनकी जानकारी में है कि यहा की पुलिस मुजरिमो को ऐसी ऐसी तकलीफें दे सकती है कि मौत भी उसके सामने तुच्छ हो पडती है और जिससे लाचार हो कर मुजरिमो को असल हाल कह ही देना पडता है !"

नौजवान की जुबान कुछ न बोली, मगर उसकी आंखों ने कह दिया कि वह इस बात को जानता है मगर साथ ही इसकी परवाह भी नही करता। कप्तान रूवी जो उसके चेहरे की एक एक लकीर और तेज आखों की एक एक चमक को गौर से देख रहे थे यह बात समझ गए और बोले, "यह मै समझता हूँ कि तुम बहादुर आदमी हो और अपना भेद छिपाये रखने के लिये सब तरह की तकलीफें सहने को तैयार हो मगर इस जमाना देखे हुए अधेड की बात भी याद रक्खो। मनुष्य की आत्मा चाहे कितनी ही बलवान हो पर इस शरीर रूपी पिंजडे में बन्द रहने के कारण इस शरीर के आधीन हो कर ही उसे चलना पडता है। शरीर को असह्य कष्ट पहुंचेगा तो आत्मा को भी दुःख पहुंचेगा और उसकी तकलीफ जुबान के रास्ते प्रगट हो ही जायगी।"

नौजवान के मुंह पर हंसी की एक क्षीण आभा दिख कर तुरत लोप हो गई, मानों रूबी की यह फिलासफी उसके लिए हास्यजनक थी और वह इस बात के लिये तैयार था कि चाहे कितना भी कष्ट उसके शरीर को दिया जाय मगर उसकी जवान चुप ही रहेगी। क्या जाने कप्तान रूवी इस बात को समझे या नही पर वे कहते गए—"तुम यह भी समझ रक्खो कि तुम्हारी जुबानी तुम्हारे रक्त-मंडल का भेद जानने के लिये सरकार उचित अनुचित सभी प्रकार के उपायो को भी काम में लाने को तैयार है। अगर जरूरत देखी गई तो तुम्हारे बदन को लोहे से दाग दाग कर के भी तुम्हारी जुबान खुलवाई जा सकती है !"

नौजवान की निगाह ने उसके बदन की तरफ घूम कर मानो कहा "वह भी कर देखो !"

रूबी० । मगर इस समय तुम जो नंगे करके इस तांबे को कुर्सी पर बैठाये गये हो वह इसलिये नही कि तुम्हारा वदन दागा जाय, या तुम्हारे नाखूनों में-कांटियें ठोंकी जांय, या तुम्हारी उंगलियो मे तेल से तर लत्ता लपेट उन्हें जलाया जाय, या तुम्हारे नीचे आतिशबाजी का अनार छुड़-वाया जाय, या तुम पर उवलता हुआ तेल छिडका जाय और जिस तरह पर भी हो तुम्हारी जुवान जो जब से तुम पकडे गये हौ तुम्हारे तालू से सटी हुई है, खुलवाई जाय। यद्यपि यह मैं कहे देता हूं कि आवश्यकता पडने पर वह सब कुछ वल्कि इससे बढ़ के भी कुछ करने को हम लोग तैयार हैं मगर अभी नही। हम लोग रहमदिल है, तुम्हारे 'रक्त-मंडल' की तरह खूनी नरपिशाच नही। हम पहिले शान्तिपूर्ण उपायो से काम लेंगे और जब उनसे काम निकलता नही देखेंगे तभी दूसरे उपाय काम मे लावेंगे।" नौजवान, इस समय मैं विज्ञान की सहायता से तुम्हारे दिल के अन्दर घुसने और वहां का भेद जानने की कोशिश करूंगा। आज का विज्ञान ऐसी मशीन के बनाने मे सफल हुआ है जो मनुष्य के मनोभावों का चित्र उतार सकती है, उसके दिल के तहों में छिपा भेद प्रगट कर सकती है। तुम पर ऐसे ही एक यन्त्र का प्रयोग किया जायगा जो मुझे विश्वास है कि तुम्हारी जुवान के न हिलने पर भी उन बातो को जो मेरे पूछने पर भी तुम बताना नही चाहते, प्रकट कर देगा।

इस बार एक प्रकार के भय की क्षीण रेखा नौजवान के चेहरे पर दौड़ गई पर फिर तुरत ही दूर भी हो गई। इसे रूबी ने भी देखा और प्रसन्न होकर कहा, "पंडित गोपालशंकर की बनाई वह मशीन तुम्हारे पीछे है। इस समय मैं उसी का प्रयोग तुम पर करने जा रहा हू मगर यदि तुम स्वयम् ही ठीक हाल बता दो तो क्यों व्यर्थ का तरद्दुद किया जाय !"

कहते हुए रूबी जरा ठहरे, मगर नौजवान स्थिर दृष्टि से उनकी तरफ देखता ही रहा कुछ बोला नहीं। आखिर वे फिर कहने लगे—"यह मैं इसलिये कह रहा हूं कि उस यन्त्र के प्रयोग के लिये तुम्हारे बदन के अंदर

से विजली का वहुत तेज करेन्ट दौड़ाया जायगा जो तुम्हारी सव इन्द्रियों को शिथिल करके मन और दिमाग को ढीला कर देगा। सम्भव है कि वह कई हजार वोल्ट की विजली तुम्हारे वदन को नुकसान पहुचावे, तुम्हें लकवा फालिज या ऐसा ही कोई रोग हो जाय, या तुम्हारा प्राण ही निकल जाय, अस्तु अव भी मेरी वातें मानो और साफ साफ जो कुछ जानते हो कह दो। मै तुम्हें विश्वास दिलाता हू कि इसके वदले मे तुम इस दुनिया मे जो कुछ भी सव से कीमती चीज समझते हो वह पावोगे, वल्कि........"

रूवी आगे कह न सके क्योंकि उस नौजवान ने घृणा के साथ आखें दूसरी तरफ फेर ली थी। अगर उसका सिर भी उन्ही तांवे की तारो से कुरसी के साथ वंधा न होता तो शायद वह सिर घुमा लेता। आखिर लाचार हो रूवी ने कहा, "खैर तो अव अपनी जिद्द के लिये तुम खुद जिम्मेदार हो। मै उस यन्त्र का प्रयोग करता हू। अगर तुम्हारी जुवान नही वोलती तो मैं तुम्हारे मन से तुम्हारा और तुम्हारे उस खूनी मंडल का भेद पूछूंगा।"

नौजवान के चेहरे पर एक वार पुनः वही भय का चिन्ह जो कुछ देर पहिले दिखाई पड़ा था दौड गया, मानो वह उस भेद के प्रगट हो जाने के ख्याल से डर रहा था, पर कप्तान रूवी ने अव ध्यान न दिया और उस यन्त्र की दुरुस्ती मे लग गये।

उस अत्यन्त नाजुक और उच्च वैज्ञानिक तथ्यों से पूर्ण यन्त्र का पूरा भीतरी हाल कहना व्यर्थ और अनावश्यक होगा और रूवी ने उसके किस भाग को किस प्रकार के काम मे लगाया यह भी कहने की आवश्यकता नही। मोटा-मोटी हिसाब से जो कुछ दिखाई पडा वह यह था कि उस यन्त्र से लगी छः महीन तारो मे से, जिन सभो के सिरे पर रवर की कुप्पियो के अन्दर कुछ वहुत ही नाजुक यन्त्र लगे हुए थे, दो उस कैदी की दोनो वाहों के साथ ठीक नब्ज के ऊपर लगा दी, दो माथे के दोनों वगल की कनपटी के साथ लगा दी, एक हृदय के ऊपर लगा दी, और एक नाभी के साथ

लगा दी। शायद अगर वह कुरसी के साथ बंधा हुआ न होता तो कैदी इसमे कुछ आपत्ति करता पर इस समय वह सब तरह से लाचार था। दो अन्य तारें यन्त्र से लाकर कुरसी के दो तरफ लगा दी गईं और अब वह यन्त्र प्रयोग के लिये तैयार हो गया। कप्तान रूवी ने यन्त्र के कई पुर्जों को छेड़ दिया जिससे वे मंदगति से चलने लग गये और उसके भिन्न भिन्न अंश अपना अपना काम करने लगे। यन्त्र के अंदर से एक तरह की गूंजने वाली आवाज निकलने लगी।

यंत्र के दाहिनी तरफ लगे मोटे बेलन को गौर से रूवी ने देखना शुरू किया जिसके कई टुकडे थे जो अलग अलग चाल से धीरे धीरे घूम रहे थे और जिनमें से हर एक पर सफेद कागज मढा हुआ और सामने की तरफ एक एक पेन्सिल एक तरह की बाह के साथ लगी हुई थी। कप्तान रूवी ने इसमें से कई पेंसिलो को दबा दिया। वह बेलन अब इन पसिलो से रगड़ कर घूमने लगा जिससे पतली पतली काली लकीरें कई जगह उन कागजों पर बनने लगी।

रूवी कुछ देर तक उन लकीरो को देखते रहे। यकायक उन्होने कुछ जोर से कहा, "तुम क्या 'रक्त-मंडल' द्वारा पंडित गोपालशंकर के बंगले में चोरी कर कुछ फोटो के प्लेट निकाल लेने के लिये भजे गये थे?"

यकायक बेलन के एक हिस्से के ऊपर की पेसिल वाली बाह जोर से हिली और कुछ सायत तक हिलती रह कर फिर शान्त हो गई। वह लकीर जो इस पेंसिल द्वारा बेलन पर पड रही थी एक दफे जोर से दाहिने से बाएं को हटी और फिर तीन चार लहरें खाकर पुनः शत भाव से बनने लगी। रूवी ने खुशी के साथ कहा, "नौजवान, तुम्हारी जुबान नहीं हिली मगर तुम्हारे दिल की धड़कन ने यकायक बढ़ कर मुझे जवाब दिया है—"हां।"

इस बात के साथ ही उस बेलन के बाद वाले बेलन की पेंसिल जोर से हिल गई जिससे उसके नीचे के कागज पर पड़ती हुई लकीर में लहर आ

गई। रूबी प्रसन्नता से बोले, "मेरी बात सुन कर तुम्हे अचानक यह भय हो गया कि क्या इसी तरह सचमुच तुम्हारे दिल के भीतर छिपा सब भेद खोल तो नही लिया जायगा। इससे तुम्हारा दम बहुत जरा देर के लिये रुका। तुम्हारी नाभी पर धक्का पहुचा और इस यंत्र की जुबान द्वारा तुम्हारी नाभी ने इस बात को प्रकट कर दिया। अच्छा नौजवान, यह तो बताओ कि तुम्हारी जो षड्यंत्रकारी सभा है उसका हेड आफिस कहां है?"

किसी पेंसिल ने कुछ न बताया। नौजवान अपने मन पर खूब काबू किये हुए था, परंतु कप्तान रूबी भी इस बात को समझते थे। उन्होने फिर पूछा, "तुम इस बात को जानते तो हो न?"

नौजवान के अपने को बहुत सम्हालने पर भी एक पेंसिल ने हिल कर "हां" कह ही दिया। कप्तान रूबी ने प्रसन्न होकर मन ही मन कहां, "पंडित गोपालशंकर का यह यंत्र सब भेद खोल देगा!" उन्होने एक कागज और पेंसिल उठा ली और उस पर अब तक के नौजवान से किये हुए सवाल और यंत्र द्वारा मिले हुए जवाबों को लिख लिया। इसके बाद उस नौजवान से उन्होंने पूछा, "अच्छा तुम्हारी वह सभा जो यह सब उपद्रव कर रही है अपने को 'रक्त-मंडल' कहती है और उसके मुखिया कोई चार आदमी है जो अपने को 'भयानक-चार' कहते है?"

यंत्र की एक पेंसिल बोली—"हा।" रूबी ने सवाल और जवाब कागज पर लिख लिया। इसके बाद फिर पूछा, "क्या उस 'भयानक-चार' का मुखिया राणा नगेन्द्रनरसिंह नाम का कोई नैपाली सरदार है?"

मशीन ने जवाब दिया—"हा।" रूबी ने यह भी नोट कर लिया और फिर पूछा, "क्या तुम्हारे मंडल ने नैपाल और भारत की सरहद के पास कही एक किला बनाया और उसमें 'मृत्यु-किरण' नामक एक तरह की किरणें बनाने की मशीन खड़ी की है?"

मशीन बोली—"हां।" कप्तान रूबी ने इसे भी नोट किया और पूछा, "उसी किरण के तुम लोगों ने बम भी बनाये है और उन्ही बमों द्वारा इस

देश भर की फौजी छावनियां उड़ा दिया चाहते हो?"

जवाब "हां" मिला। प्रसन्नता-पूर्वक कप्तान रूवी ने इसे भी नोट किया। अब इन्हें यंत्र की सफलता में कोई सन्देह न रहा। इस उत्तर को नोट करने बाद वे कुछ देर के लिए रुके और सोचने लगे। चूंकि फिलहाल यह यंत्र सिर्फ 'हा' और 'ना' में ही उत्तर दे सकता था, अस्तु ये विचार कर रहे थे कि अपने सवालों की गोलाबारी को किस तरह पर शुरू करें कि जिसमें नौजवान के दिल के किले में छिपा हुआ भेद-रूपी दुश्मन बाहर निकल पड़े? कुछ ही देर में उन्होंने सवालो का क्रम निश्चय कर लिया।

सवाल—"इस समय नगेन्द्रनरसिंह अपने किले में है?"

जवाब—"नही।"

सवाल—"क्या वह इस समय भारत में आया हुआ है?"

जवाब—"हां।"

सवाल—"वह किस शहर में है?"

जवाब कुछ नही मिला। कुछ सोच कर रूवी ने पूछा, "अच्छा वह जिस शहर में है क्या उसके नाम का पहला अक्षर 'अ' वर्ग में है?"

जवाब कुछ नही मिला। सवाल हुआ—" 'क' वर्ग में है?" अचानक सूई ने हिल कर "हां" कहा। कप्तान रूवी ने खुश होकर कहा, "मैं हर अक्षर कहता जाता हूं। अगर 'अ' नही तो कौन सा अक्षर है वह—"क?"

सूई हिली, रूवी समझ गये कि जिस शहर में नगेन्द्रनरसिंह है उसके नाम का पहला अक्षर 'क' है। उन्होने पूछा, "अच्छा मात्रा बताओ—क? का? कि?"

'का' कहते ही सूई हिली। रूवी ने कहा "क्या काशीजी में?" सूई जोर से हिल कर बोल पड़ी—"हां।" रूवी ने लिख लिया कि 'नगेन्द्रनरसिंह आजकल काशीजी में है'।

अब उन्हें गोपालशंकर के बताये यंत्र पर पूरा विश्वास हो गया।

कैदी अपने मुंह से कुछ बताये या न बताये यह यन्त्र जरूर उसका सब भेद बता देगा।

पूरे आत्मविश्वास के साथ उन्होंने सवाल करना और यंत्र ने जवाब देना शुरू किया।

[४]

कैप्टेन रूबी के सवालों के सिलसिले को यकायक धक्का लगा जब उनके कमरे के बन्द दर्वाजे पर किसी ने ठोकर मारी। उन्होंने कुछ उतावली से पूछा, "कौन है?" जवाब मिला—"हुजूर, शिमले से टेलीफोन आया है हुजूर कि बडे लाट साहब के सेक्रेटरी साहब हुजूर को याद कर रहे है, कहते है बहुत जरूरी काम है।"

आश्चर्य करते हुए कैप्टेन रूबी वहां से हटे और दर्वाजे के पास आ उसे खोला। सामने उनका खिदमतगार खड़ा था जिसने यह संदेशा उन्हें दिया था। उससे कुछ बातें पूछी और तब लपकते हुए उस तरफ चले जिधर टेलीफोन था। मगर जाने से पहले उन्होने कमरे का दर्वाजा बन्द कर दिया ओर ताला लगा ताली अपनी जेब में रख ली।

यकायक किसी तरह की नई आवाज सुन उस कुर्सी पर बंधे कैदी ने अपनी आंखें खिड़की की तरफ घुमाईं जिधर से, धूप की एक किरण आ कर उस कमरे में गिर रही थी। उसने देखा कि उस खिड़की से छः सात हाथ के फासले पर वाले घने मौलसिरी के पेड़ पर कोई आदमी चढ़ा हुआ उसी की तरफ देख रहा है। यह आवाज भी उसी आदमी ने की थी। नौजवान को अपनी तरफ देखते पा उस पेड पर वाले आदमी ने अपना हाथ उठा कर चार उंगलियें दिखाईं और तब छाती पर हाथ रख कर कुछ इशारा किया। उस इशारे को देखते ही इस नौजवान के चेहरे पर प्रसन्नता की झलक आ गई। इसके हाथ, पैर तो बंधे हुए थे मगर इसने अपनी बांई आख को चार दफे बन्द किया और दाहिनी को एक दफे बन्द कर फिर दोनों आंखें बंद कर लीं। अब दोनों आदमियों

में हाथ और आंख के इशारे से बातचीत होने लगी। पाठकों को ज्यादा तरद्दुद में न डाल हम यहां केवल उस बातचीत का तात्पर्य कहे देते हैं जो बहुत ही जल्दी जल्दी हुई।

पेड़ का आदमी०। यह तुम्हारी क्या दशा है ? वह मशीन कैसी है ?

कैदी०। बडी भयानक मशीन है। इसे गोपालशंकर ने बनाया है। इससे आदमी के मन की बात प्रगट हो जाती है। मुझ पर प्रयोग करके रूबी ने बहुत कुछ मेरी अनिच्छा रहते हुए भी जान लिया है।

पेड पर का आदमी०। तब तो बडी बुरी बात है! फिर क्या करना चाहिये ?

कैदी०। क्या तुम इस कमरे में आ सकते हो ?

पेड़ पर का०। नहीं, वह खिडकी इस पेड से बहुत दूर पड़ती है।

कैदी०। अच्छा तो मुझे गोली मार दो, अगर मै जीता रह गया तो रूबी और भी न जाने क्या क्या भेद जान लेगा।

पेड़ पर का०। सो भला कैसे हो सकता है! मै अपने हाथ से अपने ही भाई की जान लूं ?

कैदी०। करना ही पड़ेगा, अगर मै जीता हुआ इन सभों के कब्जे मे पड़ा रहा तो सब भेद इस मशीन की सहायता से ये लोग जान जायंगे। सोच मत करो। मातृ-भूमि की सेवा में मेरी जान जाय, बड़ी खुशी की बात है। तुम मुझे गोली मार दो और फिर दो तीन गोलियें मार इस मेरे पीछे वाली मशीन को भी तोड दो। जल्दी करो, रूबी आता ही होगा।

पेड़ पर के आदमी ने इस भयानक काम को करने से अनिच्छा प्रगट की मगर कैदी ने उसे मजबूर किया। इस समय ऐसा किये बिना चल भी नहीं सकता था। अगर यह नौजवान रूबी के पंजे मे रह गया तो इस भयानक मशीन की बदौलत रक्त-मंडल का कोई भी भेद छिपा न रह जायगा। पेड़ पर के आदमी ने अपनी कमर में छिपी हुई पिस्तौल निकाली और अपने ही साथी की तरफ सीधी की मगर उसकी आंखों मे आंसू भर

आये थे। कैदी ने यह देख उसी तरह इशारे में कहा, "है, आंसू! मातृ-भूमि की सेवा में खून की बूंदों की जरूरत है, पानी की बूंदें क्या मदद करेंगी। जल्दी गोली मारो, कोई आता है!"

पेड पर के आदमी ने इशारा किया, "भाई मुझे माफ करना!" और तब पिस्तौल का घोड़ा दवा दिया। धड़ाम की आवाज के साथ सनसनाती हुई गोली आ कर उस कैदी की छाती में घुस गई। कैदी के मुँह से अस्पष्ट स्वर में निकला, "माता, सेवा के लिये फिर बुलाना!" मगर उसके स्वर में रंज नहीं था वल्कि खुशी भरी हुई थी। उसका सिर उसकी छाती पर लटक गया, उसकी आत्मा अमर-लोक की ओर चली गई।

"धड़ाम, धड़ाम, धड़ाम" तीन फायर और हुए। नौजवान के पीछे वाली मशीन चूर चूर हो गई।

× × × ×

कैप्टेन रूबी से बडे लाट के मिलिटरी सेक्रेटरी कह रहे थे—"बड़ी अच्छी वात है, पंडितजी की मशीन के जरिये जो कुछ बातें आप उस कम्वख्त विप्लवकारी के पेट से निकाल सकें निकाल कर तुरत यहाँ चले आइये। लार्ड गोशेन की मृत्यु से लार्ड गेवर एक दम घवड़ा गये है। रक्त-मंडल को शीघ्र ही कावू में करना चाहिये नही तो वह गजव कर डालेगा। परसो की कमेटी में आप......"

उनकी वात पूरी नही हुई थी कि कैप्टेन रूवी के कान में पिस्तौल छूटने की आवाज पड़ी। वे चौक उठे। उसी समय धड़ाम धड़ाम करके पुनः कई आवाजें आई और यह भी मालूम हुआ कि ये आवाजें उनकी प्रयोगशाला की तरफ से ही आ रही है। घवड़ा कर उन्होने टेलीफोन में कुछ कहा और तव उसका चोगा हाथ से रख अपनी जेव से पिस्तौल निकालते हुए लेवोरेटरी की तरफ दौडे।

दर्वाजे पर पहुच फुर्ती से ताला खोला और अन्दर घुसे। जो कुछ

देखा उससे उनके पैर के नीचे भी मिट्टी खिसक गई। देखा कि वह वेश-कीमत मशीन एक दम चूर चूर हो गई है और उसके टुकड़े कमरे भर में इधर उधर छितराये हुए हैं। एक चीख वेतहाशा उनके मुंह से निकल गई, पर जब उन्होंने देखा कि कुर्सी पर के कैदी की छाती में गोली लगी है जिससे उसकी मौत हो गई और उसकी कुर्सी के नीचे खून टप टप करके चू रहा है तब तो उनके लिए खड़ा रहना मुश्किल हो गया। वे एक कुर्सी पर गिर गये और पागलों की तरह इधर उधर देखने लगे।

इसी समय फिर 'धडाम' की आवाज आई। वाहर पेड पर के आदमी ने पुनः पिस्तौल छोड़ी जिसकी गोली कप्तान रूवी के वदन में घुस गई और वे एक चीख मार कर वहीं गिर गये।

चारों तरफ दौड़ धूप मच गई। कई नौकर चाकर उस कमरे में पहुंचे जिसमें यह दुर्घटना हुई थी और कितने ही सिपाहियों ने उस पेड़ को घेर लिया जिस पर वह आदमी चढ़ा हुआ था। मगर वह आदमी अपने को घिरा हुआ पा जरा भी न घबराया। उसकी पिस्तौल में एक गोली अभी बची हुई थी। अपने सगे भाई से प्यारे साथी को गोली मारने बाद अब उसका भी मर जाना ही श्रेयस्कर था, यह भी डर था कि अगर वह जीता बच कर इन सभों की कैद में पड गया तो शायद गोपालशंकर की वनाई कोई अन्य मशीन उससे भी रक्त-मंडल का सब भेद खींच ले। जल्दी जल्दी वहुत कुछ सोच पिस्तौल की नली उसने कनपटी से लगाई। उसके मुंह से निकला, "मां जन्मभूमि, विदा!" और तब उसने घोड़ा दबा दिया। 'धड़ाम' की आवाज के साथ ही उसका निर्जीव शरीर भी उस पेड़ से नीचे आ गिरा।

प्रेमी-युगल

[१]

निकलते हुए सूरज को आड़ में कर रखने वाले ऊंचे पहाड़ो की नुकीली चोटिया इस तरह को मालूम हो रही है मानों उछले हुए गेंद को लोकने के लिए खेलाड़ियो के हाथ ऊपर को उठे हुए है।

नेपाल राजधानी काठमाण्डू से दक्षिण कुछ दूर हट कर हरे भरे और सुहावने जगल के किनारे वहने वाली एक छोटी पहाड़ी नदी के तट पर हम दो तीन खेमे लगे हुए देखते है। खेमे यद्यपि वहुत वड़े नही है पर छोटे भी नही है और वहुत खूबसूरती तथा किते से लगे हुए होने के कारण सुन्दर मालूम हो रहे है।

एक खेमा जो गुलावी रंग का है और जिसको चारो तरफ से कुछ जगह छोड़ कनातो ने घेरा हुआ है, सब से वड़ा है और इस समय इसी की तरफ हम अपने पाठको को ले चलते है।

खेमे के दरवाजे की चिक उठी हुई है और उसकी राह भीतर को सुन्दर पलगड़ी पर पड़ी हुई एक नाजुक और खूबसूरत औरत पर हमारी निगाह पड़ती है जो रेशमी लिहाफ ओढे कई तकियो के सहारे उठंगी

अधलेटी सी पड़ी हसरत भरी निगाहों से दरवाजे के सामने के दृश्य और निकलते हुए सूर्य की विचित्र छटा देख रही है।

औरत की आकृति बता रही है कि वह बहुत दिनो की बीमार है। बड़ी बड़ी आंखें जो कभी कमलो को नीचा दिखाती होंगी गड़हो मे धंस गई है, गाल जो किसी समय गुलावों को मात करते होगे पीले पड़ गये हैं, वदन की हड्डी हड्डी दिखाई पड़ रही है, कलाइयां सूखे पेड़ की टहनियां हो रही है, चेहरा मुरझाया हुआ है, फिर भी जो कुछ वच गया है वह इस वात को वताने के लिये काफी है कि किसी जमाने में यह औरत खूबसूरती में अपना सानी न रखती होगी।

ऊंचे पहाड़ो की नुकीली चोटियो को नीचे छोड़ सूर्य ऊपर उठ आये। इसके साथ ही रंग विरंगी खूबसूरत चिड़िये अपने अपने घोसलों का आसरा छोड़ वाहर निकल पड़ी और सुबह की खूशबूदार हवा को अपनी मीठी तानो से और भी लुभावना वनाती हुई इधर उधर फुदकने लगी। एक नाजुक छोटी चिडिया इस खेमे के दरवाजे के पास की एक डाल पर आ वैठी और अपनी दुम और गरदन को विचित्र तरह से हिलाती हुई मनोहर तान सुनाने लगी।

मगर कोमल चिडिया की मीठी तान ने उस नाजुक-वदन के दिल को खुश करने के वदले और भी मसोस दिया। न जाने किस गम के वोझ से दवे हुए उसके कलेजे से एक ठंढी सांस निकल पड़ी और उसने अपना सिर रजाई मे छिपा कर उसांसें लेना शुरू कर दिया। इसके साथ ही उसकी आखें डवडवा आईं और कई वूद आंसू निकल कर मुरझाये हुए गालो पर लुढ़क पड़े।

इसी समय एक नौजवान उस खेमे के दरवाजे पर आ पहुंचा और भीतर की तरफ झांक कर वोला, "कामिनी, जाग गई?" "हां भैया!" कह कर उस औरत ने छिपे तरीके से अपनी आंखें पोंछ डाली और मुंह पर से रजाई हटा उस नौजवान की तरफ देखते हुए कहा, "आओ।"

नौजवान भीतर आया और पलंग की पाटी पर बैठता हुआ बोला, "वहिन, तवीयत कैसी है ?" औरत ने कहा, "अच्छी है।" नौजवान बोला, "सुवह का समय वडा सुहावना है, कुछ दूर टहलने चलोगी ?" औरत ने सिर हिला कर कहा, "नही, मन नहीं करता।"

मगर उस नौजवान ने एक न सुनी और जिद् करके उस औरत को साथ चलने पर मजबूर ही किया। उसने कहा, "पड़े पडे तो तुमने अपना शरीर और भी खराव कर लिया है, न जाने कौन सी फिक्र तुम्हें सता रही है कि एकदम घुली जा रही हो ! ऐसी सुहावनी जगह आ कर भी जरा घूमो फिरोगी नही तो कैसे बनेगा ? उठो, दुशाला ओढ लो, जरा दूर घूम आवें, मन वहल जायगा।" आखिर उसकी जिद् से लाचार हो औरत को उठना ही पडा। नौजवान ने एक कीमती दुशाले से उसके बदन को अच्छी तरह ढाक दिया और तव हाथ पकडे हुए सहारा देकर वाहर ले आया। इसके वाद दोनो आदमी धीरे धीरे टहलते हुए उस पहाड़ी नाले के किनारे किनारे जाने लगे, जिसके तट पर ही यह छोटा पड़ाव पडा हुआ था।

हमारे पाठक इन दोनों को ही पहिचानते है। यह औरत तो कामिनी देवी है और नौजवान उसका भाई नरेन्द्रसिह। अपनी वहिन की तवीयत किसी तरह सम्हलती न देख यह उसे शहर से वाहर के इस रमणीक स्थान मे ले आया है और आशा करता है कि यहा की साफ हवा, रमणीक दृश्य, और साथ ही साथ कुछ चहलकदमी शायद उसे फायदा पहुचावे।

[२]

सुन्दर और मनोहर दृश्य देखते, नाजुक चिडियो की मनोहर वोलियां सुनते, और सुवह की खुशवू से लदी फुरती पैदा करने वाली ठंढी हवा का आनन्द लेते हुए कामिनी और नरेन्द्रसिह धीरे धीरे टहलते हुए खेमों से कुछ दूर निकल गये। मन को लुभाने वाली प्रकृति की छटा ने वीमार कामिनी के मन पर भी आखिर असर किया ही और वह कुछ देर के लिये अपनी वीमारी को भूल कर प्रसन्नता और आनन्द के साथ इधर उधर

देखती और अपने भाई से बातें करती हुई नाले के किनारे किनारे जाने लगी। रास्ते के पहाड़ी गुल बूटों मे से जो उसका ध्यान आकर्षित करते उन्हें वह तोड़-कर सूघती, जूड़े में खोंसती या हाथ मे गुच्छे की तरह इकट्ठ करती जाती थी और नरेन्द्र भी यह देख कर कि इससे उसका मन बहलता था इधर उधर चट्टानों की आड या कुछ बेमौके जगहों पर लगे हुए सुन्दर फूलो की तरफ उसका ध्यान आकर्षित कराता तथा इच्छा समझने पर उन्हें ला देता हुआ प्रसन्न चित्त से तरह तरह की बातें करता चला जा रहा था।

पहाडी का अन्त आ गया और अपने सामने नीचे की तरफ कोसों तक फैले हुए मैदान की ओर कामिनी का ध्यान गया। वहां के आसमान पर मंडराती हुई किसी काली चीज ने उसकी आंखें आकर्षित की। उसने गौर से देखा और तब अपने भाई का हाथ पकड़ कर बोली, "भैया, देखो तो वह काली काली क्या चीज है?" नरेन्द्र उस वक्त एक गढे मे झुका हुआ नीले रंग के बडे ही सुन्दर एक फूल को तोड़ने की कोशिश कर रहा था। कामिनी के कहने से उसने सिर घुमाया और सरसरी तौर पर देख कर बोला, "कोई चील या गिद्ध होगा!" और तब फिर अपने काम में लग गया, मगर जब कामिनी ने कुछ तुनुकमिजाजी से कहा, "अजी ठीक तरह से देखा भी, गिद्ध नही तुम्हारा सिर है।" तो वह सीधा हो कर गौर से देखने लगा। कुछ देर बाद वह बोला, "यह तो कोई गुब्बारा मालूम पडता है!"

उसके कन्धे के साथ आडे तस्मे से बंधी दूरबीन लटक रही थी जिसे उसने दूर का दृश्य देखने की सुविधा के ख्याल से साथ ले लिया था। उसने दूरबीन निकाल कर आंख से लगाई और कुछ देर तक खूब गौर से देखने के बाद बोला, "वह गुब्बारा है और उसकी रस्सियों के साथ एक झूला सा बना हुआ है जिसमें एक आदमी लटक रहा है!"

कौतूहल के साथ कामिनी ने दूरबीन उसके हाथ से ले ली और अपनी आंखों पर लगा कर उसी ओर देखने लगी। सचमुच ही वह एक छोटा

गुब्बारा था जो सुबह के मन्द मन्द वायु के हलके थपेडों के कारण पेंगें लेता हुआ इन्ही लोगो की तरफ वढा आ रहा था। उसके नीचे की ओर रस्सियों से लटकते हुए आदमी की तरफ भी कामिनी का ध्यान गया और वह कुछ देर तक गौर के साथ उसे देखने के वाद नरेन्द्रसिंह से वोली, "भैया, उस आदमी पर तुमने गौर किया जो उसके नीचे लटक रहा है ? वह विल्कुल हिलता डुलता नही, क्या मुर्दा तो नही है !"

"नही नही, मुरदा क्यो होगा ?" कह कर नरेन्द्र ने दूरवीन कामिनी के हाथ से ले ली ओर गौर के साथ देर तक उधर देखता रहा, मगर कामिनी की तरह अन्त मे उसे भी यही निश्चय करना पडा कि वह आदमी या तो मुर्दा है और या फिर वेहोश है क्योंकि एक तो उसके वदन मे हरकत विल्कुल न थी, दूसरे उसका सिर एक वगल को इस प्रकार लटका हुआ था मानो उसकी गर्दन मे इतना जोर नही रह गया है कि सर को सम्हाल सके, तीसरे उसका वदन भी उस झूले से वेतरह आगे को लटका हुआ था, अगर वे कई रस्सिया जिनके साथ उसकी कमर और छाती झूले के साथ वंधी हुई थी न होती तो वह जरूर आगे लटक कर झूले से गिर जाता या नही तो उलटा लटकने लग जाता।

नरेन्द्र ताज्जुव के साथ देर तक उसकी हालत पर गौर करता रहा, जो कुछ उसने देखा वह कामिनी को भी वताया, और इसके वाद दोनो ही आदमी उसी जगह एक चट्टान पर वैठ कर गौर ताज्जुव और उत्कंठा के साथ उस गुब्बारे को देखने लगे जिसे हवा सीधा उन्ही की तरफ ला रही थी और जो पलपल मे नजदीक आता हुआ अव निगाहो का पहिले से वडा मालूम पड रहा था।

धीरे धीरे वह गुब्वारा उनसे कोस भर से भी कम फासले पर पहुच गया। अव नगेन्द्र की तेज दूरवीन उस गुब्वारे और उसके साथ लटकने वाले आदमी के वदन के एक एक हिस्से को साफ साफ दिखाने लग गई। वहुत देर तक गौर के साथ देखने पर भी उस आदमी के वदन मे किसी तरह की हरकत न पा कर यह तो उन दोनो ही को निश्चय

कर लेना पड़ा था कि वह आदमी या तो वेहोश है और या मर गया है मगर अव ज्यों ज्यों वह पास आता जाता था त्यों त्यों उस आदमी की पोशाक आदि भी स्पष्ट होती जाती थी तथा चेहरे का भी कुछ हिस्सा साफ दिखने लगा था। पोशाक वता रही थी कि वह कोई फौजी अफसर है और चेहरे का जो कुछ अंश दिखाई पड़ता था वह कह रहा था कि वह एक नौजवान और खूवसूरत आदमी है।

सूर्य की किरणें उस गुव्वारे पर आ कर पड़ी जिससे वह एक दम चमक उठा, साथ ही कुछ ऊपर की तरफ भी उठा। ऊपर उठते ही तेज हवा पाकर उसकी चाल भी कुछ तेज हो गई मगर रुख जरा पलट गया अर्थात् जहां वह सीधा इन दोनों की तरफ आ रहा था वहां अव इनके कुछ दाहिने झुकता हुआ जाने लगा। नरेन्द्रसिंह जो गौर से इन वातो को दख रहा था आप ही आप वोल उठा, "रात की ठंढ में गुव्वारे की गैस सिकुड़ी हुई थी इससे वह नीचे उड रहा था, अव धूप पा कर गर्म होने से गैस कुछ फैलने लगी है जिससे गुव्वारा भी ऊपर उठ रहा है।" कामिनी ने यह सुन कहा, "मगर इसका रुख क्यों पलट रहा है? पहिले तो सीधा हमी लोगो की तरफ आ रहा था अव दूसरी तरफ जाने लगा है!" नरेन्द्र वोला, "ऊपर की हवा का रुख उसी तरफ का होगा! (चौक कर) मगर, अरे यह क्या नगेन्द्रनरसिंह हैं?" हवा के एक झोंके ने गुव्वारे को घुमा दिया था जिससे उस लटकने वाले का चेहरा इन लोगो के सामने आ गया था, साथ ही सूर्य की किरणों ने उस पर पड़ उसके हर एक रग रेशे को साफ कर दिया था जिससे उस आदमी का चेहरा साफ दिखाई पड़ने लगा था। नरेन्द्र ने फिर गौर से दूरवीन के जरिये उसकी तरफ देखा और तव कहा, "अगर नगेन्द्र नहीं है तो जरूर उसी से मिलती जुलती सूरत शकल का कोई नौजवान है।"

गुव्वारा अव इन लोगो के और भी पास आ गया था मगर क्षण-क्षण में ऊंचा होता और इनके दाहिने घसकता जाता था। नरेन्द्र की वात सुन

कामिनी ने दूरबीन उसके हाथ से ले ली और बहुत गौर के साथ उस आदमी की सूरत देखी। न जाने उसे क्या दिखाई दिया कि वह एक दम चौंक पड़ी और दूरबीन उसके हाथ से छूट उसकी गोद में गिर पड़ी। उसकी आंखें बन्द हो गई और वह दोनों हाथों से अपना कलेजा थाम लम्बी सांसें लेने लगी। नरेन्द्र की आखें उस गुब्बारे की तरफ लगी हुई थीं मगर यकायक उसका ध्यान इसकी तरफ गया और वह एक दम चौंक कर दोनों हाथों से अपनी बहिन का कंधा पकड़ सहारा देता हुआ घबड़ा कर बोला, "कामिनी कामिनी, क्यों क्यों, क्या हुआ, क्या हुआ ?"

कामिनी ने आंखें खोली और एक बार अपने चारों तरफ देखा, तब बोली, "कुछ नहीं, यों ही कुछ सिर में चक्कर आ गया था।" नरेन्द्र ने उसे सम्हालते हुए कहा, "मेरी जांघ पर सिर रख कर जरा देर के लिए लेट जाओ, मालूम होता है कमजोरी से सिर में चक्कर आने लगा है।" मगर कामिनी ने उसकी बात पर ध्यान न दिया और दूरबीन उठा कर उसके हाथ में देती हुई बोली, "देखो गौर से, सचमुच यह तुम्हारे दोस्त नगेन्द्रनरसिंह ही हैं क्या ?"

गुब्बारा अब इनके सिर से लगभग सौ गज ऊंचे और चौथाई मील के फासले पर से उड़ता हुआ उत्तर पश्चिम के कोण की तरफ जा रहा था मगर फासला कम हो जाने के कारण उस बेहोश की सूरत वह तेज दूरबीन अब खूब साफ साफ दिखा रही थी। नरेन्द्र ने फिर उसकी तरफ देखा और कहा, "बेशक मालूम तो नगेन्द्र ही होते हैं। तब क्या करना चाहिये ?"

कामिनी ने दूरबीन उसके हाथ से ले ली और यह कहते हुए आंखों से लगाई, "जैसे भी हो उन्हें गुब्बारे पर से उतारना चाहिये।" दूरबीन के सहारे उस लटकते हुए नौजवान की सूरत उसने पुनः गौर से देखी और फिर एक लम्बी सांस के साथ अपने कलेजे को दबाया, दूरबीन हाथ से रख दी और नरेन्द्र की तरफ देख आग्रह के साथ बोली, "भैया, अपने दोस्त की तुम कोई मदद न करोगे ? जरूर वे बेहोश हो गये हैं !"

नरेन्द्र कुछ सोचता हुआ बोला, "मगर करूं तो क्या करूं, कुछ समझ में नही आता। गुब्बारा जमीन पर उतारने के लिये उसकी गैस निकालनी चाहिये। इस काम के लिये एक छेद गुब्बारों में बना होता है मगर उसको खोलना न खोलना गुब्बारे पर वाले के आदमी के हाथ मे रहता है और वह इस समय या तो बेहोश है या मर गया है और ज्यों ज्यो सूरज की गर्मी बढ़ रही है गुब्बारे की गैस फैलती और उसे ऊंचा भी करती जा रही है। तब क्या करूं ?"

यकायक नरेन्द्र को कुछ ख्याल आ गया। उसने पीठ से लटकती हुई राइफिल, जिसको इस जगली और पहाड़ी जगह मे हर दम साथ रखना जरूरी था, उतारी और उस गुब्बारे की तरफ सीधी की। कामिनी चौक कर बोली, "है है, क्या करते हो ? उन्हें गोली मारोगे !!" नरेन्द्र हंस कर बोला, "नही नगेन्द्र को नही उसके गुब्बारे में गोली से छेद करूंगा।" कामिनी बेचैनी से बोली, "कही उन्हें ही गोली लग गई तो !" जिस पर नरेन्द्र ने कहा, "अगर ऐसा होगा तो बन्दूक चलाना छोड़ दूंगा।" इसके साथ ही 'धाय' की आवाज हुई और राइफिल की गोली सनसनाती हुई गुब्बारे की चोटी से दो अंगुल के फासले पर से निकल गई। नरेन्द्र ने दूसरी बार फायर किया और इस बार गुब्बारे की चोटी को छूती हुई गोली गई। एक बहुत ही जरा सा चरका गोली का लगा जिससे करीब एक उंगली जाने लायक और कुछ लम्बा सा छेद वहां पर हो गया। नरेन्द्र ने खुश होकर कहा, "वह मारा, अब गैस धीरे धीरे निकलनी शुरू होगी और गुब्बारा जमीन पर आ जायगा !" इतना कह वह उठ खड़ा हुआ और बोला, "अच्छा चलो कामिनी, तुम्हें खेमे में पहुचा दूं और वही से एक घोड़ा ले गुब्बारे का पीछा करूं। न जाने कहा और कितनी दूर जाकर वह जमीन पर आवेगा।" कामिनी इस समय दूरबीन आंखो से लगाये उस गुब्बारे की चाल देख रही थी। नरेन्द्र की बात सुन वह सिर हिला कर बोली, "मैं यही हूं और देखती रहती हूं कि गुब्बारा किधर जाता है, मुझ-

किन है कि तुम्हारे लौटते लौटते तक किसी ऐसी जगह जा गिरे जहा से फिर खोजना मुश्किल हो।"

नरेन्द्र यह सुन बोला, "हां यह तो तुम ठीक कहती हो, अच्छा तुम यही रहो मै अभी आया, यह राइफिल छोडे जाता हूं। मगर जरा चौकन्नी रहना, जंगल का वास्ता ठहरा, मै चुटकी वजाते आया।" वह दौड़ता हुआ पीछे को भागा और जाते जाते कामिनी के ये शब्द उसके कान में पड़े—"अपने साथ दो घोडे लाना!" उसने पूछना चाहा, "काहे को?" मगर मोहलत न थी। यह समझ कर चित्त को सन्तोष दिया कि शायद वेहोश नगेन्द्र को लाने के लिये दूसरा घोड़ा कहा होगा, और तव सरपट लश्कर की तरफ भागा।

कामिनी एकटक उस गुब्बारे को ही देख रही थी जिसका फासला अव यद्यपि वढता जा रहा था फिर भी दूरवीन की मदद से अभी तक उस वेहोश की सूरत साफ दिखाई पड रही थी खास कर इसलिये कि अव गुब्बारा नीचे उतर रहा था। पीछे फिर कर यह देखने वाद कि नरेन्द्र दूर निकल गया है कामिनी ने अपनी चोली मे हाथ डाला और वहा छिपी हुई कोई चीज निकाली। एक निगाह उस चीज पर डाली और तव दूसरी उस गुब्बारे पर वाले आदमी पर, इसके वाद फिर एक लम्वी सास के साथ वह चीज छाती से चिपकाते हुए उसने कहा, "मेरी आंखें चाहे ठीक न वतावें मगर प्यारे, मेरा दिल वता रहा है कि तुम वही हो जो इस तस्वीर के रूप में वरसो से मेरे दिल के अन्दर विराज रहे हो! भगवान, क्या सचमुच आज तू मेरी मुराद पूरी करने चला है!!"

पर साथ ही उसके मन ने निराशा से कहा, "मगर वे तो वेहोश हैं, शायद मुर्दा ही हो?" उसके चेहरे पर कालिमा दौड गई मगर होठों ने दृढता से कहा, "अगर वीमार होगे तो मै अपनी जान देकर तुम्हारी जान वचाऊंगी, अगर मरे होगे तो मैं तुम्हारी लाश के साथ जल कर वैकुण्ठ जाकर तुमसे मिलूगी।" उसने एक लम्वी सांस के साथ वह चीज जो वास्तव में एक फोटो थी अपने होठो से चूम ली और तव अपने ठिकाने रख

दूरबीन की सहायता से पुनः उस गुब्बारे पर के नौजवान को देखने लगी।

पाठक, क्या आप जानना चाहते हैं कि वह तस्वीर किसकी है और कैसे कामिनीदेवी के हाथ लगी ? सुनिये हम बताये देते है। वह तस्वीर नगेन्द्रनरसिंह की थी और कामिनी को उस समय मिली थी जिस समय आगरे से नैपाल जाती समय उसका जेवरों का बेग फाडा गया था★। गहनों के डिब्बे के अन्दर से कोई चीज कामिनी देवी के हाथ लगने का हाल आप पढ़ चुके हैं। वह चीज यही तस्वीर थी।

[३]

दो नौजवान अंगरेज तेज घोड़ों पर चढे सरपट उस पहाड़ी मैदान में चले जा रहे है जिसे तीन तरफ से ऊंचे ऊंचे पहाड़ों ने घेरा हुआ है।

दोनों की पौशाकें बता रही हैं कि वे फौजी जवान और साथ ही अफसर भी है तथा उनकी पेटी से लटकती हुई बन्दूकें और हाथ की दूरबीनें यह भी सन्देह पैदा कर रही है कि वे कदाचित् किसी शिकार के पीछे जा रहे है।

मगर नही. हमारा संदेह गलत है। एक जगह पहुंच जब उन दोनों ने यकायक घोड़ों की चाल कम की और आसमान की तरफ अपनी अपनी दूरबीनें उठाई तो पता लगा कि उनका लक्ष्य जमीन का कोई शिकार नहीं बल्कि हवा का है और साथ ही कोई ऐसा शिकार है जिसका ठीक पता अभी उन्हें नही लगा है क्योंकि वे लोग आसमान मे चारो तरफ अपनी निगाहें दौड़ा रहे थे और दूरबीन से आकाश का एक एक कोना टटोल रहे थे। इतना कहना हम भूल गये कि यह समय बहुत सुबह का है और सूर्यदेव के उदय होने मे अभी घड़ियो की देर जान पड़ती है फिर भी आसमान साफ है और उस पर सिर्फ कही कही ही कोई तारा चमकता नजर आ रहा है।

★ यह हाल जानने के लिये श्री दुर्गाप्रसाद खत्री रचित 'लाल-पंजा' नामक उपन्[illegible] [illegible]ये।

यकायक एक सवार ने अपना हाथ सामने की तरफ उठाया और खुशी भरी आवाज में कहा, "वह है, वह है !!" इसके साथ ही दूसरे ने भी कहा, हा ठीक है, मैंने भी देखा—वह वादल के टुकडे के नीचे न ?" जिसके जवाव मे उस पहिले ने कहा, "हा हा वही, मगर अभी वहुत दूर है।" दूसरा वोला, "कोई हर्ज नही, हवा वहुत तेज नही है, शायद हम लोग अब भी उसे पा सकते है।" इतना कह अपनी दूरवीनें ठिकाने रखने बाद उन्होने घोड़ो को एड़ लगाई और पुन: सरपट जाने लगे।

जिस चीज को देख ये लोग इतना खुश हुए थे वह वही गुव्वारा था जिसका हाल अभी अभी हम ऊपर लिख आये है। मालूम होता है ये लोग उस आदमी का पीछा कर रहे है जो गुव्वारे के साथ वेहोश वंधा हुआ था।

आधे घंटे तक सरपट जाने वाद इनके और उस गुव्वारे के वीच के फासले मे वहुत कुछ कमी हो गई क्योकि हवा वहुत ही मद मंद वह रही थी जिसके कारण गुव्वारे की चाल तेज नही थी पर इनके घोडे वहुत ही तेज ओर ताकतवर थे। इस वीच मे सूर्यदेव भी निकल आये और उनकी पहिली किरणे उस गुव्वारे पर पडी जिनसे वह एक दफे चमक उठा।

मगर अव इन सवारो की चाल कुछ कम होने लगी, क्योंकि मैदान का हिस्सा खतम होकर पहाड़ी सिलसिला जारी हो रहा था जिससे रास्ते में पड़ने वाले पत्थरो के बड़े बड़े ढोके और पहाड़ी के टुकड़े इनके घोड़ो की राह रोकने लगे थे। यद्यपि अभी भो दो चार कोस आगे जाने लायक रास्ता था मगर इसके वाद पहाड़ो की वीहड दीवार शुरू हो जाती थी जिस पर घोडे किसी तरह नही चढ सकते थे। इसके साथ ही सूर्योदय के सग संग हवा की तेजी भी कुछ वढने लगी और वह गुव्वारा भी कुछ ऊपर की तरफ उठता सा जान पडा। इनके घोडे भी कोसो से सरपट आते हुए थक रहे थे जिसे देख आगे जाने वाले सवार ने अपनी चाल कुछ कम की और साथी को देख कर कहा, "अगर गुव्वारा पहाडों

पर चला गया तो हम लोग उसे किसी तरह पकड़ न सकेंगे।" दूसरे सवार ने कहा, "यही तो मैं भी देख रहा हूं। गुब्वारे की चाल तेज होती जा रही है और मालूम होता है वह कुछ ऊपर की तरफ भी उठ रहा है। अब तक मैदान रहने के कारण हम लोग पीछा करते चले आये परन्तु अब पहाड़ो के बीच से होकर चलना मुश्किल होगा।"

अगले सवार ने अपना घोडा रोक दिया और दूरबीन से पुनः उस गुब्वारे को गौर से देखना शुरू किया जो उससे लगभग दो या तीन मील आगे और करीब पांच सौ गज की ऊंचाई पर था और सूर्य की सीधी किरणें पाकर अब स्पष्ट दिख रहा था। कुछ देर तक गौर से उसकी तरफ देखते रहने के बाद वह अपने साथी से बोला, "मै समझता हू अब उसका हाथ आना कठिन है फिर भी मैं पीछा करता हूं। तुम वापस जाओ और बड़े साहब को खबर करो कि हम लोगों ने गुब्वारे पर एक आदमी उड़ता जाता देखा है जो दक्षिण की तरफ से आ रहा था, संभव है कि वह रक्त-मंडल का वही आदमी हो जिसकी खबर आई है। उनसे यह भी कह देना कि वह नैपाल के पहाड़ों मे कहीं गिरेगा और बिना नैपाल सरकार की आज्ञा के अब हम लोग उसे नही पा सकते। वे नैपाल सरकार को इसकी खबर कर दें अथवा जो कुछ भी मुनासिब कार्रवाई करनी हो उसका इन्तजाम करें।"

दो चार मिनट तक आपस में कुछ बातें होती रही और तब एक सवार पीछे को लौटा तथा दूसरा पुनः आगे को बढ़ा। इस बीच में गुब्बारा कुछ और आगे निकल गया था फिर भी सवार ने हिम्मत न हारी और ऊबड़-खाबड़ जमीन पर होशियारी के साथ चलता हुआ अपने भरसक तेजी के साथ पुनः गुब्वारे के पीछे पीछे जाने लगा।

यकायक सवार के कानों मे बन्दूक छूटने की आवाज आई। उसके शिक्षा-प्राप्त कानों ने यह भी बता दिया कि यह राइफिल की आवाज है जो उससे लगभग मील भर दूर और कुछ ऊपर से आई है। उसने चौक कर अपनी दूरबीन आंखों से लगाई और उसी समय उसकी निगाह अपने

सामने की कोई तीन चार सौ गज ऊंची एक छोटी पहाडी पर गई। तेज दूरवीन ने पहाड़ी के सिरे पर बैठे एक औरत और एक मर्द को साफ दिखला दिया। औरत के हाथ में दूरवीन थी और मर्द के हाथ में एक राइफिल जिसके मुंह से निकला हुआ धूंआ ऊपर उठ अब लोप हो रहा था। बन्दूक की सीध पर गौर कर के उस सवार ने यह भी समझ लिया कि उसका लक्ष्य वही गुब्बारा है।

दात से होठ चबा कर गुस्से के साथ इस सवार ने कहा, "वेवकूफ आदमी, सरकारी कैदी पर गोली चलाता है!" मगर उसी समय पुनः गोली छूटी और इसके साथ ही वह गुब्बारा यकायक कई गज नीचे को उतर पड़ा। अव इस सवार की समझ में उस बन्दूक चलाने वाले का मतलव आ गया और वह कुछ खुश हो कर वोला, "उसने गुब्बारे में छेद कर दिया है, अव जरूर वह जमीन पर आ गिरेगा और मै उसके सवार को पा सकूंगा।" उसने अपने घोडे की चाल तेज की और गुब्बारे की तरफ वढ़ा मगर साथ ही साथ उसके मन में यह ख्याल भी चक्कर मारने लगा—"ये लोग कौन है? और गुब्बारे को गिराने से इनका क्या अभिप्राय है?"

गुब्बारे की गैस तेजी से निकल रही थी और वह क्षण क्षण में नीचे गिरता आ रहा था जिससे सवार की हिम्मत वढ़ती जा रही थी और वह घोड़े को डपेटता हुआ आगे वढ़ा जा रहा था। नीचे उतरने के साथ साथ हवा कम लगने से गुब्बारे की चाल में भी फर्क आ रहा था अर्थात् उसकी गति धीमी पड़ रही थी और अव यह सवार सहज ही में अपने और उस गुब्बारे के वीच के फासले को कायम ही नही रख सकता था वल्कि उसे कम भी कर सकता था, फिर भी इसमे शक नही कि अभी काफी दूर जाने वाद वह गुब्बारा जमीन पर आवेगा।

लगभग कोस भर और जाते जाते इस सवार और उस गुब्बारे का फासला वहुत कम हो गया। उसकी ऊंचाई भी वहुत कम हो गई और उम्मीद पाई जाने लगी कि कोस भर और जाते जाते वह जमीन पर

आ जायगा, मगर अव इस सवार को रास्ता तय करने में वेहद तकलीफ होने लगी क्योंकि मैदानियत का अन्त होकर पहाड़ी सिलसिला जारी हो रहा था और वड़े बड़े वीहड़ ढोको ने रास्ते को वेतरह रोकना शुरू कर दिया था, फिर भी वह सवार बड़ा होशियार और उसका घोड़ा खूब मजबूत था जो रास्ते की कठिनाइयों पर कुछ भी ध्यान न देता हुआ भरसक तेजी के साथ ही बढ़ा जा रहा था।

यकायक सवार के कानों में कुछ आवाई आई और साथ ही उसने देखा कि गुब्बारे का ऊपरी हिस्सा, शायद गैस निकलने की तेजी से, फट गया जिसके साथ ही उसकी मोटाई तेजी से पचक गई और वह जोर से नीचे की तरफ गिरा। सवार यह देख एक ऊंची जगह पर खडा हो गया और गौर से देखने लगा कि गुब्बारा कहा गिरता है। उसने देखा कि वहुत तेजी से नीचे आता हुआ वह गुब्बारा एक ऊंचे और वहुत वडे पेड पर जाकर गिरा और उसकी डालियों को तोडता तथा शाखों से उलझता हुआ कुछ नीचे को आकर रुक गया। सवार ने यह देख प्रसन्न हो घोडे को आगे वढ़ाया और सम्हालता हुआ पहाड़ी के ऊपर की तरफ ले चला क्योंकि वह पेड़ जिस पर गुब्बारा और उसका वेहोश सवार गिरा था सामनेकी पहाड़ीकी लगभग आधी ऊंचाई चढ़ कर था और वह पहाड़ी इतनी ऊवड़ खावड़ और ढोकों से भरी हुई थी कि उस पर घोड़ेपर सवारहोकर चढ़ना काम रखता था।

अभी मुश्किल से इस सवार ने अपने और उस गुब्बारे के वीच का आधा रास्ता तय किया होगा कि उसके कानो मे आदमियो के वोलने की आवाज आई और साथ ही उसी पहाड़ी के ऊपर की तरफ से उतरते हुए जिस पर नीचे से यह चढ़ रहा था दो घुड़सवार दिखाई पड़े जिनमे से एक मर्द और दूसरी ओरत थी। इन दोनो के नैपाली टागन वडे ही फुर्तीले और मजवूत-कदम थे और ये लोग वड़ी आसानी से पहाडी की ऊवड़ खावड़ जमीन को तय करते हुए चले आ रहे थे। हमारे इस पहिले सवार को कुछ भी सन्देह नही रह गया कि ये दोनों वे ही औरत और मर्द हैं

जिन्होंने इस गुब्बारे को गोली मार कर गिराया था, साथ ही वह यह भी सोचने लगा—"इन दोनों से मुझे इस गुब्बारे वाले को गिरफ्तार करने मे मदद मिलेगी या बाधा ?"

[४]

कामिनी देवी ने वह तस्वीर पुनः अपनी जगह छिपा दी और दूरबीन उठा कर उस बेहोश आदमी तथा उसके गुब्बारे को देखती हुई इस बात पर दिमाग दौडाने लगी कि देखें वह गुब्बारा कहा जाकर गिरता है। साथ ही यह खयाल भी उसके दिल को मसोसने लगा कि कही गुब्बारा इतनी जोर से न गिरे कि नगेन्द्रनरसिंह को कोई भयानक चोट आ जाय, शायद जख्मी और बेहोश तो वह हुई हैं।

यकायक उसकी निगाह नीचे के मैदान की तरफ चली गई जहां एक सवार को तेजी के साथ सरपट घोड़ा दौड़ाते आते देख वह चौक पड़ी। उसने अपने दूरबीन उसकी तरफ घुमाई और देखा कि वह एक फौजी अंगरेज है जिसकी पोशाक उसका कोई अफसर होना भी बता रही है। उसके मन में बिजली की तरह यह बात दौड़ गई—"कही नगेन्द्रनरसिंह को गिरफ्तार करने के लिये ही तो यह सवार नही आ रहा है !" क्योंकि यद्यपि उसने कभी देखा न था परन्तु अपने भाई से बहुत दफे नगेन्द्रनर-सिंह का नाम सुन चुकी थी और इस बात का भी कुछ आभास पा चुकी थी कि वह नैपाल के पड़ोसी देश भारत के खिलाफ कोई भयानक साजिश कर रहे है। वह बहुत दफे नरेन्द्र के मुंह से उनकी हिम्मत और बहादुरी की तारोफ सुन चुकी थी और यद्यपि आज के पहिले तक यह नहीं जानती थी कि वह नगेन्द्र जिसकी तारीफ करते हुए उसका भाई अघाता नही वह तस्वीर वाला नोजवान है जिसने उसका दिन चुराया हुआ है फिर भी इस बात को बखूबी समझती थी कि अगर नगेन्द्रनरसिंह एक बार अंगरेजी सरकार के आदमियो के हाथ में पड़ गए तो फिर उनकी जान की खैर नही। इस कारण वह बहुत गौर से उस सवार की

गति-विधि को देखने लगी और कुछ ही देर में उसे निश्चय हो गया कि उस सवार का लक्ष्य भी वह गुब्बारा ही है। उसका दिल उछलने लगा और वह इस चिन्ता में पड़ गई कि देखें वह सवार क्या करता है।

उसी समय नरेन्द्र दो घोड़े लिए, एक पर सवार और दूसरे की लगाम पकड़े, वहां आ पहुचा और घोड़े पर चढ़े ही चढ़े कामिनी से वोला, "डेरे पर से मैं कई आदमियों को मदद के लिए वुला आया हूं, तुम उनमें से एक के साथ खेमे में चली जाओ और वाकी को मेरी तरफ भेजो, मैं नगेन्द्र के पीछे जाता हूं।" पर कामिनी उसकी आवाज सुनते ही उठ कर खड़ी हो गई और वन्दूक को उसे देती मगर दूरवीन को अपनी वगल में लटकाती हुई वोली, "मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।" नरेन्द्र ताज्जुव से वोला, "हैं तुम घोड़े पर मेरे साथ चलोगी! तुमसे चला तो जाता ही नही है क्या गिर कर हाथ पैर तुड़वाने का इरादा है?" मगर कामिनी वोली, "तुम घवड़ाओ नही, मुझे सिर्फ एक वार सहारा दे कर वैठा दो फिर मैं गिरूंगी नही इसका जिम्मा मेरा!" नरेन्द्र ने पुनः कहा, "नही नही वहिन जिद न करो, जगल पहाड़ का वास्ता, ऊबड़ खावड़ रास्ता, नदी नाला खोह दर्रा डांकते कूदते गुब्बारे का पीछा करना पड़ेगा, तुम कहां आफत में पड़ने जाती हो?" मगर कामिनी ने एक न सुनी और लाचार नरेन्द्र को सहारा देकर उसे घोड़े पर चढ़ाना ही पड़ा, मगर जव कामिनी घोड़े पर जम कर वैठ गई और घोड़ा आगे वढ़ा कर उसके घोड़े के साथ हो गई तो यह देख नरेन्द्र को कुछ सन्तोप हुआ कि उसकी रानें अभी भी मजवूत हैं और हाथ तेज से तेज और मुंहजोर घोड़े को भी वस में करने वाली पुरानी होशियारी को भूले नही है। इस समय कामिनीदेवी के चेहरे पर एक हलका गुलावी रंग आया हुआ था और उसकी आंखों से सदा प्रगट होती रहने वाली कमजोरी और उदासीनता न जाने कहां काफूर हो गई थी। नरेन्द्र ने इसे क्षणिक उत्साह के कारण उत्पन्न समझा मगर फिर भी उसको कुछ सन्तोष इस वात का हुआ कि उसकी

वहिन किसी काम मे दिलचस्पी तो लेने लगी है। अवोध युवक, तू क्या जाने कि कामिनी को इस प्रकार अचानक फुर्तीली वना देने वाली शक्ति कौन सी है ?

दोनों जहां तक सम्भव हुआ तेजी के साथ पहाडी के नीचे का रुख किए हुए उसी तरफ चले जिधर वह गुब्बारा जा रहा था। उस समय नरेन्द्रसिंह की भी निगाह उस सवार पर पड़ी और उसने उसकी तरफ हाथ उठ कर कहा, "वह क्या कोई सवार नीचे मैदान में जा रहा है ?" कामिनी ने जवाव दिया, "हां अंगरेजी फौज का कोई अफसर है और वड़ी दूर से उनका पीछा करता चला आ रहा है।" दोनो की निगाहें आपस मे मिल गईं। जुवानों ने कुछ न कहा परन्तु दिलो ने वात कर ली और एक दूसरे से कह दिया कि यह वहुत वुरी वला है जो मुश्किल से दूर होगी।

इस विचार से कि ऊवड खावड़ पहाड़ी रास्ते पर से तेज जाने मे कामिनी को कष्ट होगा नरेन्द्र अपने घोडे को धीरे धीरे ले जा रहा था परन्तु कामिनी को यह सुस्ती नापसन्द थी। उसका विचार था कि उस अंगरेज सवार के पहुचने के पहिले ही पास पहुंच कर गुब्बारे पर कब्जा कर ले, अस्तु कुछ ही देर के वाद उसने अपने घोड़े को आगे वढाया और रास्ते की कठिनाइयो पर कुछ भी ध्यान न दे तेजी से जाने लगी। नरेन्द्र ने यह देख आवाज दी, "कामिनी, होशियार ! तेज जाने का रास्ता नही है !!" मगर उसने सिर्फ पीछे को हाथ कर साथ आने का इशारा किया और घोडे को और तेज किया। लाचार नरेन्द्र को भी अपने घोड़े को एड लगानी पडी मगर उसने अपने दिल मे कहा, "जरूर कामिनी की शामत आई है, ऐसी कमजोर हालत, ऐसा खतरनाक रास्ता, और इतना तेज सफर !" मगर उसका डर व्यर्थ था। कामिनी के वदन मे इस वक्त पुनः लाल खून तेजी से चक्कर मारने लगा था और उसकी कमजोरी और वेवसी न जाने कहां गायव हो गई थी। थोडी ही देर मे वे लोग गुब्बारे और उसके सवार के वहुत करीव जा पहुचे।

यकायक एक आवाज के साथ गुब्बारे का ऊपरी हिस्सा फट गया और वह तेजी के साथ नीचे को गिरा। कामिनी के मुंह से चीख निकल पड़ी मगर उसने अपने होठों को दांतो से दवा कर जवर्दस्ती उसे रोका तथा घोडा और तेज किया। नरेन्द्र भी अब आगे वढ़ कर साथ हो गया और दोनों घोडे अपनी पूरी तेजी के साथ आगे दौड़े। वात की वात में बीच का फासला तय हो गया और एक तरफ से वह अंगरेज अफसर और दूसरी तरफ से ये दोनों एक साथ एक ही वक्त उस बड़े पेड़ के नीचे पहुचें जिसके ऊपर वह गुब्बारा गिरा था।

कामिनी और नरेन्द्र की वेचैन निगाहें ऊपर को उठी। उन्हें गुमान था कि शायद नगेन्द्रनरसिंह की कुचली टूटी लाश देखने को मिलेगी मगर नही, उस वड़े पेड़ की डालियों ने गुब्बारे की रस्सियों को उलझा कर उसे ऊपर ही रोक लिया था और नगेन्द्र एक दम अधर में वेलाग लटकता हुआ वाल वाल बच गया था। नरेन्द्र के गले से सन्तोष की सास निकली और वह घोड़े से कूद पड़ा। कामिनी भी नीचे उतरी और दोनों में सलाह होने लगी कि अव क्या करना चाहिये।

अभी ये लोग कुछ निश्चय नही कर पाये थे कि वह फौजी जवान घूम कर इनके सामने आ गया और कुछ घमण्ड भरी आवाज में अकडता हुआ वोला, "शायद तुम लोग सोचते हो कि यह कौन आदमी है इससे मैं बतला देना चाहता हूं कि यह एक खौफनाक वागी है जिसकी तलाश हमारी सरकार वहुत दिनों से कर रही थी और जिसे गिरफ्तार कर के ले जाने के लिए मैं वहुत दूर से साथ साथ आ रहा हूं।"

इस उद्धत अफसर की वात का ढंग कुछ ऐसा था कि गर्ममिजाज नरेन्द्र के दिमाग का पारा तुरत चढ़ गया और वह कुछ कड़े स्वर में वोला, "अफसर, शायद तुम यही समझ रहे हो कि अभी तक भारत में हो पर जान लो कि तुम नैपाल राज्य में हो और तुम्हारे सामने यहां की फौज का मातहत सिपहसालार मौजूद है जो भारतीय फौजो का आनरेरी मेजर

जेनरल भी है।" कहते हुए नरेन्द्र ने अपनी फौजी पोशाक में लगे हुए एक फीते की तरफ उंगली उठाई।

नरेन्द्र की बात सुन और खास कर उस फीते को देख कर उस अंगरेज का दिमाग कुछ ठंढा हुआ, थोड़ी कुरुखी के साथ उसने नरेन्द्र को फौजी सलाम किया और तब ऐसे स्वर मे जिसमे से अकड़ अभी तक निकली न थी कहा, "मैं ब्रिटिश फौज का कर्नल हूं। मेरा नाम कासग्रेव है। मैं (ऊपर की तरफ उंगली उठा कर) इसे गिरफ्तार करने के लिए आया हू, मुझे मदद मिलनी चाहिये ताकि मैं इस बागी को लेकर अभी ही वापस भी लौट जा सकूं।"

नरेन्द्र ने अपना हाथ आगे बढ़ा कर कहा, "तुम्हारा पासपोर्ट ?" अंगरेज का चेहरा कुछ उतर गया। वह अच्छी तरह जानता था कि इधर नैपाल सरकार का सख्त हुक्म हो गया है कि विना पासपोर्ट लिये और हमेशा अपने साथ रक्खे हुए एक भी भारतीय चाहे वह कोई भी क्यो न हो नैपाल सीमा के अन्दर पैर न रक्खे और न कोई विदेशी विना उसे साथ रक्खे कही आवे जाए। इसके लिये तिब्बत भूटान भारत तथा नैपाल की सरकारों मे वहुत कुछ लिखा पढ़ी भी हो चुकी मगर नैपाल सरकार अपनी वात पर अड़ी हुई थी, और इस समय अपने गोरे चमड़े के घमंड मे वह विना पासपोर्ट साथ लेने का तरद्दुद उठाए नैपाल सीमा ही नही डांक आया था वल्कि पचीसो मील भीतर भी घुस आया था। यही सोच उसका मुंह कुछ उतर गया फिर भी वह ऐंठ के साथ वोला, 'मैं रेजी-डेन्सी का एक अफसर हूं, मुझे पासपोर्ट की जरूरत नही है और न मेरे पास वह मौजूद ही है।

नरेन्द्र ने तन कर कहा,"अगर और कोई ऐसी वात कहता तो शायद यह समझ कर कि उसे नियमो का पता नही है मैं उसे माफ भी करता मगर तुम जव अपने को रेजीडेन्सी का अफसर वताते हो तो तुम्हारा यह अपराध अक्षम्य हो जाता है। मैं समझता हूं कि तुम झूठ वोल रहे हो।

जब तक इस मामले की पूरी जांच न हो ले तब तक के लिए तुम अपने को हिरासत में समझो। मैंने तुम्हें गिरफ्तार किया, जाओ वहां पेड़ के नीचे खड़े हो जाओ, अपने हथियार मुझे दे दो।" कह कर नरेन्द्रसिंह ने अपना हाथ पुनः आगे बढ़ाया।

उस अफसर का चेहरा नरेन्द्र की बात सुन कर लाल हो गया। उसने गुस्से से कहा, "क्या तुमको यह मजाल है कि एक अंगरेज अफसर के हथियार रखवा लो?"

कड़क कर नरेन्द्र ने कहा, "जरूर है!" साथ ही उसने अपनी पिस्तौल कमरपेटी से निकाल ली और उस अफसर के सिर का निशान लगा कर उसी कड़े स्वर में पुनः बोला, "तुमने नैपाल राज्य की फौज के सहायक सिपहसालार के हुक्म की उदूली की है, खबरदार अगर जरा भी जुम्बिश खाई तो मैं गोली मार दूंगा!"

नरेन्द्रसिंह के लहजे में ऐसी दृढ़ता और कड़ाई थी कि उस अफसर का हाथ उसकी कमर तक जाता जाता रुक गया। वह इस बात को बखूबी जानता था कि इस समय रक्त-मंडल की काली करतूतों के कारण नैपाल मे भी बड़ी तंदेही थी और उसने पासपोर्ट साथ न रख कर केवल नियम-भंग ही नहीं किया था बल्कि अगर नरेन्द्र सचमुच नैपाल का मातहत सिपहसालार और भारतीय फौज का आनरेरी मेजर जनरल भी है (जिसके विषय में वे फीते कोई संदेह नही रहने देते थे) तो उसका हुक्म न मान कर उसने फौजी कानून के खिलाफ काम किया है जिसके लिए उसका कोर्ट-मार्शल हो सकता है। यह सब सोचता हुआ कुछ देर के लिए वह रुका मगर साथ ही उसके विचारो का ढंग पलटा। एक हिन्दुस्तानी काले आदमी के हाथों अपना हथियार रखवा लिया जाना उससे बर्दाश्त न हो सका और उसने "ओह, फजूल की बकवाद मत करो?" कह कर अपने कमर से लटकती हुई पिस्तौल पर हाथ डाला।

शायद उसे ख्याल था कि एक नेपाली एक अंगरेज की इतनी बेइज्जती नहीं कर सकता, शायद उसने यह भी सोचा हो कि यह नेपाली इतनी

जुर्रत नही करेगा कि मुझ पर गोली चलावे, मगर जो कुछ भी हो उसने अपनी पिस्तौल के मुट्ठे पर हाथ रक्खा तो सही पर अफसोस कि उसे बाहर निकाल न सका क्योंकि नरेन्द्र ने फायर कर दिया। उसे ऐसा जान पड़ा मानो उसके हाथ मे किसी ने जलता हुआ लोहे का छड़ घुसेड़ दिया हो, नरेन्द्र की गोली उसकी कलाई के पार हो गई थी। उसके मुंह से एक चीख निकली मगर उसने हिम्मत के साथ उसे रोका और दूसरे हाथ से जख्मी हाथ को पकड़ कर जमीन पर बैठ गया।

नरेन्द्र ने फिर कड़क कर कहा, "हुक्म-उदूली का मजा पाया!" और तब कामिनी से कहा, "बहिन, आगे बढ़ कर इसके हथियार ले लो!" तुरत आगे बढ़ कामिनी ने उस अफसर की पेटी खोल ली जिसमे तलवार और पिस्तौल थी और ला कर नरेन्द्र को दे दी। नरेन्द्र ने उसे अपने घोड़े की पीठ पर फेंकते हुए फिर कडी आवाज मे उस अंगरेज से कहा, "जा और उस पेड के नीचे खडा हो!"

उस अंगरेज ने लाल आंखें कर नरेन्द्र की तरफ देखा मगर नरेन्द्र की आंखों से इस वक्त खून टपक रहा था। उसने फिर जोर से कहा, "अगर नही मानता है तो अबकी तेरा पैर तोड़ दूंगा!"

अब उसको यह हिम्मत न रही कि नरेन्द्र का हुक्म मानने से इनकार करे। मन ही मन उससे कभी अच्छी तरह बदला लेने की बातें सोचता हुआ वह तकलीफ के साथ उठा और जिस पेड़ की तरफ नरेन्द्र ने बताया था वहां जाकर खड़ा हो गया।

नरेन्द्र ने अपनी पिस्तौल कमर मे रख ली और कामिनी की तरफ देखा। कामिनी ने धीरे से कहा, "भैया, यह तुमने अच्छा नही किया!"

नरेन्द्र ने मुस्कुराते हुए पूछा, "क्यों!" कामिनी बोली, "एक अंगरेज पर तुमने गोली चलाई है, लाख हो फिर भी अंगरेज ही है। अंगरेज सरकार अपनी इज्जत का खयाल करेगी और तुम्हारी सरकार पर इतना दबाव डालेगी कि ताज्जुब नही कि तुम्हें........"

नरेन्द्र ने लापरवाही से कहा, "मैंने जो कुछ किया है अपने हक के

भीतर किया है और उसने मुनासिव सजा पाई है, फिर भी मैं यह अन्तिम कार्रवाई न करता अगर यह जानता कि इस समय नगेन्द्र को वचाने की कोई दूसरी तरकीव हो सकती है। अगर यह लौट कर अपने अफसरों से नरेन्द्र के हम लोगों के हाथ पड़ने का हाल कह देगा तो फिर हम लोग लाख कोशिश करने पर भी उसे किसी तरह वचा न सकेंगे क्योंकि हमारे महाराज ने रक्त-मंडल के मुकावले मे भारत सरकार की मदद करने की प्रतिज्ञा की है। अव तो यह अपने हाथ मे है, जब तक चाहेंगे, दो चार पांच रोज तक भी, यह वात किसी को मालूम नही होगी कि नगेन्द्र को हम लोगों ने पाया है। (इधर उधर देख कर) मगर अव फजूल की देर हो रही है, हमारे आदमी अभी तक क्यों नहीं आए ? ओह, वह आ रहे है !"

थोड़ी ही देर मे वे कई आदमी उस जगह आ पहुंचे जिन्हें नरेन्द्र अपनी मदद के लिये बुला आया था। हट्टे कट्टे गठीले कई गोरखे नरेन्द्र की आज्ञा पा उस पेड़ पर चढ़ गए और नगेन्द्रनरसिंह को उतारने की चेष्टा करने लगे तथा दो आदमी उसके हुक्म के मुताविक उस अंगरेज को कैदी की तरह लिये अपने खेमों की तरफ चले गये।

कुछ ही देर की कोशिश और मेहनत के वाद नगेन्द्रनरसिंह उतार कर जमीन पर लेटा दिए गए। कामिनी झपट कर उनके पास पहुची और उनका सिर गोद मे लेकर वैठती हुई अश्रुपूर्ण नेत्रो से नरेन्द्र से बोली, "पहिले देखो इनमे जान भी है या नही ?" क्योंकि नरेन्द्र की पौशाक खून से तर थी, उनका बदन एक दम ठंढा हो रहा था, और चेहरा मुर्दो की तरह पीला हो गया था। मगर इसी वीच मे नरेन्द्र जो वड़े गौर से उनके अंगप्रत्यंग की जांच कर रहा था खुशी से बोल उठा, "है है, जान है, मरे नही है मगर वहुत सख्त जख्मी हो गये है ! यह देखो यहाँ पर चोट लगी है। मगर अव ज्यादा देर न कर इन्हें यहा से उठा ले चलना चाहिये।"

नरेन्द्र के हुक्म से बात की वात में उसके आदमियों ने पेड़ों की

डालियां काट कूट कर एक डोली सी बनाई और बेहोश नगेन्द्र को उस पर लाद के डेरे की तरफ चले। पीछे पीछे कामिनी और नरेन्द्र जाने लगे।

घन्टे भर से कुछ ही अधिक देर मे ये लोग अपने ठिकाने पहुच गए। कामिनी की इच्छा से बेहोश नगेन्द्रनरसिंह खास उसके खेमे में उसी के पलग पर लेटा दिए गए। एक आदमी किसी होशियार जर्राह या डाक्टर को बुलाने के लिए काठमान्डू दौड़ाया गया। उनकी खून से तर पोशाक उतार कर दूसरी पहिनाई गई। घाव धोकर साफ किया गया और उन्हें होश में लाने की कोशिश की जाने लगी। एक कविराजजी नरेन्द्र के साथ थे, जिन्होने कुछ ताकत की दवा भी उनके मुंह में डाली।

लगभग एक घंटे की कोशिश के बाद नगेन्द्र की बेहोशी कुछ दूर होती मालूम पडी। उन्होंने अपने हाथ पांव हिलाए और उनके मुंह से तकलीफ भरी एक सास निकली। पलकें दो चार बार हिली और तब एक बार आंखें खोल कर उन्होने अपने चारो तरफ देखा।

उनके सिर्हाने बैठी बल्कि उनके सिर को अपनी जांघ पर लिये अपनी बार बार डबडबा आने वाली आंखों को आंसू गिराने से बहुत ही कोशिश के साथ रोकती हुई कामिनी के दिल से प्रसन्नता की एक आह निकली और उसने कृतज्ञता भरी दृष्टि आकाश की ओर उठा कर भगवान को धन्यवाद दिया। इसके बाद अपने मुलायम हाथों को नगेन्द्र के माथे पर प्यार के साथ फेरती हुई वह बोली, "कहिये अब तबीयत कैसी है?"

नगेन्द्र ने अपनी आंखें चारो तरफ घुमाई। ऐसा जान पडता था मानो आंखें खुली रहने पर भी उनमें अभी देखने की शक्ति लौटी नही है। इसके बाद कुछ अस्पष्ट स्वर मे उन्होने पूछा, "मैं कहा हू?"

नरेन्द्र ने यह सुन जवाब दिया, "दोस्तों में, भाई नगेन्द्र, क्या तुम नरेन्द्र को भूल गये!"

"नरेन्द्र! नरेन्द्र! कौन नरेन्द्र?" कह के नगेन्द्र ने गौर से नरेन्द्र

की तरफ देखा। यकायक उनका चक्कर खाता हुआ दिमाग ठिकाने आ गया। नरेन्द्र को पहिचान वे खुशी भरी आवाज में बोले, "नरेन्द्र, अरे तुम!" उन्होने अपने हाथ नरेन्द्र की तरफ बढ़ाए और उठने की कोशिश की मगर उठ न सके, कमजोरी इतनी थी कि जरा सर उठाते ही चक्कर आने लगा और वे फिर कामिनी की गोद में गिर गए। थोड़ी देर के लिये उन्हें पुनः गश आ गया। कामिनी के पास ही पानी का बरतन और गीला कपड़ा रक्खा था जिससे वह उनका सिर पुनः तर करने लगी, नरेन्द्र हवा करने लगा।

दस मिनट के बाद नगेन्द्रनरसिंह ने पुनः होश में आकर आंखें खोल दीं और इस बार सिर घुमा कर अपने चारो तरफ अच्छी तरह देखा। यकायक कामिनी से उनकी चार आंखें हुईं। वे चौक पड़े। एक कंपकंपी सी उनकी देह में आ गई। मानो अपनी आखो पर यकीन नही है, इस तरह पर उन्होने फिर उनकी तरफ देखा और तब कुछ देर के लिये इस तरह आंखें बन्द कर ली जैसे कुछ याद कर रहे हो।

"कही फिर गश तो नही आ गया" सोचते हुए नरेन्द्रसिंह ने कहा, "भाई नगेन्द्र, अब तबीयत कैसी है?"

नगेन्द्र ने आखें बन्द किए किए ही पूछा, "मै कहा पर हू? तुमने मुझे कैसे पाया?"

नरेन्द्र ने कहा, "तुम काठमाण्डू से बीस कोस दक्खिन गोना पहाड़ी पर मेरे खेमे में हो, तुम्हें एक गुब्बारे पर बेहोश उड़े जाते हम लोगों ने देखा और उतार कर यहां ले आए।"

नगेन्द्र ने अपना कांपता हुआ हाथ अपने माथे पर फेरा और सिर को दबाता हुआ बोला, "गुब्बारे पर? हां ठीक है, मुझे ख्याल आ गया।" कह कर उन्होने पुनः आंखे खोल दी। कामिनी से फिर उनकी आंखे चार हुईं जो अपने बड़े बड़े नेत्रों को एकटक उनके चेहरे पर जमाए हुई थी। यकायक एक बिजली सी नगेन्द्र की आंखो में चमक गई। उन्होने कामिनी को पहिचान लिया, और कामिनी भी जान गई कि नगेन्द्र ने उसे पहिचान

लिया। दोनों की आंखें वन्द हो गईं। न जाने क्यो दोनों ही का चेहरा लाल हो आया।

नरेन्द्र बोला,"अब तबीयत कैसी है?" नगेन्द्र ने जवाब दिया, "अच्छी है, मगर न जाने क्यों कमजोरी वहुत मालूम पड़ती है।" नरेन्द्र ने कहा, "जख्म से वहुत खून निकल जाने के कारण ऐसा हुआ है।"

नगेन्द्र ने सिर हिला कर कहा, "ठीक है, मुझे आसमान मे जाते हुए एक हवाई जहाज का वहुत कड़ा धक्का लगा जिससे मैं वेहोश हो गया।"

नरेन्द्र ने पूछा, "आखिर यह सब हुआ क्या? तुम कैसे....?" मगर उसी समय कामिनी ने कडी आंख उस पर डाल कर उंगली के इशारे से उसे मना किया। वह समझ गया और वात घुमा कर बोला—"तुम कैसे और क्यो यहा तक आए यह सव हाल पीछे पूछूंगा। इस समय ज्यादा वात करने की जरूरत नही है। डाक्टर वुलाने आदमी गया है। दो घन्टे के भीतर वह आ पहुचेगा तो तुम्हारे जख्म की जाच करके मुनासिव इन्तजाम करेगा। तुम अव आराम करो।"

कामिनी ने कुछ इशारा किया जिसका मतलव समझ कर नरेन्द्र खेमे के वाहर निकल गया जहां रसोइया कामिनी के हुक्म के मुताविक तीतर का शोरवा तैयार कर चुका था। नरेन्द्र ने कटोरा उसके हाथ से ले लिया और खेमें मे वापस लौट आया। कटोरा अपने हाथ में लेकर कामिनी ने कहा, "लीजिये इसे पी लीजिए, कुछ ताकत आवेगी।"

नगेन्द्र ने आखे खोली। पुन: कामिनी से चार आखें हुईं। वडी कोशिश से इस वार कामिनी ने अपनी आखों को नीचा होने से रोका और निगाह भर कर नगेन्द्र के मुरझाये हुए चेहरे को देखा जिसकी आंखें इस समय उसके ऊपर इस तरह पड़ रही थी मानों महीनो का भूखा सामने भोजन की थाली देख रहा हो। कामिनी के हाथ का कटोरा देख उसने अपना मुंह खोल दिया और कामिनी ने चिम्मच से थोडा थोडा शोरवा उसके मुंह मे देना शुरू किया।

शोरवा पी कर नगेन्द्र के वदन में कुछ ताकत आई और वह उठने की कोशिश करने लगा मगर नरेन्द्र ने मना कर के कहा, "नहीं, अब तुम आराम से चुपचाप पड़ जाओ और जरा सोने की कोशिश करो, नीद आ जाने से तवीयत हलकी हो जायगी।" उसका इशारा पा कर कामिनी ने धीरे से नगेन्द्र का सिर तकिया पर कर दिया और आप उठ कर अलग हो गई। हलका ओढ़ना नगेन्द्र के वदन पर डाल दिया गया और तब खेमे के दर्वाजों का पर्दा गिरा कर दोनों व्यक्ति बाहर निकल आये। सिर्फ एक दाई दर्वाजे के पास बैठी रह गई और खेमे के चारो कोनो पर वे चार सिपाही रह गये जिन्हें नगेन्द्र के यहाँ पहुंचते ही नरेन्द्र ने पहरे के लिए मुकर्रर कर दिया था। कामिनी को लिए नरेन्द्र बाहर आया और बोला, "एकान्त होने से जरूर नींद आ जायगी, तब से चलो उस अंगरेज को देख आवें कि उसका क्या हाल है।" कामिनी ने कहा, "अच्छी बात है, चलो।"

ताज्जुब की बात थी कि चारो तरफ खोज आने पर भी उस फौजी नौजवान का कही पता न लगा और दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि वे दोनों आदमी भी अभी तक वहा नही पहुंचे जिनके साथ वह भेजा गया था। चारो तरफ खोज ढूंढ़ मची, मगर न तो उस अफसर का पता लगा और न नरेन्द्र के दोनो नौकर ही दिखाई पडे। नरेन्द्र के हुक्म से दो सवार चारो तरफ दूर तक घूम के उनकी तलाश भी कर आए मगर उन तीनों का कुछ भी पता न लगा और नरेन्द्र गहरे तरद्दुद मे पड़ गया कि वे तीनो आखिर गए तो कहा गए।

[५]

नरेन्द्र की दौड़ धूप, कामिनी की सुश्रूषा, और होशियार डाक्टर की मेहनत नगेन्द्रनरसिंह को शीघ्र शीघ्र आरोग्यता की ओर लाने लगी। पाच ही छ: दिन के बाद वे इस लायक हो गये कि खेमे के बाहर निकल कर कुछ दूर तक टहल सकें।

पहाडी के उसी हिस्से पर जहा से कामिनी और नरेन्द्र ने बेहोश नरेन्द्र को गुब्बारे पर उडे जाते देखा था, एक दिन संध्या के समय कामिनी को नगेन्द्र के साथ बैठे हम देख रहे हैं। कामिनी का मुलायम पंजा नगेन्द्र के हाथों मे है और उसकी आखें जमीन की तरफ। नगेन्द्र की निगाहें एकटक उसके चेहरे की तरफ है जो इस समय किसी उत्तेजना के कारण लाल हो आया है। दोनों चुपचाप हैं।

कुछ देर वाद नगेन्द्र ने कहा,"तव क्या मैं समझ लूं कि मेरी किस्मत खोटी है और मैं तुम्हारे प्रेम का पात्र किसी प्रकार भी नही वन सकता ?"

कामिनी की आखें उठी और एक वार नगेन्द्र के चेहरे पर पड़ फिर नीचे को झुक गईं। उसने कुछ कहने की चेष्टा की पर मुंह से वात निकल न सकी, हां उसके शरीर मे एक हलकी कंपकंपी सी जरूर आ गई। नगेन्द्र ने पुनः कहना शुरू किया, "कामिनी, मैं तव से तुम्हारे प्रेम का भिखारी हू जव आज से वहुत पहिले तुम्हें लूटने के विचार से तुम्हारे डिव्वे मे घुसा था। अफसोस, उस समय मुझे जरा भी नहीं मालूम था कि तुम मुझसे भी वढ़ कर डाकू निकलोगी और मेरा सर्वस्व, मेरा दिल ही लूट लोगी !"

कामिनी के होठों पर एक हंसी दौड़ गई मगर उसका लज्जावनत सिर और भी नीचे को झुक गया। नगेन्द्र उत्तेजना के साथ वोला, "निराशा के साथ लडता हुआ अव तक मैं किसी तरह सब्र करता आया परन्तु अव तुम्हारी मोहनी सूरत सामने देख कर मुझसे और सब्र नही होता। मैं अव अपनी किस्मत का फैसला ही कर डालना चाहता हूं। तुम अपना सिर उठाओ और एक वार मेरी तरफ देख कर कह दो कि क्या तुम मुझे कुछ भी प्यार करती हो। प्यार न करती हो तो न सही क्या भविष्य मे कभी कर सकोगी ? या मै इसकी भी आशा न करूं ? मैं तुमसे कोई वात छिपाना नहीं चाहता, इसी से साफ साफ कहे देता हूँ कि मैं वडा ही खराव आदमी हूं। मैं चोर रहा, डाकू रहा, खूनी

रहा, और आजकल अंग्रेजी सरकार का सब से बड़ा बागी और हिन्दुस्तान का मुख्य क्रान्तिकारी भी बन बैठा हूं। यह भी समझ रक्खो कि मेरी जान का कुछ भरोसा नही है और न जाने कब मै सूली पर दिखाई पड़ ...!"

यकायक नाजुक-दिल कामिनी का बदन कांप गया और उसने डरी हुई आखें नगेन्द्र की तरफ उठाई। नगेन्द्र के हाथों मे पड़े हुए उसके हाथ कांप गए। गौर से देखने वाला कह सकता था कि उसका चेहरा एक सायत के लिये पीला हो गया। मगर नगेन्द्र इन सब बातों का दूसरा ही मतलब समझ कर बोला, "मै इसलिए साफ साफ कहे देता हूं कि पीछे तुम्हें यह कहने का मौका न मिले कि मैने अपने ऐबों को छिपा कर तुम्हे धोखे में डाला। मगर तुम्हारा चेहरा कह रहा है कि इन सब बातों से, खून खराबा दगा फरेब मार काट से, तुम्हें नफरत है। ऐसी हालत में मेरा कुछ भी आशा करना वृथा है। खैर तो लो अब मै कभी तुम्हें इस विषय मे कुछ न कहूगा। मेरे दिल मे जो गुबार भरा था वह मैंने निकाल लिया। मै समझ गया कि तुम्हें मुझसे नफरत है। अब मै जाकर एक बारगो ही अपनी किस्मत का फैसला कर डालूगा!" कहता हुआ वह उठने लगा।

अब कामिनी अपने दिल को रोक न सकी। अब तक बड़ी मुश्किल से जिस बांध के भीतर वह अपने दिल को रोके हुई थी वह टूट गया। उसने उद्वेग भरे स्वर मे कुछ कहना चाहा मगर—"नगेन्द्र...! नगेन्द्र...!!" सिर्फ इस प्यारे नाम के सिवाय उसके रुंधे हुए कंठ से और कुछ न निकल सका।

परन्तु जो कुछ निकला वही उसके हृदय की व्यथा को प्रगट कर देने को काफी था। नगेन्द्र के मुरझाए हुए दिल पर आशा का मानो अमृत बरस गया। वह पुन: बैठ गया और कामिनी की आगे बढ़ी हुई बांहों को उसने अपने गले मे डाल लिया।

जुबानें चुप थी, मगर पास पास धडकते हुए दिल बातें कर रहे थे। आंखें बन्द थी, मगर मन एक दूसरे की मोहिनी सूरत देख रहे थे। वार वार आ जाने वाली कंपकंपी आशा उत्कंठा और उद्वेग का संदेशा ला और ले जा रही थी।

न जाने कब तक दोनो की यही हालत रहती अगर एक तेज सीटी की आवाज दोनो को चौका न देती। चमक कर दोनो इधर उधर देखने लगे। पुनः वही आवाज आई और इस वार ऐसा जान पडा मानों कोई खास इशारे के साथ सीटी वजा रहा है। नगेन्द्र यह आवाज सुनते ही चिहुंक गया और जरा देर गौर करने के वाद उसने भी अपनी जेव से सीटी निकाली और कुछ खास ढग पर वजाई। इसके साथ ही उसने कुछ दूर की झाडियो मे से निकलते हुए एक आदमी को देखा जिसने उसकी ओर देख अपना हाथ उठा कर उंगलियो से कोई खास इशारा किया जिस पर नगेन्द्र ने उसे पास आने का इशारा किया।

वात की वात मे वह आदमी पास आ पहुचा और नगेन्द्रनरसिंह को फौजी सलाम कर अपने दाहिने हाथ की तीन उंगलिया वाएं हाथ की हथेली पर एक खास ढंग से रक्खी। नगेन्द्र ने भी कुछ इशारा किया जिसके जवाव मे उस आदमी ने पुनः कुछ इशारा किया। हाथ उंगलियो पलकों और होठो के सहारे दोनो में कुछ वातें होने लगी।

कामिनी ताज्जुव के साथ इस इशारेवाजी को देख रही थी। इतना तो वह समझ गई कि यह नया आने वाला आदमी नगेन्द्रनरसिंह का कोई जासूस अथवा 'रक्त-मडल' का आदमी है मगर उन दोनो मे क्या वातचीत हो रही है इसे वह विलकुल समझ न सकी। आखिर जव नगेन्द्रनरसिंह के एक इशारे के जवाव मे वह फौजी सलाम करके चला गया तो कामिनी ने नगेन्द्र का हाथ पकड के पूछा, "यह कौन आदमी था और किस लिए आया था!"

नगेन्द्र मुस्कुरा कर वोला, "यह मेरा जासूस था, कहता था कि

नैपाल सरकार के दो सौ सिपाहियों ने अभी अभी आकर तुम्हारे भाई का डेरा घेर लिया है।

कामिनी चौक कर बोली, "अरे, ऐसा! तब क्या होगा? वह फौज किस लिए आई है?"

नगेन्द्र०। (हंस कर) मुझे पकड़ने।

कामिनी का चेहरा पीला हो गया। डर से कांपती हुई वह बोली, "तब फिर? तुम तो इतने कमजोर हो कि भाग भी नही सकते।"

नगेन्द्र कुछ गम्भीर होकर बोला, "अगर तुम एक काम करो तो मैं बच सकता हूँ।"

कामिनी जल्दी से बोली, "बोलो बोलो, मै तुम्हारे लिए सब कुछ करने को तैयार हू।"

नगेन्द्र ने कामिनी के कान के पास मुह ले जा कर कहा, "मुझसे विवाह करने की प्रतिज्ञा कर दो तो मैं अपने को बचा सकता हूं।"

कामिनी का चेहरा लज्जा से लाल हो गया और वह सिर झुका कर बोली, "मसखरापन रहने दो और अपनी जान बचाने की फिक्र करो!" नगेन्द्र बोला, "मै हंसी नही करता, ठीक कह रहा हूँ। अगर तुम मुझसे विवाह करने की प्रतिज्ञा करो तब तो मै वह देखो उस घोडे पर चढ़ के निकल जा सकता हू जो मेरा आदमी ला रहा है, और नही तो तुम्हारी सरकार के इन्ही आदमियों के हाथ पड अपनी जिन्दगी का खातमा करता हू क्योंकि इसमे तो कोई शक ही नही हो सकता कि ये लोग मुझे पकड कर अंगरेजी सरकार के हवाले कर देंगे जो फौरन मुझे फांसी लटका देगी।"

कामिनी ने उधर देखा जिधर नगेन्द्र ने हाथ का इशारा किया था। देखा कि वही आदमी जो अभी थोड़ी देर पहिले नगेन्द्र से बात कर रहा था, दो घोडो की लगाम पकड़े चला आ रहा है। वह बोली, "क्या तुम घोडे पर चढ सकोगे?" नगेन्द्र ने जवाब दिया, "हां, मगर जो मैने पूछा

उसका ठीक ठीक जवाब पा कर ही !"

शर्म ने कामिनी की जबान बन्द कर दी मगर नगेन्द्र ऐसा सुन्दर मौका चूक जाने वाला आदमी न था। उसने उतावलापन दिखाते हुए कहा, "जल्दी बताओ, जितनी देर करोगी उतना ही मुझे गिरफ्तार करने वाले मेरे पास आते जायंगे।"

कामिनी डर कर बोली, "अच्छा मैं वचन देती हू, मगर यह भयानक काम.... ...।"

यह कहती हुई वह उठ खड़ी हुई। नगेन्द्र भी खडा हो गया और बोला, "कौन भयानक काम?" कामिनी ने जवाब दिया, "रक्त-मंडल वाला। उसको तुम्हें छोड़ देना .!"

नगेन्द्र ने उसे अपने कलेजे से लगाते हुए कहा, "डरपोक औरत !!"

दोनो कुछ सायत तक एक दूसरे से चिपके रहे, इसके बाद अलग हो कर नगेन्द्र ने कामिनी से कहा, "आज से ठीक एक महीने बाद, आज ही के दिन और इसी वक्त, तुम यहा पर आना, मैं तुमसे मिलूगा।" कामिनी ने सिर हिला कर "अच्छा" कहा।

घोडे लिए हुए वह आदमी पास आ चुका था। नगेन्द्र कामिनी का हाथ पकड कर कुछ देर तक उसकी आखों में एकटक देखता रहा, कामिनी भी उससे टकटकी मिलाए देखती रही, इसके बाद उसके कानो मे "प्यारी, एक महीने के लिये बिदा!" कह नगेन्द्र एक घोड़ पर चढ़ गया। दूसरे घोडे पर उसका साथी चढ़ा और दोनो घोड़े घूम कर तेजी के साथ पहाड़ी के नीचे की तरफ झपटे। जाते जाते नगेन्द्र ने पुकार कर कहा, "ठीक एक महीने के बाद, इसी समय, इसी जगह!" कामिनी ने कलेजे को दबाते हुए सिर हिला कर कहा, "हा !"

अफसोस नगेन्द्र, तुम इतने होशियार हो कर भी गलती कर ही गये! आखिरी बात तुमने इस जोर से कही कि पास की एक दूसरी झाडी मे छिपे हुए एक लाबे कद के आदमी ने उसे बखूबी सुन लिया और उसका

मतलब भी लगा लिया। इसके बाद वह उसी झाड़ी के अन्दर और भी दबक कर छिप रहा।

× × ×

कामिनी जब तक निगाहें काम करती रही एकटक उसी तरफ देखती रही जिधर नगेन्द्र गया था। इसके बाद वह घूमी और तब उसकी निगाह उन बहुतेरे सिपाहियों पर पड़ी जो सब ओर फैलते हुए उसी तरफ को आ रहे थे और जिन पर अपनी ही धुन में मग्न रहने के कारण उसने अब तक कुछ भी ध्यान न दिया था।

हमला

[१]

पाठकों को साथ लेकर अब हम नैपाल की तराई पर के छोटे राज्य धरमपुर की तरफ चलते हैं जिसकी राजधानी धरमपुर हिमालय की एक छोटी मगर खुशनुमा पहाड़ी पर बडी सुन्दरता से बसी हुई है। धरमपुर की आबहवा और सीन सीनरी ऐसी अच्छी है, वहां की पहाडियो मे शिकार की ऐसी बहुतायत है, और वहा का रहन सहन का खर्चा इतना कम है कि प्रत्येक गर्मियों में सैकड़ों विदेशी वहा जाते है और उस समय वह एक छोटे मोटे हिल-स्टेशन का रूप धारण कर लेता है। कहा जाता है कि वहां की पहाडियो में तांबे लोहे मेगनीशियम आदि की खानें भी बहुत हैं जिसकी लालच मे बहुतेरे अंगरेज व्यापारी भी वहां आते रहते हैं।

धरमपुर के राजा गिरीशविक्रमसिंह एक नौजवान आदमी है। अभी मुश्किल से अट्ठाईस तीस बरस की उम्र होगी। शरीर से हृष्टपुष्ट, सुन्दर, उत्साही, पढे लिखे, वीर पुरुष है और इन्हें गद्दी पर बैठे अभी कुल दो ही तीन बरस हुए है। कहा जाता है कि राज्य पाने से पहिले ये अंगरेजो के बड़े भक्त थे, साल के आठ महीने इनके विलायत मे ही कटा करते

थे, उनके ही जैसा इनका भी साहबी रहन सहन और खाना पीना हो गया था, मगर सिंहासन पर आने के कुछ दिन बाद ही यह सब कुछ एकदम बदल गया। आजकल तो बिना नित्य की संध्या किए मुंह मे अन्न का दाना तक नही डालते हैं। कालीजी का बड़ा भारी मन्दिर बनवाया है और नित्य अपने हाथ से देवी की पूजा करते है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि अंगरेजों के ये कट्टर दुश्मन हो गये हैं, मगर इस बात मे कहां तक सचाई है हम कुछ कह नही सकते।

[२]

सुबह के कोई नौ बजे होंगे। राजा गिरीशविक्रम अपने खास कमरे में बैठे हुए हैं और उनके चारो तरफ राज्य के दीवान और कई ऊंचे अफसर बैठे हैं। आपस मे कुछ गुप्त सलाह मशविरा हो रहा है जिसके कारण सब नौकर चाकर बाहर कर दिए गए हैं।

दीवान साहब के हाथ में एक लम्बी 'आफिशियल' सी चीठी है जिसे उन्होंने अभी पढ़ कर राजा साहब को सुनाया है। चीठी के मजमून ने राजा साहब को तरद्दुद मे डाल दिया है और ये सिर नीचा कर किसी सोच मे पड़ गए है। बाकी के लोग भी गम्भीर चिन्ता में पड़े हुए हैं।

कुछ देर बाद एक लम्बी सांस के साथ राजा साहब ने सिर उठाया और मुसाहिबों की तरफ देख कर कहा, "तब ? आप लोगों की क्या राय होती है ?"

कोई कुछ न बोला, मगर जब राजा साहब कुछ देर तक उन लोगो की तरफ देखते रहे तो दीवान ने हाथ जोड़ कर कहा, "कसूर माफ हो तो मैं कुछ अर्ज करूं।"

राजा साहब ने कहा, "आप तो जो कुछ कहेंगे वह मै अच्छी तरह समझता हूं पर खैर कहिए, क्या कहते है ?"

दीवान०। जल मे रह कर मगर से वैर करना ठीक नहीं। जब हुजूर को इसी मुल्क मे रहना है तो अंगरेजों से दुश्मनी लेना मुनासिब नही,

उनसे मेल रखने में ही हम लोगो की कुशल है।

राजा०। (कुछ तेजी के साथ) तो आपकी राय है कि मै रेजीडेंट का हुक्म मान कर तख्त से उतर जाऊं ?

दीवान०। (दवी जुवान से) जी ई ई ई....मैं...मैं.... समझता हू कि थोड़े दिन के लिए ऐसा करके जब उनका गुस्सा शान्त हो जाय तो फिर से... ...

राजा०। फिर से उनकी मिन्नत खुशामद करके गद्दी पर आ बैठू ? दीवान साहब, आप तो मेरे ही राज्य मे मुझे भिखमंगा बनाना चाहते है ! मानो मैने यह राज्य अपने बाप दादो से नही पाया है अंगरेजो का दिया पाया है। (और लोगों की तरफ देख कर) क्यो साहबो, आप लोग भी क्या ऐसा ही करने की सलाह मुझे देते हैं ?

लोगो की जुवानो ने कुछ न कहा मगर उनकी आकृति साफ 'हा' कह रही थी। राजा गिरीशविक्रम यह देख उबल कर बोल उठे, "साहबो, हो सकता है कि आप लोग राज्य के भले के लिए ऐसा कहते हो, संभव है कि मेरा प्रेम भी शायद आपसे यह कहला रहा हो, पर इतना तो मै जरूर कहूंगा कि आप लोग जो कुछ कह रहे है यह क्षत्रित्व के खिलाफ बात है ! अर्जुन और भीम की संतान होकर मै बनियो के डर से भाग जाऊं यह कायरता की सीमा है। आप लोगो का खून ठंढा पड़ गया है तभी आप ऐसी सलाह मुझे दे रहे हैं। पुश्त दर पुश्त से मेरे खानदान के कब्जे में रहने वाला यह राज्य मै इसीलिए छोड़ दूं कि कुछ थोड़े से सुफेद बनिए यहा आकर तावे की खानें खोदना चाहते हैं ? क्यों, यही बात है न !"

नौजवान राजा की आंखें लाल हो गईं और नथुने फड़कने लगे। वह जोश के मारे और कुछ कह न सका मगर उसकी आकृति उसके दिल के भीतर भरे हुए गुवार को साफ जाहिर कर रही थी। उसके जोश को देख किसी की हिम्मत न हुई कि उसकी बात के खिलाफ कुछ कहे,

मगर बूढ़े दीवान ने जो इनका बचपन देख चुका था फिर भी हिम्मत की और कहा, "हुजूर का कहना सही है मगर हम लोग भी करें तो क्या करें, समय ही ऐसा आ गया है, जमाना हमें मजबूर कर रहा है। अभी देखिये हाल ही की तो वात है, दक्खिन के दो वहुत वड़े राजा इससे भी मामूली वात पर राज्य से निकाल वाहर किए गए। पूरब में जो हुआ मालूम ही है। मध्य भारत के उस राजा का हाल कल ही मैंने आपको सुनाया है। तो क्या वे लोग क्षत्रिय नहीं थे? थे, उनके दिलों मे भी जोश था, वे भी रजामन्दी से अपनी अपनी गद्दियों से अलग नहीं हुए, मजवूरी ने उनसे यह काम कराया। वही मजवूरी अव हम लोगों पर आ पड़ी है। हमें केवल अपने ही वारे में तो नहीं सोचना चाहिये, उन हजारो आदमियों का भी तो ख्याल करना चाहिये जिनकी किस्मत परमात्मा ने हमारे हाथो मे सौंपी है। ईश्वर न करे अगर कुछ हो गया, लड़ाई ही छिड़ गई, या कुछ और ही वात हो गई, तो हमारा राज्य ही तहस नहस नहीं हो जायगा वल्कि हजारों आदमियों पर भी वन आएगी, इस वात का खयाल तो करना चाहिये। नीति मे कहा है कि वहुतों के फायदे के लिए थोड़ों को कष्ट उठाना पड़ता है। हम अकेले तनहा तो नहीं हैं, हमारे साथ और भी जिन हजारों की किस्मत बंधी हुई है उनका भी तो खयाल करना पड़ेगा। हुजूर यह विचारें कि इस समय जैसा रेजीडेन्ट कह रहा है वैसा न करने से क्या होगा? वह साफ कह रहा है कि (चीठी का एक हिस्सा पढते हुए)—"अगर राजा साहव आज से तीन दिन के अन्दर अपनी रजामन्दी से राज्य छोड कर अलग नही हो जायंगे तो जवर्दस्ती अलग कर दिए जायंगे जिसके लिए काफी फौज सरहद पर पहुंच चुकी हैं।" महाराज खुद ही सोचें कि क्या अंगरेजी फौजसे मोरचा लेने लायक सामान महाराज के पास है? हम लोग कै मिनट अपनी पुरानी कड़ावीनों और जंग खाई हुई तलवारों को लेकर सव तरह के जंगी सामानो से लैस अंगरेजी पलटन का मुकावला कर सकते हैं।"

किसी ने दीवान की वात का कोई जवाव नही दिया। कुछ ठहर कर

वे फिर वोले, "इस वात को हुजूर विचार लें कि अभी तो साधारण तौर पर हटना पड रहा है पर अगर वाद में जवर्दस्ती हटना पडा तो कितनी भारी वेइज्जती या क्या कुछ हो जायगा ?"

अवकी राजा ने कहा, "एक वार लड कर दिल का हौसला निकाल लेने के वाद फिर चाहे भागना या मरना ही क्यों न पड़े मगर मेरी समझ मे वह कम वेइज्जती की वात होगी।"

दीवान०। वजा है, मगर यह भी तो मैंने अर्ज किया कि हम लोग उनमें लडने लायक है कहां ? दस मिनट भी तो नही टिक सकते ! (फौज के अफसर की तरफ देख कर) क्यो कप्तान साहव, कहिए तो सही आपकी पाच सौ जवानो की पलटन अंगरेजों की फौज के सामने कै घडी ठहर सकती है ?"

कप्तान ने कुछ गम्भीर होकर कहा, "अवश्य ही मेरी फौज जीत तो कभी नही सकती पर मैं इतना जरूर कहूंगा कि हमारी वे पुरानी कडावीनें और जंग खाई हुई तलवारें जिनकी तरफ दीवान साहव ने इशारा किया है जव एक एक के कई टुकडे हो जायंगी और जव प्रत्येक सिपाही की वोटी वोटी उड़ जायगी तभी हमारे महाराज पर किसी तरह की आंच आने देंगी। मगर अवश्य ही इसका यह मतलव नही समझना चाहिए कि मैं हुजूर को अंगरेजों से लड़ाई ठानने की सलाह दे रहा हू। मैं तो सिर्फ अपनी और अपनी फौज की नमकहलाली का इजहार कर रहा हूं।"

राजा साहव ने खुशी की निगाह कप्तान साहव पर डालते हुए कहा, "शुक्र है कि कोई आदमी मेरे साथ यह कहने को तो राजी हुआ कि वह अपनी जान देने को तैयार है ! हा तो कप्तान साहव, आप जरा यह भी तो वताइए कि अगर मैं इस चीठी के जवाव मे इनकार कर दूं तो आप मुझे वचाने के लिए कहा तक और क्या क्या कर सकते है ?"

कप्तान०। मैंने अर्ज किया कि मेरी जान और मेरी पाच सौ फौज की जान हाजिर है, जव तक हर एक के टुकडे टुकडे न हो जायगे हुजूर

का वाल वांका नही हो पावेगा, वाद के लिये मै कुछ नही कह सकता।"

राजा०। और आप यह कुछ कह सकते हैं कि अगर मैं इस किले के सब फाटक वन्द करके अन्दर वैठ जाऊं तो कब तक अपने को दुश्मनों से वचा सकता हूँ ?

कप्तान०। हुजूर, अंगरेजी फौज और तोपें तो हफ्तो हमारा कुछ विगाड़ नही सकती क्योकि इन पहाड़ी पगडंडियो पर बडी तोपें लाना नामुमकिन है और किला सहज में फतह नही हो सकता, मगर हवाई जहाजो की तरफ से मुझे अन्देशा है। वे जो कुछ फसाद न वर्पा करें थोड़ा है, और अंगरेजी सरकार के पास इस समय पचासो ही हवाई जहाज है।

राजा०। वेशक, यही खयाल मेरा भी है। खैर (सभो की तरफ देख कर) आप लोगो की राय तो मैंने जान ली, अव आज दिन भर मैं सब वातो पर गौर करूंगा ! शाम के छः वजे आप लोग फिर हाजिर हों। तव मैं इस मामले का फैसला करूंगा, मगर इस वीच मे आप लोग मेरी एक वात अपने दिल मे लेते जायं और उस पर गौर करें। वह यह कि अभी तक हिन्दुस्तान के हर राजा ने हर मौके पर बुजदिली से ही काम लिया। किसी ने कभी कोई हिम्मत नही दिखाई। जब जो अंगरेजी फरमान निकला सिर दवा कर उसे मंजूर करते गये, इसी से यह नौवत आ गई है कि सरकार शेर होती जा रही है। अगर दो चार राजा भी हिम्मत कर जाते तो यह हालत कभी नही होती जो आज यहा के रजवाडो की हो रही है। मैं तो खैर वहुत ही मामूली ताकत रखता हूँ, जिन दो चार राजाओ का जिक्र दीवान साहव ने किया उनमे से कुछ इतनी ताकत रखते थे कि दस वीस दिन सरकार से मोरचा ले सकें। वे अगर अपनी जान की परवाह न कर लडाई के मैदान मे डट जाते तो झख मार कर सरकार को अगर अभी नही तो कम से कम आगे के लिए अपना रुख वदलना ही पड़ता। भले ही अपने 'प्रेस्टीज' के खयाल से पहिले आदमी को, जो यह काम करता, सरकार पीस देती

मगर बाद वाले से फिर कड़ाई का बर्ताव करने के लिये पहिले तीन दफे सोच कर तब कोई काम करती। असल में वे लोग दब्बू और डरपोक थे, जान से खौफ खाते थे, ऐश और आरामतलबी में इस कदर डूबे हुए थे कि अपनी और अपने पुरखो की इज्जत की याद भूल चुके थे। जरा सी भी तकलीफ और मुसीबत सहना उनके लिए दुश्वार हो गया था। इसी का यह नतीजा है कि आज मैं अपने राज्य की एक मामूली खान अपने देश की एक कम्पनी को देना चाहता हूँ तो नही दे सकता और विदेशियो को देने पर मजबूर किया जा रहा हूँ। आप लोग यह भी समझ लें कि चाहे मैं कुछ ही क्यो न करूं परन्तु यह कदापि न होगा कि फांसी चढा दिया जाऊं या कत्ल कर दिया जाऊं। ऐसा कभी न होगा। भले ही देश-निकाला हो जाय, या मामूली कैदी की तरह जेल में सड़ना या चक्की ही पीसना पड़े, मगर मेरी जान पर कोई आंच न आयेगी जिसका यद्यपि मुझे कोई खौफ नही है पर जिसके लिये शायद आप लोगों को बहुत फिक्र सता रही है। अच्छा अब आप लोग तशरीफ ले जाइये। शाम को फिर आइयेगा जैसा मैंने कहा। और कप्तान साहब, आप जरा मेरे साथ घूमने चलिए, मुझे आपसे कुछ बात करनी है।

सब लोगो के चले जाने पर राजा साहब अपने फौजी अफसर को लिए हुए महल के बाहर निकले। फाटक पर घोड़ा लिए साईस खड़ा था क्योंकि आज अभी तक वे हवाखोरी के लिए जा न सके थे। महाराज घोड़े पर सवार हुए, उनके हुक्म से कप्तान भी एक दूसरे घोड़े पर सवार हुआ, साईस हटा दिया गया और सिर्फ ये ही दोनों कुछ गुप्त बातें करते हुए आगे बढे।

महल की चहारदीवारी के फाटक के बाहर होकर राजा जाहब ने कहा, "मैं एक दफा अपने किले को चारो तरफ से देख कर यह निश्चय करना चाहता हूं कि अगर मैंने लड़ाई करने की ठानी तो यह मेरी कहां तक हिफाजत कर सकेगा।"

काठ के पुल द्वारा राजा साहब और कप्तान ने किले की खाई पार की और तब उसी खाई के साथ साथ चक्कर खाते हुए जाने लगे।

[६]

घूमते और तरह तरह की बातें करते हुए राजा साहब और कप्तान उस किले के तीन तरफ घूम आये मगर जब चौथी तरफ पहुंचे तो उन्हें रुक जाना पड़ा क्योंकि एक नौजवान घुड़सवार वहां खड़ा हुआ था जिसने राजा साहब को देखते ही सलाम किया और एक चीठी उनकी तरफ बढ़ाई।

ताज्जुब करते हुए राजा साहब ने वह चीठी ले ली और तब एक सरसरी निगाह उस सवार पर डालने के बाद जिसकी पौशाक उसे अंगरेजी फौज का कोई अफसर बता रही थी, उसे खोल कर पढ़ा। चीठी लाल रंग के कागज पर थी और उसमें लाल ही स्याही में यह लिखा हुआ था : –

"राजा साहब—

"हम लोगों को यह जान कर बड़ी खुशी हुई कि आप अपने राज्य और अपने हकों के लिए लड़ने को तैयार हैं। हम लोग मुल्क में यही प्रविति बढ़ती हुई देखना चाहते है और इसीलिए आपको सब तरह की मदद देने को तैयार हैं। क्या मदद हम दे सकते हैं और किन शर्तों पर देंगे यह आपको उस आदमी से मालूम होगा जो यह चीठी आपको देगा।"

इसके नीचे 'रक्त-मंडल' का वही निशान—लाल दाग के भीतर चार उंगलियें—बना हुआ था मगर राजा साहब रक्त-मंडल का नाम और उसके कृत्यों की कुछ जानकारी रखते हुए भी इस निशान से परिचित न थे अस्तु कुछ समझ न सके कि यह चीठी भेजने वाला कौन है। उन्होंने ताज्जुब करते हुए वह चीठी कप्तान की तरफ बढ़ा दी और खुद उस सवार की तरफ देखा जो उनका इशारा पा कर पास आ गया।

राजा साहब ने उससे पूछा, " मैं कुछ समझ नही सका कि यह चीठी किसने भेजी है ।"

सवार० । इस चीठी को भेजने वाला 'रक्त-मंडल' है जिसका नाम शायद आपने सुना होगा ।

राजा० । (चौक कर) रक्त-मंडल ! वेशक यह नाम मेरा सुना हुआ है **और** बडी दिलचस्पी के साथ सुना हुआ है, क्योकि इसने थोडे ही दिनों में जो कुछ किया मुझसे छिपा हुआ नही है । अच्छा तो क्या आप रक्त-मंडल के भेजे हुए आए है ।

सवार० । जी हां ।

राजा० । आप लोगो को कैसे मालूम हुआ कि मेरा भारत सरकार से झगडा पड गया है ।

सवार ने यह सुन मुस्कुरा दिया और कुछ बोला नही जिसे देख राजा साहब भी मुस्कुरा कर बोले, "खैर मेरा ऐसा पूछना ही गलती है । जो मंडल अंग्रेजों के जासूसों से मोरचा ले सकता है उसके लिए मेरे जैसे एक मामूली मातहत राज्य के भेदो की वाकफियत रखना कोई ताज्जुब की बात नही । अच्छा तो फिर मैं असल बात पर ही आऊंगा । अगर मान लिया जाय कि मैं अंग्रेजो के खिलाफ खडा हो जाऊं तो आपका मंडल मेरी क्या मदद कर सकता है ?

सवार० । सब तरह से मदद कर सकता है, रुपये पैसे से, आदमो से, फौज से, हथियार से, हवाई जहाजो से, जंगी तोपो से !

राजा० । (ताज्जुब से) हवाई जहाजो से और जंगी तोपो से !

सवार० । जी हा ।

राजा० । मगर क्या आपकी मदद अंग्रेजी फौजो का मुकाबला करने लायक होगी ?

सवार० । केवल मुकाबला करने लायक ही नहो बल्कि उसे शिकस्त देने लायक भी होगी ।

राजा० । (ताज्जुब और अविश्वास के साथ कप्तान की तरफ देख

कर) मुझे विश्वास नही होता । क्यों कप्तान साहब, आप क्या सोचते है ?

कप्तान० । (सवार से) मैं कैसे मान लूं कि अंगरेजी फौज को हरा देने लायक मदद आप लोग हमे दे सकते हैं ?

सवार० । (मुस्कुरा कर) रक्त-मंडल की ताकत का पता न होने से ही आप ऐसा कहते हैं, मगर खैर इस बात को आप पीछे के लिये छोड़िये, पहले यह बताइये कि जितना मैंने कहा अगर उतनी मदद आपको मिल जाय तो आप कहां तक करने को तैयार हैं ?

राजा०।(जोश के साथ) ओह! अगर मुझे सिर्फ कुछ हवाई जहाज और दस बीस बड़ी बड़ी तोपें मिल जायं तो मै जान रहते इन कम्बख्त अंगरेजों को अपनी सरहद के अन्दर पैर न रखने दूं,फिर मेरे मरने बाद चाहे जो हो!

सवार० । (खुश होकर) अगर आपमे इतनी हिम्मत है तो मै भी कह सकता हूँ कि चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय मगर एक भी अंगरेजी सिपाही आपके राज्य के सीवाने के भीतर घुस न पावेगा ।

राजा० । मगर मुझे विश्वास जो नही होता कि आपका कहना ठीक हो सकता है ।

सवार०। आप घबड़ायें नही विश्वास तो मैं न करा दूंगा,पहिले हमारी आपकी शर्तें तय हो जायं । अच्छा यह कहिये कि उतनी मदद आपको मिले जितना कि मैंने कहा तो आप हमारी क्या सहायता करने को तैयार है ?

राजा० । आप ही बताइये कि अपनी मदद के बदले में आप मुझसे क्या चाहते है !

सवार० । हम लोग यह चाहते है कि आपके राज्य को अपना हेड-क्वार्टर बनावें और यही से अपनी सब कार्रवाई करे, दूसरे शब्दो मे आपका यह राज्य कुछ दिनो के लिये 'रक्त-मंडल' का हो जाय ।

राजा० । (चिन्ता के साथ) तो इसके क्या यह माने नहीं होंगे कि आपकी मदद के बदले मे अंगरेजो को न दे आपके रक्त-मंडल को मैं अपना यह राज्य दे दूं ?

सवार० । (हंस कर) नही नही, यह मतलव मेरा नही है ! यह राज्य आपका और आपके वंशजो का ही रहेगा, मेरा मतलव सिर्फ थोड़े से आदमी और थोड़ी सी जगह की मदद से है । आपको, आप ही को क्यो इस राज्य की थोडी सी प्रजा को, कुछ दिनो तक हमारे कहने मे चलना पडेगा, जिस तरह जो कुछ हम लोग कहें वही आप लोगो को करना होगा ।

राजा० । यह शर्त तो वहुत कडी है, इसके अनुसार तो एक तरह पर मै आप लोगो के आधीन हो जाऊगा ।

सवार० । मगर वह आधीनता उस तरह की न होगी जैसी इस समय अगरेज सरकार की आप कर रहे है । वह आधीनता परस्पर के प्रेम, परस्पर के विश्वास, परस्पर की सहायता, और परस्पर के आत्म-सम्मान की रक्षा पर निर्भर रहेगी और आप हमारे उतना ही वश में रहेंगे जितना हमलोग आपके ।

राजा० । और यह सव कव तक के लिये ?

सवार० । सिर्फ छः महीने के लिये ! हम लोग छ महीने के अन्दर यहा की, इस देश की, अपने इस भारत की, काया पलट कर देंगे ।

राजा० । मुझे आपकी वाते समझ में नही आती, आखिर आप करना क्या चाहते है ?

कप्तान० । वेहतर होगा कि हम लोग कही वैठ कर वाते करें क्योकि पूरा मामला समझने मे जरूर कुछ समय लगेगा ।

राजा० । आप मेरे साथ महल मे चलिये, वही वातें होगी ।

सवार० । आपके महल की वनिस्वत इस झाडी को मै अधिक सुरक्षित समझूंगा अगर आपको कोई आपत्ति न हो !

राजा० । (हंस कर) मुझे कोई उज्र नही है ।

तीनो आदमी घोडो पर से उतर पडे और उस झाडी के पास जाकर जमीन पर वैठ गये । घोडे उसी जगह पेडो के साथ लगा मे अटका कर छोड दिये गये और तीनो मे वाते होने लगी ।

घंटे भर से भी ऊपर समय के वाद कही जाकर उस सवार और राजा साहव की वातें खत्म हुईं। हम नही कह सकते कि इस समय की वातचीत मे क्या क्या तय हुआ या किस किस तरह की प्रतिज्ञाएं और क्या क्या वादे आपस में किये गये, मगर इतना जरूर कह सकते है कि वातो का सिलसिला टूटने पर सवार ने अपनी जेव से कागज कलम निकाली और कुछ लिख तथा अपना हस्ताक्षर कर राजा साहव को दिया तथा उसी तरह राजा साहव ने भी कुछ लिख और दस्तखत कर उसे दिया, इसके वाद सव लोग उठ खड़े हुए।

अपने अपने घोड़ो के पास पहुंच कर तीनों आदमी सवार हुए। नौजवान ने अपने घोड़े का मुंह दूसरी तरफ घुमाते हुए कहा, "तो कल से हम लोग इस इकरारनामे के मुताविक काम शुरू कर देते हैं।"

राजा साहव ने कहा, "खुशी से, और मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि वह आपकी अभिलाषा पूरी करे, मगर सवसे पहिले वह काम हो जाना चाहिये जिसके आज ही पूरा कर देने का आपने वादा किया है।"

सवार०। हां हां, वही अंगरेजी पलटन वाला काम तो! मैं उसे आज ही पूरा करने का इन्तजाम किए देता हूं।

महाराज०। हां, क्योंकि वैसा न होने से मैं अपने दीवान मुसाहिवों और रिआया को अपनी तरफ मिला न सकूंगा।

सवार०। मैं इस वात को समझता हूं।

कह कर उस सवार ने अपनी पेटी से लगी हुई सीटी निकाली और होठों से लगा उसे कुछ खास इशारे के साथ कई दफे वजाया। आवाज की गूंज अभी वन्द नही हुई थी कि उसी झाड़ी के आस पास से जिसके पास वैठ इन सभों ने वातें की थी, कई आदमी निकल पड़े। सवार ने उनकी तरफ देख अपना हाथ उठाया और तव उंगलियों से जरा देर तक कई तरह के इशारे करता रहा जिसके अन्त मे वे लोग तेजी के साथ एक तरफ को रवाना हो गये। सवार राजा साहव की तरफ घूमा और वोला,

"वह काम आप हो गया हुआ समझिए।"

राजा०। (ताज्जुब से) क्या ये पाच सात आदमी उस बड़ी फौज का मुकाबला करेंगे जो मुझे दबाने के लिये आ रही है ! ये भला क्या कर सकेंगे ?

सवार ने हंस कर कहा, "शाम होने के पहिले ही आपको इनकी करतूत सुनाई पड़ जायगी ! अच्छा अब मुझे आज्ञा हो तो मैं चलूं क्योंकि जाना दूर और काम बहुत करना है।"

राजा साहब से विदा हो वह सवार पूरब और उत्तर के कोने की तरफ रवाना हुआ और राजा तथा कप्तान किले की तरफ बढ़े। थोड़ा आगे बढ़ते ही उन्हें कई आदमी मिले जो राजा साहब की इतनी लम्बी गैरहाजिरी से घबड़ा कर उनका पता लगाने की नीयत से उनको खोजते हुए चारो तरफ घूम रहे थे।

[४]

रियासत धरमपूर छोटी और कम महत्व की होने के कारण वहां के लिये और रियासतों की तरह खास तौर पर कोई रेजीडेन्ट मुकर्रर नही है। उस प्रान्त की पांच सात छोटी रियासतों का एक गुट बना कर भारत सरकार ने एक ही रेजीडेन्ट नियुक्त कर दिया है जो पारी पारी से दो दो एक एक महीना सब रियासतो में घूमता और आवश्यक काम करता रहता है, अवश्य ही उसके रहने के लिये बंगला और दफ्तर इत्यादि इन सब रियासतो मे मौजूद है।

धरमपूर रियासत के लिये बनी हुई छोटी सी रेजीडेन्सी शहर धरमपूर से कोसों दूर और धरमपूर राज्य तथा अंगरेजी भारत की सीमा पर पड़ने वाली एक छोटी खुशनुमा पहाड़ी पर बनी हुई है। इस पहाड़ी पर से चारो तरफ कोसों तक का सुहावना दृश्य दिखाई देता है और इसके चारो तरफ जंगली और पहाड़ी गुलबूटों की इतनी बहुतायत है कि यह जगह बड़ी ही रमणीक मालूम पड़ती है। इसके ऊपर बना हुआ रेजीडेन्ट

का बंगला बहुत ही सुन्दर है जो इस तरफ आने वालों का मन अपनी खूबसूरती से बरबस खींच लेता है।

दोपहर का समय है। बंगले के दक्षिण तरफ वाले बरामदे में दो आदमी बैठे सिगार पीते हुए कुछ बातें कर रहे है। इनमे से एक तो रेजीडेन्ट मिस्टर पिम है और दूसरे उनके एक अमेरिकी दोस्त डाक्टर काहेन।

मिस्टर पिम एक लांबे कद के हृष्ट पुष्ट सुन्दर हंसमुख आदमी है। इनका स्वभाव बहुत अच्छा है और अब तक इनका जिन जिन रियासतों से सम्पर्क रहा है प्रायः वे सभी इनसे खुश रही है। ये इस प्रान्त के बहुत बड़े शिकारी भी माने जाते है और कहा जाता है कि इनकी गोली से अब तक पचासों शेर चीते और जंगली हाथी मर चुके हैं।

मिस्टर पिम के दोस्त डाक्टर काहेन अमेरिकन है जो बहुत दिनों से भारत की, विशेष कर हिमालय की पहाड़ी स्वाधीन रियासतों की, सैर करते फिर रहे है। इस जगह आने से इनका खास क्या उद्देश्य है यह तो अभी हम यहां नही बतावेंगे पर हां इतने से पाठक अगर कुछ अन्दाजा लगा सकें तो लगा लें कि ये महाशय नव-संगठित 'अमेरिको-ब्रिटिश-कापर ट्रस्ट' के एक प्रभावशाली कार्यकर्ता है।

दोनों आदमी सिगार पीते हुए आपस में बातें कर रहे है और साधारण रीति से देखने से इनके विषय में कोई नई बात नही मालूम पड़ेगी मगर गौर से ध्यान-पूर्वक देखने वाला कह देगा कि ये दोनों ही आदमी इस समय किसी उत्कंठा में पड़े हुए है क्योकि इनका बार बार अपने सामने वाले पहाड़ी मैदान के बीच में से सांप की तरह चक्कर खाकर आती हुई उस पतली सड़क की तरफ देखना जो भारत की ओर से आती और इस बंगले के बगल से होती हुई धरमपूर की ओर निकल जाती है, कहे देता है कि उधर से इन्हें किसी प्रकार की आशा है।

यकायक सामने कुछ देख कर मिस्टर पिम बोल उठे, "वह लो आ पहुंची!" डाकर काहेन ने भी गौर से सामने की तरफ देखा और कहा,

"हां ठीक तो है, वह चली आ रही है !"

बगल के टेबुल पर एक दूरबीन पड़ी हुई थी जिसे उठा कर पिम ने आंखों से लगाया। सामने की तरफ यहां से लगभग चार मील दक्खिन, एक पहाड़ी की आड़ से निकल कर सामने आती हुई फौज साफ दिखाई पड़ी जिसके आगे आगे लगभग दो सौ घुड़सवार, पीछे कोई सात आठ सौ पैदल फौज और सब से पीछे एक पहाड़ी तोपखाना था। फौज पूरी तेजी से आ रही थी और जान पड़ता था कि अगर इसी तरह बढ़ती आई तो दो डेढ़ घंटे के अन्दर ही यहां आ पहुंचेगी।

मिस्टर पिम ने यह देख दूरबीन डाक्टर काहेन के हाथ में दे दी और कुछ कहना ही चाहते थे कि बेयरा ने आकर एक कार्ड इनके सामने पेश किया। कार्ड पढ़ और उस पर का नाम देख वे कुछ चौंक पड़े और डाक्टर काहेन से यह कर कि—'कोई मुझसे मिलने आया है, दस मिनट की गैरहाजिरी माफ कीजिये !' वे बंगले के भीतर घुस कर उस कमरे मे पहुंचे जो मुलाकात के काम मे आता था।

रियासत धरमपुर का एक अहलकार इस कमरे में बैठा हुआ था जिसकी तरफ कुछ भी गौर के साथ देखने वाला कह देगा कि यह आज सुबह राजमहल में होने वाली बैठक में भी शामिल था। पिम साहब को देखते ही इसने उठ कर बड़े अदब से सलाम किया।

पिम०। वेल मिस्टर गोवर्धनदास, क्या खबर ? बैठिये।

गोवर्धनदास से हाथ मिला कर पिम एक कुर्सी पर बैठ गये और उनका इशारा पाकर सामने की कुर्सी पर बैठते हुए गोवर्धनदास ने कहा, "हुजूर अच्छी ही खबर है, आज सुबह राजा साहब ने खास महल में एक प्राइवेट मीटिंग की थी जिसमें मैं भी था।"

पिम०। अच्छा ! उसमें क्या क्या हुआ ?

गोवर्धन०। बहुत बहुत बातें हुईं, राजा साहब तो एक दम ही फ़िरंट हो रहे थे और बहकी बहकी बातें करते थे मगर हम लोग आखिर

उन्हें वहुत कुछ राह पर ले ही आये। क्या करें, अगर आखीर में कम्वख्त कप्तान रौशनसिंह ने मामला न विगाड़ दिया होता तो उसी वक्त खातिरखाह फैसला हो जाता क्योंकि दीवान को तो मैं विल्कुल मुट्ठी में कर चुका हूं, फिर भी आशा है कि आज शाम की वैठक में सव कुछ ठीक हो जायगा।

इतना कह गोवर्धनदास ने आज सुवह किले में जो कुछ हुआ था वह वहुत कुछ निमक मिर्च के साथ मिस्टर पिम को सुना दिया और अन्त में यह भी कहा कि—'राजा साहव कप्तान साहव को ले कर अपने किले की मजवूती देखने निकले और मैं भी जरूरी कामों से निपट इधर को चल पड़ा कि आपको सव खवर सुना दूं।'

पिम०। वहुत अच्छा किया, मगर मैं समझता हूं कि आज शाम की वैठक में भी आपका रहना वहुत जरूरी है ताकि मुझे यह मालूम हो सके कि आखिरी फैसला क्या हुआ।

गोवर्धन०। मैं यहां से सीधा वहीं जाऊंगा और जो कुछ तय होगा कल सुवह या तो स्वयं मिल कर और या किसी आदमी द्वारा आप की खिदमत में अर्ज करूंगा। मगर हां यह तो वताइये कि आपकी फौज के आने में अव क्या कसर है?

दीवान०। वस आ ही गई समझिये, दो घन्टे के अन्दर यहां पहुंच जायगी, दिखाई देने लगी है।

इतना कह दीवान साहव ने एक खिड़की की तरफ इशारा किया। गोवर्धनदास खुशी खुशी उसकी तरफ वढे और पीछे पीछे पिम साहव भी वहां पहुंचे। इस खिड़की से नीचे के मैदान का अच्छा दृश्य दिखाई पड़ता था जिस पर एक निगाह डालते ही गोवर्धनदास ने उस फौज को देख लिया जो भारत सरकार की भेजी हुई चली आ रही थी। उन्होंने खुशी से हाथ उठा कर कहा, "वह है, वह है!"

पिम साहव ने विचित्र मुद्रा से उनकी तरफ देखा और तव कहा,

"अव आशा है आपके राजा साहव की अक्ल ठिकाने आ जायगी।"

गोवर्धन०। वेशक, इस फौज को देख के उनकी बौखलाहट मिट जायगी और नसों की गर्मी ठण्डी पड़ जायगी। अच्छा अव मुझे आज्ञा हो तो मैं चलूं क्योंकि अभी एक लम्वा सफर मेरे आगे है।

पिम०। हा हा आप जाइये, मगर जो कुछ आज शाम को तय हो उसकी खवर मुझे जल्द से जल्द दीजियेगा।

गोवर्धनदास ने "जरूर जरूर !" कह कर पिम से हाथ मिलाया और दर्वाजे की तरफ घूमे मगर दो ही एक कदम जाकर लौट और पुनः उनकी तरफ घूम कर वोले, "उस मामले में पिम साहव कुछ हुआ जिसके वारे में मैने आपसे अर्ज किया था ?"

पिम०। कौन, किस मामले में ?

गोवर्धन०। (अफसोस जाहिर करते हुए) आप भूल गये ? वही यहां की दीवानी के वारे मे !!

पिम०। हा ठीक है, याद आया, आपने कहा था कि अगर राजा गिरीशविक्रम तख्त से उतारे जाय तो उसके वाद इस राज्य की दीवानी आपको दी जाय।

गोवर्धन०। (हाथ जोड़ कर) जी हां वस इतनी ही दरख्वास्त मेरी थी और इसी उम्मीद पर सिर तोड़ मेहनत करके मैंने राज्य के सव अहलकारो को अपने साथ मिलाया और इस वात की कुछ भी परवाह नही की है कि अगर राजा साहव को मेरी कार्रवाइयो की खवर लग गई तो वे वेधड़क मेरा सिर उड़ा देने की आज्ञा दे देंगे !

पिम०। मुझे वहुत अफसोस है कि मै इस वारे में विल्कुल भूल गया। खैर मै इसको नोट करे लेता हूं और मुनासिव मौका आते ही इसके वारे में अपनी सरकार को लिखूंगा।

गोवर्धन०। केवल लिखिए ही नहीं, जोर दीजिए। आपकी वात न मानी जाय ऐसा हो नही सकता।

पिम० । नही नही मैं अपने भरसक पूरा उद्योग करूंगा, आप खातिर जमा रखिए ।

पिम साहब को लम्बी सलामें करते हुए गोवर्धनदास कमरे के बाहर निकले और उसी समय एक घबड़ाहट भरी चीख की आवाज सुन पिम साहब लपकते हुए उस बरामदे में डाक्टर काहेन की तरफ दौड़े जिधर से वह आवाज आई थी। उन्होने देखा कि डाक्टर काहेन बड़े उद्वेग के साथ दूरबीन लिये और बरामदे की रेलिंग से आगे को लटके हुए कुछ देख रहे है। वे उनके पास पहुचे और बोले, "क्या बात है डाक्टर ?"

डाक्टर काहेन घबराये हुए बोले, "गजब हुआ पिम, तुम्हारी फौज तो नष्ट हो रही है !"

"हैं, यह आप क्या बक रहे है ?" कह कर पिम साहब ने दूरबीन काहेन के हाथ से ले ली और सामने की तरफ देखने लगे। मगर जो कुछ उन्होंने देखा उससे उनके होश हवास भी गुम हो गये। उन्होंने देखा कि अभी अभी जो फौज इतनी शान शौकत और खूबसूरती के साथ परा बांधे बढ़ी आ रही थी, वह इस समय बड़ी बेतरतीबी के साथ पीछे की तरफ भागी जा रही है, साथ ही यह भी उनकी तेज नजरों ने देख लिया कि उस घुड़सवार फौज का कहीं नाम निशान भी नहीं है जो सब से आगे आगे आ रही थी, केवल थोड़े से सवार इधर उधर छिटके हुए दिखाई पड़ रहे है जो सब के सब भी पूरी तेजी से पीछे ही को भागे जा रहे हैं। उन्होने अचम्भे में आकर काहेन से पूछा, "आखिर यह हुआ क्या डाक्टर ? कौन पिशाच इस [illegible] दिखाई पड़ा है जो यह इस तरह कायरता के साथ भागी जा [illegible]

फौज पर फेंकी जो जरूर किसी तरह का खौफनाक वम था क्योंकि काफी फौज उससे नष्ट हो गई और वाकी वची हुई की वह हालत है जो आप देख रहे है, और यह सब कुछ पलक झपकते मे हो गया है, अभी एक ही दो मिनट की तो वात है।"

घवराहट में भरे मिस्टर पिम दूरबीन की मदद से सामने का वाकेया देख रहे थे। उन्होने देखा कि कुछ ही दूर जाते जाते अफसरों ने फौज को पुनः सम्हाला और लौटा लाकर उस छोटी पहाड़ी को घेर लिया जिस पर सव आफत की जड़ वे चार आदमी खड़े थे। यह भी देखा कि तोप-खाना, जो यद्यपि अछूता नही वचा था फिर भी काम करने के काविल था, एक जगह रुक कर उस पहाडी पर निशाना लगाने की तैयारी कर रहा है। उनके मुंह से कुछ आशा के साथ निकला, "खैर, कम से कम वे चारो कंवख्त तो अव नही वचते !"

इस वीच वंगले के अन्दर जा डाक्टर काहेन एक दूसरी दूरवीन ले आये थे और पिम के वगल में खडे उसी तरफ देख रहे थे। दोनों ने देखा कि पैदल फौज और वचे हुए घुड़सवारों ने उस छोटी पहाड़ी को चारो तरफ से घेर लिया और उन चारो आदमियों पर गोलियां चलाने लगे। उसी समय 'गुड्डुम' की आवाज करती हुई एक तोप छूटी जिसका गोला पहाड़ी की चोटी का एक कोना तोडता हुआ उन चारों के वहुत पास से निकल गया। अव इन दोनो को उम्मीद हो गई कि वे चारो किसी तरह नही वच सकते। दोनो के चेहरों पर कुछ हरियाली दिखाई पड़ी।

मगर उनकी खुशी वहुत ही थोडी देर के लिये थी। गोलियों की शायद एक वाढ़ भी पूरी दगी न होगी कि उन चारों ने पुनः अपने वही भयानक वम के गोले निकाले और नीचे वाली फौज पर फेंक दिये। एक डरावनी हरी विजली सव तरफ चमक गई और कुछ धूआं सा फैल गया जो साफ हुआ तो दिखाई पडा कि उस फौज का तीन चौथाई हिस्सा इस तरह गायव है कि कही उसका नाम निशान भी वाकी नही है।

केवल यही नही, अचानक उस तोपखाने से ठीक ऊपर के एक टीले पर दो नये आदमी दिखाई पडे जिनके हाथ में कोई चीज, शायद वैसे ही वम थे। तोपों की दूसरी और ज्यादा भयानक वाढ़ छूटा ही चाहती थी कि उनके हाथ के वम उन तोपों पर जाकर गिरे। हरी विजली की चमक के साथ ही एक भयानक दन्नाटा हुआ और दूसरी सायत मे सव तोपें मय उनके अफसरों चलाने वालों और साज सामान के गायव थीं !

पिम साहव के भर्राये हुए गले से एक वार निकला, "रक्त-मंडल।" और तव वे वदहवास होकर कुर्सी पर गिर गये। डाक्टर काहेन की भी अजीव हालत थी। वे कुछ समझ नही पा रहे थे कि यह सव क्या हो रहा है। वे अपने माथे का पसीना पोंछते हुए वरामदे से उठंगे कभी सामने के मैदान और कभी मिस्टर पिम की हालत को देखने लगे।

× × × ×

खुशी खुशी गोवर्धनदास वंगले के वाहर निकले मगर अफसोस, उनकी खुशी थोड़ी ही देर की थी।

उनके साथ ही साथ एक और आदमी भी वंगले के दर्वाजे की आड़ से वाहर निकला और दवे पांव उनके पीछे रवाना हुआ। वंगले के वाहर वाले वागीचे की चारदीवारी का फाटक पार कर गोवर्धनदास अभी वीस पचीस कदम से ज्यादे दूर नही गये होंगे कि इस आदमी ने कड़क कर आवाज दी, "खड़ा रह !"

चौंक कर गोवर्धनदास ने अपना घोडा रोका और पीछे घूम कर देखा। इस आदमी ने डपट कर कहा, "घोड़े के नीचे उतरो !" इसकी आवाज में कुछ ऐसी हुकूमत मिली हुई थी कि गोवर्धनदास विना मीन मेख किये चुपके से घोड़े के नीचे उतर पड़े और पूछने लगे, "कहिये क्या है ?"

कडी आवाज मे उस आदमी ने पूछा, "तुम पिम के पास क्यों गये थे ?"

गोवर्धनदास यह सवाल सुन कुछ वौखला सा गया। उसके मुंह से कुछ अस्पष्ट सी आवाज निकली जिससे उसके दिल के अन्दर की घवराहट प्रकट होती थी।

डपट कर उस आदमी ने कहा, "कमीने, वेइमान, मुखविरी करने पिम के पास गया था! अपना उल्लू सीधा करने के लिये तू वहां गया था! अपने मालिक का नाश करते तुझे शर्म न आई!"

डरते डरते गोवर्धनदास ने कहा, "जी, ई, ई.......मै तो......सिर्फ मुलाक़ात करने गया था...!!" पर उसकी वात पूरी होने के पहिले कडक कर आदमी ने कहा, "चुप रह नामाकूल! मुलाकात करने गया था! और धरमपुर की दीवानी कौन मांग रहा था? तेरे ऐसे हरामखोर ही तो देशो का नाश करते है। अच्छा भगवान को याद करले और मरने के लिये तैयार हो जा!!"

उस आदमी ने अपने कपड़े के अन्दर से एक छोटी पैनी तलवार निकाली और उसे ऊंचा किया।

डरे हुए गोवर्धनदास के मुंह से मुश्किल से निकला, "रहम करो, रहम करो!" मगर उस आदमी ने गुस्से भरे गले से कहा, "चुप रह! तेरे ऐसो पर रहम करना साप पर रहम करने से भी ज्यादा वुरा है। होशियार हो जा और मुकावला करना हो तो कर!"

मगर गोवर्धन ऐसे विश्वासघातियों मे मुकावला करने की हिम्मत कहा! उसके भर्राए हुए गले से केवल एक चीख की आवाज निकली। दूसरे सायत मे उस अजनवी की तलवार विजली की तरह चमक कर गिरी और गोवर्धन का सिर भुट्टे की तरह कट कर दूर जा गिरा।

आतंक

[१]

भारत की सब से बड़ी रियासत मुजफ्फरावाद की राजधानी मुजफ्फरगढ़ में आज वड़ी रमन चमन और रौनक है । वात यह है कि कल यहां वड़े लाट साहब आने वाले है जो यहां एक दर्वार करेंगे और नवाव के अतिथि वन कर लगातार एक हफ्ते तक रियासत के मशहूर शिकारगाह महावा के जंगलों मे शिकार खेलेगे । उन्ही की अवाई की खुशी में शहर दुलहिन की तरह सजाया जा रहा है और चारो तरफ दौड़ धूप मची हुई है ।

मुजफ्फरावाद के नौजवान नवाव हैदरजंग वहादुर पर ब्रिटिश सरकार वड़ी खुश है क्योंकि इन्होने कभी किसी वात पर उसका कोई हुक्म नही टाला है । इनके नाम के पीछे अक्षरों की लम्बी दुम इस छोटी उम्र में ही लग गई है और विशेष कर थोडे ही दिन पहले भारत सरकार की एक प्यारी इच्छा पूरी कर देने के उपलक्ष्य मे इन्हें जी० सी० वी० की महामान्य उपाधि मिली है जिसे प्रदान करने के लिए ही खास तौर पर वड़े लाट साहव यहां आ रहे हैं और परसों के आम दरवार मे इन्हें खिलअत देगे ।

रियासत के हजारों कर्मचारी तो दौड़ धूप में लगे ही है खास नवाव साहव भी काफी परेशानी में है और खुद सव जगह जा जा कर इन्तजाम देख रहे है। उनके मन में यह वात समाई हुई है कि इस मौके पर उनके राज्य में लाट साहव की ऐसी खातिरी हो जाय जैसी कि आज तक कभी किसी रियासत में न हुई हो और इसलिये पानी की तरह रुपया वहाया जा रहा है।

पचास हजार रुपया लगा कर तथा वंबई से कारीगर और सामान मंगा कर कोठी फरहतवख्श में जो ऐसे ही किसी मौके के लिए अनगिनती रुपया लगा कर इनके वाप ने वनवाई थी एक नया पाखाना और नहाने का घर (वाथ-रूम) वना है। हमारे नवाव साहव अभी अभी उसे देख कर लौटे और मोटर से उतर कर अपने महल में पहुंचे हैं। परसों के दरवार में क्या क्या और किस किस तरह पर होगा इसकी खवर रेजोडेन्सी से लेकर उनके वजीर साहव अभी अभी आए थे जिसकी खवर सुन नवाव साहव उनसे वातें करने के लिए ड्राइंगरूम की तरफ वढ़ रहे थे कि यकायक एक चोवदार ने वड़े अदव के साथ एक लाल रंग का लिफाफा उनके सामने पेश करते हुए कहा, "हुजूर, थोड़ी देर हुआ रेजीडेन्ट साहव के दफ्तर का एक सिपाही यह चीठी दे गया और कह गया है कि वहुत जरूरी है।" नवाव साहव ने चीठी ले ली और उसके लिफाफे को उंगली से फाड़ते हुए ड्राइंगरूम की तरफ वढे जो वहां से कुछ ही दूर था और जिसके अंदर वैठे हुए उनके वजीर साहव उन्हें आता देख उठ कर अदव से सलाम करने को झुक रहे थे।

मगर नवाव साहव के मुंह से ताज्जुव की एक आवाज ने यकायक निकल कर वजीर साहव की झुकी हुई कमर को सीधा करने में जल्दी की और उन्होंने सिर उठा कर देखा कि उनके मालिक उस लाल कागज को गौर ताज्जुव तथा कुछ खौफ के साथ देख रहे है जो चोवदार के दिए हुए लिफाफे में से निकला है। इसके पहिले कि वे कुछ कहें या पूछें,

नवाव साहव ने उनकी तरफ देख इशारे से उन्हें अपने पास बुलाया और पहुंचते ही वह कागज उनके हाथ में देकर कहा, "पढ़िए।"

ताज्जुव में डूबे वजीर साहव उस कागज को पढ़ गए, यह लिखा हुआ था :—

"हमारे मुल्क के इन गुलामी के दिनों में भी वीती हुई इज्जत की कुछ कुछ याद दिलाने वाली यहां की रियासतें ही रह गई थी पर वे भी जब वेहयाई का वोरका पहिन कर ठोकर मारने वाले जूतों को सर पर रखती हैं और जिनकी वदौलत गुलामी का तौक गले मे पडा उन्ही की इज्जत करती हैं तो कलेजे पर सांप लोट जाता है। 'रक्त-मंडल' इस फरमान के जरिये आज से इस वात को एक दम वन्द करता है और यहां की सव रियासतों और सरदारों को हुक्म देता है कि वे आज के वाद अंग्रेजी हुकूमत से कोई भी सम्वन्व न रक्खें।

"अगर यहां की किसी रियासत का सरदार किसी अंग्रेज या उसके नुमाइन्दे को अपनी रियासत मे रक्खेगा, आने देगा, या उसकी किसी तरह की खातिर तवाजेह करेगा तो कसूरवार समझा जाकर सजा पावेगा। अगर कोई राजा या नवाव अपनी रियासत के अन्दर अंग्रेजी रियासत के किसी ओहदेदार या अफसर को वुलावेगा, खुद उसके पास जायगा, या उसकी खुशामद या खातिर तवाजेह मे लगेगा तो वह भी कसूरवार होकर सजा पावेगा। कोई भी देशी रियासत अंग्रेजी सरकार को किसी भी मद की कोई भी रकम देगी तो वह भी कसूरवार समझी जायगी।

" 'रक्त-मंडल' हुक्म-उदूली की सिर्फ एक ही तरह की सजा देना जानता है—मौत की—! इस लिए खवरदार, खवरदार !!"

इस अजीव चीठो के नीचे 'रक्त-मंडल' का अव प्रसिद्ध हो गया हुआ निशान—खून के दाग के भीतर चार उंगलियां—वना हुआ था।

[२]

वजीर साहब पर इस चीठी का कोई असर नही पड़ा यह कहना बिल कुल सुफेद झूठ होगा। वह अपना सिर खुजलाते हुए अपने, उस चीठी के पढने से बिगड़ जाने वाले, हवासों को दुरुस्त करने लगे, तथा साथ ही छिपी निगाहों से यह भी देखने लगे कि उनके मालिक अर्थात् नवाब साहब के ऊपर इस चीठी का कैसा असर हुआ है ताकि वे भी उसी मुताबिक अपनी राय कायम करें।

अपने भयानक कामो की बदौलत 'रक्त-मंडल' शैतान से बढ कर मशहूर हो गया था और उसका नाम देश के कोने कोने में फैल गया था अस्तु नवाब साहब भी उसके कारनामो से थोड़ा बहुत वाकिफ जरूर हो चुके थे। 'रक्त-मंडल' की इस धमकी का उन पर कुछ भी असर नही पडा हो यह बात न थी, और इसमे भी कोई शक नही कि अगर वही बात जो इस चीठी मे लिखी गई थी किसी और मौके पर तथा किसी दूसरे ढंग पर उनके सामने लाई गई होती तो शायद वे उस पर काफी गौर करते और उसके बर्खिलाफ चलने के पहिले तीन दफे सोच लेते, मगर इस चीठो के लफ्जो ने उनके गर्म खून को उबाल दिया। इस चीठी को 'फरमान' कहना, इतनी बड़ी रियासत के नवाब को 'हुक्म' देना, और न मानने पर 'मौत' की धमकी देना—ऐसी बातें थी जिनको उनका नौजवान दिमाग सहज में पचा न सकता था। फिर भी वे इस बात की राह देख रहे थे कि देखे उनका जमाना देखे हुआ बूढा वजीर इस बारे में क्या राय कायम करता है और इसी गरज से वे इस समय एकटक अपने वजीर की तरफ देख रहे थे।

जब वजीर साहब ने देखा कि नवाब साहब का चेहरा कुछ भी इशारा नही कर रहा है कि वे किस तरह की राय उन्हें दें और साफ यही जाहिर हो रहा है कि वे उन्ही की राय जानना चाहते है तो आखिर

उन्हें अपना मुंह खोलना ही पड़ा। उन्होने कुछ रुकते रुकते कहा, "हूजूर, यह तो बडी बुरी खबर है !!"

नवाब साहब बोले, "बेशक, लेकिन अब करना क्या चाहिए ?"

वजीर साहब ने इधर उधर देखा। कई नौकर चाकर काम काज के लिए चारो तरफ फिर रहे थे। यद्यपि नवाब साहब के पास आने की जुर्रत कोई भी नही कर रहा था परन्तु फिर भी वजीर साहब को शक हो गया कि शायद उनके मुंह से कोई ऐसी बात निकल पड़े जो 'रक्त-मंडल' की शान के खिलाफ हो तो लेने के देने पड जायंगे, और इसी तरह अगर अंगरेज सरकार के खिलाफ कुछ कहा तो भी मुश्किल होगी, क्योंकि इसमें तो कोई शक ही न था कि दोनो ही के जासूस और भेदिये इस महल में मौजूद होंगे; अस्तु उन्होने इधर उधर देख कर कहा, "हुजूर अगर अपने प्राइवेट कमरे मे चले चलें तो इस बारे में मैं अपनी राय जाहिर करूं।"

बड़ी जल्दी बल्कि खुशी के साथ नवाब साहब ने यह राय मान ली और अपने वजीर को लिए हुए निजी कमरे की तरफ चले। इस कमरे में पहुंच के एक कोच पर बैठ गए। वजीर ने कमरे का दर्वाजा बन्द कर लिया और तब एक निगाह चारो तरफ इस नीयत से फेर लेने बाद कि कही कोई आदमी तो मौजूद नही है नवाब का हुक्म पा उनके सामने एक कुर्सी पर बैठ गये। कुछ देर सन्नाटा रहा जिस बीच दोनो ही कुछ सोचते रहे, इसके बाद नवाब साहब की सवाल की निगाह अपने ऊपर पड़ती देख वजीर साहब बोले, "सच तो यह है हुजूर कि इस वक्त ऐसा मौका आ गया है कि कोई बात ठीक करना मुश्किल हो गया है। दोनों ही तरफ खराबी नजर आती है। अगर इस चीठी की बात न मानी जाय तो ये शैतान बहुत भारी खराबी पैदा कर सकते हैं। हुजूर को याद होगा कि कुछ ही दिन हुए अंगरेजों के खास कमांडर-इन-चीफ को इन लोगों ने मार डाला और किसी के किए कुछ न हुआ, और अगर इस चीठी की बात मानते हैं तो उधर अंगरेज नाराज होते है जिनकी अबाई का

सब इन्तजाम हो चुका है और इस वक्त कोई बहाना निकाल लेना बहुत ही मुश्किल है। हुजूर, लाख भी हो फिर भी हमारे मालिक तो अंगरेज हैं ही।"

नवाब०। बेशक, और उन्हें नाराज करके मैं कही का न रहूंगा खास कर ऐसे मौके पर जब कि उनसे इतना बडा काम लेना है। (सिर हिला कर) नही नही, मैं इस वक्त किसी तरह भी अंगरेजों को नाराज नही कर सकता, एक रक्त-मंडल नही सौ रक्त-मंडल भी चाहे मुझे रोकें। आप ही सोचिये वजीर साहब कि अगर वह इलाका मुझे वापस मिल गया जो मेरे बुजुर्गों के हाथ से निकल गया था तो मेरी आमदनी दूनी हो जायगी और मेरा राज्य ड्योढ़ा हो जायगा। भला इतने दिनों के बाद अब जब मामला कुछ रंग पर आता दिखाई पड़ रहा है तो ऐसे वक्त अंगरेजों को नाराज कर भी अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाड़ी मारूंगा !!

वजीर०। हूजूर बहुत ठीक कहते हैं, सो भला कैसे हो सकता है ! इतने दिन तक लगातार कोशिश करने बाद जो मामला कुछ सीधी राह पर आया है उसे इस तरह बिगाड़ना कभी अक्लमन्दी की बात नहीं होगी, मगर फिर यह बात भी है कि इस रक्त-मंडल का कुछ खयाल रखना भी जरूरी है।

नवाब०। (कुछ जोश के साथ) दो नाव पर पैर रखने से कुछ न होगा वजीर साहब, एकबग्गा बनना पड़ेगा,—या इधर या उधर। सरकार से भी भले बने रहें और इस कम्बख्त रक्त-मंडल को भी नाराज न करें, सो नही हो सकता। और फिर ये थोड़े से शैतान मेरा कर क्या सकते है। भले ही ब्रिटिश इन्डिया में वे जो चाहे उपद्रव किया करें। मेरे राज्य के अन्दर वे कुछ भी मीन-मेख करेंगे तो एक एक को पकड़वा कर बोटी बोटी उड़वा दूंगा, वे सब है किस फेर में ! इस तरह अगर मैं ऐरे गैरे शैतानों की धमकियों में आया करूं तो बस फिर हो चुका !!

जमाना देखे हुए बूढे वजीर के दिल में तो कुछ और ही था पर मालिक का विगडा हुआ रुख देख ऊपर से वह वोला, "जी हां हुजूर, इस रियासत में तो इनकी कोई कलई चलने न पाएगी जहां आपके आकानामदार इस कदर रोव गालिव कर गए हैं कि नाम सुन कर लोगो का पेशाव खता होता था। और हुजूर के रुआव का भी यह हाल है कि .. ...

नवाव०। (मोछ पर हाथ फेर कर) जनाव मैं कहता हूं कि कोई आंख उठा कर तो देखने की हिम्मत कर ही नही सकता, जरा कोई चूं करे एक वारगी तोप-दम करवा दूं। मैं सच कहता हूं कि मेरे यहां यह कम्वख्त रक्त-मंडल कुछ नहीं कर सकता, अंगरेजी सल्तनत में जो चाहे किया करे जहां के अहलकार कानून कायदे के पीछे ही मरे जाते है !

वजीर०। यही वात है हुजूर, अंगरेज लोग कड़ाई से काम लेना नहीं जानते नही तो भला कोई वात है कि ऐसे नालायकों की जरा भी दाल गल सके। हुजूर वहुत छोटे थे तव की वात है और शायद आपने भी सुना ही होगा कि एक दफे हुजूर के दादा साहव के वक्त मे इस शहर के कुछ सौदागरों ने सरकार के हुजूर से माल देकर रुपया न पाने की शिकायत कलकत्ते जाकर वड़े लाट साहव से कर दी थी। वड़े हुजूर को खवर लग गई। उसी वक्त हुक्म दिया कि जो जो भी गया हो इस रियासत मे वसे हुए उसके सव रिश्तेदार कैद कर लिये जायं, सभों का घर लूट कर खजाना सरकार में दाखिल किया जाय, और मकानात गिरा कर जमीदोज कर दिये जांय। रातो-रात इस हुक्म की तामील की गई और सवेरा होते होते तक उनके घरवार का कोई नाम निशान वाकी न रहा। कलकत्ते जाने वाले तो खौफ के मारे लौटे ही नही उनके रिश्तेदारो के भी वरसो गिड़गिड़ाने और नाक रगड़ने पर तव वडे हुजूर ने उन सभों को जेलखाने से रिहाई दी सो भी इस शर्त पर कि दिन के दिन रियासत छोड कर वाहर निकल जांय। तव का दिन है और यह आज का कि फिर कभी किसी ने वैसा करने की जुर्रत न की।

थोडी देर तक इसी लहजे में वातचीत होती रही और तव नवाव

साहव ने परसों वाले दरवार का जिक्र छेड़ दिया। बूढ़ा दीवान उनके सवालो का जवाव देने लगा मगर उसके दिल मे रह रह कर रक्त-मंडल की वह धमकी अंधेरी रात की विजली की तरह तड़प उठती थी।

[३]

सुवह के आसमान मे सूर्य ऊंचे हो चुके थे जव नवाव हैदरजंग वहादुर अपने सुनहरे पलंग पर से अंगडाइया लेते हुए उठे। रात को कल दिन भर की खुमारी दूर करने के खयाल से उन्होने दो एक 'पेग' मामूल से ज्यादा ले लिये थे जिन्होने इस वक्त खुमारी पैदा कर दी थी जिससे उन्हें उठने मे सिर्फ देर ही नही हो गई थी वल्कि सिर दर्द कर रहा था।

मुंह धोने के लिये वर्फ से तर किया हुआ गुलावजल और आफतावा लिए हुए दो लौडियां दर्वाजे पर मौजूद थी जो नवाव साहव को जगा हुआ देख भीतर आई। नवाव साहव ने मुंह धोया और पान खाया। एक लौडी ने जूते आगे वढा दिये। नवाव उनमे पाव डाल हो रहे थे कि यका-यक सिर्हाने के वगल वाले टेवुल पर कोई चीज देख चौक पड़े।

वह चीज जिसने नवाव साहव को चौंका कर उनकी सव खुमारी एक दम दूर कर दी एक चमकता हुआ छूरा था जिसकी नोक टेवुल की लकडी मे घुसी हुई थी और जिसके मुट्ठे के साथ लाल रंग का कोई कागज वंधा हुआ था।

जिस तरह कोई जहरीले साप को देखता है उस तरह थोड़ी देर तक नवाव साहव उस छूरे को देखते रहे। इसके वाद वडी हिम्मत के साथ हाथ वढ़ा कर उन्होंने वह छुरा टेवुल से निकाला, कुछ देर तक उसे देखते रहे, और तव उसमें वंधे पुर्जे को खोला। यह भी रक्त-मंडल की ही एक चीठी थी जिसमे सिर्फ इतना लिखा हुआ था :—

"होशियार, होशियार!

"नौजवान नवाव, याद रख कि जिस आसानी से यह छूरा इस टेवुल पर गाड कर हम जा रहे है उसी आसानी से इसे तेरी छाती में भी मोक

सकते थे। अगर हमारा हुक्म तूने न माना और वड़े लाट की खातिर तवाजो से वाज न आया तो अपने को जीता न पावेगा। इसी से फिर कहते हैं— खवरदार ! होशियार !!"

मजमून के नीचे रक्त-मंडल का खूनी निशान वना हुआ था।

नवाव साहव कुछ देर तक डर घवराहट और फिक्र में डूवे वैठे रहे। वे लौडियां भी आश्चर्य में डूवी कभी अपने नवाव और कभी उस छूरे को देखती रहीं।

रक्त-मंडल की इस धमकी ने असर नही किया यह वात नही थी। खुद नवाव साहव भी इस वात को समझते थे कि जो लोग इतने कड़े पहरे को तोड़ते हुए महल के अन्दर आ गए और खास उनके कमरे में घुस कर इस छूरे को गाड़ गये वे उनका खून भी कर जा सकते थे। वे यह भी समझ सकते थे कि जिस रक्त-मंडल ने खुद अंगरेज सरकार को परेशान किया हुआ है वह उनके जैसों को क्या समझेगा। मगर यह सब सोचते जानते और समझते हुए भी वे अपने नौजवान खून और उस उद्दण्डता के भाव से लाचार थे जो पुश्तों से इस खून में भरती चली आई थी। अगर कोई ज्यादा उम्र का या अधिक वुद्धिमान आदमी इस चीठी को पढ़ता तो शायद दव जाना ही होशियारी की वात समझता मगर नौजवान नवाव पर इसका उल्टा ही असर पड़ा। जो कुछ डर और घवराहट पैदा हुई थी उसे दवा कर थोड़ी देर वाद क्रोध ने अपना अधिकार जमाया और यह भाव दिमाग में चक्कर खाने लगा कि 'है, ये शैतान मुझ पर हुकूमत चलाते और मुझे डराते है ! मुझे भी क्या कोई मामूली आदमी समझ रक्खा है कि इनकी धमकी से डर जाऊंगा ? मैं भी इन लोगों को वता दूगा कि क्या कुदरत रखता हूं !!'

यकायक सिर उठा कर नवाव साहव ने एक लौडी से कहा, "जा, जुलफिकारअली को अभी वुला कर ला।" दूसरी की तरफ देख कर वे वोले, "कल रात नौ वजे से लेकर आज इस वक्त तक मेरे महल की

सातो ड्योढ़ियों पर जिसने जिसने भी पहरा दिया हो सब को हुक्म दे कि पन्द्रह मिनट के अन्दर तोसरी ड्योढी पर हाजिर हो।"

दोनों लौडिया झपटती हुई कमरे के बाहर हो गई और हमारे नवाब साहब गुस्से में भरे हुए उस कमरे में इधर से उधर चक्कर लगाने लगे। उनके हाथ में छूरा था जिसे घुमा फिरा कर देखते हुए वे कभी कभी बोल उठते थे; "इतने पहरेदार रखने से फायदा ही क्या कि जो चाहे ऐरा गैरा मेरे महल मे घुस आवे और मनमानती कार्रवाई करके अछूता चला जाय!"

मुश्किल से पाच मिनट बीते होगे कि लौडी ने हाजिर होकर कहा, "वजीरे आजम साहब बाहर ड्योढी पर हाजिर है।" नवाब साहब बोले, "उन्हे यही ले आ।" लौडी चली गई और थोड़ी ही देर मे नवाब साहब के वजीर जुलफिकारअलीखां ने वहां पहुच लम्बी सलाम अता की।

उन्हें देखते ही नवाब साहब बोल उठे, "देखिये वजीर साहब यह छूरा। आज सुबह जब मैं सोकर उठा तो इसे उस टेबुल पर गड़ा हुआ पाया। इसके साथ था यह पुर्जा।" नवाब साहब ने वह पुर्जा वजीर के हाथ में दिया।

पुर्जा पढ वजीर साहब का चेहरा पीला पड़ गया और बदन कापने लगा। उनकी हालत नवाब साहब से भी छिपी न रही जो उनकी तरफ कडी निगाह से देख रहे थे और इसके पहिले कि दीवान साहब कुछ बोलें उन्होंने कहा, "बड़े अफसोस की बात है कि मेरे महल और खास मेरे सोने के कमरे में खूनी शैतान बेधड़क घुस आवे और इस तरह के काम करके बेलाग निकल जावें। तब तो मुझमें और उस भिखमंगे में कोई फर्क न रह गया जो सड़क के किनारे पड़ा सोया करता है। इतना पहरा चौकी और ड्योढिए सब फजूल है। मगर खैर इसका तो मैं इन्तजाम कर लूंगा, आपको मैंने इस लिये बुलाया है कि आप फौरन रेजीडेंट साहब के पास चले जांय और उनसे यह सब हाल कह के सलाह करें कि

इस हालत मे क्या करना मुनासिब होगा। अगर वे बड़े लाट साहव से बातें कर सकं तो उन्हें भी यह खवर दे दी जाय और साथ ही साथ मेरी तरफ से यह भी कह दिया जाय कि यह रक्त-मंडल वाले रियासत अंगरेजी के वागी हैं, ये अगर मेरी रियासत में आकर इस तरह का फिसाद खडा करेंगे तो लाचार हो कर मुझे दव जाना पडेगा क्योकि जिन्हें अंगरेज सरकार पस्त न कर सकी उनका मैं भला किस तरह मुकाविला कर सकता हू। इसी वक्त फौरन या तो इनके वार से मुझे वचाने का पूरा इन्तजाम किया जाय और या फिर मुझे इस वात की इजाजत दी जाय कि मैं दिन भर महल के अन्दर छिपा वैठा रहूँ और लाट साहव की अगवानी के लिए भी वाहर न निकलूं। अपने साथ आप इन दोनो चीठियों को भी लेते जाइये।"

नवाव साहव ने अपने वजीर को और भी कुछ वातें वताईं और उसी वक्त उन्हें अपने पास से विदा कर दिया।

उनके जाने के थोड़ी देर वाद तक नवाव साहव इधर उधर टहलते हुए कुछ सोचते रहे, इसके वाद जिस समय एक लौडी ने हाजिर होकर अर्ज किया कि सव पहरेदार तीसरी ड्योढ़ी पर हाजिर है तो वे कमरे के वाहर निकले और वह छूरा हाथ मे लिए हुए तीसरी ड्योढ़ी की तरफ चले।

नवाव साहव के महल मे कुल सात ड्योढियां पड़ती थी जिनमे से पहिले दो पर सिपाहियो का पहरा पड़ता था, तीसरी पर हव्शी गुलामों का, चौथी पर खोजो का, और वाकी तीनो पर हथियारवन्द लौडियों का। दिन रात में आठ वार यह पहरे वदले जाते थे। कल रात से अव तक के चार पहरों के सव सिपाही, हव्शी, खोजे और लौडियां इस समय वाहर की तीसरी ड्योढ़ी पर इकट्ठे थे और आपस में कानाफूसी करते हुए इस डर से कांप रहे थे कि देखें गुस्सेवर नवाव साहव उन लोगों को क्या सजा देते हैं, क्योंकि उड़ती उड़ती वह खवर तो इसी वीच में उनको ही क्या आधे महल को लग चुकी थी कि नवाव साहव के पलंग के पास कोई

छूरा गाड़ गया है। रक्त-मंडल का नाम भी किसी किसी जुवान पर था मगर बहुत ही छिपे तौर पर।

नवाव साहव को आते देखते ही चारो तरफ सन्नाटा छा गया और कानाफूसी एकदम वन्द हो गई। इस समय सव लौंडियां एक तरफ और खोजे तथा मर्द पहरेदार एक तरफ खडे थे। नवाव साहव दोनो के वीच में जाकर खडे हो गये और गुस्से भरी आवाज में वोले, "लौंडियो, गुलामो, और पहरेदारो! वडे अफसोस की वात है कि तुम लोग इतने दिनो से हमारा नमक खाते आ रहे हो फिर भी तुम्हें इसका कुछ ख्याल नही है कि मेरी जान की क्या हिफाजत होता है! लो सुनो और देखो, आज सुवह जव मै सो कर उठा तो यह छूरा मेरे पलंग के वगल वाले टेवुल पर गड़ा हुआ था और इसके साथ इस मतलव का एक पुर्जा वंधा था कि अगर मैं होशियारी से नही चलूंगा तो कल इसी तरह मेरी छाती में छूरा भोक दिया जायगा। इतने पहरेदारों को रखने से मुझे क्या फायदा अगर इस आसानी से पाजी शैतान मेरे सोने के कमरे में घुस आवें और निकल जायं? इसके दो ही माने हो सकते है। या तो जिसका यह काम है उसने तुम सभों को घूस और लालच दे के अपनी तरफ मिला लिया है और या तुम लोग इतनी लापरवाही से अपना फर्ज अदा करते हो कि उससे मेरी कोई भी हिफाजत नही हो सकती। इन दोनो ही हालतो में तुम्हारा रखना वेकार ही नहीं है खतरनाक भी है।"

नवाव साहव अपनी वात का पूरा असर हो जाने देने के लिये जरा देर के लिये चुप हो गये। सुनने वालो के चेहरे पीले पड़ गये। नवाव साहव की प्रकृति को जानने वाले खूव समझते थे कि सवसे भयानक हिस्सा अभी सुनने को वाकी है।

कुछ ठहर कर नवाव साहव वोले, "मैं तुम लोगों को तीन पहर की मोहलत देता हूं। इस वीच में या तो उस आदमी को गिरफ्तार करके मेरे पास लाओ जिसने यह काम किया है, और नही तो समझ रक्खो कि तुम

सभी को जिन्दगी भर के लिए मैं कालकोठरी में ठूंस दूंगा, तुम्हारा माल असबाब जब्त कर लिया जायगा, तुम्हारे औरत मर्द और बच्चे मेरी रियासत के बाहर निकाल दिए जांयगे, और मकानात गिरा कर जमीदोज कर दिए जायगे। कोई मिन्नत, कोई आरजू, मेरे इस हुक्म को बदल न सकेगी। बस, अभी मेरे सामने से चले जाओ और तीन पहर बाद इसी जगह फिर हाजिर होवो।"

पहरेदारों को अपने जवाब में कुछ भी कहने का कोई मौका दिए बिना ही नवाब साहब घूमे और झपटते हुए अपने बैठके की तरफ चले गए।

[४]

बात को बात में यह समाचार समूचे शहर में फैल गया कि रात को किसी के नवाब साहब को छूरा भोंक कर मार डालना चाहा था।

जैसा कि किम्वदंतियो की आदत है, तरह तरह से बढ़ती हुई इस खबर ने रियासत के कोनो तक पहुचते पहुंचते बड़े ही विकृत और अद्भुत अनेक रूप धारण कर लिए पर हमें इस जगह उससे कोई मतलब नहीं, हम तो इस समय ताज्जुब और प्रसन्नता से देख रहे है कि नवाब साहब की धमकी का इतना बडा असर हुआ कि लगभग घंटे ही भर बाद एक आदमी जो रस्सियो से बहुत मजबूती के साथ बांधा हुआ था उनके हुजूर में यह कह कर पेश किया गया कि आधी रात के बाद यह आदमी महल के बाहर इधर उधर घूमता दिखाई पड़ा था और इस वक्त महल की एक अंधेरी कोठरी के अन्दर छिपा हुआ पकडा गया है, बोलने से कुछ भी नही बताता कि कौन है, और न यही बताता है कि किस काम के लिये महल में घुसा था।

यह खबर जब नवाब साहब के कान में पड़ी तो उनके सिर से मानो एक बोझा सा उतर गया। उन्होने अपने पास उस मुजरिम को बुलाया और उससे तरह तरह के सवाल करने लगे मगर उसने किसी बात का कोई जवाब न दिया। जब बहुत तरह से पूछ कर नवाब साहब हार गये तो गुस्से में भर कर उन्होंने हुक्म दिया, "इसे मेरे सामने से ले जाओ और

जैसे यह वताए वैसे दरियाफ्त करो कि यह मेरे महल में क्यों घुसा था !!"
"जैसे हो तैसे" का मतलव सव जानते थे, उसका माने था असह्य यन्त्रणा !

इस काम से फारिग हो नवाव साहव अपने कमरे में लौट ही रहे थे कि उन्हें अपने वजीरआजम के वापस लौटने की खवर लगी और कुछ ही सायत वाद वजीर साहव ने उस कमरे मे पैर रक्खा ।

नवाव साहव ने कुछ व्याकुलता से पूछा, "कहिए क्या हुआ ?" उन्होने जवाव मे एक कागज सामने पेश करते हुए कहा, "लाट साहव ने यह संदेशा हुजूर को भेजा है ।"

नवाव साहव ने कागज उठा कर पढ़ा । अगरेजी का एक छोटा मजमून था जिसका मतलव यह था .—

"रक्त-मडल की किसी धमकी से विल्कुल मत घवराइए । मैने अपने कर्मचारियो को पूरा बन्दोवस्त करने की आज्ञा दे दी है । किसी इन्तजाम मे कोई भी फर्क अगर पडेगा तो मै समझूगा मेरा अपमान किया गया है ।"

पढ़कर नवाव साहव के माथे पर दो चार सिकुड़नें पड गई । उन्होने चिन्ता के साथ पूछा, "इसका क्या मतलव ? रेजीडेन्ट साहव से आपकी क्या वाते हुई ?"

वजीर० । हुजूर मैने उन्हें वे दोनो खत दिखाये और पूरा हाल सुनाया । सुन कर वे वोले, "हमारी सरकार को पहिले से यह खवर लग चुकी है कि रक्त-मडल आपकी और आस पास की दूसरी कई रियासतों मे शैतानी करना चाहता है और इसीलिये सरकार के भेजे हुए कई होशियार जासूस वहुत थोडी देर मे यहा आ पहुचेंगे । उन्होने वहुत तरह से भरोसा दिलाया और कहा कि इन कम्वख्तो से डरने की कोई भी जरूरत नही है, यह सव इनकी कोरी धमकी है जिसका कोई भी असर नही पड़ सकता । इसके बाद उन्होने लाट साहव की स्पेशल ट्रेन इस समय कहां पर है इसे दरियाफ्त कराया और तव उनसे तार के जरिये वातचीत की । लाट साहव ने आपको जो संदेशा भेजा वही यह है । रेजीडेन्ट साहव का

भी इस बारे में कहना है कि अगर आप इन शैतानों की धमकियों में पड़ कर बड़े लाट साहब के स्वागत में कुछ भी कोर कसर करेंगे तो वे इसे अपनी बेइज्जती समझेंगे। फिर इसका बुरा असर आस पास की दूसरी रियासतों पर पड़ेगा और वे सब भी डर के मारे कुछ खातिर तवाजो न करेंगी। यह तो हुजूर जानते ही है कि लाट साहब इधर दो महीने तक सिर्फ इस तरफ की सब रियासतों में ही घूमते रहेंगे।

नवाब०। (कुछ बेचैनी से) मगर वजीर साहब, आपने यह उनसे नही कहा कि रक्त-मंडल वाले जिस तरह आज रात को मेरे सोने के कमरे के टेबुल मे छूरा घुसा गए उसी तरह कल मेरी छाती मे उसे भोंक जा सकते है। ब्रिटिश सरकार जब अपनी अमलदारी में इस रक्त-मंडल का कुछ बिगाड़ नही सकती तो मेरी रियासत में उनसे मुझे बचा सकेगी इसका क्या इतमीनान है ?

वजीर०। मैने तो सब कुछ कहा हुजूर मगर वहा कोई सुने भी तब तो ! सच तो यह है कि रेजीडेन्ट साहब की बातों से मुझे कुछ यह अन्देशा हुआ कि ऐसी ही चीठियें उन सब रियासतो मे पहुंची है जिनमें लाट साहब दौरा करने वाले हैं। अगर हमारे यहां उनकी खातिरी मे फर्क पड़ गया तो फिर बाकी छोटी रियासते तो एक दम ही डर जाएगी और इसी खयाल से हम पर इतना दबाव डाला जा रहा है।

नवाब०। खैर जो होगा देखा जायगा, अब इतना करके तो मै पीछे हटने का नही और फिर जब रक्त-मंडल का एक जासूस पकडा गया है तो मुमकिन है उससे कुछ भेद लग भी जाय। आप जाइये और सब इन्त-जाम जैसे हो रहा था उसी तरह पूरा करा डालिए।

वजीर०। बजा इर्शाद, मगर यह हुजूर ने क्या कहा कि रक्त-मंडल का एक जासूस पकड़ा गया है।

नवाब०। क्या आपको मालूम नही हुआ ? मैने पहरेदारो को वह डांट बताई कि उन्होने दौड़ धूप कर के एक आदमी को गिरफ्तार किया

है जो रात भर महल के अन्दर छिपा हुआ था। वह कम्वख्त अगरचे कुछ भी नही वताता है कि कौन है या किस वास्ते यहां आया था मगर मालूम होता है वह रक्त-मंडल ही का कोई आदमी है। जरा आप भी उससे वाते करके देखियेगा, शायद आपको कुछ पता लग सके।

कुछ और वातचीत के वाद नवाव साहव उठ खडे हुए। दीवान साहव ने भी उनसे इजाजत ली और काम की फिक्र मे लगे।

× × ×

लाट साहव की स्पेशल जव मुजफ्फरावाद से दो स्टेशन पहिले के एक छोटे फ्लैग स्टेशन पर पहुंची तो यकायक रोक दी गई। वडे अफसरों के हुक्म से यहां के स्टेशन मास्टर ने यह कार्रवाई की थी। लाट साहव ने जव इसका कारण जानने को खिडकी के वाहर सिर निकाला तो उनके सेक्रेटरी ने वहा पहुंच कर एक तार उनके हाथ मे दिया जिसमे यह लिखा था —
"नवाव हैदरजंग वहादुर अगवानी के लिये वडे स्टेशन को आ रहे थे जव उनकी मोटर पर वम फेंका गया और उनकी मौत हो गई।"

लाट साहव के मुंह से रक्त-मडल के लिए एक गाली निकल गई।

थोडी देर तक लाट और उनके सेक्रेटरी मे कुछ वाते होती रही, इसके वाद सेक्रेटरी ने ड्राइवर को ट्रेन पीछे वापस ले चलने का हुक्म दिया।

हमारे किस्से से सम्वन्ध न होने पर भी वता देने में हर्ज नही कि वह जासूस जो महल में पकडा गया था उसी दिन मर गया। क्यो ? यह वताना तो कठिन है, पर वाद में इतना जरूर जाना गया कि वह एक गरीव अन्धी भिखारिन का एकलौता गूंगा और वहरा लड़का था जिसे महल के पहरेदार जवर्दस्ती उसके घर से पकड़ ले गये थे। देशी रियासतों में अपनी जान वचाने के लिए दूसरी जानें होम कर देने की ऐसी घटनायें होती ही रहती है अस्तु यह वात कोई महत्व की न समझी गई और नवाव साहव की मौत से पैदा होने वाली घवराहट में यह छोटी घटना न जाने कहा दव गई।

ज्वालामुखी

[१]

अपने दफ्तर के बगल वाले छोटे कमरे मे काशी के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मिस्टर केमिल थकावट की मुद्रा में एक कोच पर पडे हुए है। उनके मुंह मे एक सिगार है पर उससे कभी ही कभी वे धूआं खीचते है।

कल रात को रक्त-मंडल के प्रधान अड्डे पर धावा करके नगेन्द्रनरसिंह को गिरफ्तार करने की जो जो भी ऊंची उम्मीदें बंधी थी आज वे सब टूटी हुई है क्योकि न केवल नगेन्द्रनरसिंह भाग गया बल्कि उसके सब साथी भी निकल गये, एक भी हाथ न लगा। इतने परिश्रम और विचार के साथ की गई सब तैयारी व्यर्थ हुई, केवल व्यर्थ ही नही हुई बल्कि इनके पक्ष के लिये बहुत कीमती भी सिद्ध हुई, क्योकि पंडित गोपालशंकर भी तभी से गायब है और बहुत मुमकिन तो यही है कि दुश्मनों के कब्जे में पड गए हों।

इस समय कोच पर पडे केमिल इन्ही सब बातो को सोच रहे थे और साथ ही साथ अपनी प्यारी बेटी रोज का भी कुछ पता न पाने के रञ्ज मे डूबे हुए दुश्मनों से बुरा बदला लेने का खयाल भी करते जाते थे । कल

रात का पूरा अहवाल वे ऊचे अफसरो के पास भेज चुके थे और इस समय के घोर निराशा के अन्धकार में आशा का कोई टिमाटिमाता प्रदीप यदि उन्हें दिखाई पड़ता था तो केवल यही कि शायद कही दूर जाकर उन मोटर, मोटर-बोट या वायुयान में से कोई पकडा गया हो (जिन पर चढ कर नगेन्द्रनरसिंह और उसके साथी भागे थे) और कोई आदमी गिरफ्तार हुआ हो। उन्होने इस बात की प्रार्थना अपने ऊपर के अफसरो से कर दी थी कि अगर कही इस सम्बन्ध में कोई बात जानी जाय तो उन्हें उसकी खबर तुरन्त की जाय और यह प्रार्थना स्वीकार भी कर ली गई थी अस्तु जैसा कि हमने ऊपर कहा, कोई आशा अगर बच गई थी तो सिर्फ इतनी ही।

सबसे ज्यादा दुःख उन्हें गोपालशकर के बारे में था। इसमें तो उनको कोई सन्देह ही न रह गया था कि वे दुश्मनो के हाथ में पड गये है और यह भी वे सोच सकते थे कि उनके दुश्मन उन्हें अपने कब्जे में पा कर कभी जिन्दा न छोडेंगे। इस समय अगर उन्हें या उनकी सरकार को किसी का भरोसा था तो केवल गोपालशंकर का। यद्यपि रक्त-मंडल ने उनकी बुद्धि को भी चक्कर में डाल दिया था तिस पर भी उससे मोरचा लेने लायक कोई था तो वे ही। उनके चले जाने से उनकी सरकार का दाहिना हाथ टूट गया था और खुद उनका तो एक दम दिल ही बैठ गया था।

इस समय बहुत देर से कोच पर पडे केमिल यही सोच विचार रहे थे। कल रात की थकावट दूर करके थोडी देर की नीद लेने के इरादे से वे यहा आये थे मगर नीद उनको आखों से कोसो दूर जान पडती थी। आखिर जब किसी तरह उन्होंने अपने शरीर या मन को विश्राम पाते न देखा तो व्यर्थ को पडे रहना फजूल समझ वे उठे और कही जाना ही चाहते थे कि अचानक बगल की कोठरी से टेलीफोन की घन्टी बजने की आवाज उनके कान में पड़ी और वे उसी तरफ को बढ गए।

टेलीफोन छोटे लाट साहब के दफ्तर से आया था। युक्त-प्रान्तीय लाट

के सेक्रेटरी मिस्टर फरगूसन के साथ केमिल की बात होने लगी—

फरगूसन०। मिस्टर केमिल, हम लोगो को नैपाल रेजीडेन्सी से अभी अभी खबर मिली है कि गुब्बारे पर चढ़ा हुआ कोई आदमी इसी तरफ से उड़ कर आता हुआ वहा देखा गया है। गुब्बारा वहां के पहाड़ों मे कही गिरा है। हमलोगो की इच्छा है कि कुछ आदमी इस बात की जांच करने के लिये भेजे कि उस गुब्बारेपर कौन था और वहां कहा गया क्योकि बहुत सभव है कि वह रक्त-मंडल का ही कोई आदमी या स्वयं नगेन्द्रनरसिंह ही हो। क्या आप उन आदमियों के साथ जाना पसन्द करेंगे ?

केमिल०। बड़ी खुशी से !

फरगूसन०। तो बस दो घन्टे में तैयार हो जाइये और जहां तक जल्दी हो सके रक्साल पहुचिये जहां आपको बाकी आदमी मौजूद मिलेंगे। वहां के फौजी दफ्तर मे आपको हुक्मनामा तथा बाकी के जरूरी कागजात मिल जायेंगे।

केमिल०। बहुत अच्छा, मैं दो घन्टे के भीतर वहाँ के लिये रवाना हो जाऊंगा, मगर मै सोचता हूं कि साथ ही साथ अगर मुझे यह इजाजत भी मिल जाय कि अगर मौका पाऊं तो रक्त-मंडल के किले का पता लगाऊं या उस पर हमला ही कर दूं तो और भी अच्छा था।

फरगू०। अच्छा मै लाट साहब से पूछ कर इसके विषय मे भी तय कर लूंगा। आपकी राय बेशक ठीक और मुझे भी पसन्द है मगर मैंने सुना है कि बडे लाट साहब के हुक्म से एक पार्टी इस काम के लिए रवाना हो चुकी है जिसके साथ चार जंगी हवाई जहाज और लड़ाई का पूरा सामान भी है। कैप्टेन रूबी ने रक्त-मंडल के एक जासूस से पंडित गोपालशंकर के बनाये यन्त्र के जरिये जो कुछ गुप्त भेद जाने थे उन्ही के बिना पर हमला हो रहा है, मगर खैर इस बारे मे भी पूरी खबर आपको रक्साल ही में मिल जायगी।

केमिल०। बहुत अच्छा, लेकिन तब मै कहूंगा कि रक्त-मंडल के

किले पर आक्रमण करने को रवाना होने वाले लोगों में मुझे भी शामिल कर दिया जाय। मुझे शैतान रक्त-मंडल से शुरू से वास्ता पड़ा हुआ है और इसीलिए इतना मैं अपना अधिकार समझता हू।

फरगू०। (हंस कर) बेशक आपको यह हक हासिल है और मै पूरी कोशिश करूंगा कि आप उस गिरोह में रह सकें, पर अभी ठीक तौर से कोई बात मै इसलिये नही कह सकता कि बड़े लाट साहब ने यह मामला बिल्कुल अपने हाथ मे रक्खा है, फिर भी मै मिस्टर थामसन से इस बारे में बात करूंगा। चूंकि वह दल भी रक्साल ही से रवाना होने को है इससे मुझे उम्मीद है कि आपकी बात मिस्टर थामसन मंजूर कर लेंगे। खैर आप यह तो बताइये कि वहा से जो रक्त-मंडल वाले भागे उनमें से किसी जगह कोई पकड़ा भी गया ?

कमिल०। कहीं कोई नही, उनकी मोटर इतनी तेज थी कि हमारी सब मोटरो को पछाड के कही निकल गई। हमारी मोटर-बोट एक जगह दलदल में फंस गई और उनकी मोटर-बोट का पीछा करने से लाचार रही। उनके हवाई जहाज की कोई खबर नही लगी मगर एक हवाई जहाज के रात के समय कोसी नदी के ऊपर से उडते जाने की आवाज कुछ लोगो ने सुनी ऐसी खबर लगी है, परन्तु वह भी किधर चला गया कोई नही जानता, सभव है कि वह उनके किले में ही जा उतरा हो। अंधेरी रात ने हम लोगो को बहुत बडी बाधा दी। हा हमारे एक हवाई जहाज के चलाने वाले का कहना है कि पीछा शुरू होने के कुछ ही मिनटों बाद उसके जहाज के दाहिने पख में किसी चीज का ऐसा कडा धक्का लगा था कि जहाज डोल गया था मगर वह चीज क्या थी इसका कुछ पता न लगा। इतने इन्तजाम, इतनी कोशिशे, सब बेकार हुई और वे कम्बख्त निकल ही गए।

फरगू०। बेशक और इसमे उनकी फुर्ती हिम्मत और दिलेरी साबित होती है। हा यह तो बताइये, पंडित गोपालशंकर का कुछ पता लगा ?

केमिल० (अफ़सोस के स्वर मे) कुछ भी नही, मुझे तो ख्याल होता है कि वे दुश्मनों के हाथ पड गये।

फरगू० । जरूर यही बात है, अगर ऐसा हुआ है तो बहुत ही बुरा हुआ है। और आपकी लड़की मिस रोज ? उनका कुछ पता लगा।

केमिल० । उसका भी कुछ पता नही लगा, मगर मकान की तलाशी के समय उसके कुछ कपड़े जरूर मिले जिससे यह विश्वास करना पडता है कि वह उस जगह मौजूद अवश्य थी।

फरगू० । अफसोस, मेरी आपके साथ पूरी सहानुभूति है आपने वहा पहरे का इन्तजाम तो रक्खा हुआ है न ?

केमिल० । हां पूरा, और दो एक होशियार आदमी इसलिए भी मुकर्रर कर दिए हैं कि अच्छी तरह से इस बात की जाच करें कि उस मकान में कोई ऐसा गुप्त तहखाना कोठडी वगैरह तो नहीं है जिसमें कुछ रक्खा गया हो। एक तहखाने का पता हम लोगों को लगा था मगर उसका दर्वाजा खुला हुआ था और भीतर उसके बिल्कुल पानी भरा हुआ था जिसके कारण बहुत कोशिश करने पर भी यह न जाना जा सका कि अन्दर क्या है। गोताखोरो के जरिए उसके अन्दर का भेद लेने की कोशिश की गई मगर कुछ ठीक ठीक पता न लगा, अब पम्प करके पानी निकालने की कोशिश की जा रही है।

फरगू० । अच्छी बात है, अगर कुछ पता लगे तो तुरन्त हमलोगों को खबर दी जाय ऐसा प्रबन्ध करके तब रवाना होइयेगा।

दो एक बातें और हुई और तब केमिल साहब टेलीफोन का चोगा टांग कर वहां से हटे। उसी समय एक दूसरा आदमी भी जो उनके बगल की कोठड़ी में खडा एक दूसरे टेलीफोन के चोगे को कान में लगाये यह सब बातें गौर से सुन रहा था अपनी जगह से हटा। टेलीफोन को उसने छिपा कर एक संदूक के अन्दर बन्द कर दिया, उसकी तारें भी जो इस तरह लगी हुई थीं कि जब चाहे बेमालूम तौर पर हटाई जा सकें कहीं

छिपा दी, और तब कोठडी के बाहर निकल गया। इस आदमी की सूरत शक्ल और पौशाक बिल्कुल खानसामाओ की तरह थी और अगर केमिल साहब इसे देखते तो बखूबी पहिचान लेते क्योंकि अभी महीना भर भी नही हुआ था कि उन्होंने इसे नौकर रक्खा था और इनकी मेहनत और वफादारी पर बहुत खुश थे।

[२]

नैपाल राज्य के लिए भारत सरकार की ओर से जो रेजीडेन्ट नियुक्त है उसके रहने का बंगला राजधानी से दूर एक अलग ही सुन्दर यद्यपि छोटी पहाडी की चोटी पर बना हुआ है। चूंकि इतने बड राज्य के रेजीडेन्ट का पद एक जिम्मेदारी और महत्व का पद माना जाता है इसलिए उसके रहने का स्थान भी खूब शानदार और आलीशान बना हुआ है। नैपाल की विशेष परिस्थिति और कुछ समय पहिले वहा उत्पन्न हो गये हुए एक हलके विद्रोह के कारण इस रेजीडेन्सी की बनावट भी कुछ ऐसी है कि प्रगट में वैसा मालूम न होने पर भी यह एक किले की तरह की है जिसकी मजबूती इतनी है कि विना छोटी मोटी लडाई लडे वह स्थान जबरदस्ती अधिकार में नही किया जा सकता। पहाडी की चोटी पर की उसकी स्थिति भी उसकी मजबूती को बढाती है और उसमे रहने वालो को सुरक्षित किए हुए है। फिर भी यह नही कहा जा सकता कि नैपाल सरकार का वर्ताव कभी ऐसा हुआ जो मित्रता के दायरे के बाहर हो या सन्देह को उत्पन्न करे—नैपाल वीरो का देश है, वे लडेंगे तो जी खोल कर, मगर मिलेंगे भी तो बाहें खोल कर, अगरेजो से प्राचीन समय में उनकी कई लडाइयें हो चुकी पर अब जब से मेल हो गया है तो वे अपनी ओर से उसे तोडने का कोई कारण कभी नही देते, इसी प्रकार भारत सरकार भी उनके भावो की कद्र करती हुई उनको सब तरह से सन्तुष्ट और शान्त रखने की बराबर चेष्टा रखती है। यही कारण है कि दोनो सरकारों का सम्बन्ध प्रेम और सद्भाव तथा मित्रता का है—अस्तु।

यहा के अंगरेज रेजीजेन्ट मिस्टर ग्रिफिथ अपने दफ्तर मे वैठे हुए हैं। उनके वगल मे खड़ा उनका क्लर्क कुछ कागजात उन्हें समझा रहा है जिन्हें वे मनोयोग के साथ देख रहे हैं। सामने की तरफ उत्तरी हिन्दुस्तान का एक वहुत वड़ा नकशा टंगा हुआ है। कुछ दूर हट कर कमरे की खिडकी के सामने दीवार से लगे टेवुल के पास वैठा एक टाइपिस्ट कुछ टाइप कर रहा है।

इसी समय एक नौजवान ने उस कमरे मे प्रवेश किया और मिस्टर ग्रिफिथ को सलाम कर उनके टेवुल के पास आ खड़ा हुआ। ग्रिफिथ ने उसे देखते ही सव क्लर्कों को वहां से चले जाने का इशारा किया और तव नौजवान को वैठने को कह कर पूछा, "कहो क्या हुआ?"

इस नौजवान का नाम रतनसिह था और यह मिस्टर ग्रिफिथ का वहुत ही प्यारा और विश्वासी मददगार था। एक-तरह पर यह उनका मातहत-अफसर भी था और उनकी गैरहाजिरी में कई वार उनका कार्य-भार गैर सरकारी तौर पर सम्हाल चुका था। इसमें कोई शक नही कि रतनसिह अगर हिन्दुस्तानी न होकर गोरे चमड़े वाला होता तो अभी तक किसी रियासत का रेजीडेन्ट या एजेन्ट वन चुका होता। खैर यह सव जो कुछ हो, पर मिस्टर ग्रिफिथ का यह वहुत ही विश्वासपात्र नौजवान था जैसा कि हमने कहा।

रतनसिह के वैठते ही ग्रिफिथ ने पुनः पूछा, "कहो कुछ सफलता मिली?"

रतन ने सिर हिला कर कहा, "जी वहुत कम, एक दम नही के वरावर।"

ग्रिफिथ०। तो क्या जो हम लोगों ने सुना वह खवर सही है!

रतन०। अव तो मुझे भी यहो शक होता है। अगर पूरी पूरी नही तो कुछ सचाई इस खवर मे जरूर है कि रक्त-मंडल ने रियासत नैपाल पर किसी तरह का ऐसा दवाव डाल दिया है कि वह अव उसके मामले में हमारी सहायता करने को अधिक उत्सुक नही रह गई है।

ग्रिफिथ० । अच्छा क्या क्या हुआ मुझसे खुलासा कहो ।

रतन० । यहा से जाकर मैं पहिले तो सरदार गोपीसिंह के घर पहुंचा । उनसे दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि यद्यपि उन्होंने कई तरफ अपने जासूस दौडाए है मगर कही से भी अभी तक उस गुब्बारे के गिरने की खबर नहीं आई है और न कही से कासग्रेव की ही कोई खबर लगी है ।

ग्रिफिथ० । उनकी वातचीत से तुम्हें क्या अटकल लगा ! क्या वह गलत कह रहे है या उन्हें सचमुच ही अब तक कोई खबर नही लगी है ?

रतन० । जी उनकी आकृति से तो मुझे यह नही गुमान हुआ कि वे झूठ बोल रहे हो । कोई खवर छिपा रहे हो, ऐसा भी नही भास हुआ । मेरी समझ में तो उन्हें अभी तक इस वारे मे कोई खवर नही लगी है । मेरे सामने ही उन्होंने कई जगह टेलीफोन भी किया मगर सब जगह से 'नहीं' में ही जवाव पाया ।

ग्रिफिथ० । ताज्जुव की वात है, आज कई दिन हो गये और अभी तक न गुब्बारा ही पकड़ा गया और न कासग्रेव की ही कोई खवर लगी—आखिर इसका सवव क्या है ?

रतन० । कई सवब हो सकते है । या तो गुब्बारा किसी ऐसे खड्ड में गिर पडा जहा से उसके सवार के छुड़ाने की फिक्र में कासग्रेव ने भी जान से हाथ धोया हो, अथवा कही ऐसी बीहड़ जगह में गिरा जहां कोसो तक आवादी न हो, वहा से खवर आने में वहुत देर लग सकती है, और नही तो यह भी हो सकता है कि शायद वे दोनो ही—गुब्बारे का आदमी और कासग्रेव, रक्त-मंडल वालो के हाथ पड़ गये हो ।

ग्रिफिथ० । हा वेशक यह हो सकता है, खैर तव तुमने क्या किया ?

रतन० । मैंने सरदार गोपीसिंह को वहुत ताकीद की कि जैसे ही दोनो मे से किसी की कुछ भी खवर लगे हम लोगो को यहां सूचना दे दी जाय और उन्होने इसका वादा किया कि जरा भी सुनगुन पाते ही पूरे

हाल की खबर देंगे। इसके बाद मैं महाराजा साहब के महल में गया। स्वयं तो वे महाराजाधिराज के हुजूर में गये हुए थे मगर अपने प्राइवेट सेक्रेटरी को मेरे बारे में समझा गये थे। उनसे बहुत देर तक मेरी बातचीत होती रही मगर जो कुछ सार निकला वह यही था कि हमलोगों को इस मामले में बिल्कुल स्वतन्त्रता दे देने को महाराजा साहब तैयार नहीं है।

ग्रिफिथ०। (चिन्ता के साथ) आखिर वे कहते क्या है? जब इस बात का निश्चय हो गया कि रक्त-मंडल ने अपना एक अड्डा इस रियासत नैपाल मे ही, और सो भी काठमान्डू के एक दम पास में, बनाया हुआ है, तब भी उसका पता लगाने में हमारी मदद न करने के माने तो यही है कि वे हमारे साथ दोस्ती का हक अदा नहीं कर रहे है?

रतन०। जी सो बात नहीं है। उनका कहना यह है कि हम लोग खुद अपने आदमी या सिपाही वगैरह ला कर यकायक कोई कार्रवाई न करें, नियमबद्ध रूप से काम करे, अर्थात् भारत सरकार उनकी सरकार को यह खबर दे कि रक्त-मंडल ने इस तरह पर फला जगह में अपना अड्डा कायम किया हुआ है और वहीं से भारत में उत्पात मचाया है। तब वे अपने आदमियों द्वारा इस बात की जांच करावेंगे और अगर उनका पता लगा तो उन्हें गिरफ्तार करके हम लोगो के सुपुर्द कर देंगे। यदि हम लोग चाहें तो अपने दो चार आदमी उनकी मदद और निशान के लिए दे सकते है मगर कोई फौज फर्रा या मजबूत गिरोह इस काम के वास्ते नहीं भेज सकते। इसके लिए वे अपनी सन्धि की शर्तों का हवाला देते हैं और कहते हैं कि उसके बाहर न तो वे स्वयम् जायेंगे और न हम लोगों का जाना पसन्द करेंगे।

ग्रिफिथ०। बेशक जो सन्धि हमलोगों से उनसे हुई भई है उसकी एक शर्त यह है कि अगर ब्रिटिश सरकार का कोई दुश्मन चोर डाकू या बागी रियासत नेपाल में आ जाय तो वे उसे गिरफ्तार करके हमारे सुपुर्द करेंगे और इसी तरह अगर उनका ऐसा ही कोई आदमी हमारे देश में

आवे तो हम उसे गिरफ्तार करके उनके हवाले करेंगे, मगर इस मौके पर अगर सन्धिपत्रों और नियमो के अक्षरो के अनुसार काम किया जायगा तो कुछ भी न होगा। जिस रक्त-मंडल का हमारे वडे वडे जासूस कुछ पता न लगा सके उसका उजड्ड नैपाली सिपाही पता लगा लेंगे ऐसी आशा मुझे तो नही होती।

रतन०। वेशक यह तो सही है, मगर वे लोग अपनी वात पर अड़े हुए हैं। हा ठीक ख्याल आया, एक वात और भी है।

ग्रिफिथ०। वह क्या ?

रतन०। जिस किले के वारे मे हम लोगो को खवर लगी है कि उसमे रक्त-मंडल का अड्डा है उसके वारे मे भी एक विचित्र रहस्य है। पुराने कागजो से पता लगता है कि वह जमीन वास्तव मे नैपाल सरकार के आधीन हुई नही वल्कि एक विल्कुल स्वतन्त्र जमीन का टुकड़ा है जिसका मालिक एक नैपाली खानदान होते हुई भी अपने निजी हक में महाराजा के अधिकार रखता है और उस किले तथा उसके आस पास की करीव दो सौ वर्ग मील जमीन का स्वतन्त्र अधिपति है।

ग्रिफिथ०। अच्छा ! यह दूसरी मुश्किल है और इसके आधार पर हम लोगों के काम में वाधा डालने का एक और वढ़िया वहाना निकल सकता है।

रतन०। वेशक, मगर जो दो एक कागज मुझे दिखाये गये उनसे साफ जाहिर है कि यह वात है विल्कुल ठीक।

ग्रिफिथ०। क्या वात ठीक है ? यानी नैपाल सरकार का उस भूमि पर कोई अधिकार ही नही है जिस पर रक्त-मंडल का किला है !

रतन०। जी हा, और वह वास्तव मे एक विल्कुल स्वतंत्र रियासत है।

ग्रिफिथ०। तौ भी वह नैपाल के अन्तर्गत तो है ही ?

रतन०। जी नही, ऐसा भी नही है, एक पुराना सन्धि-पत्र मुझे दिखाया गया जो कभी उस किले के मालिक और नैपाल सरकार के बीच में एक दम स्वाधीन और वरावरी के दर्जे पर लिखा गया था। इधर पचीसों

बरसों से उस जगह का दावेदार कोई न होने के कारण वह जमीन और किला लावारिसों की तरह पड़ा हुआ था और इसीलिए नैपाल सरकार उसे अपनी सम्पत्ति समझने लगी थी मगर अब सुनने में आया है कि उसका कोई हकदार पैदा हो गया है कि जिसने नैपाल सरकार से वह जमीन लेने और उसका मालिक करार दिए जाने की दरख्वास्त की है। उस दरख्वास्त पर ही ये सब पुराने कागजात ढूढ़ कर निकाले गये है।

ग्रिफिथ०। यह एक और बखेड़ा पैदा हुआ !

रतन०। जी बखेडा तो जरूर है मगर इससे हमलोगो का कुछ मतलब भी सिद्ध हो सकता है।

ग्रिफिथ०। सो कैसे ?

रतन०। जब वह जगह नैपाल को नही एक तीसरे ही और स्वतन्त्र व्यक्ति की है तो हमारी गवर्नमेन्ट को अख्तियार है कि उस पर खुद हमला करके उसे अपने काबू में करे या जो चाहे सो करे। नैपाल सरकार को उसके बारे में बोलने का हक ही कितना है !

ग्रिफिथ०। (कुछ देर तक इस बात पर गौर करके और तब जोर से टेबुल पर हाथ मार कर) बेशक ! यह तो तुमने खूब दूर की बात सोची ! ऐसा जरूर हो सकता है !!

रतन०। जी हां और अगर नैपाल सरकार सिर्फ अपनी जमीन पर से हमारी फौज को गुजर जाने की इजाजत दे दे, और ऐसा होना कोई मुश्किल बात नही है, तो हम लोग बेखटके जाकर उस किले को घेर ले सकते है।

ग्रिफिथ०। जरूर जरूर, अच्छा तो तुमने इसके बारे में उन लोगो से कुछ बातचीत की ?

रतन०। जी नही, मैं इस बात को बिल्कुल पचा ही गया। उनके प्राइवेट सेक्रेटरी के मुंह से धोखे में यह बात निकल पड़ी और मै इसे अपने मतलब की समझ कर जो कुछ जान सका उतना ही जान कर चुपका

हो रहा, क्योंकि मैंने सोचा कि अगर काठमाण्डू वाले अड्डे की फिक्र छोड़ हम लोग सीधे इस किले पर ही हमला करें तो मामला तुरत ही तय हो जायगा। अब और सभी बातें दरियाफ्त करके तथा सोच विचार करके ही इस सम्बन्ध में कुछ निश्चय करना उचित होगा।

ग्रिफिथ०। बेशक ! तुम इस बारे में ज्यादा से ज्यादा जो कुछ जान सको जानने की कोशिश करो, इससे हमलोगों का काम होने की संभावना है।

रतन०। जो हुक्म, लेकिन अगर आप एक दफे खुद यहां के महाराजा साहब से मिलें तो शायद कुछ ज्यादा हाल मालूम हो।

ग्रिफिथ०। मैं बहुत जल्द उनसे मिलूंगा, मैं सिर्फ उस खनीते की राह देख रहा हू जो बहुत जल्द यहां पहुचने वाला है और जिसे वे लोग ला रहे हैं जिन को रक्त-मंडल के उस किले का पता लगाने और उस सम्बन्ध में पूरी कार्रवाई करने का भार सौंप कर हमारे बडे लाट साहब ने भेजा है।

रतन०। मगर उन्हे तो आज सुबह ही पहुच जाना चाहिये था ? क्या अभी तक वे लोग आये नही ?

ग्रिफिथ०। नही मगर अब आते ही होंगे।

रतन०। वह दल किसके चार्ज में है ?

ग्रिफिथ०। किस्टर केमिल नामक एक सज्जन के चार्ज में—मगर उसका असली और बडा हिस्सा रक्सौल में है जहां बहुत बडा इन्तजाम रक्त-मंडल का मुकाबला करने के लिये किया गया है और उस दल का मुखिया एक जनरल बनाया गया है जो केमिल साहब के साथ साथ काम करेगा।

रतन०। इस बार हमारी सरकार इस बात पर तुली दिखाई देती है कि जैसे भी हो इस मामले को तय करके रक्त-मंडल का हेसनेस कर ही डाला जाय।

ग्रिफिथ०। रक्त-मंडल ने बखेडा भी क्या कम मचाया है ! आज

तक किसी विद्रोही दल ने किसी देश की किसी सरकार को इतना परेशान नही किया जितना हमलोगों को इसने किया है। इसका फैलावा भी इतनी दूर दूर तक फैला हुआ है कि हाल सुन कर आश्चर्य होता है। मुजफ्फराबाद रियासत वाली खबर तो तुमने सुनी ही होगी ?

रतन०। नहीं नहीं, वहां क्या हुआ ?

ग्रिफिथ०। वहां के नौजवान नवाव का रक्त मंडल ने इसलिये खून कर दिया कि उसने हमारे वडे लाट का स्वागत करना चाहा था।

रतन०। अरे, खून कर डाला !

ग्रिफिथ०। हां, मालूम हुआ है कि रक्त-मंडल ने एक चीठी, जिसे वह अपना फरमान कहता है, समस्त देशी रियासतों के पास भेजी है जिसमें यह लिखा है कि कोई रियासत किसी विदेशी को अपनी भूमि में आने या रहने न दे, किसी को किसी मद में कोई रुपया न दे और न उसके किसी कर्मचारी का स्वागत आदि ही करे।

रतन०। ओफ ओह, यहां तक उनकी हिम्मत वढ़ गई है ! मगर अवश्य ही इस फरमान का कोई असर नही पड़ सकता !!

ग्रिफिथ०। कहां खयाल है तुम्हारा ! मुजफ्फरावाद के नवाव के मरते ही दक्षिण की जिन जिन रियासतों मे वडे लाट जाने वाले थे उन सभों ने उनका स्वागत करने से साफ इनकार कर दिया और स्पष्ट कह दिया कि जव तक रक्त-मंडल दवा नही दिया जाता तव तक हम लोग अपनी जान पर खेल कर उसकी इच्छा के वर्खिलाफ कुछ भी करने को स्वेच्छा पूर्वक तैयार न होगे। इसी सवव से वडे लाट को अपना दक्षिण का दौरा रद कर देना पडा।

रतन०। वाह वाह, इसके माने तो यह कि इस समय हिन्दुस्तान का राजा मानो रक्त-मंडल ही हो गया है ! मगर क्या यह संभव नही है कि इसी तरह की कोई धमकी की चीठी रक्त-मंडल ने नैपाल रियासत को भी भेजी हो जिससे इन लोगों का रुख यकायक पलट गया, नही तो पहिले

तो ये लोग सब तरह से हमारी मदद करने को तैयार थे।

ग्रिफिथ०। मैं समझता हू यही बात है, और हमारी सरकार भी इस बात को समझती है, तभी तो हम लोगो को यह आदेश मिला है कि नेपाल सरकार खुशी और रजामंदी से जो कुछ करने दे वही तक करो, जरा भी किसी तरह की जोर जवर्दस्ती मत करो और धमकी देने या डराने धमकाने का तो नाम मत लो।

रतन०। शायद इसलिए कि इस वक्त अगर नैपाल रियासत भी विगड़ उठी तो भारत सरकार भी परेशानी मे पडेगी और अपना प्रेस्टिज किसी तरह भी कायम न रख सकेगी ?

ग्रिफिथ०। और नही तो क्या ? इसीलिए तो सब देशी रियासतो के साथ भी इतना मुलायम वर्ताव हो रहा है ! इसी कारण तो धरमपूर के राजा को उसके इतनी बेहूदगी के साथ जवाव देने पर भी छोड़ दिया गया।

रतन०। मैंने सुना कि उसको अपनी तांवे की खानों के मामले में स्वतन्त्रता दे दी गई कि जिसे चाहे उसे ठेका दे ?

ग्रिफिथ०। हाँ, पिम साहव की एक चीठी कल आई थी जिसमे सब हाल उन्होने लिखा है। लेकिन रक्त-मंडल ने उस फौज का जो उस राजा को दवाने के लिए भेजी गई थी जिस तरह नाश किया उसे पढ़ कर तो मुझे भय होता है कि हमारी सरकार उन्हें जीत भी सकेगी या नही ? ऐसे भयानक वम के गोले इन्होने वनाए है कि सिर्फ छः आदमियो ने छः गोले फेंक कर हमारी पूरी फौज का नाम निशान मिटा दिया !

रतन०। मैंने सुना है कि उन्होंने 'मृत्यु-किरण' नाम की कोई किरण वनाई है जिससे वे कोसो दूर पर के आदमियो को मार सकते हैं। यह भी सुना है कि उस मृत्यु-किरण को किसी तरह उन्होंने शीशे के गोलो मे भरा है और उनसे वम का काम लेते हैं। अगर यह खवर सच है तो उन पर फतह पाना वहुत मुश्किल होगा।

मिस्टर ग्रिफिथ इसके जवाव मे कुछ कहना चाहते थे कि इसी समय

खिड़की की राह उनकी नजर बाहर जा पड़ी जहां कुछ देख वे रुक गए और तव खड़े होकर ध्यान से देखने लगे। रतनसिंह ने भी उस तरफ देखा और कहा, "ओहो, मालूम होता है मिस्टर केमिल और उनका दल आ गया!"

× × × ×

ऊपर जो कुछ लिखा गया है उसके कई दिन वाद दोपहर के समय मिस्टर ग्रिफिथ और मिस्टर केमिल नैपाल रेजीडेन्सी के एक कमरे मे वैठे सिगार का धूआं उड़ाते हुए कुछ वातचीत कर रहे है। इस समय इन दोनों ही के चेहरे से हंसी और प्रसन्नता जाहिर हो रही है जिससे जान पड़ता है कि इन्हें अपने काम में कुछ सफलता मिली है। आइए हम लोग भी पास चल कर सुनें कि ये दोनों क्या वातें कर रहे है, शायद इनकी वार्तचीत से इनकी प्रसन्नता का कुछ कारण ज्ञात हो सके।

ग्रिफिथ०। जो कुछ भी हो इसमें तो कोई शक नही कि हमलोगों की डिप्लोमेसी काम कर गई।

केमिल०। वेशक, सच तो यह है कि आप इन देशी रजवाड़ों की नाड़ी खूब पहिचानते है। जो काम और किसी भी तरह से हो न सकता था वह जरा सी खुशामद और चापलूसी ने कर डाला।

ग्रिफिथ०। वात यह है कि इस देश के लोग घमन्डी वड़े भारी होते हैं। चाहे करनी करतूत कुछ भी न हो पर अपने को एक दम दुनिया का शाहंशाह ही समझते हैं, और इसी से इनका नाश भी होता है।

केमिल०। (हँस कर) आपके जरा सा यह कहने ही ने कि—'इस वक्त आप ही हमारी सरकार के आखिरी आशा भरोसा रह गए है, अगर आप इस वक्त हमारा हाथ नही पकड़ेंगे तो रक्त-मंडल वाले हमें एक दम भारत के वाहर ही करके दम लेंगे' उनके घमण्ड के पहिये की धुरी में मक्खन का काम किया। उसकी चरचराहट विल्कुल वन्द हो गई और वे चट आपकी सहायता करने को तैयार हो गए।

ग्रिफिथ०। (मुस्कुरा कर) क्या किया जाय, लाचारी ने मुझे वैसा करने पर मजबूर किया। मैंने देखा कि अब अगर इस वक्त मैं कुछ दबंग-ताई दिखाता हू तो मामला उलटता है। हमारे देशी रजवाडे डर के मारे कुछ मदद कर ही नही रहे हैं, अगर नैपाल सरकार भी कही पलट कर दुश्मनो की तरफ जा मिली तो फिर बहुत मुश्किल हो जायगी।

केमिल०। जी हां आपने बहुत ठीक रुख पकडा और तभी काम भी हुआ, नही तो महाराज साहब तो बिल्कुल हमारे बर्खिलाफ ही हुए भए दिखाई पडते थे। मालूम होता है उनके ऊपर रक्त-मंडल ने कोई चक्र चला दिया था।

ग्रिफिथ०। बेशक यही बात थी। उड़ती हुई यह खबर मैंने सुनी है कि रक्त-मंडल का मुखिया यहां के शाही खानदान का ही कोई आदमी है और यहा के महाराजाधिराज से उसकी किसी तरह की रिश्तेदारी है।

केमिल०। ऐसा ! रक्त-मंडल का मुखिया कौन ? नगेन्द्रनरसिंह ?

ग्रिफिथ०। हा शायद ऐसा ही कुछ नाम है। मैंने किसी से सुना था कि उसके पूर्व-पुरुषो को जो नैपाल के शाही खानदान की ही एक शाखा के थे किसी समय काठमान्डू से कुछ ही हट कर बहुत सी जमीन दे दी गई थी जिस पर उन लोगो ने एक किला बनाया और स्वतंत्रता के साथ वहीं रहना शुरु किया था। मगर कुछ समय बाद न जाने क्यो वे लोग वहां से भाग गये और तब से वह स्थान उजाड ही पडा रहता था। अब इन कम्बख्तो ने उस पर कब्जा कर वहां अपने पिशाची यन्त्र बैठाए हैं और दुनिया मे तहलका मचा दिया है !

ग्रिफिथ०। मै इसका पूरा पूरा हाल जानने की कोशिश कर रहा हूं, उम्मीद है दस पांच दिन मे और भी कुछ मालूम हो जायगा। खैर यह सब जो कुछ हो इस समय तो नैपाल सरकार से उस किले पर हमला करने की आज्ञा पाकर हमारा काम बन गया है, पीछे जो होगा देखा जायगा।

केमिल० । सिर्फ यही दो शर्तें बुरी हैं कि हमलोगों के साथ नैपाल सरकार के आदमी रहेंगे और उस किले में से जो कोई भी पकड़ा जायगा या जो कुछ भी माल बरामद होगा वह सब पहिले काठमान्डू ले जाया जायगा, वही उसके बारे में निश्चय होगा कि वह कहां जाय या क्या हो।

ग्रिफिथ० । (मुस्कुरा कर) अरे यह सब शर्तें तो बनती ही टूटती रहती है केमिल साहब ! एक बार उस किले पर कब्जा होकर रक्त-मंडल पर काबू तो होने दीजिए, फिर कौन शर्त करता है और कौन कराता है ! जिसका डर है वही जब न रहेगा तो फिर क्या है ?

केमिल साहब भी इसके जवाब में मुस्कुरा उठे और कुछ कहना ही चाहते थे कि उसी समय रतनसिंह ने तेजी के साथ उस कमरे में प्रवेश किया। उसके चेहरे से उतावली मगर साथ ही साथ प्रसन्नता प्रगट हो रही थी और वह कोई शुभ समाचार ग्रिफिथ साहब को सुनाने को व्यग्र जान पड़ता था। ग्रिफिथ ने उसकी तरफ देख कौतूहल से पूछा, "क्या है रतनसिंह ?"

रतन० । मुझे एक बड़ी अच्छी खबर लगी है।

ग्रिफिथ । क्या ?

रतन० । अभी अभी मालूम हुआ है कि वह गुब्बारा और उस पर का सवार गोना पहाडी के पास कही गिरा था और किसी नैपाली अफसर ने उसे बेहोश पा अपने डेरे मे ला उसका इलाज शुरू किया है। जो डाक्टर उसका इलाज करने काठमान्डू से गया था उसकी जुबानी यह पता लगा है और सुनते ही दौड़ा-दौड़ा यहां आया हूं।

इस खबर ने ग्रिफिथ को और उनसे भी कही ज्यादा केमिल साहब को प्रसन्न कर दिया। दोनों आदमी उछल पड़े और रतनसिंह से तरह-तरह के सवाल करने लगे। उसे जो कुछ मालूम था वह उसने कह सुनाया और अब इस बात पर विचार होने लगा कि क्या करना चाहिए।

परन्तु वाद विवाद में समय नष्ट करने की फुर्सत ही किसे थी ? बहुत

जल्दी यह तय कर लिया गया कि मिस्टर केमिल अपने साथ आये हुए कुल आदमी, रेजीडेन्सी के पचीस सिपाही, और महाराज नैपाल से यदि कुछ मदद मिले तो उसे भी लेकर अभी वह जगह घेर लें जहां उस गुव्वारे वाले सवार के गिरने की खवर लगी है। ग्रिफिथ ने महाराज नैपाल को फोन करके यह समाचार सुनाया और उन्होने थोडे ही विचार के वाद सौ सवार इनकी मदद के लिये देना कवूल कर लिया।

नतीजा यह कि लगभग आधे घन्टे के वाद ही केमिल साहव अपने दल-वल के साथ रेजीडेन्सी से निकल कर गोना पहाडी की तरफ रवाना हो गए जो यहा से ज्यादा दूर न थी। उनके साथ रतनसिंह भी था और लगभग आधा रास्ता तय करने वाद नैपाल सरकार के वे सौ सवार भी उनके दल मे आ मिले जिनको केमिल साहव की आज्ञानुसार काम करने का हुक्म मिला था।

मगर हमारे पाठक जानते है कि इतनी दौड धूप सब वेकार हुई। ये लोग जिस समय नरेन्द्रसिंह के डेरे पर पहुचे उस समय चिडिया उड़ गई थी और अपने एक जासूस द्वारा इनके आने की खवर पा नगेन्द्रनरसिंह वहा से चम्पत हो गये थे।

[४]

भयानक पहाडों और जंगलों को लांघते हुए दो सवार तेजी के साथ उस किले की तरफ वढ रहे है जो रक्त-मंडल का मुख्य अड्डा है। हमारे पाठक इन दोनो ही को जानते है क्योंकि ये दोनो नगेन्द्रनरसिंह और उनका वही साथी है जिसने सिपाहियो के आने की खवर उन्हें दी थी।

जख्मी और कमजोर होने पर भी नगेन्द्रनरसिंह अपने भरसक पूरी तेजी के साथ जा रहे है। इसका मुख्य कारण तो दुश्मनो के घेरे के वाहर निकल जाने की इच्छा ही थी पर कामिनीदेवी की 'हां' ने भी इसमें वहुत वडी मदद पहुचाई थी। तरह तरह के खयाल उनके दिमाग में चक्कर खा रहे थे मगर सभी को दवा कर इस समय कामिनीदेवी

का भोला मुंह और उसकी लज्जावनत आंखें उनके मन पर अधिकार जमाए हुई है।

नरेन्द्र के डेरे से लगभग सात आठ कोस के ये लोग चले आये थे मगर अभी भी इन्हें अपना पीछा किये जाने का डर बना ही हुआ था क्योंकि नगेन्द्र को यह खबर भी लग गई थी कि उनका पुराना दुश्मन केमिल मिट्टी सूंघता हुआ यहां तक पहुंच गया है। केमिल की हिम्मत बुद्धिमानी और अध्यवसाय से भली भांति परिचित होने के कारण वे बखूबी समझते थे कि वह सहज मे उनका पिण्ड छोड़ने वाला जीव नही है, अस्तु वे इस समय मन ही मन सोच रहे थे कि क्या वे उस चालीस पचास मील के फासले को घोड़े की पीठ पर तय कर सकेंगे जो अब भी उनमे और उनके किले के बीच मे है!

एक छोटे मोटे मैदान में पहुंच कर नगेन्द्रनरसिंह ने बाग खीची और सुस्ताने के लिये रुक गए। उनके साथी ने भी घोड़ा रोका और इनकी तरफ देख के पूछा, "क्या उतरियेगा?" नगेन्द्र बोले, "हां, दस मिनट के लिये। कुछ थकावट मालूम होती है।"

नगेन्द्र घोडे से उतरने का विचार कर ही रहे थे कि यकायक किसी तरह की आवाज ने उनका ध्यान आकर्षित किया। एक तरह की सनसनाहट की और गूंजने वाली मगर बहुत ही हलकी आवाज कही से आती हई सुनाई पड़ रही थी। नगेन्द्र उसे सुन घोड़े से उतरने का विचार छोड चारो तरफ गौर से देखने लगे और उनका साथी भी इधर उधर गौर करने लगा। आवाज कुछ तेज होने लगी और थोड़ी देर बाद मालूम हुआ कि वह आस्मान की तरफ से आ रही है। अगर यह आवाज तेज और भारी होती तो नगेन्द्र समझ जाते कि यह किसी हवाई जहाज की आवाज है परन्तु वैसा न होकर यह बहुत धीमी और कुछ कुछ उस तरह की थी जैसी रात के समय कई तेज चिड़ियों के एक साथ उडते जाने से पैदा होती है। अन्दाज के बल पर यह बताना भी कठिन था कि यह आवाज कितनी दूर से आ रही है।

परन्तु इसी समय एक दूसरी आवाज ने उनका ध्यान दूसरी तरफ खींचा। यह आवाज बिल्कुल दूसरे ही ढंग की थी और कुछ ही गौर ने उन्हें बता दिया कि यह बहुत से सवारो के सरपट चले आने की आवाज है जो यद्यपि अभी दूर है फिर भी तेजी से इधर ही को वढ़े आ रहे है। आखों ने उसी समय कानों की मदद की और नगेन्द्र तथा उनके साथी ने देखा कि बाईं तरफ की पहाडी ढाल पर से तेजी के साथ उतरते हुए लगभग चालीस पचास सवार इन्ही की तरफ सरपट चले आ रहे है। नगेन्द्र के साथी के मुह पर भय का चिन्ह छा गया, वह घवड़ाहट के साथ बोला, "ये दुश्मनों के सिपाही है सरदार! अव मुश्किल होगी, क्योकि हमारा रास्ता वही था जिधर से ये लोग चले आ रहे है। खैर दाहिनी तरफ बढ़िए।" उसने अपने घोडे का मुह घुमाया ओर नगेन्द्र ने भी रुख मोडा। दोनों जितनी तेजी से उनके घोडे उन्हें ले जा सकते थे उतनी तेजी से दाहिनी तरफ रवाना हुए जिधर थोडा मैदान पार करके एक ढालुई पहाड़ी पड़ती थी।

मगर उनकी यह आशा भी टूट गई जव उन्होंने उस पहाड़ी की चोटी पर भी कुछ शकलें यकायक ही देखी और समझ लिया कि उस तरफ से लगभग तीस पैंतीस के सवार सरपट उन्हीं की तरफ दौड़े चले आ रहे हैं।

अव नगेन्द्र को वचने की उम्मीद वहुत कम रह गई। उन्होंने घोड़ा रोका और अपने चारो तरफ देखा। कही कोई रास्ता ऐसा दिखाई नही पड़ता था जिधर से वे निकल जा सकते हों। उनके किले में जाने का रास्ता बाईं तरफ से था, सरहद की तरफ निकल जाने की राह दाहिनी तरफ को थी, और ये दोनों ही रास्ते घिर गए थे। पीछे लौटने से नरेन्द्र के डेरे ओर उनको गिरफ्तार करने के लिए आये हुए सवारो की मौजूदगी मिलती और सामने की तरफ एक भयानक खड्ड उनका रास्ता रोके पड़ा था। कही से वचाव की सूरत निकलती नहो दिखाई पड़ती थी। दोनो तरफ के सवार तेजी से पास होते जा रहे थे।

नगेन्द्र के चेहरे से उनके दिल की परेशानी भले ही न प्रगट हो परन्तु उनके मन ने कह दिया, "अब तेरा बचना मुश्किल है !"

इसी समय नगेन्द्र के साथी ने अपने कपडों मे हाथ डाल कर कोई चीज बाहर की और नगेन्द्र की तरफ बढ़ा कर कहा, "इसे सरदार आप अपने पास रखिए, अफसोस कि यह एक ही इस समय मेरे पास है !" यह चीज मृत्यु-किरण का बम था। नगेन्द्र ने हाथ बढ़ा कर उसे ले लिया और सोचने लगे, "दुश्मन के हाथ मे पड़ जाने की बनिस्वत इस बम द्वारा अपनी जान आप ही दे देना क्या ज्यादा अच्छा नही होगा ?"

वास्तव मे केमिल ने अपना काम बडी ही होशियारी से पूरा किया था। नरेन्द्र के डेरे के लिए रवाना होने के पहिले ही उन्होने इस बात को सोच लिया था कि अगर किसी तरह उस आदमी को जो गुब्बारे से गिरा है, उनके आने का खबर लग गई तो वह जरूर अपने उस किले की तरफ ही भागेगा। अस्तु उसका रास्ता घेरने के लिए दो छोटी टुकड़ियां वे पहिले ही से उस तरफ रवाना कर आए थे और वे दोनो इसी समय और ऐसे बेमौके यहां पर पहुची थी कि हमारा बहादुर और हिम्मतवर सिपाही नगेन्द्रनरसिंह भी परेशान हो गया था।

[५]

धरमपुर के राजा गिरीशविक्रम, उनके सेनापति रौशनसिंह, और एक अजनबी को हम घोड़ो पर सवार पूरब की तरफ जाते देख रहे हैं। अजनबी का घोड़ा राजा साहब के घोड़े के साथ है और रौशनसिंह अदब के लिए अपने घोड़े को कुछ पीछे हटाए हुए हैं फिर भी बातचीत में कभी कभी दखल देते जाते है। इन लोगों का लक्ष्य एक छोटा मैदान है जिसे हरियाली ने एकदम ढंक कर सरसब्ज मखमली फर्श बना रक्खा है पर जो चारो तरफ से ऊंचे पेड़ो झाड़ियों और जंगलों से इस तरह ढंका हुआ है कि यहां से बहुत मुश्किल से दिखाई पड़ता है।

अजनबी ने न जाने क्या कहा जिसके जवाब में राजा गिरीशविक्रम

कुछ तुर्शी के साथ वोल उठे, "देखिए साहव, अव आप वार वार इस वात को मेरे सामने कह कर मेरा अपमान न करें ! मैं क्षत्रिय हू, और क्षत्रियो की जवान एक होती है। जव मेरी मुसीवत में आपने मेरी मदद की और मैंने आपको सहायता देने का वचन दे दिया तो अव प्राण रहते मैं उस वचन से फिरूंगा नही। अंगरेज भलेही मुझे अपनी खानें क्या तमाम दुनिया की खानें जिसे चाहे दे देने का अधिकार दे दें, यही क्यो, वह मुझे भारत का सम्राट ही क्यों न वना दें, पर मैं अपने वचन से डिगने का नही, आपसे मैंने जो वादा किया है उसे मै पूरा करूंगा ही। आप वार वार मुझे अपनी अवस्था पर पुनर्विचार करने को न कहें।"

अजनवी ने यह सुन गर्व के साथ राजा की तरफ देखा और कहा, "मैं आपकी इस इच्छा की कदर करूंगा और अव आपसे कभी इस विषय मे कुछ न कहूगा। इस वार भी जो मैंने कहा वह सिर्फ इसलिए कि अव मेरे साथ चल कर जो काम आप करने वाले है वह आपको भारत सरकार के दुश्मनो की पंक्ति में पूर्ण रूप से वैठा देगा और फिर आप पीछे हटने के रास्ते को सदा के लिए वन्द पावेंगे।"

राजा साहव ने कुछ दर्प से कहा, "मै आपके आशय को पहिले ही समझ गया था और इसीलिये मैंने वह वात कही। साथ ही मै इतना और कहे देता हूं। चूकि मै राजा हू, दस वीस हजार मनुष्यों का स्वामी हू, सौ दो सौ कोस जमीन का मालिक हूं, या कुछ धन का अधीश्वर हूं, इसी से आप यह न समझ लें कि मुझे सिर्फ चैन की वंशी वजाने का ही अधिकार है और मै अपने देश की स्वतन्त्रता के युद्ध में भाग लेने का कोई हक नही रखता। मेरे शरीर मे भी गर्म खून वहता है, मेरा कलेजा भी उन अपमानो से जलता है जो इस अभागे देश पर विदेशियो द्वारा किए जा रहे हैं, मेरे शरीर को भी वे पराधीनता की वेड़िया कष्ट पहुचा रही है जो मेरी मातृ-भूमि के पवित्र शरीर को कसे हुए है। आप लोगो की तरह मै भी अपने देश को स्वाधीन करने के प्रयत्न मे कुछ भाग

लेना चाहता हूं। हो जो होना है, आवे जो आने को है, इस समय तो मैंने आप लोगो से हाथ मिला लिया है और दम रहते उसे छोड़ूंगा नही, आप लोग अगर चाहें तो भले ही अपना हाथ छुडा लें।"

अजनवी ने भावपूर्ण नेत्रों से महाराज की तरफ देखा। दोनों की चार आखें हुईं। एक वीर हृदय ने दूसरे वीर हृदय की व्यथा को अनुभव किया। दोनों के नेत्र भर आए, फिर दोनों में इस विषय में कोई वातचीत न हुई।

लगभग घड़ी भर तक तीनों सवार तेजी से चलते रहे और इस वीच वे उस मैदान के किनारे पर आ पहुचे जो इनका लक्ष्य था। जंगली हिस्सा पीछे छूट गया था और सामने लगभग पचास विगहे का एक समथर मैदान नजर आ रहा था। तीनों आदमी इस मैदान मे थोड़ा आगे वढ़ गए और तव उन्होने अपने घोड़े रोके। राजा साहव ने इधर उधर देख कर कहा, कहा, आपका हवाई जहाज तो कही दिखाई नही देता ?"

अजनवी ने कहा, "आप अभी उसे देखेंगे।" और तव जोर से किसी खास इशारे के साथ सीटी वजाई। जवाव मे एक हलकी सीटी को आवाज कुछ दूर से आती हुई सुनाई पड़ी और थोड़ी ही देर वाद दूर के पेडो की भुरमुट के अन्दर से निकलता हुआ एक छोटा हवाई जहाज दिखाई पड़ा जिसे तीन चार आदमी खीच कर वाहर ला रहे थे। ये तीनों आदमी भी उसी तरफ को वढ़े और थोड़ो ही देर मे उसके पास जा पहुचे।

यह छोटा सा मगर खूवसूरत हवाई जहाज विल्कुल एल्युमिनियम का वना हुआ था। इसमे तीन चार आदमियो के वैठने की जगह थी और पीछे की तरफ कुछ सामान भी रक्खा जा सकता था। इंजिन जो देखने मे वहुत वडा नही मालूम होता था अकेला नही था वल्कि उनकी एक जोडी थी जो दायें वायें लगी हुई थी।

राजा साहव ने वड़े गौर से उस जहाज को चारो तरफ से घूम घूम कर देखा और कहा, "क्या मै यह विश्वास कर लूं कि यह हवाई जहाज आप लोगो ने स्वयम् और उसी किले के ही अंदर वनाया है जिसमे हमलोग

राजा गिरीशविक्रम ने हंस कर कहा, "आप मुझे उठा कर जबर्दस्ती भले ही अपने एयरोप्लेन के नीचे गिरा दें मगर अपनी इच्छा से मैं उतरूंगा नहीं ! यह भी ख्याल रखिए कि जितना समय आप इस बहस मे नष्ट कर रहे है उतने में आप अपने रास्ते पर बहुत कुछ बढ़ सकते थे ।"

अजनबी ने कुछ कहना चाहा पर उसे रोक राजा ने अपने सेनापति रौशनसिंह की तरफ देख कर कहा, "कप्तान साहब, आप कल इसी समय तक यहां मेरी राह देखिएगा । अगर मैं तब तक यहां न आऊं तो समझ लीजिएगा कि अब इस लोक मे नहीं हूं और तब मेरी वसीयत के मुताबिक इन्तजाम करिएगा ।"

रौशनसिंह ने कुछ कहना चाहा मगर राजा साहब की कड़ी निगाह ने उन्हें चुप कर दिया । इसके बाद गिरीशविक्रम अजनबी की तरफ झुके और उसका हाथ पकड़ कर बोले, "अरे भाई, इतने स्वार्थी न बनो ! जन्मभूमि की सेवा करने का कुछ अधिकार अपने उन विचलित भाइयो को भी दो जिन्हे उनके दुर्भाग्य ने राजा बना दिया है !!"

उनके लहजे से कुछ ऐसी कातरता और दुःख प्रगट हो रहा था कि फिर अजनबी कुछ कहने की इच्छा न कर सका । "अपनी करनी के लिए मुझे दोष न दीजिएगा । सिर्फ इतना कह कर वह उछला और चलाने वाले की सीट पर जा बैठा ।

भयानक शोर के साथ हवाई जहाज के पंखे घूमने लगे । हवाई जहाज आगे को घसका, कुछ तेज हुआ, थोडी देर तक जमीन पर हरिन की तरह दौड़ता रहा, दो चार उछालें मारी, और तब एक चक्कर मारता आसमान की तरफ उठा ।

इंजिन के कान फाडने वाले शब्द और हवा के झोको मे मुश्किल से अपने हवास सम्हालते हुए राजा साहब अपनी कुर्सी को पकड कर नीचे की तरफ देखने लगे । पृथ्वी क्षण क्षण में उनसे दूर हटती जा रही थी । नीचे के आदमी पल पल पर छोटे होते जा रहे थे ।

हवाई जहाज सीधा हुआ, इसके इंजिनों की आवाज और तेज हुई, हवा के झोंके कुछ और बढे यद्यपि सामने की तरफ उसके लिए रोक लगी हुई थी, और तब शिकार पर गिरते हुए बाज की तेजी से वह छोटा हवाई जहाज पूरब की ओर झपटा।

[६]

नगेन्द्रनरसिंह ने अपने चारो तरफ देखा। दाहिने और बायें से दुश्मन बढ़े आ रहे थे, सामने गहरा खड्ड था, पीछे दुश्मन थे ही। किसी तरफ से बचाव की कोई सूरत नहीं दिखाई पड़ती थी।

फिर भी वहां खडे रह कर सोच विचार मे समय नष्ट करने की अपेक्षा बचाव का कुछ उद्योग करना, चाहे वह सफल नही ही हो, ज्यादे अच्छा था। उन्होने अपने घोडे का मुंह घुमाया और पीछे की तरफ, जिधर से वे आ रहे थे, लौटे। एड़ खाते ही जानदार घोडा हवा से बातें करने लगा, उनका साथी भी उनके पीछे पीछे रवाने हुआ।

अपने शिकार को आंखों के सामने देख पीछा करने वाले दोनों दलों के मुंह से प्रसन्नता की आवाजें निकलने लगी और उन्होंने भी अपने घोड़े तेज किए। जिस समय दाहिनी और बाईं पहाड़ी से उतर कर सवारों के दोनों गरोह एक साथ हो गए उस समय नगेन्द्रनरसिंह से उनका फासला एक मील से अधिक न होगा। अब उन्हें अवश्य पकड़ लेंगे यह विश्वास सभी पीछा करने वालों के दिल मे बैठ गया और उन्होने अपने घोडे उन आगे जाने वालो के पीछे सरपट छोड दिए।

नगेन्द्रनरसिंह भागे तो जाते थे मगर साथ ही साथ अपने इधर उधर और चारो तरफ इस निगाह से देखते भी जाते थे कि अगर कोई छिपने या किसी दूसरी तरफ निकल जाने की राह दिखाई पड़े तो उधर ही को घूम जायं, मगर उस पहाड़ी बीहड़ जगह में सिवाय उस पतली पगडण्डी

के जिस पर ने वे जा रहे थे और किसी तरफ जाने का कोई रास्ता कही था ही नही ।

यकायक नगेन्द्रनरसिंह के साथी के मुंह से एक आवाज निकल गई जिसे सुन उन्होंने ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देखा । उसने सामने की तरफ इशारा किया और उन्होंने देखा कि लगभग तीन मील आगे एक पहाड की ढाल उतरते हुए करीब पचास सवार इसी तरफ को आ रहे है । उन्हें देखते ही नगेन्द्र अपनी हालत अच्छी तरह समझ गए । अब वे आगे पीछे और अगल बगल सभी तरफ से घिर गए थे, और एक ऐसी जगह मे जहा से कही किसी तरफ को निकल जाने का रास्ता ही नही था । उन्होंने अपने पीछे की तरफ देखा । पीछे के सवार भी मील भर से ज्यादा के फासले पर न होंगे और बराबर झपटे ही चले आ रहे थे ।

नगेन्द्रनरसिंह ने अपना घोडा रोक लिया और चारो तरफ देखा । निकल जाने की कोई राह कही दिखाई नही पड़ती थी । उन्होंने एक बार ऊपर की तरफ देखा और अपने भगवान को स्मरण किया, इसके बाद वह हाथ जिसमे मृत्यु-किरण का बम था ऊंचा किया ।

परन्तु अचानक ही उनके कान मे गूंजने वाली एक आवाज ने पड़ कर उन्हें चौंका दिया और उन्होंने ताज्जुब के साथ गर्दन उठा कर देखा । पश्चिम तरफ के ऊंचे पहाडों की चोटियो को पार करके आता हुआ एक छोटा हवाई जहाज उन्हें दिखाई पडा और वे अपना हाथ रोक कर सोचने लगे कि यह जहाज हमारा है या दुश्मनों का ?

परन्तु उनका यह सन्देह शीघ्र ही दूर हो गया जब उन्होंने उस जहाज पर से एक आकाशबान छूटता हुआ देखा जो ऊपर की तरफ जा कर फूट गया और उसमे से हरे रंग का बहुत सा धूआं निकल कर चारो तरफ फैल गया जिसके बीच मे चार चमकते हुए सितारे दिखाई पड रहे थे ।

नगेन्द्र के साथी ने खुशी भरी आवाज मे कहा, "मालूम होता है हम लोग बच जायंगे, यह हमारा ही वायुयान है !"

नगेन्द्र ने कोई जवाब नही दिया क्योकि वे यह सोच रहे थे कि क्या उस जहाज के यहा तक पहुचने के पहिले ही ये सब सवार यहा उनके पास पहुच कर उन्हें गिरफ्तार न कर लेंगे ?

तीर की तेजी से हवाई जहाज नगेन्द्रनरसिंह की तरफ झपटा। पलक झपकते मे वह उनके सर के ऊपर आ पहुंचा मगर वहा रुका नही वल्कि उन सिपाहियो की तरफ बढा जो उनके पीछे की तरफ से हमला करते हुए चले आ रहे थे और जिनका फासला अब नगेन्द्रनरसिंह से आध मील से भी कम ही रह गया होगा। चक्कर काटता हुआ वह उनके सर पर पहुंचा। उन सवारो ने उसकी तरफ अपनी राइफिलें ऊंची की मगर इसके पहिले कि वे लोग कुछ कर सके दो शीशे के गेंद उस हवाई जहाज पर से गिरते दिखाई पडे। सनसनाते हुए ये गेद नीचे आये। एक तो सामने के खड्ड मे जा गिरा मगर दूसरा ठीक उस गरोह के बीच मे पहुच कर फटा। वहां पर हरी बिजली सी चमक गई और दूसरी सायत में लगभग पचीस गज के घेरे के भीतर के सब सवार गायब थे, इस तरह पर गायब कि सिवाय कुछ अधजले हड्डी और कपडे के टुकडो के उनका कही नाम निशान भी बाकी न रह गया था। बाकी के सिपाहियो में बेचैनी और भगदड मच गई मगर उनका भी अन्त समय आ गया था। दो बम और उस हवाई जहाज पर से आये। इनमे से भी एक बेकार गया पर दूसरा उन बचे हुए सिपाहियो पर आ गिरा। इसने अपना भयानक काम इस सफाई से पूरा किया कि मुश्किल से दस बारह सवार जीते बचे। जिस समय एक तीसरी जोड़ी बमों की गिरती दिखाई पड़ी उस समय तो बाकी बचे सवारों ने एक दम ही पीठ दिखा दी और तेजी से पीछे की तरफ भागे। इधर का मैदान साफ था।

दूसरी तरफ से हमला करते हुए आने वाले सिपाही इस हवाई जहाज को देखते ही ठिठक गये थे और जिस समय उन्होंने उस पर से गिरने वाले बमो की भयानक कार्रवाई देखी उनके कलेजे दहल उठे अपने। अफसरो के बढ़ावा देने वाले लफ्जो की बदौलत वे पीछे भागने से तो रुके

रहे लेकिन आगे की तरफ बढ़ने से भी उन्होंने इनकार कर दिया, पर जिस समय उन्होने उस हवाई जहाज को सामने वाली टुकडी का सफाया करके अपनी तरफ घूमते देखा उस समय तो उनकी बची खुची हिम्मत भी जाती रही। बहुत मुमकिन था कि वे सब मैदान छोड पीठ दिखा देते पर अपने अफसरो के पिस्तौल निकाल कर यह कहने पर कि 'जो कोई भी पीछे घूमेगा हमारी पिस्तौल का निशाना बनेगा!' वे भागने से रुके रहे। उन्होने अपनी राइफलो की दो तीन बाढें उस हवाई जहाज की तरफ छोडी जो बिल्कुल बेकार गईं और इतने ही मे तो वह उनके सिर पर आ पहुचा। जिस समय उस पर से वैसे ही दो गोले गिरते दिखाई दिये उस समय बहुत कम सिपाही थे जो अपनी जगह पर कायम रह सके थे, ज्यादातर सिपाहियो क घोडो ने अपना अपना रुख पीछे को घुमा दिया था। राइफिलो की पुनः एक बाढ छूटी पर दूसरी छूटने के पहिले ही वे दोनों गोले इस दल पर आ कर गिरे। अभी अभी जो कुछ सामने की तरफ हो चुका था वही इस जगह पर भी हुआ मगर पहिले मे कही अधिक भयानकता के साथ हुआ क्योंकि इस वार ये दोनो ही बम निशाने पर गिरे थे। पलक झपकते मे आधे से ज्यादे सिपाही गायब हो गये।

बाकी सिपाहियों ने अब रुक कर अपनी जान देने से साफ इनकार कर दिया और सब के सब बेतहाशा पीछे की तरफ को सरपट भागे। देखते ही देखते मैदान साफ हो गया।

हवाई जहाज अब ऊपर की तरफ उठा। एक गहरा चक्कर उसने चारो तरफ का लगाया। सिवाय भागते जाने वाले सवारो के कही भी कोई और दिखाई नही पडता था। यह देख वह नीचे को झुका। जिस मैदान तक पहुच कर नगेन्द्रनरसिंह को पीछे लौटना पड़ा उस तरफ को उसने अपना मुंह घुमाया और पलक झपकते में वहां पहुच कर चक्कर खाता हुआ नीचे को उतरने लगा।

नगेन्द्रनरसिंह और उनके साथी ने भी जो अभी तक खुशी के साथ

यह सब कारंवाई देख रहे थे अब अपने अपने घोड़ों की वागें मोड़ी और उधर ही को रवाना हुए जिधर वह हवाई जहाज गया था। लगभग पन्द्रह मिनट बाद ही दोनो उस जगह पहुंच गये जहां मैदान के बीचोबीच मे वह जहाज अभी अभी उतरा था।

जैसे ही नगेन्द्रनरसिंह वहां तक पहुंचे वैसे ही एक आदमी उस हवाई जहाज पर से नीचे उतरा। यह वास्तव मे वही नौजवान था जिसके हवाई जहाज पर गिरीशविक्रम के साथ चढ़ कर रवाना होने का हाल हम ऊपर लिख चुके हैं। नगेन्द्रनरसिंह के घोडे पर से उतरते उतरते यह भी दौड़ कर उनके पास जा पहुचा और तब आंसू गिराता हुआ उनके पैरों पर गिर पडा जिन्होने उठा कर इसे अपनी छाती से लगा लिया। दोनों मे कुछ बातें हुईं, इसके बाद सब लोग हवाई जहाज पर सवार हो गए और कान के पर्दे फाड़ डालने वाली आवाज के साथ वह हवाई जहाज पुनः हवा में ऊंचा हुआ।

इस बार उसका लक्ष्य वह जमीदोज किला था जो रक्त-मंडल का हेड-क्वार्टर था। तीर की तेजी से हवाई जहाज उसी तरफ को रवाना हुआ।

[७]

मिस्टर केमिल अपने दलबल के साथ गोना पहाड़ी पर नरेन्द्रसिंह के डेरे तक आये थे मगर उसके आगे नगेन्द्र का पीछा करना उन्होंने फजूल समझा क्योंकि जब हाथ में आई हुई चिड़िया उड़ गई तो आस्मान से उसका पकड़ पाना कठिन ही था। जब नगेन्द्र उनके डेरे से भाग निकला तो आगे कही पकड़ा जायगा इसकी आशा बहुत ही कम थी। उन्होने कुछ मामूली जांच पड़ताल की, नरेन्द्र और कामिनीदेवी से थोडे बहुत सवाल किए, (हमे अफसोस से कहना पडता है कि इन दोनो के जवाबों में झूठ का सम्मिश्रण उससे बहुत ज्यादा था जो साधारण बातचीत मे इस्तेमाल किया जाता है) और तब अपने डेरे अर्थात् नैपाल की अंग्रेजी रेजीडेन्सी की तरफ लौट गए।

रेजीडेन्सी पहुचने के दो तीन घंटे वाद तक केमिल साहव वहुत ही कार्यव्यस्त रहे। पहिले तो वहुत देर तक इधर उधर टेलीफोन द्वारा वातचीत करने मे फंसे रहे तथा इसके वाद मिस्टर ग्रिफिथ और रतनसिंह के साथ एक वहुत वड़े नक्शे पर झुके हुए भावी युद्ध के लिए प्रोग्राम तैयार करने मे उन्होंने वहुत सा समय विता दिया। कहना नही होगा कि यह भावी युद्ध रक्त-मंडल के साथ होने को था जिसके किले पर हमला करने का निश्चय भारत सरकार कर चुकी थी। वड़े लाट का हुक्म मिल गया था और एक जनरल भी इस युद्ध के लिए तैनात हो कर पहुच चुका था, पर मुख्य रूप से इस हमले का सूत्र-सचालन मिस्टर केमिल के हाथो में ही था।

किस किस तरह की सलाहें हुईं, क्या क्या मनसूवे वाधे गये, क्या क्या तैयारिया हुई, और किस किस तरह की मोरचेवंदी स्थिर की गई, इन सभो के वारे मे यहा कुछ लिखना हम व्यर्थ समझते है क्योकि समय पर यह सभी हाल पाठको को मालूम हो जायगा, हा इतना कह देना जरूरी है कि यह हमला कल सुवह ही शुरू कर देने का निश्चय हुआ था और इसके लिए एक दर्जन हवाई जहाज सूर्य के साथ साथ रक्साल से उस किले के लिये रवाना हो जाने को थे। दो पलटनें, दो पहाडी तोपखाने और दो रिसाले तो कल ही उस किले की तरफ रवाना हो चुके थे।

सन्ध्या होने मे कुछ ही देर वाकी थी जव वे संत्रस्त और भागे हुए सवार वापस लौटे जिन्हें नगेन्द्रनरसिंह को गिरफ्तार करने के लिए केमिल साहव ने भेजा था। केमिल ने उनके मुंह से सव समाचार सुना। दु.ख तो अलवत्ता वहुत हुआ पर आश्चर्य उन्हें कुछ भी न हुआ। रक्त-मंडल और नगेन्द्रनरसिंह का पीछा करने जा कर ऐसा कुछ न हो तभी ताज्जुव की वात होती। कुछ मामूली झाड झपट के वाद उन सवारो को अपने अपने ठिकाने जाने की उन्होंने इजाजत दी और तव पुन. वगले मे चले गये जहां उन्होंने समूची संध्या और रात का भी वहुत काफी हिस्सा सोच विचार और वहस मे विताया।

सुवह को केमिल साहव अपने मामूली समय से वहुत जल्दी उठ गये, वल्कि यों कहना चाहिये कि उद्वेग के मारे रात को उन्हें नींद ही वहुत कम आई।

सात वजने के कुछ पहिले टेलीफोन से उन्हें समाचार मिला कि वारह जंगी हवाई जहाज उस किले पर हमला करने के लिए रवाना हो गये— उस फौज के रवाना होने का समाचार तो उन्हें कल ही मिल चुका था। वे अपने मामूली कामों में लगे मगर उनका चित्त इसी दुविधा मे पड़ा हुआ था कि देखें इस हमले का क्या नतीजा निकलता है।

एक पहर वीता, दो पहर हुआ, तीसरा पहर भी करीव करीव वीत चला था जव रक्साल से केमिल साहव के नाम टेलीफोन हुआ। उद्वेग मे भरे हुए मिस्टर केमिल दौड़ते हुए टेलीफोन के पास पहुचे और चोंगा कान में लगाया। कोई कह रहा था—"रक्त-मंडल के किले पर हमला करने का नतीजा हमारे लिए वहुत ही भयानक सिद्‌ध हुआ। न जाने किस विचित्र शक्ति के वल से जिस समय हमारे हवाई जहाज उस किले से कोई पचीस मील दूर थे उसी समय उनमे से नौ जल कर एक दम भस्म हो गये, दो के वलते हुए गिर जाने का समाचार है, सिर्फ एक जहाज जिसका संचालक इञ्जिन बिगड़ जाने के कारण पीछे छूट गया था, अछूता वच गया जिसने वेतार की तार से यह समाचार भेजा है। अगर उसका इंजिन ठीक हो गया और सही सलामत वापस लौटा तो पूरे हाल का पता लगेगा। यह भी सुनने मे आया है कि वह फौज भी जो किले पर हमला करने के लिए भेजी गई थी पन्द्रह सोलह मील जाते जाते नष्ट-भ्रष्ट हो गई, परन्तु यह खवर अभी अनिश्चित है। पूरे हाल की खवर लेने दो अन्य हवाई जहाज रवाना किये गये है।"

टेलीफोन मिस्टर केमिल के हाथ से छूटकर गिर गया और वे वद-हवास होकर कुरसी पर उठंग गये।

× × ×

जिस समय मिस्टर केमिल की यह अवस्था थी उसी समय शिमले की अपनी कोठी में बैठे बड़े लाट लार्ड गेवर करीव करीव इसी मजमून का एक तार पढ़ रहे थे। समाचार पढ़ कर उनके मुह से भी एक लम्बी सांस निकल गई और वह कागज हाथ से छूट गया।

लम्बे कद का एक आदमी जिसका तमाम वदन यहां तक कि चेहरा भी काले कपड़े से ढंका हुआ था, उनके सामने बैठा हुआ था। उसने वह तार उठा लिया और उसे पढ़ा। उसके मुंह से भी एक ठंडी सांस निकल गई मगर अपने को सम्हाल कर उसने कहा, "देखिये माई लार्ड, मैंने आपको मना किया था कि इस तरह उस किले पर हमला न कीजिये मगर आपने न माना। मैं आपको पुनः कहता हू कि वर्तमान फौजी उपायों द्वारा उस किले पर हमला करना केवल व्यर्थ ही नही वल्कि ज्वालामुखी पर धावा करने के समान खतरनाक सिद्ध होगा। पश्चिमी विज्ञान युद्ध के लिये भयानक से भयानक जो कुछ भी अस्त्र शस्त्र अव तक वना सका है उससे कई हजार गुना भयानक 'मृत्यु-किरण' का आविष्कार करके रक्त-मंडल अपने को उन अस्त्रो से अजेय वना चुका है। अगर उस पर आप फतह पाना चाहते है तो आपको मेरी वताई तर्कीब से चलना पडेगा।"

लार्ड गेवर ने कांपती हुई आवाज मे कहा, "वेशक पंडितजी, आपका कहना ठीक निकला। मेरा उद्योग असफल हुआ। अव मैं इस युद्ध की वागडोर आपके हाथ मे देता हूं। आप जैसे जैसे कहें वैसे ही वैसे मैं और मेरी सरकार चलने को तैयार है। सचमुच ही 'रक्त-मंडल' का वह किला हम लोगों के लिए ज्वालामुखी ही सिद्ध हुआ!"

श्यामा

[१]

उपरोक्त घटना भयानक और निरुत्साहित कर देने वाली थी फिर भी अफसरों के सतत प्रयत्न से उसका पूरा पूरा और ठीक ठीक समाचार साधारण जनता पर प्रगट होने न पाया। बहुत कम लोग जान पाए कि रक्त-मंडल के किले पर हमला करने जाकर भारत सरकार को बुरी तरह जक उठानी पड़ी।

लेकिन न जाने किस तरह यह समाचार जरूर भीतर ही भीतर फैलने लग गया कि सरकार ने रक्त-मंडल का मुकाबला करने का विचार छोड़ दिया है और अब उससे सुलह कर लेने की कोशिश की जा रही है। किसी संवादपत्र में यह समाचार नही छपा न किसी विश्वसनीय सूत्र से सुना ही गया पर इसका प्रचार बहुत हो गया और शीघ्र ही इस सम्बन्ध में तरह तरह की अफवाहे उड़ने लगी। इस समाचार मे कोई सत्यता थी ऐसा तो हमें मालूम नहीं होता पर यह सम्भव है कि रक्साल में पड़ी फौज को वापस लौटने का हुक्म मिलना और मिस्टर केमिल का अपने दल सहित शिमले लौट आना इसका आधार हो। खैर जो कुछ भी हो, कम से कम

इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि उस किले पर जिसका नाम ही अब 'ज्वाला-मुखी' पड़ गया था किसी तरह का हमला करने का विचार कम से कम कुछ दिनों के लिए निश्चित रूप से छोड दिया गया था।

[२]

जमीदोज किले 'ज्वालामुखी' के अपने खास कमरे मे नगेन्द्रनरसिंह एक कुर्सी पर बैठे हुए है। आसपास की कई कुर्सियो पर और भी कई आदमी बैठे है जिनमे से करीब करीब सभी ही को हमारे पाठक पहिचानते है।

नगेन्द्रनरसिंह क दाहिनी तरफ एक गद्देदार कुरसी पर बैठे कमरे की छत की तरफ देखने तथा अपनी मोछो को बल देते हुए जो बलिष्ट पुरुष बैठे है वह धरमपुर के राजा गिरीशविक्रम है। उनके सामने कुरसी पर घटने उठाये अपनी सुफेद दाढ़ी के लम्बे बालो में कंघी की तरह उंगलियें फेरने वाले रोबीले वृद्ध पुरुष केशवजी है। बाईं तरफ की कुरसी पर अकड कर बैठा अपने दोनो पैरो को तेजी से हिलाता हुआ जो आदमी कडी निगाहो से कमरे की खिडकी की राह बाहर की तरफ देख रहा है वह वही अजनबी है जिसके हवाई जहाज पर चढ़ के नगेन्द्रनरसिंह के बचने का हाल हम ऊपर लिख आए हैं और जो इस किले में नम्बर 'दो' के नाम मे मशहूर है। पाठकों को शायद यह भी याद होगा कि नम्बर 'दो' के सुपुर्द इस किले के चारो तरफ की पचास पचास मील जमीन की रक्षा करी गई थी *। यहा हम यह भी कह देना चाहते है कि इस वीर का नाम रघुनाथ † है और यह रक्त-मंडल के 'भयानक चार' में से एक प्रमुख कार्यकर्ता है।

---

* पहिले भाग की 'दुश्मन के किले मे' नामक गल्प देखिये।

† रघुनाथ के असीम साहसिक कार्यों का हाल जानना हो तो श्री दुर्गाप्रसाद खत्री रचित 'प्रतिशोध' नामक उपन्यास पढिये।

नगेन्द्रनरसिंह की तवीयत अब पहिले से वहुत ठीक है फिर भी कुछ कमजोरी वनी ही हुई है अस्तु इनका ज्यादा समय आरामकुरसी की गोद में ही वीतता है पर फिर भी इन्हे यह मजवूरी का आराम अखरता नही क्योकि इस हालत मे भी जव ये आंख बन्द करते है तो अपनी प्यारी कामिनीदेवी का भोला चेहरा आंखो के सामने पाते है और उसे ही देखने मे ये दुनिया की सुध-वुध भूल जाते हैं। इस समय भी इनके हाथ में एक अखवार है जिसे देख लोग यही समझते होंगे कि वे गौर से कोई समाचार पढ रहे हैं पर वास्तव मे इनकी अधखुली आखो के सामने कामिनीदेवी की तस्वीर विराजमान है और मन मे तरह तरह के ख्याली पुलाव पकाते हुए ये उसको पाने का ही सुख-स्वप्न देख रहे हैं।

यकायक इनकी तन्द्रा को राजा गिरीशविक्रम की आवाज ने यह कह कर तोडा, "तव, राणा, आपने मेरी प्रार्थना पर क्या निश्चय किया ?"

चिहुक कर नगेन्द्र ने कहा, "क्या ? कैसी प्रार्थना ?"

राजा०। आपसे मैने प्रार्थना की थी कि आप अव यहा से अपना हेडक्वार्टर हटा कर मेरे किले में ले चलिये और वहां से आगे की कार्रवाई जारी कीजिये।

नगेन्द्र०। मैंने इस वात पर गौर किया मगर मैं यह न समझ सका कि ऐसा करने से क्या लाभ होगा ? इस किले मे जो मजवूती सुरक्षा और छिपाव है वह हमें आपकी राजधानी में क्योंकर मिल सकता है ?

गिरीश०। (रघुनाथ की तरफ वता कर) आपसे मेरी जो कुछ वात-चीत हुई थी उससे तो यही जाहिर हुआ था कि मेरा किला ही अव कुछ दिनों के लिए सदर वनाया जायगा और वही से आगे की सव कार्रवाई की जायगी।

रघुनाथ०। (नगेन्द्र से) मैंने आपसे कहा था कि हमलोगों की यह राय हुई थी कि यहां की देशी रियासतो के सम्वन्ध में जो कार्रवाई हम लोगों ने सोची उसके लिए इस किले की वनिस्वत इनका स्थान अधिक

उपयुक्त होगा क्योंकि उस काम के लिये एक छोटा मोटा दफ्तर खोलना और बराबर चीठी-पत्री करती रहनी पड़ेगी और इस काम के लिए दूतो और जासूसो का आना जाना बराबर लगा रहेगा। इस किले मे बहुत से आदमियो की आवाजाही ठीक नही यही सोच कर मैने धरमपूर को इस काम के लिये उपयुक्त समझा था।

गिरीश०। और मैंने भी यह सोच कर स्वीकार कर लिया था कि चाहे यह प्रयत्न असफल ही हो और चाहे पीछे मुझे आफत में ही पडना पड़े मगर धरमपूर को यह कहने का गौरव तो प्राप्त हो ही जायगा कि वह 'स्वाधीनता-प्राप्त' भारत की प्रथम स्वाधीन राजधानी बना था चाहे कुछ ही दिनों के लिए सही।

नगेन्द्र०। (हंस कर) आपने हमलोगो से मिल कर हिम्मत तो बहुत दिखाई है राजा साहब इसमें कोई शक नही मगर अब जब सरकार ने आपके सब कसूरो को माफ कर दिया है तब आपको अपने साथ बनाए रख कर व्यर्थ की आफत मे डालना क्या हम लोगो के लिए उचित होगा ?

गिरीश०। जरूर, बल्कि अपने साथ न रखना ही अनुचित होगा, क्योकि उस हालत मे मुझे एक वीर संस्था के प्रति यह कहने का अवसर मिलेगा कि उसने एक गरीब राजा को धोखे मे डाला और अपने वचन की रक्षा न की। मै आपसे सत्य कहता हूं कि जब से मेरा आप लोगो का साथ हुआ है तब से मेरा दृष्टिकोण ही बदल गया है। मै अब जानने लगा हू कि वीरता क्या चीज है और वास्तविक स्वार्थ-त्याग किसे कहते है। मैने तो अपने दिल मे यहा तक निश्चय कर लिया है कि अगर आप लोग मेरा साथ न देंगे तो मै अकेला ही खड़ा हो कर स्वतन्त्रता का युद्ध छेड़ दूंगा परन्तु अब किसी विदेशी शासक के सामने कभी सिर न झुकाऊंगा।

नगेन्द्र०। मगर एक बात तो बताइए, जैसा हमला उस दिन इस किले पर अंगरेजी हवाई जहाजो ने किया था वैसा अगर आपकी राजधानी राज्य या किले पर किया गया होता तो आप क्या करते ?

गिरीश०। आप मुझे बच्चो की तरह बहलाइए नही राणाजी। अभी उस दिन केशवजी मुझसे कह चुके हैं कि दो सौ मील के घेरे के अन्दर उनकी मृत्यु-किरण किसी को फटकने नही दे सकती और मेरा किला तो यहा से सौ मील से भी कम ही की दूसरी पर है। केशवजी, आप इस जगह से अपना रक्षा का हाथ मेरे किले तक बढ़ा सकते है तो ?

केशव०। जी हा बात तो यह जरूर है।

गिरीश०। और फिर अगर आप लोग एक छोटा मोटा मृत्यु-किरण का यन्त्र मेरे किले मे बैठा दें तो और भी अच्छा हो। मेरे राज्य मे कोयला इफरात से मिलता है और इस बात का जिम्मा मैं लेता हू कि आपके यन्त्र के बारे मे जरा सा भी भेद किसी गैर पर प्रगट न होने पावेगा। मैं अपनी रियासत के किसी आदमी को उसके पास फटकने ही न दूगा, केवल आपके आदमी ही उसे चलावेगे।

केशव०। (हंस कर) मृत्यु-किरण का यन्त्र लगाना आप क्या हंसी खिलवाड़ समझते हैं! पाच बरस की लगातार कोशिश और करोडो रुपए के खर्च के बाद वे यन्त्र खडे हुए है जिन्हें आपने उस दिन देखा और आप यह भी सुन चुके है कि वे कोयले से नहीं चलते बल्कि पृथ्वी के अन्दर दबी हुई गरमी की सहायता से काम करते है।

गिरीश०। ठीक है आपने ऐसा कहा था मगर मै वैज्ञानिक न होने के कारण इन सब बातों को ठीक ठीक समझ न सका और मेकैनिक न होने के कारण आपके यन्त्रो की परिचालन क्रिया भी समझ नही पाया। मैं तो एक सीधा सादा मूर्ख राजा हू जिसे ऐश आराम से कभी इतनी फुरसत ही नही मिली कि दुनिया मे कहा क्या हो रहा है इसे देखे। फिर भी जब प्रसंग चला है तो एक बात मै पूछना चाहता हू।

केशव०। क्या ?

गिरीश०। मैंने आप लोगो से सुना और देखा भी है कि आपके यन्त्र एक दिशा मे केवल सौ मील तक अपनी किरणें फेंकते है। तो क्या इसमें

के और बड़े यन्त्र बना कर आप इस फासले को बढ़ा नही सकते ? क्या आप इतना बडा यन्त्र नही बना सकते कि जो यहां बैठे बैठे यूरोप और अमेरिका मे तहलका मचा दे ?

केशव०। मेरी मृत्यु-किरण मे दो बडी कमजोरियां है जिन्हें दूर करने की यद्यपि मै फिक्र मे पडा हुआ हू फिर भी सफलता नहीं मिल रही है। बात यह है कि जिस तरह एक्स-रेज अपने चारो तरफ दायरा बनाती हुई आकाश (ईथर) में फैलती है उस तरह मेरी ये किरणे काम नही करती। ये सीधो लकीर मे एक ही दिशा मे जाती है। यही कारण मेरी किरणो के अद्भुत बल का भी है क्योकि एक ही दिशा में जाने के कारण जिस समय मै भिन्न भिन्न कई केन्द्रो से इन किरणो को फेंक कर एक ही बिन्दु पर इकट्ठा कर देता हू तो वहा इतनी शक्ति इकट्ठी हो जाती है कि जो चीज भी वहा रहे उसी समय भस्म हो जाती है। यह काम ठीक वैसा ही-है जैसा आतशी शीशा करता है अर्थात् वह बहुत सी सूर्य-किरणो को इकट्ठा करके एक बिन्दु पर एकत्र कर देता है। अगर शब्द प्रकाश या अन्य किरणो की तरह फैलती हुई न आकर सूर्य की किरणे भी सीधी सीधी ही यहां पहुचती तो उनकी आच या रोशनी सहन करना असम्भव हो जाता, उनके इधर उधर बिखर जाने से ही उनका जोर कम हो जाता है और चूंकि सूर्य की किरणो का रुख बदल कर आतशी शीशा उन्हें पुन इकट्ठा करने मे समर्थ होता है इसी से एक बिन्दु पर थोड़ी आंच पैदा हो जाती है। वही हिसाब मेरी मृत्यु-किरणो का भी समझिए। ये सीधी और सिर्फ एक ही दिशा में जाती है और इसी से मै कई स्थानो से उन्हें एक बिन्दु पर इकट्ठा करके जो चाहे सो करने मे समर्थ होता हू।

गिरीश०। ठीक है, मगर मेरा कहना तो यह है कि आप अपने यन्त्रो को इतना बडा बनाइए कि वे सो मील के बजाय हजार मील, दो हजार, दस हजार मील, तक इन किरणो को फेंक सकें ?

केशव०। आपने मेरी बात पूरी नही होने दी। मै यही बता रहा

था कि क्यों ऐसा नही कर सकता। केवल एक दिशा और सीधी पंक्ति मे जाने ही के कारण ऐसा होता है कि ये सौ मील से अधिक दूर नही जा सकती।

केशव०। मगर क्यों ?

केशव०। इसलिए कि इससे आगे पृथ्वी की गोलाई उनकी गति में वाधा देती है और वे किरणें पृथ्वी से टकरा के उसमे समा जाती है! आप जानते ही है कि पृथ्वी गेंद की तरह गोल है। अगर गोल सतह पर कोई चीज चलना चाहे तो उसे भी गोलाई लेकर ही चलना पडेगा। मेरी किरणें चूकि सीधी चलती है इससे पृथ्वी की गोलाई उसमें वाधा देती है! प्रत्येक मील पर पृथ्वी कुछ इंच मोटी हो जाती है अर्थात् उसकी गोलाई का इतना अंश एक मील की दूरी पर आ जाता है। मैं वहुत ऊंचे से इन किरणो को फेंकता हूँ इसलिए वे सौ मील तक भी चली जाती हैं नही तो इतना भी न जाती।

गिरीश०। ठीक है, अव मैं इस रुकावट का कारण समझ गया। यह वेशक वहुत वड़ी कमजोरी है। ऐसा न हो तो आप यही वैठे सारी दुनिया को वस में कर लेते।

केशव०। हां, और पहिले मैंने ऐसा ही स्वप्न देखा भी था, पर जव काम करने का मौका आया तो यह झगडा पैदा हो गया।

गिरीश०। वेशक, इसे कुछ कुछ इस तरह पर दूर कर सकते है कि किरणों को और ऊंचे से फेकें, मगर आखिर कहां तक।

केशव०। जी हा कहां तक ऊंचा किया जाय। वहुत ऊंचा करने से भी एक तो शत्रुओं की अंखों पर चढेगी जो वहुत वडा ऐव हो जायगा दूसरे ये किरणें पृथ्वी छोड़ आकाश मार्ग मे जाकर नष्ठ हो जायंगी।

गिरीश०। ठीक है, अच्छा वह दूसरी क्या कमजोरी आपने अपनी किरणो मे पाई ?

केशव०। दूसरी वात यह है कि ये किरणें सीधी ऊपर को नही उठती,

हमेशा कुछ कोण ही लेकर भेजी जा सकती है। इसीलिये एक दम ठीक सिर के ऊपर इनका कोई प्रभाव नही होता।

गिरीश०। ऐसा ! तव क्या अगर ठीक आपके सिर के ऊपर से कोई दुश्मन आप पर हमला करे तो आप इन किरणो की सहायता से उसे भस्म नही कर सकते ?

केशवजी कहते कहते रुक गए। उनकी निगाह नगेन्द्रनरसिंह की निगाहो से मिली जिसमें कोई सन्देशा उन्होने पढा जिसके साथ ही वे सम्हल गये ओर वोले, "नहो वह वात नही है, वात इसमें कुछ ऐसी है....!"

कहते कहते केशवजी फिर रुक गए। गिरीशविक्रम कुछ पूछना चाहते थे कि इसी समय रघुनाथ ने नगेन्द्रनरसिंह की तरफ देख कर पूछा, "उस अंगरेज अफसर कासग्रेव के वारे मे क्या हुक्म होता है जो आपका पीछा करता हुआ गया था और जिसे हमारे जासूसो ने नरेन्द्रसिंह के आदमियों सहित गिरफ्तार कर यहा भेज दिया है ?"

नगेन्द्र०। उससे मैने एक काम लेना सोचा है। अभी उसे कुछ दिन तक और कैद रखना ही मुनासिव होगा, हा यह ख्याल रखना पडेगा कि वह कही भाग न निकले।

रघुनाथ०। जी नही, हमारी कैद से छूट जाने की संभावना तो वहुत कम है।

नगेन्द्र०। नरेन्द्रसिंह के वे दोनो आदमी भी तो अभी तक यही होगे ?

रघुनाथ०। जी हा है। उनके वारे में भी मै पूछने वाला था कि क्या किया जाय ?

नगेन्द्र०। उन्होने क्या यहा का रास्ता या यह जगह देख ली है ?

रघुनाथ०। जी नही, वे तीनो ही वेहोश कर के यहा लाए गए थे और यहां पहुच कर जिस जगह वन्द किए गए वहा से कभी वाहर निकलने नही दिये गये। इस कारण वे यहा के वारे में कुछ भी नहीं जानते।

नगेन्द्र० । वहुत ठीक है, तो कल उन दोनों को तो छोड़ दो । मुझे एक चीठी नरेन्द्र के पास भेजनी है जो उन्ही की मारफत भेज दी जायगी। छोड़ते समय जरूरी एहतियात से काम लेना और . .

इसी समय कमरे के वन्द दर्वाजे पर थपकी पड़ने की आवाज आई । आज्ञा पाने पर दर्वाजा खोल एक फौजी जवान अन्दर आया जिसके हाथ में एक कागज था । सलाम कर उसने वह कागज नगेन्द्रनरसिंह की तरफ वढ़ा दिया और तव उनका इशारा पा कमरे का दर्वाजा वन्द करता हुआ पुन वाहर निकल गया ।

नगेन्द्रनरसिंह ने वह कागज पढ़ा, पढ़ कर वे चौक पडे और उनके माथे के वल यह सूचना देने लगे कि वे किसी चिन्ता मे पड गए है । उन्होने थोडी देर तक आंखें वन्द कर के कुछ सोचा और तव जेव से कलम निकाल उस कागज के एक कोने पर कुछ लिख कर रघुनाथ की तरफ वढ़ा दिया । रघुनाथ ने उसे पढ केशवजी को दिया और उन्होंने भी उसे पढ़ने वाद यह कहते हुए नगेन्द्रनरसिंह को वापस कर दिया—"जी हां, यही मुनासिव जान पडता है ।"

नगेन्द्रनरसिंह ने ताली वजाई । आवाज के साथ ही वही जवान पुन: कमरे के अन्दर आया । नगेन्द्रनरसिंह ने एक दूसरे कागज पर कुछ लिख कर उसके हाथ मे दिया और कहा, "यह तार अभी जायगा ।" वह कागज ले सलाम कर चला गया और कमरे का दर्वाजा फिर वन्द हो गया ।

महाराज गिरीशविक्रम यह जानना चाहते थे कि उस कागज का मजमून क्या था जो नगेन्द्रनरसिंह को मिला था मगर कुछ पूछने की उनकी हिम्मत न पडी, फिर भी इतना वे जरूर समझ गये कि उसमे कोई जरूरी और फिक्र पैदा करने वाली वात थी क्योकि उस कागज के मजमून को पढ़ कर नगेन्द्रनरसिंह रघुनाथ और केशवजी तीनो ही चिन्तित से दिखाई पडने लगे थे ।

[३]

यद्यपि दोपहर का समय होने के कारण सूर्यदेव पूरी तेजी से और एकदम सिर से ऊपर चमक रहे है फिर भी इस मैदान मे उनकी तीखी किरणें अपनी गर्मी भूल सी गई है। चारो तरफ के ऊंचे ऊंचे पहाडो से टकरा कर आती हुई हवा दूर के वर्फ से ढंके पहाड़ो की मदद पा ठडी हो गई है और इसी से उन दो मुसाफिरो को गर्मी की तकलीफ विल्कुल नही सता रही है जो मजवूत पहाडी टागनो पर सवार तेजी से चले जा रहे है।

हमारे पाठक इन दोनो को पहचानते है। इनमे से एक तो राजा गिरीशविक्रम है और दूसरे उनके सेनापति कप्तान रौशनसिंह। जहां पर ये दोनो इस समय है वहा से रक्त-मंडल का किला 'ज्वालामुखी' लगभग पचास कोस के दूर है मगर यह पहाडी सिलसिला अभी तक वही चला आ रहा है। नैपाल की राजधानी काठमाडू इनके दाहिने हाथ लगभग चालीस पचास मील पर है और धरमपुर इनके वाएं पड़ता है पर इस समय ये दोनो धरमपुर नही जा रहे है वल्कि सीधे पश्चिम की तरफ किसी दूसरी ही जगह जा रहे है। सामने लगभग पाच छः कोस के फासले पर एक घने जगल की तरफ वार वार निगाहें उठा कर देखने से जान पड़ता है कि इन लोगो का वर्तमान लक्ष्य स्थान इस समय वही है।

थोडी देर और जाने वाद राजा साहव ने अपने सेनापति की तरफ देख कर पूछा, "मेरे पीछे कोई सरकारी चीठी तो नही आई थी?"

रौशनसिंह ने जवाव दिया, "जी नहीं, मगर रेजीडेण्ट साहव ने कई वार मिलने के लिए पुछवाया था।"

राजा०। तव? क्या जवाव दिया गया?

रौशन०। कहला दिया गया कि महाराजा साहव की तवीयत वहुत खराव है, वैद्यो ने किसी से मुलाकात करने को एकदम मना किया है।

राजा साहव ने इस तरह सिर हिलाया मानो इस जवाव को पसन्द

किया। इसके बाद फिर चुपचाप सफर होने लगा।

एक घन्टे से कम ही समय मे ये दोनो उस जंगल के पास जा पहुचे। यह घना और डरावना जंगल ऊंचे ऊंचे पेड़ो और झाड़ झंखाड के कारण कुछ ऐसा गुन्जान हो रहा था कि उसके अन्दर एकदम अंधकार हो रहा था। इस जगल का फैलाव कितनी दूर तक था यह तो कहना यद्यपि कठिन है परन्तु इसमे कोई शक नही कि इसके अन्दर सैकड़ों आदमी इस तरह छिप कर रह सकते थे कि आस पास की पहाडियों और रास्तों पर से जाने वाले लोगो की ही निगाहो से नही बल्कि हवाई जहाजों के उडाकों की नजरों से भी छिपे रह सके।

राजा गिरीशविक्रम और कप्तान रौशनसिंह ने इस जंगल के पास पहुच कर घोडो की चाल कम कर दी और आपस मे कुछ बातें करने बाद जंगल के किनारे दाहिनी तरफ को रवाना हुए। उनके रंग ढंग से जान पडता था कि ये लोग करीब करीब अपने ठिकाने पर पहुच गए हैं और आखिर वैसा निकला भी क्योकि एक बहुत ही बडे और दूर तक फैले हुए बड़ के पेड़ के नीचे पहुच ये दोनो घोड़े से उतर पड़े। राजा गिरीशविक्रम ने अपने चारो तरफ गौर से देखा और तब जेब से एक सीटी निकाल कर कुछ खास इशारे के साथ बजाई। आवाज की गूंज अभी बन्द नही हुई थी कि जंगल के भीतर की तरफ से जवाब मे दूसरी सीटी की आवाज सुन पड़ी और साथ ही आहट ने यह भी बता दिया कि यह दूसरी सीटी बजाने वाला इसी तरफ आ रहा है।

थोड़ी देर, बाद इनकी निगाह एक आदमी पर पड़ी जो घोड़े पर सवार इनकी तरफ बढ़ा आ रहा था। इन दोनों आदमियो के पास पहुच कर उसने इन्हें अदब से सलाम किया और तब एक चीठी इनकी तरफ बढ़ाई। राजा गिरीशविक्रम ने चीठी पढ़ी और तब उसे रौशनसिंह को देते हुए उस आदमी से पूछा, "वह जगह यहा से कितनी दूर है?"

आदमी ने जवाब दिया, "ज्यादा दूर नही है, करीब बीस मिनट का

रास्ता होगा।" राजा साहव ने कहा, "क्या और भी कोई आया है?" जवाव मिला, "जी हा, दो यूरोपियन और दो हिन्दुस्तानी अफसर है मगर मै जानता नही कि वे कौन है।" राजा साहव ने कुछ सोच कर जवाव दिया, "अच्छा चलो, मै चलता हूँ।"

घोडो पर सवार आगे आगे वह आदमी, उनके पीछे राजा साहव, और सव के पीछे रौशनसिंह जंगल के भीतर घुसे। ज्यों ज्यो आगे वढते जाते थे जगल घना गुंजान और डरावना होता जाता था। आस्मान से वातें करने वाले वडे वडे पेड अपनी दूर दूर तक फैली हुई शाखो की मदद से अंधेरा किए हुए थे, नीचे के झाड झंखाड़ की यह कैफियत थी कि दस कदम भी दूर से देखने से यही मालूम होता था कि एक ठोस हरी दीवार सामने खड़ी है जिसमें वडी मुश्किल से रास्ता पैदा करते हुए ये लोग अन्दर घुसने लगे। थोडी देर मे उस जंगल ने इन लोगो को इस तरह हजम कर लिया कि वाहर से विल्कुल पता नही लग सकता था कि अभी अभी कुछ आदमी इसके अन्दर घुसे है।

[४]

चारो तरफ के भयानक घनघोर जंगलो और पहाड़ो से घिरा हुआ एक छोटा मैदान हरी हरी घास की वदौलत सब्ज़ मखमली फर्श का मजा दे रहा है।

यह मैदान जो मुश्किल से दस वारह वीघे का होगा नैपाल के पहाड़ों के वीच में ही कही है और इसके चारो तरफ का जंगल शेर भालू और जगली सुअरो से इतना भरा हुआ है कि शायद किसी भी आदमी के पैर अव तक इस पर न पड़े होगे क्योंकि इन खूंखार जानवरो के डर स कोई इधर आता ही नही होगा। इस जगह से दस वीस कोस के घेरे के अन्दर कोई आदमी गाव झोपड़ी यहां तक कि खेत भी न होने से किसी को कभी इधर आने की जरूरत नही पड़ती और इसी से यह स्थान और भी एकान्त रहता है जिससे जगली जानवर वेरोकटोक इसमें घूमा फिरा करते हैं।

ऐसे मैदान मे तीन चार आदमियो को देख कर हमे ताज्जुव मालूम होता है। इनकी पौशाकें कारतूस भरी कमर पेटिया और पीठ पर की राइफिलें यद्यपि वता रही है कि ये वहादुर शिकारी है जो शायद शिकार की खोज मे यहां तक पहुच गए होगे फिर भी जो आदमी हमारी तरह इस मैदान को घेर रखने वाले जंगलो से पूरी तरह वाकिफ है वह इस वात पर ताज्जुव किये विना न रहेगा कि चारो तरफ का कोसों का भयानक जंगल पार करके ये सव इस जगह तक पहुचे भी तो कैसे ? आइए शायद पास चलने पर कुछ पता लगे कि ये कौन हैं या कैसे यहां तक पहुचे। वीच का मैदान छोड़ ये लोग किनारे के दरख्तो की छाया मे टहल रहे है अस्तु हमे भी वही चल कर इन्हें देखना और इनकी बातें सुननी चाहिए।

मगर ये लोग तो हमारे जाने पहिचाने निकले ! वह अपने पीछे की झाड़ी मे से कोई आहट पा गौर मे उधर देखने वाले तो मिस्टर केमिल है। उनके साथ का नौजवान जिसके मुडे हुए वाएं हाथ के घेरे मे उसकी राइफिल लटक रही हैं उनका भतीजा एडवर्ड है। इनसे कुछ हट कर जो दो आदमी आपस मे वातें करते दिखाई पड रहे है उनमे से एक तो वडे लाट साहव के मिलिटरी सेक्रेटरी मिस्टर थामसन है और दूसरा छोटे लाट के सेक्रेटरी मिस्टर फर्गूसन। इनसे कुछ दूर हट कर अदव के साथ खड़ा हुआ नौजवान रतनसिंह है जिसे हमारे पाठक नैपाल की अंगरेजी रेजी-डेन्सी मे देख चुके है।

जिस आहट ने केमिल और एडवर्ड का ध्यान आकर्पित किया था वही थामसन और फर्गूसन के कान मे भी पड़ी और वे भी सिर घुमा कर उधर ही को देखने लगे। धीरे धीरे आवाज स्पष्ट होने लगी और कुछ ही देर वाद मालूम हुआ कि घुडसवारो के आने की आहट है जो गिनती में दो तीन से ज्यादे नही है। थोडी देर में यह शक विल्कुल जाता रहा और तीन सवारो की सूरत दिखाई पडी जो जंगल को भेदते हुए इधर ही को आ रहे थे।

थामसन ने केमिल साहव की तरफ देख कर पूछा, "ये लोग कौन है ?" केमिल साहव ने जवाव दिया "मैं नही पहिचानता, पर जान पडता है हमारी ही तरह ये भी यहा के लिए निमन्त्रित हे क्योकि वह आगे आगे आने वाला सवार वही है जिसने मुझे यहा तक पहुचाया था।"

इसी समय रतनसिंह ने जिसके कान में यह सवाल और जवाव पड चुका था अदव के साथ धीरे से कहा, 'मै इन्हे पहिचानता हूँ। इनमें से एक तो धरमपूर के राजा गिरीशविक्रमसिंह है और दूसरे उनके सेनापति रौशनसिंह।

यह नाम सुनते ही सभो की भृकुटी चढ गई और उन्होंने नफरत के साथ उधर से मुंह घुमा लिया। फर्गूसन के दात तले दवे हुए होठो से निकला, "यह कम्वख्त दुश्मनो का भेदिया यहा क्यो आया ?"

राजा गिरीशविक्रमसिंह और रौशनसिंह को यहा तक पहुचा कर वह सवार पुन. पीछे लौट गया। ये दोनो कुछ देर तक तो चुपचाप खडे रहे और तव धीरे धीरे उस तरफ वढे जिधर वाकी के लोग थे पर कुछ पास पहुचने पर राजा साहव रुक गये, या तो उन्होंने इन लोगो को पहिचान लिया और या इनकी कुरुखी देख दूर ही रहना उचित समझा।

अचानक एक आवाज ने इन सव आदमियो का ध्यान आकर्षित किया जो आकाश से आती हुई मालूम होती थी। आवाज वहुत तेज नही थी मगर कुछ विचित्र ढग की और दवी दवी सी थी। जिनके कान वहुत तेज होगे उन्होंने रात क वक्त चिमगादड या उल्लू के उडने की आवाज सुनी होगी। इस समय आने वाली आवाज भी कुछ कुछ उसी ढंग की थी जिसने वहा पर इकट्ठे सभी आदमियो को इस वात पर मजवूर किया कि वीच के मैदान की तरफ घसकें और ऊपर देख कर पता लगावें कि आवाज किस चीज की है। मगर देर तक निगाहे दौडाने पर भी किसी को कुछ दिखाई न पडा और कुछ देर वाद वह आवाज भी कम होती हुई एक दम मिट गई।

अचानक एक तेज सीटी की आवाज सव तरफ गूंज गई। यह आवाज

भी आसमान से ही आती मालूम होती थी। सभों की निगाहे फिर ऊपर को उठी मगर आस्मान एक दम साफ था। सीटी की गूंज अभी मिटी न थी कि यकायक आस्मान की तरफ से गिरते हुए दो बड़े गोलों पर उन सभो की निगाह पडी। ये गोले किसी हलकी चीज के थे जो हवा के झपेड़ो से इधर उधर मंडराते हुए बहुत धीरे धीरे नीचे आ रहे थे। मैदान के आदमी अभी ताज्जुब ही कर रहे थे कि खुले आस्मान में ये गोले क्योकर पैदा हो गये कि वे दोनो गोले उड़ते और गिरते हुए उनके पास आ पहुचे और इन लोगो से लगभग पचीस तीस गज ऊपर पहुँच कर हलकी आवाज के साथ फट गए। गोलों के फटते ही ढेर सा काला धूआ उनमें से निकला जो तेजी के साथ चारो तरफ फैलने लगा। केमिल ने यह देखते ही चौंक कर कहा, "हट जाइए, हट जाइए, मालूम होता है ये किसी तरह की जहरीली गैस के बम है!" सब लोग जल्दी जल्दी वहां से हटे मगर इस बीच में हवा के झोकों ने उस काले धूएं को सब तरफ फैला दिया था। इस धूएं में एक अजीब तरह की बदबू थी जिसने इन आदमियों के नाक मे जाते ही इनका दम रोकना शुरू किया मगर फुर्ती से हट जाने के कारण और कोई बुरा असर न हुआ और पाच ही सात मिनट के बाद उस गैस के कारण पैदा होने वाली बेचैनी एक दम दूर हो गई।

इसी समय फिर आस्मान से सीटी की आवाज आई। सभों की निगाह पुन. उधर को उठी और अचानक सभो ने देखा कि कपड़ो की गठरी की तरह की कोई चीज ऊपर से नीचे को गिर रही है जो थोड़ा नीचे आते ही फैल कर एक छाते की शकल की हो गई जिसके बीचोबीच मे रस्सियो के सहारे कोई चीज लटक रही थी।

केमिल ने इसे देख कर कहा, "यह तो पैराशूट मालूम होता है मगर यह आया कहा से? कोई हवाई जहाज या गुब्बारा दिखाई पडता तो समझते कि उस पर से फेका गया होगा!"

इसके साथ ही थामसन ने कहा, "यही नही, जो चीज इस पैराशूट से लटक रही है वह मुझे वम मालूम होता है। ताज्जुव नही कि जमीन पर गिर कर यह फूटे और हम सभो को दूसरे लोक का राही वना दे!"

मानो इस वात के जवाव मे ही उस लटकती हुई काली चीज में से आग की एक लम्वी लवर वडे जोर के साथ निकली और जमीन की तरफ झपटी। यद्यपि अभी भी उस पैराशूट की ऊंचाई पांच सौ गज से कम न होगी मगर यह लपट इतनी तेज थी कि जमीन तक पहुच गई। अगर नीचे खडी मंडली तेजी से भाग कर एक तरफ पेडो की आड मे न हो जाती तो ताज्जुव नही कि उस पर भी इस लपट का कुछ असर पडता और उसे तकलीफ उठानी पडती मगर ऐसा कुछ न हुआ और ये लोग अपनी आड की जगह से ताज्जुव और वहुत कुछ डर के साथ देखने लगे कि यह वम और क्या करता है। मगर नही, सिर्फ एक दफे यह अग्नि-वर्षा कर चुकने के वाद इस वम ने फिर कुछ और न किया और धीरे धीरे नीचे उतरता हुआ वह पैराशूट उस वम को लिए दिए कुछ दूर के एक पेड़ पर गिर डालियों से उलझ गया।

कुछ लोगो की इच्छा हुई कि पास जा कर उस वम को और गौर से देखा जाय मगर ज्यादातर आदमी इसके खिलाफ थे, कौन ठिकाना वह वम फूट पडे या क्या हो, अस्तु उधर कोई न गया और सव कोई पुनः मैदान में निकल इस विचार में पडे कि आखिर ये सव चीजें गिर कहा से रही है, इन्हे फेंकने वाला भी तो कोई होना चाहिए। मगर आस्मान एक दम साफ था। कही किसी गुब्वारे या हवाई जहाज का तो क्या एक पक्षी तक का भी नामनिशान न था और लोगो का ताज्जुव वढता जा रहा था।

अचानक फिर एक सीटी की आवाज सुनाई पड़ी। सभो की निगाहें पुनः ऊपर को उठी और इस वार फिर एक छोटी चीज आसमान से नीचे गिरती दिखाई पड़ी। हिफाजत के खयाल से सव लोग पुनः आड़ में हो गए पर इस वार की चीज कोई खतरनाक चीज न थी। वह सिर्फ

एक कागज का टुकड़ा था जिसके साथ लकड़ी का छोटा सा टुकडा बंधा हुआ था। रतनसिंह ने आगे वढ़ कर वह कागज उठा लिया और ला कर थामसन के हाथ में दिया जिन्होंने उसे पढ़ा। सिर्फ यह लिखा हुआ था :—
"अव मैं प्रगट होता हू।"

इस विचित्र संदेशे ने लोगो के ताज्जुव को और भी वढा दिया और सव कोई पुन: वीच के मैदान में आकर कौतूहल के साथ देखने लगे कि अव कौन कहां प्रगट होता है।

फिर उसी तरह की गूंजने वाली आवाज जैसी पहिले सुनाई पड़ी थी देखने वालों के कान में पडी, पर पहिली दफे से अवकी इतना अन्तर था कि इस वार यह मालूम होता था कि जिस चीज की यह आवाज है वह उनके सिर के ऊपर चक्कर लगा रही और साथ ही नीचे भी उतरती आ रही है क्योकि आवाज पल पल मे तेज होती जाती थी! कुछ देर तक यही हालत रही और इसके वाद आस्मान पर पहुत दूर ऊचे एक धुंधली चीज सभो को दिखाई पडी जो हलके वादल के टुकडे की तरह मालूम पडती थी। यह वादल का टुकडा चक्कर खाता हुआ नीचे की तरफ उतर रहा था और साथ ही खुद भी धीरे धीरे हलका होता हुआ गायव होता जा रहा था।

थोडी ही देर में वह वादल सी चीज बिल्कुल साफ हो गई और अब एक हवाई जहाज की धुंधली शकल दिखाई पड़ने लगी जिसका रंग आस्मान के रंग से इतना मिलता जुलता था कि वड़ी मुश्किल से उस पर निगाह पड़ सकती थी। इस समय वह जमीन से कोई दो हजार फीट की ऊंचाई पर था और अभी भी चील की तरह चक्कर काटता हुआ नीचे ही को उतर रहा था। ज्यों ज्यों वह नीचे आता जाता था उसकी आकृति स्पष्ट होती जाती थी तथा थोड़ी देर और वीतते वीतते साफ मालूम पड़ने लगा कि वह एक छोटा मगर तेज चलने वाला हवाई जहाज है जिसकी दो पंखियां वड़ी तेजी से घूम रही थी मगर फिर भी ताज्जुब की वात थी

कि इसके इंजिनों की आवाज बिल्कुल नही आती थी, हां वह सनसनाहट की सी आवाज बढती जा रही थी और अब विश्वास होने लगा था कि पहिले दो बार जो आवाज इन लोगो ने सुनी थी वह इस हवाई जहाज के उडने की ही आवाज थी।

पल पल में नजदीक आता हुआ वह हवाई जहाज कुछ ही देर बाद इन लोगो के सिर पर मंडराने लगा और तब गिद्ध की तरह गोल बड़ा घेरा बाधता हुआ खूबसूरती के साथ जमीन पर उतर पड़ा। अभी उसकी पंखियो का घूमना बन्द नहीं हुआ था कि दौड़ती हुई यह मण्डली उसके पास जा पहुची। सब से पहिले केमिल उसके पास पहुचे और वहा पहुँचते ही एक चीख बेतहाशा उनके मुंह से निकल गई।

हवाई जहाज के उडाके थे पंडित गोपालशंकर, और उनके बगल में बैठी थी मिस्टर केमिल की लडकी मिस रोज !

[५]

पंडित गोपालशंकर और मिस रोज को अपने सामने देख उन सभो ही की विशेष कर मिस्टर केमिल की तो यह हालत हो गई कि बयान करना मुश्किल है।

अब तक सब लोग यही विश्वास किए बैठे थे कि पंडित गोपालशंकर की जान रक्त-मडल वालो ने उस समय ले ली जब वे रोज को छुडाने के लिए उसके काशीजी वाले अड्डे में घुसे थे, पर आज यकायक उन दोनो ही को सही सलामत अपने सामने पा सभो की खुशी और ताज्जुब का कोई हद न रहा। सब से बढ कर प्रसन्नता तो मिस्टर केमिल को हुई जो अपनी प्यारी बेटी और अपने सब से बडे मित्र को इस दुनिया से सदा के लिए उठ गया हुआ समझ कर बिल्कुल ही निराश हो चुके थे। इस समय उन दोनो ही को अपने सामने पाकर वे अपने को किसी तरह रोक न सके

और आगे को झुक कर इस तरह उन दोनों को देखने लगे मानों उन्हें अपनी आखों पर विश्वास नही हो रहा है। मगर उनका शक जाता रहा जब उन्हें देखते ही एक चीख मार कर 'डियरेस्ट पापा !' कहती हुई रोज झपट कर उनके गले से चिपट गई। इसी समय गोपालशंकर भी जो अपने हवाई जहाज के किसी कल पुर्जे को दुरुस्त कर रहे थे आगे बढ आए और खुशी खुशी केमिल का हाथ पकडते हुए बोले, "कहिए मिस्टर केमिल, आप तो मेरी तरफ से बिलकुल ही नाउम्मीद हो चुके होंगे !"

केमिल ने कहा, "बेशक, मुझे बिल्कुल आशा न थी कि इन आखो से फिर कभी आपको जीता जागता देखूंगा, और इस रोज की तरफ से भी कुछ कुछ वैसी ही भावना मेरी हो चली थी। मगर आप अब तक कहां थे अथवा रोज किस तरह उन शैतानो के कब्जे से छूटी यह सब कुछ जानने के पहिले मै आप लोगो को इनसे इन्ट्रोड्यूस कर दूं।"

वहा इकट्ठे सब अफसरो और लोगो से केमिल ने गोपालशंकर और रोज का परिचय करा दिया जिनमे से कुछ को वे पहले से भी जानते थे और साधारण शिष्टाचार के बाद आपस मे इस तरह बातें होने लगी :—

थामसन०। आप और मिस रोज रक्त-मंडल के पंजे से जिस तरह छूटे यह तो मै जानना ही चाहता हू मगर उससे भी बढ कर ताज्जुब जिस बात का है वह आपके इस हवाई जहाज के बारे मे है। क्या सचमुच इसमें गायब हो जाने की ताकत है या हम लोगो की आंखो ने हमे धोखा दिया है ?

गोपाल०। (हंसकर) जी आप लोगो की आखें बिल्कुल दुरुस्त हैं और मेरा यह वायुयान 'श्यामा' ही कुछ इस तरह का है कि हवा मे केवल चुपचाप ही नही उडता बल्कि अलक्ष्य भी हो जाता है। मैने उतरने के पहिले आकाश मे इसके कई चक्कर लगाये थे और कुछ चीजें भी गिराई थी। मै समझता हू कि आपको कुछ पता न होगा कि वे चीजें कहाँ से गिर रही है।

थामसन०। बिल्कुल नही और अगर अन्त में आप प्रगट न हो जाते

तो कम से कम मै तो यही समझता रहता कि यह कोई भूत-लीला हम लोगो ने देखी।

फर्गूसन०। जी हां, मै भी अपने मन मे कोई ऐसी ही वात सोच रहा था। भला यह कैसे गुमान किया जा सकता था कि आप ऐसे हवाई जहाज पर से वे चीजें फेंक रहे हैं जो आंखो के सामने रहता हुआ भी गायव है। अभी तक परियो और जादूगरो के किस्सो ही मे आखो से ओट हो जाने या कर देने वाली चीजो का हाल मैने पढा था पर अव जान पडता है कि उनको देखने का वक्त भी आ गया है।

गोपालशंकर०। (मुस्कुराते हुए) वेशक ऐसा ही है, मगर मै उचित समझता हूँ कि हम लोग पेडों की आड में होकर वातें करें तो ज्यादा अच्छा हो। अगर दुश्मन ने किसी तरह हम लोगो को देख लिया तो हमारी वह कार्रवाई विल्कुल व्यर्थ हो जायगी जिसके लिए हम लोग आज यहां इकट्ठे हुए हैं।

सव लोग पेडो के झुरमुट की तरफ वढे। इसी समय एडवर्ड ने कहा, "क्या वेहतर न होगा कि हम लोग इस 'श्यामा' को भी पेड़ो की आड़ में कर लें! इसके भी देखे जाने का अंदेशा है।"

गोपालशंकर ने यह सुन कर कहा, "कोई जरूरत नही, मैंने ऐसी तर्कीव कर दी है कि इसे ऊपर से कोई देख न सकेगा अर्थात् हवा मे उड़ने वाले किसी हवाई जहाज या गुव्वारे का सवार इसे यहां देख न पावेगा।"

थामसन ने यह सुन चलते चलते पूछा, "तो क्या आप इस हवाई जहाज के जिस हिस्से को जव चाहे अदृश्य कर सकते है?"

गोपाल०। हा यद्यपि सव अंशो मे तो नही पर कुछ अंशो में जरूर।

फर्गूसन०। मगर मेरी समझ में जरा भी नही आता कि आपने क्या कार्रवाई कर दी है कि इतनी वडी चीज आख के सामने से लोप हो जाती है!

थामसन०। यूरोप और अमेरिका के वडे वड़े विद्वान इस फिक्र में

पड़े हुए थे और कुछ दिन हुए मैंने कहीं सुना था कि जर्मनी के एक वैज्ञानिक ने इस विषय में कुछ आंशिक सफलता प्राप्त भी कर ली है कि हवा में ऊंचे उड़ता हुआ हवाई जहाज नीचे से दिखाई न पड़े, पर उसका प्रयत्न पूरा पूरा सफल नहीं हुआ, और आज आपको यही करता हुआ मैं अपनी आंखों से देख रहा हूं। आपने तो दुनिया भर के वैज्ञानिकों के कान काट डाले पंडितजी !

गोपाल०। (हंस कर) इसके लिए आप लोग मुझे बड़प्पन न दें। दुनिया के जितने बड़े बड़े आविष्कार आप देख रहे है प्रायः वे सभी किसी आप से आप हो जाने वाली अचानक और स्वाभाविक घटना के ही परिणाम हैं। मेरा यह आविष्कार भी जो 'श्यामा' को अलोप कर देता है वैसी ही एक घटना का फल है और एक दिन अचानक ही मुझे इसका पता लग गया।

फर्गूसन०। (हंस कर) यह कह के आप नामवरी से बचने की कोशिश भले ही करें पर वह आपका पीछा न छोड़ेगी ! एक ऐसा हवाई जहाज बना डालना जो हवा में उडते समय न सुनाई पड़े और न दिखाई दे, दुनिया के सब से आश्चर्यजनक आविष्कारो मे समझा जायगा और अपने इस अविष्कार की बदौलत आप दुनिया के सब से बड़े धनी हो सकेंगे, क्योंकि भला कौन गवर्नमेन्ट होगी जो ऐसे आविष्कार को मुंहमांगा दाम देकर न खरीदना चाहे !

बातें करते हुए ये लोग पेड़ों की छाया के नीचे पहुच गए, ज़हां गोपालशंकर की इच्छानुसार सब कोई जमीन ही पर एक साफ़ जगह देख गोल घेरा बना कर बैठ गए और तब फिर बातें होने लगी।

केमिल०। मेरी प्रार्थना है कि आप शुरू से सब हाल सिलसिलेवार कह जायं। काशी वाले रक्त-मंडल के अड्डे पर हमला होने के समय से जो आप गायब हुए तब से अब तक का पूरा हाल कृपा कर हम लोगों को सुना जाइए।

गोपाल०। अच्छी बात है, मै सब हाल आपसे कहता हूं मगर बहुत

ही संक्षेप मे क्योकि आज जिस काम के लिए मैंने आप लोगों को यहां बुलाया है वह निहायत जरूरी है और उसमे देर करना खतरनाक होगा।

काशीजी के गंगा तट वाले रक्त-मंडल के अड्डे पर हमला करने का पूरा पूरा हाल तो आपलोग सुन ही चुके होगे और यह भी जानते होंगे कि उस हमले का खास कारण यह था कि वे शैतान मिस रोज को पकड़ले गये थे और इन्हें उनके पंजे से छुडाना जरूरी था। मिस रोज उनके कब्जे मे कैसे जा पड़ी यह तो इन्ही की जुबानी पूरी तरह सुनिएगा मगर संक्षेप में मैं कह देता हूं कि इन्हें रातोरात मेरे ही नाम का धोखा दे कर वे दुष्ट ले भागे थे। (इतना कहते हुए गोपालशंकर की आंखें रोज की आंखो से जा मिली जो केमिल के बगल मे वैठी एकटक उनकी तरफ देख रही थी।)

खैर मैंने किसी तरह इस बात का पता लगाया कि मिस रोज फलानी जगह हैं और तब उस मकान पर हमला करने का बन्दोबस्त हुआ जिसमें क्या क्या कार्रवाई हुई और उसका क्या नतीजा निकला यह आप लोगों से छिपा नहीं है। मैं सिर्फ अपना हाल बताए देता हूं।

जब मै केमिल साहब से विदा होकर उस मकान को घेर रखने वाले* बाग के अन्दर घुसा तो मैंने एक शेड के नीचे से एक मोटर ट्रक को निकल कर मकान के पिछवाड़े जाते देखा। उस मोटर का पिछला तख्त पकड़ कर मैं लटक गया और वह कुछ दूर जा बहुत बड़े फाटक की राह एक तहखाने मे घुस गई। उसके भीतर घुसते ही तहखाने का दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया। मोटर की रोशनी बुझ जाने से तहखाने मे घोर अंधकार छा गया मगर मैंने अपनी बिजली की बत्ती बाली तो देखा कि नगेन्द्रनरसिंह सीढी चढ़ता हुआ ऊपर चला जा रहा है। मेरी उसकी दो दो बातें हुई और उसी समय उसने न जाने क्या तर्कीब कर दी कि उस तहखाने की छत के पास की दीवार मे रौशनदानो की तरह बने हुए दो बड़े बड़े गोल छेदों की राह पानी की मोटी धार उसके अन्दर गिरने लगी। उस

---

* 'शेर की मांद' नामक गल्प का अन्तिम भाग देखिए।

समय एक जंगले के अंदर वन्द मिस रोज की तरफ नगेन्द्रनरसिंह ने दिखाया और मेरा ख्याल उधर वंटते ही वह सीढ़ी चढ़ गायव हो गया तथा रास्ता भी वन्द करता गया। मुख्तसर यह कि मिस रोज को जव तक मैं उस जंगले से निकालू तव तक तहखाने मे घुटने घुटने भर पानी हो गया। वहां से वाहर निकलने का रास्ता कोई दिखता नही था और पानी पल पल में वढ़ता जा रहा था।

मैं उस वक्त की अपनी तवीयत का हाल आपसे क्या वताऊं! अपने मरने की मुझे उतनी फिक्र न थी जितना इस वात का ख्याल कि मिस रोज की कीमती जान इस वक्त मेरी सुपुर्दगी में है। इससे भी वढ़ कर यह खयाल सता रहा था कि नगेन्द्र के हाथों जक उठानी पड़ी।

देर तक तहखाने मे इधर उधर तैरता रहा, यहा तक कि पानी पाटन के पास तक आ गया। मुझे अपने जीते वचने की विल्कुल उम्मीद न रही। उस समय अचानक मुझे याद आया कि जिस ढालुएं रास्ते की राह वह मोटर इस तहखाने मे आई उसका वाहरी दर्वाजा अवश्य पानी की सतह से ऊंचा होगा। यह सोचते ही मैं मिस रोज को लिए तैरता हुआ उस रास्ते की खोज में फिरने लगा। वह रास्ता एक ढालुई सुरंग की तरह पर था। तहखाने की तरफ वाला उसका मुंह पानी की सतह के कुछ नीचे पड़ जाने के कारण मुझे उसके खोजने मे वहुत कुछ दिक्कत उठानी पड़ी पर आखिर मैने उसका पता लगा ही लिया परन्तु अफसोस, मेरी नाउम्मीदी का कोई ठिकाना न रहा जव मैने देखा कि लोहे का एक जंगला सुरंग के मुंह को वन्द किए हुए है और उसके अन्दर जाने की कोई तर्कीव नहीं हो सकती। उस समय सचमुच ही मै अपनी जिन्दगी से पूरी तरह पर नाउम्मीद हो गया।

मगर फिर भी मैंने हिम्मत न छोड़ी और वरावर इधर से उधर तैरता हुआ अपनी टार्च को मदद से निकल जाने की कोई राह तलाश करता ही रहा। पानी की सतह इस समय उन छेदो के पास तक जा पहुची थी

जिनकी राह जल आ रहा था। मैं समझता हूं उस समय तहखाने में बारह तेरह फुट से कम पानी न रहा होगा, खैर तैरता हुआ मैं उन दोनो छेदों के पास गया जिनमे से पानी आ रहा था। बहुत मुश्किल से उचक कर मैंने छेद के किनारे को पकड़ा और तब उसके भीतर टार्च की रोशनी डाली। वह लगभग डेढ हाथ मोटे एक पाइप का मुह था। मैने देखा कि पानी की अवाई कम हो गई है, पहिले की तरह पूरा भर कर पानी इस पाइप से नही आ रहा है बल्कि पाइप ऊपर की तरफ से आधे से ज्यादा खुला हुआ है। पाइप की लम्बाई आठ फुट के करीब होगी और उसके दूसरे अर्थात् बाहरी सिरे पर एक तालाब या हौज की तरह बना हुआ कुछ दिखाई पड़ रहा था।

अब मैं ज्यादा आपसे क्या कहू, बस यही समझिए कि किसी तरह अपनी जान पर खेल कर मैं मिस रोज को लिए उस डेढ़ हाथ मोटे नलके मे से दम रोके हुए घसिटता हुआ बाहर निकला। जिस तरह की तकलीफ मुझे हुई मैं ही जानता हू। सास रोके रोके फेफड़ा मालूम होता था फट जायगा, पल पल मे जान पड़ता था मैं बेहोश हो जाऊंगा, पर जिन्दगी बची थी और आप लोगों की कुछ खिदमत करनी बाकी थी इसी से किसी तरह उस भयानक रास्ते को तय करके उस पार निकल ही गया।

अब जिस जगह मैंने अपने को पाया वह एक लम्बा चौडा हौज था जो मकान की दोवार से सटा हुआ बना और ऊपर से खुला था। गंगा से उस हौज तक पानी आने के लिए एक चौडी नाली बनी हुई थी परन्तु इस समय उसका मुंह बन्द था और इसी से हम दोनो की जान बच गई थी। हौज का पानी उस छेद का राह नीचे के तहखाने मे गिर कर हौज करीब करीब खाली हो गया था और इसी से पानी ले जाने वाले दोनों पाइप भी खाली हो चले थे नही तो अगर गंगाजी वाली नाली खुली रहती और हौज में उधर से पानी आता रहता तब तो तहखाने की छत तक पानी भर जाता और हम लोग किसी तरह भी जीते न बचते।

केमिल०। हां ठीक है, हम लोगों ने उस हौज को देखा था पर हमें यह गुमान बिल्कुल न हुआ कि यह ऐसे भयानक काम के लिए बना हुआ है। मगर हां यह तो बताइये कि जब आप सही सलामत बाहर निकल ही आए तो फिर हम लोगो से मिले क्यों नही ? मै समझता हूँ कि जिस समय आप बाहर आए हैं उस समय मैं उसी मकान में मौजूद रहा होऊंगा। आप कितनी देर के बाद उस तहखाने के बाहर निकले थे ?

गोपाल०। मैं बिल्कुल नही कह सकता, क्योकि समय का मेरा ज्ञान एकदम लुप्त हो गया था। जब तक मैं तहखाने में रहा मुझे एक एक पल एक एक युग के समान मालूम होता था।

थामसन०। ठीक है, जरूर ऐसा ही हुआ होगा, मै आपकी उस समय की अवस्था को अच्छी तरह सोच सकता हूं जिसका खयाल करने से ही रोंगटे खड़े होते है। फिर भी आपकी हिम्मत को धन्य है। मै आपकी जगह होता तो शायद डर और घबराहट से बेहोश ही हो जाता !

फर्गूसन०। इसमें क्या शक है !

गोपाल०। अगर मैं अकेला होता तो शायद मेरी भी वही हालत होती मगर मिस रोज के बचाने का खयाल मुझे हिम्मत दिला रहा था। (इतना कह गोपालशंकर ने पुनः रोज की तरफ देखा जिसने आंखें नीची कर ली) खैर इस बात को जाने दीजिये और आगे की कथा सुनिए। तहखाने से निकल कर मेरा खयाल पलटा। मै यह सोचने लगा कि अब अगर मैं अपने साथियों से न मिल कर बाला बाला ही कही जा छिपूं तो मेरे दोस्त और दुश्मन सभी यानी आप लोग भी और रक्त-मंडल वाले भी यही समझेंगे कि मै तहखाने में डूब कर मर गया। वैसी हालत में वे लोग मेरी तरफ से निश्चिन्त हो जायंगे और मुझे अपनी कार्रवाई में बहुत मदद मिलेगी। यद्यपि मेरे दोस्तों को मेरे लिए कुछ तरद्दुद जरूर होगा मगर जिस काम का हम लोगो ने बीड़ा उठाया है वह बहुत खूबसूरती से पूरा हो सकेगा। वैसा करने मे कोई दिक्कत थी तो सिर्फ इस

बात की कि मिस रोज का क्या होगा ? अगर मै इन्हें छोड़ देता हूं तो जरूर सब भंडा फूट जायगा क्योंकि ऐसा तो हो ही नही सकता था कि उस खूनी तहखाने के अन्दर से मिस रोज सही सलामत निकल आवें और मैं न निकलूं। मिस रोज को देखते ही रक्त-मंडल वाले समझ जाते कि मै भी जरूर बच गया और कही छिपा होऊंगा । वैसी हालत में मेरी कार्रवाई ठीक न उतरती । तव फिर क्या किया जाय ? मैने अपने तरद्दुद का हाल मिस रोज से कहा और मै इनका शुक्रगुजार हूं कि इन्होंने झट मेरा आशय समझ लिया और हिम्मत के साथ कुछ दिनों के लिए दुनिया के पर्दे से लोप हो जाना स्वीकार कर लिया। वस हम दोनों उठ खडे हुए और छिपते छिपाते किसी तरह गंगा तट तक पहुच गये जहां से किसी की नजर पर चढे विना काशी पहुंच जाना रात का समय होने के कारण बहुत मुश्किल न था ।

दूसरा दिन हम लोगों ने काशी में काटा। वही मैंने सुन लिया कि रक्त-मंडल के सब आदमी निकल भागे और कोई भी नही पकड़ा गया । मेरे और मिस रोज के भी मारे जाने या रक्त-मंडल के हाथ पकड जाने की जो अफवाह उडी उसे भी हम लोगों ने कौतूहल के साथ सुना। वहां से हम लोग आगरे आये जहां मुझे कई जरूरी इन्तजाम करने थे, और वहां से भी निपट कर हम दोनो सीधे (कुछ पीछे की तरफ हट कर बैठे हुए राजा गिरीशविक्रम की तरफ दिखा कर) इन राजा साहव की रियासत में पहुंच गये। यहां पर मै कह देना चाहता हू कि ये राजा साहव मेरे बहुत पुराने दोस्तों में से है और स्कूल तथा कालेज के दिनों मे हम लोग लंगोटिया साथी थे ।

थामसन, फर्गूसन और केमिल वगैरह ने यह सुन घूम कर राजा साहव की तरफ देखा मगर उनकी निगाहों में एक रूखापन था जिसे गोपालशंकर पहिले ही लक्ष्य कर चुके थे। उनकी और राजा साहव की चार आंखें हुईं और इसके साथ ही वे दोनों खिलखिला कर हंस पडे ।

थामसन ने यह देख ताज्जुब से पूछा, "यह क्या ? आप यकायक हंसे किस बात पर ?"

गोपाल० । आप लोग जिस निगाह से राजा साहब को देखते चले आए है और अब भी देख रहे है इस पर ! आप लोग शायद समझते होंगे कि राजा साहब दुश्मनों से मिले हुए है और हम लोगों के विपक्षी हैं ?

फर्गूसन० । तो क्या इसमें भी कोई शक है ?

थामसन० । जिस चीठी ने मुझे यहां आने पर मजबूर किया उसमें अगर यह साफ साफ लिखा न होता—"यहां आपको कुछ ऐसे आदमी भी दिखाई पडेंगे जिनकी मौजूदगी नागवार मालूम होगी मगर आप उनसे बिल्कुल रोक टोक न कीजिएगा" तो शायद या तो मैं ही यहां से हट जाता या राजा साहब को ही वैसा करना पड़ता ।

गोपाल० । (पुन: हंस कर) ठीक है, और मैने इस बात को समझ कर ही वैसा आप सभो को लिखाया था मगर खैर घबडाइये नहीं, आगे का हाल सुनने ही से आप जान जांयगे कि राजा साहब ने कैसी खूबसूरती से अपना पार्ट अदा किया और आप लोगों ने आदमी पहिचानने में कितनी भारी भूल की ।

थामसन० । अच्छा तो फिर जल्दी कहिए की क्या बात है ?

गोपाल० । मै कहता हूँ । मैंने अपने इस अज्ञातवास के लिए अपने शहर से इतनी दूर जो धरमपूर को चुना इसके कई कारण थे । एक तो यह कि आगरे या काशी मे रह कर अपने को रक्त-मंडल के धूर्त जासूसों की निगाह से छिपाए रहना असम्भव था, दूसरे इन राजा साहब से भी एक काम लेना था, तीसरे रक्त-मंडल के किले के पास रहने पर यह उम्मीद थी कि उसका भी कुछ भेद जान सकूंगा । आप लोगो से यह कहते मुझे बहुत प्रसन्नता होती है कि मुझे इन तीनों ही कामो मे आशातीत सफलता मिली ।

मुझे यह विश्वास हो गया था कि जब तक हमारा कोई आदमी रक्त-मंडल के साथ घुल मिल कर नहीं बैठेगा तब तक हमलोग उनके भीतरी भेदों

को न तो अच्छी तरह जान ही सकेंगे और न उसको परास्त ही कर सकेंगे। आप लोगों के जासूसों से यह काम होना मुश्किल था। इसके लिए कोई ऐसा एक दम नया आदमी खोजना चाहिए था जिस पर रक्त-मंडल को किसी तरह का शक न हो सके। इस काम के लिए मैंने राजा गिरीशविक्रम को चुना। आप लोगों को शायद न मालूम होगा कि मैं, लार्ड गेवर, और ये राजा गिरीशविक्रम, तीनों ही इंग्लैण्ड में सहपाठी और जिगरी दोस्त रह चुके हैं—अस्तु मेरा इन दोनों ही पर काफी जोर था। मेरे ही कहने से इन्होंने भारत सरकार के खिलाफ विरोध का झंडा खड़ा किया और सरकार के बागियों में गिना जाना पसंद किया। आज तक लार्ड गेवर अथवा मैंने इस मामले की ठीक ठीक खबर किसी को भी नहीं दी थी, आज पहिले पहिल आप लोग यह बात सुन रहे हैं।

फर्गूसन०। अच्छा! तो यह सब आप लोगों की मिली जुली और एकदम बनावटी कार्रवाई थी?

थामसन०। ओह, और इसके कर्ता-धर्ता आप थे! मैं यह ताज्जुब करता था कि राजा गिरीशविक्रम जो कभी हमारे छोटे लाट के दोस्त थे अचानक ऐसा पलट क्यों गए, क्योंकि मैं उनके स्वभाव से परिचित था, मगर इसका कारण मैंने रक्त-मंडल को समझा। इस बात का मुझे गुमान भी न हुआ कि इस कार्रवाई के अन्दर आप छिपे हुए हैं!

गोपाल०। (हंस कर) आपने कारण को कार्य बना देने की भूल की! इनको सरकार का विपक्षी बना कर मैंने रक्त-मंडल को अपने चंगुल में लाने की उम्मीद की थी क्योंकि इनकी रियासत रक्त-मंडल के छिपे ज्वालामुखी के सब से पास पड़ती है और इन्हें अपने हाथ में करने का कोई मौका वे लोग जाने न देंगे यह मेरा विश्वास था, और मेरा खयाल सही भी निकला। इन्होंने विद्रोह कर दिया है इस बात की भुनभुन पाते ही उसके जासूस इनके पास आने लगे और धीरे धीरे इनकी उनकी घनिष्ठता होने लगी। किस किस तरह क्या क्या हुआ यह तो अब आप लोग राजा

साहब की ही जुबानी सुनिएगा पर मैं सिर्फ इतना कहे देता हूं कि धीरे धीरे राजा साहब का आना जाना उनके किले में हो गया और ये उनके पूरे विश्वासपात्र बन गए। इनकी मदद से मुझे दो तीन बातें ऐसी मालूम हुईं कि जो कभी जानने में नहीं आ सकती थी और जिन्हें जान कर मुझे उम्मीद होने लगी है कि अब रक्त-मंडल पर हम लोग अवश्य विजयी हो सकेंगे।

इतना कह कर गोपालशंकर थोड़ी देर के लिए चुप हो गए। थामसन यह देख उठ खड़े हुए और राजा गिरीशविक्रम के पास जाकर अपना हाथ उनकी तरफ बढ़ाते हुए बोले, "राजा साहब, माफ कीजिएगा, हम लोगों ने आप पर अविश्वास कर बहुत बड़ा अन्याय किया, मगर हम लोग बहुत बड़े धोखे में डाले गए थे अस्तु आपको इसके लिए अधिक दुःखी न होना चाहिए!"

राजा गिरीशविक्रम ने उठ कर हंसते हंसते उनसे हाथ मिलाया और तब बाकी लोगों ने भी उनसे हाथ मिलाया। इसके बाद फिर सब लोग अपनी अपनी जगह बैठ गए।

केमिल०। अच्छा अब आप अपने हवाई जहाज के बारे में कुछ बताइये कि किस तरह ऐसी विचित्र चीज बनाने में आप सफल हुए?

गोपाल०। मेरा हवाई जहाज 'श्यामा' वही है जिसे एक बार रक्त-मंडल वालों ने पकड़ लिया था*। उस समय तक मैं ऐसा 'एग्ज्हास्ट' बनाने में सफल हो चुका था जो इञ्जिनों की आवाज को बिल्कुल कम कर देता था, अब उसे अलोप करने में भी मैं सफल हो गया हूँ। बहुत दिनों से मैं इस फिक्र में था कि कोई ऐसी तर्कीब निकाली जाय जिससे चीजें आदमी की आंखों की ओट हो सकें और इस सम्बन्ध मे आंशिक सफलता भी पा चुका था। पूरा पूरा हाल और इसकी वैज्ञानिक व्याख्या तो मैं फिर कभी करूंगा जब समय की कमी न होगी, पर संक्षेप में बताए देता हूं कि श्यामा को अलोप करने के लिए मैं तीन प्रकार के उपाय काम में लाता हूं। एक तो

---

* पहिले भाग की 'मृत्यु-किरण' नामक गल्प देखिए।

यह है कि मैने उसके भीतर एक यन्त्र ऐसा लगाया है जिसके द्वारा जिस रंग का धूआं मै चाहूं पैदा कर सकता हूं। मान लीजिए कि मै नीले आकाश मे विचरण कर रहा हूं—जगह जगह वने हुए हजारों छेदो की राह निकला धूआं 'श्यामा' के अंग प्रत्यंग से निकल कर उसे नीले आवरण से ढक देता है और तव नीले आकाश मे से उसे खोज निकालना कठिन हो जाता है। इसी तरह मिट्टी, वादल, घास की हरियाली, इत्यादि रंगों की भी मै नकल कर सकता हूं। एक तर्कीव तो यह हुई, मगर दूसरी इससे विल्कुल भिन्न ही ढंग पर काम करती है। प्रत्येक वस्तु जो हमे दिखाई देती है इसका कारण क्या है? सिर्फ यही कि उस पर पड़ने वाली प्रकाश की किरणें उस पर से टकरा के लौटती और हमारी आखो पर असर करती हैं। अगर हम कोई ऐसा मसाला वना सके जो प्रकाश की उन सव किरणों को जो उस पर पड़ें हजम कर जा सके, लौटने न दे, तो वह चीज हमलोगों की आखो को दिखाई न पडेगी या वहुत मुश्किल से दिखेगी। 'श्यामा' को गायव करने की दूसरी तर्कीव मैने यही की है। उसके प्रत्येक वाहरी हिस्से वाडी विंग आदि पर मैने अपनी ईजाद एक वार्निश लगाई है जो प्रकाश की किरणें पचा जाने मे समर्थ है अर्थात् जिस समय उस वार्निश के अन्दर से विजली का प्रवाह चलाया जाता है उस समय उस पर पड़ने वाली प्रकाश की किरणें वापस नही लौटती हजम होती जाती है और इसी कारण कुछ दूर पर से उसे देखना कठिन हो जाता है। परन्तु इन दोनों से वढ कर मेरी तीसरी तर्कीव सफल हुई है जो उच्च वैज्ञानिक तथ्यो की सहायता से काम करती हे और जिसका भेद अभी मैं आप लोगो को न वताऊंगा फिर कभी मौका आने पर देखा जायगा।

थामसन०। खैर हम लोग उसे जानने के लिए दवाव भी नहीं डालते, आपकी जव इच्छा हो तव वताइएगा। मुझे तो सिर्फ इस वात से मतलव है कि अगर आपके 'श्यामा' की तरह के दस हवाई जहाज भी हम लोगों के पास हो जायं तो हम लोग रातो-रात उस कम्बख्त किले 'ज्वालामुखी'

को गारत कर सकते हैं।

गोपाल०। बेशक, और इसीलिए मेरी इच्छा है कि जहां तक जल्द हो सके 'श्यामा' की नकल के कुछ वायुयान तैयार कर लिये जाय। परन्तु इधर मेरे मित्र ये राजा गिरीशविक्रम रक्त-मंडल के किले मे जाकर हम लोगो के लिए और भी एक बडी ही कीमती बात का पता लगा लाए है।

थामसन०। वह क्या?

गोपाल०। (गिरीशविक्रम की तरफ देख के) आप ही इन लोगों को बताइये राजा साहब।

राजा०। वह बात यह है कि रक्त-मंडल ने जिस मृत्यु-किरण का आविष्कार किया है वह दूर दूर पर ही काम कर सकती है बहुत नजदीक या एक दम सर पर उससे कोई काम नही लिया जा सकता।

थामसन०। (चौंक के) इसका क्या मतलब?

राजा०। यह कि अगर हमारा कोई वायुयान 'ज्वालामुखी' के ठीक सिर पर पहुंच जाय तो वहा से वह बेखटके बम गिरा सकता है। उस समय ये मृत्यु-किरणें उसका कोई भी नुकसान न कर सकेंगी।

यह बात सुनते ही सब लोग बेहद खुश हो गए और "है! यह बात है!! वाह, फिर क्या है? अब ये सब कहा जा सकते हैं!!" इत्यादि इत्यादि का सुर बांधने लगे। थोड़ी देर बाद गोपालशंकर ने कहा, 'इस बात को जान कर और श्यामा के अलोप होने की सफलता देख कर ही आज मैंने आप लोगों को यहां बुलाया है। मैं चाहता हूँ कि आज हम लोग यहीं पर युद्ध का एक ऐसा प्रोग्राम तैयार कर लें कि कम्बख्त दुश्मनों को अवश्य ही नीचा देखना पड़े। बड़े लाट से मैं मिल चुका हूं और उन्होने सब बातें मेरी इच्छानुसार होने देने का वादा भी कर दिया है अस्तु अब उनसे कुछ पूछने की जरूरत नहीं। मैंने खुद जो कुछ इस विषय में सोचा है वह मैं आपसे कहता हूं उसे सुन कर आप लोग अपनी राय दें और तब तुरत ही और यहीं पर एक निश्चित मत कायम कर लिया जाय।

सब लोग आपस मे सलाह करने लगे।

दो घंटे के ऊपर समय तक यह कुमेटी होती रही। इस बीच क्या क्या बातें हुईं और क्या क्या करने का निश्चय हुआ यह सब कुछ आगे चल कर हमारे पाठको को मालूम ही हो जायगा, हां इतना हम इस जगह बता सकते है कि मिस रोज के बारे मे यह निश्चय हुआ कि वे अभी और कुछ दिनो तक मिस्टर केमिल के पास न रह कर कही अन्यत्र ही रहें ताकि उनको देख रक्त-मंडल को गोपालशंकर के भी जीते रहने का संदेह न होने पावे। एडवर्ड (मिस्टर केमिल का भतीजा) कुछ दिनो तक गोपालशंकर के साथ रह कर 'श्यामा' के चलाने की तर्कीब जान ले और उसकी भिन्न भिन्न विशेषताओ से अवगत हो जावे, यह भी स्थिर हुआ।

सलाह मशिवरा समाप्त होने पर सब लोग उठ खड़े हुए। एडवर्ड और गोपालशंकर 'श्यामा' की तरफ बढे, बाकी लोग अलग हो कर जो जिधर से आया था उधर जाने के लिए घूमा। उस समय गोपालशंकर को इतना मौका मिला कि मिस रोज से एकान्त मे कुछ बातें कर सकें जो उनसे हाथ मिलाने के लिए कुछ सकपकाती हुई सी आगे को बढ़ रही थीं। अपने दोनो हाथो मे उन्होने रोज का मुलायम पंजा दबा लिया और गहरी निगाहों से उसके सुन्दर चेहरे को देखते हुए बोले, "जाता हूं रोज, अगर जीता रहा तो फिर तुमसे मिलूंगा।"

रोज ने घबड़ा कर कहा, "सो क्यों? सो क्यों?"

गोपालशंकर बोले, "जिस भयानक दल से मैने युद्ध छेड़ा है वह कब मुझ पर हावी आ जायगा कुछ कह नही सकता, हां यह जरूर कह सकता हूं कि अगर जीता रहा तो पुनः तुमसे मिलूंगा और तब तुमसे वह वादा पूरा कराऊंगा जो तुम मुझसे कर चुकी हो!"

रोज का चेहरा लाल हो आया और उसकी निगाह नीची पड़ गई। जरा देर तक वह चुप रही, पर गोपालशंकर की आंखें स्पष्ट रूप से उत्तर मांग रही थी। आखिर उसने बहुत ही धीरे से कहा, "हां, अगर ब्रिटिश

गवर्नमेंट पर आया हुआ यह तूफान तुम हटा सके तो मैं जरूर अपना वादा पूरा करूंगी।" मगर उसकी आखें और चेहरा कह रहा था कि जो शर्त वह लगा रही है वह कोई बहुत जरूरी न थी।

गोपालशंकर ने आवेश के साथ उसका हाथ होठो के पास ले जाकर चूम लिया और तब एक दूसरे को प्रेम भरी चितवनों से देखते हुए दोनों अलग हुए। रोज अपने पिता के पास चली गई और गोपालशंकर उस छोटे गरोह की तरफ बढ़े जो अभी भी रुका हुआ शायद इन्हीं को राह देख रहा था।

अचानक गोपालशंकर ने थामसन से कहा, "हां यह तो बताइए कि मैंने कहा था कि नेपाल रेजीडेन्सी का कोई अफसर भी यहां मौजूद रहे, सो क्या कोई आया है?" थामसन ने कहा, "हमारे रेजीडेन्ट मिस्टर ग्रिफिथ खुद आने वाले थे पर ऐन मौके पर घोड़े से गिर जाने के कारण वे चुटीले हो गये और आ न सके। उन्होंने अपने दाहिने हाथ इन (रतनसिंह को बतला कर) रतनसिंह को भेजा है जो हमारे बहुत ही विश्वासी आदमी हैं।"

रतनसिंह यह सुनते ही आगे बढ़ आया। गोपालशंकर ने जांचने वाली गहरी निगाह उस पर डाली और तब कहा, "मिस्टर रतनसिंह, मैं चाहता हूं कि आपकी रेजीडेन्सी के कम्पौन्ड के भीतर किसी जगह गुप्त रीति से एक मैदान ऐसा तैयार कर लिया जाय जिसमे मैं जब चाहूं 'श्यामा' को उतार सकूं। वह जगह चारो तरफ से ऐसी घिरी हुई होनी चाहिए कि किसी को मेरे आने जाने का पता न लग सके अर्थात् पेड़ों और झाड़ियो आदि से वह सब तरफ से घिरी और छिपी रहनी चाहिए। क्या ऐसा हो सकता है?"

रतनसिह०। जी हां, क्यों नही हो सकता! हमारी रेजीडेन्सी वालों का विचार बहुत दिनों से रेजीडेन्सी ग्राउंड मे एक फुटबाल फील्ड तैयार करने का रहा है, उसी बहाने से मैं मुनासिब मौके पर ऐसा मैदान बनवा सकूंगा।

गोपालशंकर ने कहा, "बस बहुत ठीक होगा, मगर खयाल रहे कि यह बात किसी तरह पर न फूटे कि मै जीता हू या मेरे वायुयान मे फलां फलां गुण है अथवा उसी के आने जाने के लिए वह मैदान तैयार कराया जा रहा है।

रतनसिंह ने इसका विश्वास दिलाया और तब गोपालशंकर सभों से बिदा हो एडवर्ड को साथ लिए 'श्यामा' की तरफ बढ़े। सब लोग अपनी अपनी जगहों पर रुक कर उनके वायुयान के उड़ने की राह देखने लगे क्योंकि उन्होंने सभो को बाहर मैदान मे आने से मना कर दिया था।

गोपालशंकर वायुयान के अन्दर जा बैठे। उसके पंखो को दो चार चक्कर दे इन्जिन चल जाने पर एडवर्ड भी उनके बगल मे जा बैठा। वायुयान ने खरगोश की तरह उछलते हुए दो चक्कर मैदान के लगाये और धीरे धीरे ऊंचा होने लगा। अभी ही उसके इन्जिनो की कोई भी आवाज देखने वालों के कानों में नही आ रही थी।

धीरे धीरे 'श्यामा' ऊंचा होने लगा, साथ ही उसका रंग भी धुंधला पड़ने लगा। पंडित गोपालशंकर एडवर्ड को लिए आकाश में गायब हो गए।

जब आस्मान में चारो तरफ अच्छी तरह देखने पर भी 'श्यामा' का कही नाम निशान दिखाई न दिया तो मिस्टर थामसन ने संतोष की एक लम्बी सास लेकर फर्ग्यूसन से कहा, "गजब का आदमी है यह गोपालशंकर भी, मैं समझता हूँ कि आज कल के जमाने में दुनिया का सब से बड़ा वैज्ञानिक यही है!"

फर्ग्यूसन ने कहा, "बेशक, और मुझे विश्वास होता है कि पंडित गोपालशंकर और उनके इस अलोप हो जाने वाले वायुयान 'श्यामा' की मदद से हम लोग उस कम्बख्त रक्त-मंडल पर अवश्य फतहयाबी पा सकेंगे जिसने बरसो से हमारी नाक में दम कर रक्खा है!"

क्या यह सोचना ठीक निकलेगा? क्या गोपालसिंह और 'श्यामा' रक्त-मंडल पर विजय पा सकेंगे?

॥ दूसरा भाग समाप्त ॥

११ वां संस्करण] १९७३ ई० [११०० प्रति

मुद्रक—लहरी प्रेस, वाराणसी।